सूरह-1. अल-फ़ातिहह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहमवाला है।

सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। बहुत महरबान निहायत रहम वाला है। इंसाफ के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखा। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फज़्ल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए। (1-7)

सूरह-2. अल-बकरह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई शक नहीं। राह दिखाती है डर रखने वालों को। जो यकीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ कायम करते हैं। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुमसे पहले उतारा गया। और वे आख़िरत (परलोक) पर यकीन रखते हैं। इन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं। (1-5)

जिन लोगों ने इंकार किया, उनके लिए समान है डराओ, या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है। और उनकी आँखों पर पर्दा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (6-7)

और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं। मगर वे सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शुऊर नहीं रखते। उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। इस वजह से कि वे झूठ कहते थे। और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फसाद (उपद्रव, बिगाड़) न करो तो वे जवाब देते हैं हम तो सुधार करने वाले है। जान लो, यही लोग फसाद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते। और जब उनसे कहा जाता है तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। जान लो, कि मूर्ख यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते। और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज हंसी करते हैं। अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है। वे भटकते फिर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो

उनकी तिजारत फायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले। (8-16)

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने आग जलाई। जब आग ने उसके इर्द-गिर्द को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं। अब ये लौटने वाले नहीं हैं। या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज-चमक भी। वे कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस रहे हों। हालाँकि अल्लाह इंकार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है। करीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले। जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आंखों को छीन ले। अल्लाह यकीनन हर चीज़ पर कादिर है। (17-20)

ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम दोज़ख़ (नर्क) से बच जाओ। वह जात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी ग़िज़ा के लिए। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालांकि तुम जानते हो। अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो हमने अपने बंदे के ऊपर उतारा है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे आदमी और पत्थर। वह तैयार की गई है हक (सत्य) का इंकार करने वालों के लिए। और ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए, इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था। और मिलेगा उन्हें एक-दूसरे से मिलता-जुलता। और उनके लिए वहां साफ-सुथरी औरतें होंगी। और वे इसमें हमेशा रहेंगे। (21-25)

अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की। फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक (सत्य) है उनके रब की जानिब से। और जो इंकार करने वाले हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है। अल्लाह इसके ज़रिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सन्मार्ग) दिखाता है। और वह गुमराह करता है उन लोगों को जो नाफरमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं। जो अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। यही लोग हैं नुक्सान उठाने वाले। तुम किस तरह अल्लाह का इंकार करते हो, हालांकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी अता की। फिर वह तुम्हें मौत देगा। फिर ज़िंदा करेगा। फिर उसी की तरफ

लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। फिर आसमान की तरफ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए। और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (26-29)

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं। फरिश्तों ने कहा : क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो इसमें फसाद करें और ख़ून बहाएं। और हम तेरी हम्द (स्तुति, गुणगान) करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। फरिश्तों ने कहा कि तू पाक है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया। बेशक तू ही इल्म वाला और हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। अल्लाह ने कहा ऐ आदम उन्हें बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूं। और मुझे मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (30-33)

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। उसने इंकार किया और घमंड किया और मुंकिरों में से हो गया। और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में जहां से चाहो। और उस दरख़्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वर्ना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए दोनों को लग़ज़िश (ग़लती) में मुब्तिला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहां से। तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक। फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उस पर मुतवज्जह हुआ। बेशक वह तौबह कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। हमने कहा तुम सब यहां से उतरो। फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग इंकार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएंगे तो वही लोग दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (34-39)

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया। और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा। और मेरा ही डर रखो। और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है। तस्दीक (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है। और तुम सबसे पहले इसका इंकार करने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा। और मुझ से डरो। और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ हालांकि तुम जानते हो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने

www.Momeen.blogspot.com

वालों के साथ झुक जाओ। तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं। और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं। जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (40-46)

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी। न उसकी तरफ से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी। और जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया। वे तुम्हें बड़ी तकलीफ देते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से भारी आज़माइश थी। और जब हमने दरिया को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुम्हें और डुबा दिया फ़िरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे। और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का। फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे। फिर हमने इसके बाद तुम्हें माफ कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली चीज़ ताकि तुम राह पाओ। और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है। अब अपने पैदा करने वाले की तरफ मुतवज्जह हो और अपने मुजरिमों को अपने हाथों से क़त्ल करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल फरमाई। बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है। और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारा यकीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुक्सान नहीं किया, वे अपना ही नुक्सान करते रहे। (47-57)

और जब हमने कहा कि दाख़िल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहां से चाहो खुले रूप में और दाख़िल हो दरवाज़े में सिर झुकाए हुए और कहो कि ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे। हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे और नेकी करने वालों को ज्यादा भी देंगे। तो उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने ज़ुल्म किया, उनकी नाफरमानी के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा। और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए पानी मांगा तो हमने कहा अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो तो उससे फूट निकले बारह चश्मे (जलस्रोत)। हर गिरोह

ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क से और न फिरो ज़मीन में फ़साद मचाने वाले बन कर। और जब तुमने कहा ऐ मूसा हम एक ही किस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते। अपने रब को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से साग, ककड़ी, गेहूं, मसूर, प्याज़। मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना (तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो। किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम मांगते हो। और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और वे अल्लाह के ग़ज़ब के मुस्तहिक हो गए। यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते थे और नबियों को नाहक क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद पर न रहते थे। (58-61)

यूं है कि जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, इनमें से जो शख़्स ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और उसने नेक काम किया तो उसके लिए उसके रब के पास अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हमने तुमसे तुम्हारा अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बचो। इसके बाद तुम इससे फिर गए। अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते। और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सब्त (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनको कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ। फिर हमने इसे इबरत बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके रूबरू थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आए। और इसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए। (63-66)

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा : क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसा नादान बनूं। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, उनके बीच की हो। अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो, वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है वह सुनहरे रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो। उन्होंने कहा, अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमें शुबह पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे। मूसा ने कहा अल्लाह फरमाता है कि वह ऐसी गाय हो कि महनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सालिम हो, उसमें कोई दाग़ न हो। उन्होंने कहा : अब तुम स्पष्ट बात

लाए। फिर उन्होंने उसे ज़बह किया। और वे ज़बह करते नज़र न आते थे। और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला फिर एक-दूसरे पर इसका इल्ज़ाम डालने लगे। हालांकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो कुछ तुम छुपाना चाहते थे। पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो। (67-73)

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए। पस वे पत्थर की तरह हो गए या इससे भी ज्यादा सख़्त। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है। और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह इससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (74)

क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे। हालांकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं। जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं। और जब आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे रब के पास तुमसे हुज्जत करें। क्या तुम समझते नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। (75-77)

और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ुएं। इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं। पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है। ताकि इसके ज़रिए थोड़ी-सी पूंजी हासिल कर लें। पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी। और उनके लिए ख़राबी है अपनी इस कमाई से। और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के ख़िलाफ नहीं करेगा। या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते। हां जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया। तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (78-82)

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सुलूक करोगे मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों और मिस्कीनों के साथ। और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के। और तुम इकरार करके इससे हट जाने वाले लोग हो। (83)

और जब हमने तुमसे यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे। और

अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे। फिर तुमने इकरार किया और तुम इसके गवाह हो। फिर तुम ही वे हो कि अपनों को कत्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो। इनके मुकाबले में इनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ। फिर अगर वे तुम्हारे पास कैद होकर आते हैं तो तुम फ़िदया (अर्थदण्ड) देकर उन्हें छुड़ाते हो। हालांकि ख़ुद इनका निकालना तुम्हारे ऊपर हराम था। क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इंकार करते हो। पस तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई हो और कियामत के दिन इन्हें सख़्त अज़ाब में डाल दिया जाए। और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी। पस न इनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न इन्हें मदद पहुंचेगी। (84-86)

और हमने मूसा को किताब दी और इसके बाद पे दरपे रसूल भेजे। और ईसा बिन मरयम को खुली-खुली निशानियां दीं और रूहे पाक से उसकी ताईद की। तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया। फिर एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को मार डाला। और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफूज़ (सुरक्षित) हैं। नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार की वजह से उन पर लानत कर दी है। इसलिए वे बहुत कम ईमान लाते हैं। और जब आई अल्लाह की तरफ से उनके पास एक किताब जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुंकिरों पर फतह मांगा करते थे। फिर जब आई उनके पास वह चीज जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया। पस अल्लाह की लानत है इंकार करने वालों पर। कैसी बुरी है वह चीज जिसमें उन्होंने अपनी जानों का मोल किया कि वे इंकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस जिद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे। पस वे ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमा कर लाए और इंकार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (87-90)

और जब उनसे कहा जाता है उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है। और वे इसका इंकार करते हैं जो इसके पीछे आया है। हालांकि वह हक है और सच्चा करने वाला है उसे जो इनके पास है। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले क्यों कत्ल करते रहे हो। और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ुल्म करने वाले हो। और जब हमने तुमसे अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मजबूती के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहा : हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनके कुफ्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो

तो कैसी बुरी है वह चीज जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है। कहो, अगर अल्लाह के यहां आख़िरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है, तो दूसरों को छोड़कर तुम मरने की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो। मगर वे कभी इसकी आरज़ू नहीं करेंगे, इस सबब से वे जो अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ख़ूब जानता है जालिमों को। और तुम उन्हें जिंदगी का सबसे ज्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज्यादा जो मुशरिक हैं। इनमें से हर एक यह चाहता है कि हजार वर्ष की उम्र पाए। हालांकि इतना जीना भी उसे अजाब से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (91-96)

कहो कि जो कोई जिब्रील का मुख़ालिफ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह सच्चा करने वाला है उसे जो उसके आगे है और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए। जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुंकिरों का दुश्मन है। और हमने तुम्हारे ऊपर वाजेह निशानियां उतारीं और कोई इनका इंकार नहीं करता मगर वही लोग जो फासिक (अवज्ञाकारी) हैं। क्या जब भी वे कोई अहद (वचन) बाधेंगे तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं रखते। और जब उनके पास अल्लाह की तरफ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गोया वे इसे जानते ही नहीं। (97-101)

और वे उस चीज के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की सल्तनत पर लगा कर पढ़ते थे। हालांकि सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ्र किया वे लोगों को जादू सिखाते थे। और वे उस चीज में पड़ गए जो बाबिल में दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फन (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आजमाइश के लिए हैं। पस तुम मुंकिर न बनो। मगर वे उनसे वह चीज सीखते जिससे मर्द और उसकी औरत के दर्मियान जुदाई डाल दें। हालांकि वे अल्लाह के इज़्न (आज्ञा) के बग़ैर इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वे ऐसी चीज सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुंचाए और नफा न दे। और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज का ख़रीदार हो, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला। काश वे इसे समझते। और अगर वे मोमिन बनते और तकवा (ईशभय) इख़्तियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश वे इसे समझते। (102-103)

ऐ ईमान वालो तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंजुरना' कहो और सुनो। और कुफ्र करने वालों के लिए दर्दनाक सजा है। जिन लोगों ने इंकार किया, चाहे अहले किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से कोई भलाई उतरे। और

अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है। अल्लाह बड़े फज्ल वाला है। हम जिस आयत को मौक़ूफ़ (निरस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो इससे बेहतर या इस जैसी दूसरी लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखता है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार। क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए। और जिस शख़्स ने ईमान को कुफ्र से बदल दिया वह यकीनन सीधी राह से भटक गया। (104-108)

बहुत से अहले किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुंकिर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक उनके सामने वाज़ेह हो चुका है। पस माफ करो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाए। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखता है। और नमाज क़ायम करो और ज़कात अदा करो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यकीनन उसे देख रहा है। और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ वही लोग जाऐंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज उनकी आरज़ुएं हैं। कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुख़्लिस भी है तो ऐसे शख़्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, इनके लिए न कोई डर है और न कोई ग़म। (109-112)

और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज पर नहीं। और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं। इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा कौल। पस अल्लाह कियामत के दिन इस बात का फैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे। और उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहां अल्लाह के नाम की याद की जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाख़िल हों। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए भारी सजा है। और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर रुख़ करो उसी तरफ अल्लाह है। यकीनन अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, इल्म वाला है। और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह इससे पाक है। बल्कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है। उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे। वह आसमानों और जमीन को वुजूद में लाने वाला है। वह जब किसी काम को करना तै कर लेता है तो बस उसके लिए फरमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (113-117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की-सी बात कह

चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियां उन लोगों के लिए जो यकीन करने वाले हैं। हमने तुम्हें ठीक बात लेकर भेजा है, ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर। और तुम से दोजख़ में जाने वालों की बाबत कोई पूछ नहीं होगी। और यहूद और नसारा हरगिज तुमसे राजी नहीं होंगे जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगो। तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही अस्ल राह है। और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुंच चुका है तुमने उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी की तो अल्लाह के मुकाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार। जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इसे पढ़ते हैं जैसा कि हक है पढ़ने का। यही लोग ईमान लाते हैं इस पर। और जो इसका इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं। (118-121)

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम कौमों पर फजीलत दी। और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आयेगा और न किसी की तरफ से कोई मुआवजा कुबूल किया जायेगा और न किसी को कोई सिफारिश फायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुंचेगी। और जब इब्राहीम को उसके रब ने कई बातों में आजमाया तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊंगा। इब्राहीम ने कहा : और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने कहा : मेरा अहद (वचन) जालिमों तक नहीं पहुंचता। (122-124)

और जब हमने काबे को लोगों के इज्तिमाअ (जमा होने) की जगह और अम्न का मकाम ठहराया और हुक्म दिया कि मकामे इब्राहीम को नमाज पढ़ने की जगह बना लो। और इब्राहीम और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो। और जब इब्राहीम ने कहा के ऐ मेरे रब इस शहर को अम्न का शहर बना दे। और इसके बाशिंदों को, जो इनमें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोजी अता फरमा। अल्लाह ने कहा जो इंकार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों फायदा दूंगा। फिर उसे आग के अजाब की तरफ धकेल दूंगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (125-126)

और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे : ऐ हमारे रब, कुबूल कर हमसे, यकीनन तू ही सुनने वाला जानने वाला है। ऐ हमारे रब हमें अपना फरमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फरमांबरदार उम्मत उठा और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमको माफ फरमा, तू माफ करने वाला रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब और इनमें इन्हीं में का एक रसूल उठा जो इन्हें तेरी आयतें सुनाये और इन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे और इनका तज्किया (पवित्रीकरण, शुद्धीकरण) करे। बेशक तू जबरदस्त है हिक्मत वाला है। (127-129)

और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे मगर वह जिसने अपने आपको

अहमक (मूर्ख) बना लिया हो। हालांकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आख़िरत में वह सालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा। जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको हवाले कर दो तो उसने कहा : मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया। और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहम की याकूब ने अपनी औलाद को। ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए। क्या तुम मौजूद थे जब याकूब की मौत का वक्त आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहा : हम उसी ख़ुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुजुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक करते आए हैं। वही एक माबूद है और हम उसके फरमांबरदार हैं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (130-134)

और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शरीक करने वालों में न था। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर ईमान लाए जो हमारी तरफ उतारी गई है। और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनमें से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते और हम अल्लाह ही के फरमांबरदार हैं। फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो बेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएं तो अब वे जिद पर हैं। पस तुम्हारी तरफ से अल्लाह इनके लिए काफी है और वह सुनने वाला जानने वाला है। कहो हमने लिया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। कहो क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो। हालांकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम ख़ालिस उसके लिए हैं। क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे। कहो कि तुम ज्यादा जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा जालिम और कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (135-141)

अब बेवक़ूफ़ लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज ने उनके क़िबले से फेर दिया। कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया ताकि तुम हो बताने वाले लोगों पर और

रसूल हो तुम पर बताने वाला। और जिस किबले पर तुम थे, हमने उसे सिर्फ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उल्टे पांव फिर जाता है। और बेशक यह बात भारी है मगर उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को जाये (विनष्ट) कर दे। बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफक़त (स्नेह) करने वाला महरबान है। (142-143)

हम तुम्हारे मुंह का बार-बार आसमान की तरफ उठना देख रहे हैं। पस हम तुम्हें उसी किबले की तरफ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो। अब अपना रुख़ मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ फेर दो। और तुम जहां कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ करो। और अहले किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक है और उनके रब की जानिब से है। और अल्लाह बेख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं। और अगर तुम इन अहले किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे किबले को नहीं मानेंगे। और न तुम उनके किबले की पैरवी कर सकते हो। और न वे ख़ुद एक-दूसरे के किबले को मानते हैं। और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में हो जाओगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक गिरोह हक को छुपा रहा है हालांकि वह उसे जानता है। हक वह है जो तेरा रब कहे। पस तुम हरगिज शक करने वालों में से न बनो। (144-147)

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुंह करता है। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो। तुम जहां कहीं होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा। बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ करो। बेशक यह हक है, तुम्हारे रब की तरफ से है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ करो और तुम जहां भी हो अपना रुख़ उसी की तरफ रखो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाकी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो इनमें बेइंसाफ हैं। पस तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूं। और ताकि तुम राह पा जाओ। जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की और हिकमत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ) की तालीम देता है और तुम्हें वे चीजें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे। पस तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो। (148-152)

ऐ ईमान वालो, सब्र और नमाज से मदद हासिल करो। यकीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे जिंदा हैं मगर तुम्हें ख़बर नहीं। और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से। और साबित कदम रहने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो जिनका

हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वे कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और रहमत है। और यही लोग हैं जो राह पर हैं। (153-157)

सफा और मरवह बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं। पस जो शख़्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई हरज नहीं कि वह इनका तवाफ (परिक्रमा) करे ओर जो कोई शौक से कुछ नेकी करे तो अल्लाह कद्र करने वाला है, जानने वाला है। जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम इसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले लानत करते हैं। अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और बयान किया तो उन्हें मैं माफ कर दूंगा और मैं हूं माफ करने वाला, महरबान। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और आदमियों की सबकी लानत है। उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे। उन पर से अजाब हल्का नहीं किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (158-162)

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़ा महरबान है, निहायत रहम वाला है। बेशक आसमानों और जमीन की बनावट में और रात और दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीजें लेकर समुद्र में चलती हैं और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा जमीन को जिंदगी बख़्शी, और उसने जमीन में सब किस्म के जानवर फैला दिए। और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और जमीन के दर्मियान हुक्म के ताबेअ हैं, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल से काम लेते हैं। (163-164)

और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं वे सबसे ज्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं। और अगर ये जालिम उस वक्त को देख लें जबकि वे अजाब को देखेंगे कि जोर सारा का सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सख़्त अजाब देने वाला है। जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाऐंगे जो इनके कहने पर चलते थे। अजाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ के रिश्ते टूट चुके होंगे। वे लोग जो पीछे चले थे कहेंगे काश हमें दुनिया की तरफ लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए। इस तरह अल्लाह इनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर दिखाएगा और वे आग से निकल नहीं सकेंगे। (165-167)

लोगो! जमीन की चीजों में से हलाल और सुथरी चीजें खाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। वह तुमको सिर्फ बुरे काम और बेहयाई की तलकीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ वे बाते मंसूब करो जिनके

बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या उस सूरत में भी कि उनके बाप दादा न अक्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों। और इन मुंकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। वे कुछ नहीं समझते। (168-171)

ऐ ईमान वालो हमारी दी हुई पाक चीजों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो। अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ मुर्दार को और ख़ून को और सुअर के गोश्त को। और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, वह न ख़्वाहिशमंद हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। जो लोग उस चीज को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ आग भर रहे हैं। कियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख़्शिश के बदले अजाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की। यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे जिद में दूर जा पड़े।(172-176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुंह पूर्व और पश्चिम की तरफ कर लो। बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फरिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर। और माल दे अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफिरों को और मांगने वालों को और गर्दनें छुड़ाने में। और नमाज कायम करे और जकात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें। और सब्र करने वाले सख़्ती और तकलीफ में और लड़ाई के वक्त। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले। (177)

ऐ ईमान वालो तुम पर मक्तूलों (मारे जाने वालों) का क़िसास (समान बदला) लेना फर्ज किया जाता है। आजाद के बदले आजाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिसे उसके भाई की तरफ से कुछ माफी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारूफ (सामान्य तरीक़ा) की पैरवी करे और ख़ूबी के साथ उसे अदा करे। यह तुम्हारे रब की तरफ से एक आसानी और महरबानी है। अब इसके बाद भी जो शख़्स ज्यादती करे उसके लिए दर्दनाक अजाब है। और ऐ अक्ल वालो, क़िसास में तुम्हारे लिए जिंदगी है ताकि तुम बचो। तुम पर फर्ज किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारूफ के मुताबिक वसीअत कर दे अपने मां-बाप के लिए और

अपने रिश्तेदारों के लिए। यह जरूरी है ख़ुदा से डरने वालों के लिए। फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो इसका गुनाह उसी पर होगा जिसने इसे बदला, यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या हक़तलफी की है और वह आपस में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (178-182)

ऐ ईमान वालो तुम पर रोजा फर्ज किया गया जिस तरह तुम से अगलों पर फर्ज किया गया था ताकि तुम परहेजगार बनो। गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। और जिनको ताकत है तो एक रोज़े का बदला एक मिस्कीन का खाना है। जो कोई मजीद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है। और तुम रोजा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो। रमजान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियां रास्ते की और हक व बातिल के दर्मियान फैसला करने वाला। पस तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोजे रखे। और जो बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता। और इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इस पर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुजार बनो। (183-185)

और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं नजदीक हूं, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूं जबकि वह मुझे पुकारता है। तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यकीन रखें ताकि वे हिदायत पाएं। तुम्हारे लिए रोजे की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जाइज किया गया। वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से ख़ियानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पियो यहां तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से अलग जाहिर हो जाए। फिर पूरा करो रोजा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतकाफ में हो तो बीवियों से ख़लवत (संभोग) न करो। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनके नजदीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वे बचें। और तुम आपस में एक-दूसरे के माल को नाहक तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक न पहुंचाओ ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ। हालांकि तुम इसे जानते हो। (186-188)

वे तुम से चांदों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वे औकात (समय) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से। बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेजगारी करे। और घरों में उनके दरवाजों से आओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और ज्यादती

न करो। अल्लाह ज्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता। और कत्ल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। और फितना सख़्ततर है कत्ल से। और उनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे इसमें जंग न छेड़ें। पस अगर वे तुमसे जंग छेड़ें तो उन्हें कत्ल करो। यही सजा है इंकार करने वालों की। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और उनसे जंग करो यहां तक कि फित्ना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो इसके बाद सख़्ती नहीं है मगर जालिमों पर। (189-193)

हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी किसास (समान बदला) है। पस जिसने तुम पर ज्यादती की तुम भी उस पर ज्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज्यादती की है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेजगारों के साथ है। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने आपको हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छी तरह काम करने वालों को। (194-195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए। फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो कुर्बानी का जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो और अपने सिरों को न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए। तुममें से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ हो तो वह अर्थदण्ड फिदया दे रोजा या सदका या कुर्बानी का। जब अम्न की हालत हो और कोई हज तक उमरा का फायदा हासिल करना चाहे तो वह कुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए। फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोजे रखे और सात दिन के रोजे जबकि तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस हुए। यह उस शख़्स के लिए है जिसका ख़ानदान मस्जिदे हराम के पास आबाद न हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है। हज के निर्धारित महीने हैं। पस जिसने हज का अज़्म कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फहेश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई झगड़े की। और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा। और तुम जादेराह (यात्रा-सामग्री) लो। बेहतरीन जादेराह तक्वा का जादेराह है। और ऐ अक्ल वालो मुझ से डरो। (196-197)

इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फज़्ल भी तलाश करो। फिर जब तुम लोग अरफात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नजदीक। और उसे याद करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है। इससे पहले यकीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे। फिर तवाफ को चलो जहां से सब लोग चलें और अल्लाह से माफी मांगों। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज्यादा। पस

कोई आदमी कहता है : ऐ हमारे रब हमें इसी दुनिया में दे दे और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और कोई आदमी है जो कहता है कि हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अजाब से बचा। इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। और अल्लाह को याद करो मुकर्रर दिनों में। फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे। (198-203)

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की जिंदगी में तुम्हें ख़ुश लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है। हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि जमीन में फसाद फैलाए और खेतियों और जानवरों को हलाक करे। हालांकि अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वकार (प्रतिष्ठा) उसे गुनाह पर जमा देता है। पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और लोगों में कोई है कि अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत महरबान है। (204-207)

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाजेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। क्या लोग इस इंतजार में हैं कि अल्लाह बादल के सायबानों में आए और फरिश्ते भी आ जाएं और मामले का फैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ फेरे जाते हैं। बनी इस्राईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियां दीं। और जो शख़्स अल्लाह की नेमत को बदल डाले जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यकीनन सख़्त सजा देने वाला है। ख़ुशनुमा कर दी गई है दुनिया की जिंदगी उन लोगों की नजर में जो मुंकिर हैं और वे ईमान वालों पर हंसते हैं, हालांकि जो परहेजगार हैं वे क़ियामत के दिन उनके मुकाबले में ऊंचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोजी देता है। (208-212)

लोग एक उम्मत थे। उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले। और उनके साथ उतारी किताब हक के साथ ताकि वह फैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इख़्तेलाफ कर रहे हैं। और ये इख़्तेलाफ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की जिद की वजह से। पस अल्लाह ने अपनी तौफीक से हक के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा

देता है। क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अभी तुम पर वे हालात गुजरे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुजरे थे। उन्हें सख़्ती और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। याद रखो, अल्लाह की मदद करीब है। (213-214)

लोग तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो माल तुम ख़र्च करो तो उसमें हक है तुम्हारे मां-बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफिरों का। और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम है। तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें भार महसूस होती है। हो सकता है कि तुम एक चीज को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (215-216)

लोग तुमसे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है। कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और इसका इंकार करना और मस्जिदे हराम से रोकना और उसके लोगों को इससे निकालना, अल्लाह के नज़दीक इससे भी ज्यादा बुरा है। और फित्ना क़त्ल से भी ज्यादा बड़ी बुराई है। और ये लोग तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर काबू पाएं। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ्र की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के अमल जाए (विनष्ट) हो गए दुनिया में और आख़िरत में। और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (217-218)

लोग तुमसे शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीजों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फायदे भी हैं। और इनका गुनाह बहुत ज्यादा है इनके फायदे से। और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो हाजत (जरूरत) से ज्यादा हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है ताकि तुम ध्यान करो दुनिया और आख़िरत के मामलों में। और वे तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो वह बेहतर है। और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को मालूम है कि कौन ख़राबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता। अल्लाह जबरदस्त है तदबीर वाला है। (219-220)

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएं और मोमिन कनीज (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी मालूम हो। और अपनी औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएं, मोमिन ग़ुलाम बेहतर

है एक आजाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा मालूम हो। ये लोग आग की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और अपनी बख़्शिश की तरफ बुलाता है। वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़ें। और वे तुमसे हैज (मासिक धर्म) का हुक्म पूछते हैं। कह दो कि वह एक गंदगी है, इसमें औरतों से अलग रहो। और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके करीब न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीके से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें जरूर उससे मिलना है। और ईमान वालो को ख़ुशख़बरी दे दो।(221-223)

और अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेजगारी न करो और लोगों के दर्मियान सुलह न करो। अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी बेइरादा कसमों पर तुम को नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (धैर्य) वाला है। जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की कसम खा लें उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ करने वाला, महरबान है। और अगर वे तलाक का फैसला करें तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। और तलाक दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज तक रोके रखें। और अगर वे अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज नहीं कि वे उस चीज को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें। और इन औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक उसी तरह हुक़ूक़ हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक उन पर जिम्मेदारियां हैं। और मर्दों का उनके मुक़ाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है। और अल्लाह जबरदस्त है, तदबीर वाला है। (224-228)

तलाक दो बार है। फिर या तो क़ायदे के मुताबिक रख लेना है या ख़ुशउस्लूबी के साथ रुख़्सत कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात जाइज नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है उसमें से कुछ ले लो मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फिदये में दे। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो। और जो शख़्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग जालिम हैं। फिर अगर वह उसे तलाक दे दे तो इसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर अगर वह मर्द उसे तलाक दे दे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएं बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर कायम रहने की

उम्मीद हो। ये ख़ुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं। और जब तुम औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुंच जाएं तो उन्हें या तो क़ायदे के मुताबिक रख लो या क़ायदे के मुताबिक रुख़्सत कर दो। और तकलीफ पहुंचाने की ग़र्ज से न रोको ताकि उन पर ज्यादती करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारी है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (229-231)

और जब तुम अपनी औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन्हें न रोको कि वे अपने शोहरों से निकाह कर लें। जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राजी हो जाएं। यह नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुममें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता हो। यह तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा और सुथरा तरीक़ा है। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है उसके जिम्मे है इन मांओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक। किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफ़िक। न किसी मां को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ दी जाए। और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से। और यही जिम्मेदारी वारिस पर भी है। फिर अगर दोनों आपसी रजामंदी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। बशर्ते कि तुम क़ायदे के मुताबिक वह अदा कर दो जो तुमने उन्हें देना ठहराया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (232-233)

और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वे बीवियां अपने आप को चार महीने दस दिन तक इंतजार में रखें। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंचें तो जो कुछ वे अपने बारे में क़ायदे के मुवाफ़िक़ करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है। और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैग़ाम देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम जरूर इनका ध्यान करोगे। मगर छुपकर इनसे वादा न करो, तुम इनसे सिर्फ दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह सकते हो। और निकाह का इरादा उस वक्त तक न करो जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (संयम) वाला है। अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक दो कि न इन्हें तुमने हाथ लगाया है और इनके

लिए कुछ महर मुक़र्रर किया है तो इनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िज़ा (देय) नहीं। अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक कुछ सामान दे दो, वुस्अत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक, यह नेकी करने वालों पर लाजिम है। और अगर तुम उन्हें तलाक दो इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुक़र्रर किया हो उसका आधा अदा करो। यह और बात है यह कि वे माफ कर दें या वह मर्द माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है। और तुम्हारा माफ कर देना ज्यादा क़रीब है तक़्वा से। और आपस में एहसान करने से ग़फलत मत करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (234-237)

पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की। और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिज बने हुए। अगर तुम्हें अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पढ़ लो। फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीके से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। और तुममें से जो लोग वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें घर में रखकर ख़र्च दिया जाए। फिर अगर वे ख़ुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक करें उसका तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। और तलाक दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक ख़र्च देना है, यह लाजिम है परहेजगारों के लिए। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझो। (238-242)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हजारों की तादाद में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने इन्हें जिंदा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर फज्ल करने वाला है। मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को कर्ज़े हसन दे कि अल्लाह इसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे। और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी। और तुम सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (243-245)

क्या तुमने बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा के बाद, जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें। नबी ने जवाब दिया : ऐसा न हो कि तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए तब तुम न लड़ो। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में। हालांकि हमें अपने घरों से निकाला गया है और अपने बच्चों से जुदा किया गया है। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह जालिमों को ख़ूब जानता है। और उनके नबी ने उनसे कहा : अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुक़र्रर किया है।

उन्होंने कहा कि उसे हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है। हालांकि उसके मुकाबले में हम बादशाही के ज्यादा हक़दार हैं। और उसे ज्यादा दौलत भी हासिल नहीं। नबी ने कहा अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसे चुना है और इल्म और जिस्म में उसे ज्यादती दी है। और अल्लाह अपनी सल्तनत जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ी वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। और उनके नबी ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे लिए तस्कीन है। और मूसा के समुदाय और हारून के समुदाय छोड़ी हुई यादगारें हैं। इस संदूक को फरिश्ते ले आएंगे इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, अगर तुम यकीन रखने वाले हो। (246-248)

फिर जब तालूत फौजों को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह तुम्हें एक नदी के जरिए आजमाने वाला है। पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा वह मेरा साथी है। मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने इसमें से ख़ूब पिया सिवाए थोड़े आदमियों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर कायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो वे लोग बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फौजों से लड़ने की ताकत नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जब जालूत और उसकी फौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : कि ऐ हमारे रब हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे कदमों को जमा दे और इन मुंकिरों के मुकाबले में हमारी मदद कर। फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी। और दाऊद ने जालूत को कत्ल कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सूझबूझ) अता की और जिन चीजों का चाहा इल्म बख़्शा। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के जरिए हटाता न रहे तो जमीन फसाद से भर जाए। मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फ़ज्ल फ़रमाने वाला है। (249-251)

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक-ठीक। और बेशक तू पैग़म्बरों में से है इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फजीलत दी। इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया। और कुछ के दर्जे बुलंद किए। और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल कुदुस से। अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते मगर उन्होंने मतभेद किया। फिर इनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इंकार किया। और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते। मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (252-253)

ऐ ईमान वालो ख़र्च करो उन चीजों से जो हमने तुम्हें दिया है उस दिन के आने से पहले जिसमें न ख़रीद-फरोख़्त है और न दोस्ती है और न सिफारिश। और जो इंकार करने वाले हैं वही हैं जुल्म करने वाले। अल्लाह, इसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह जिंदा है,

सबको थामने वाला। उसे न ऊंघ आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कौन है जो उसके पास उसकी इजाजत के बग़ैर सिफ़ारिश करे। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके इल्म में से किसी चीज का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे। उसकी हुकूमत आसमानों और जमीन में छाई हुई है। वह थकता नहीं इनके थामने से। और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा। दीन के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है। पस जो शख़्स शैतान का इंकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने मजबूत हल्का पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (254-257)

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की। क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। वह बोला कि मैं भी जिलाता हूं और मारता हूं। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है तुम उसे पश्चिम से निकाल दो। तब वह मुंकिर हैरान रह गया। और अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

या जैसे वह शख़्स जिसका गुजर एक बस्ती पर से हुआ। और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : हलाक हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे जिंदा करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी। फिर उसे उठाया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे। उसने कहा एक दिन या एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब तुम अपने खाने पीने की चीजों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की तरफ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। पस जब उस पर वाजेह हो गया तो कहा मैं जानता हूं कि बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखता है। और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह जिंदा करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यकीन नहीं किया। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए। फरमाया तुम चार परिंदे लो और उन्हें अपने से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ। वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे। और जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (259-260)

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके

लिए चाहता है। और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ पहुंचाते हैं उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे ग़मग़ीन होंगे। मुनासिब बात कह देना और दरगुजर (क्षमा) करना उस सदके से बेहतर है जिसके पीछे सताना हो। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तहम्मुल (संयम) वाला है। ऐ ईमान वालो एहसान रख कर और सता कर अपने सदके को जाया न करो, जिस तरह वह शख़्स जो अपना माल दिखावे के लिए ख़र्च करता है और वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर जोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं लगेगी। और अल्लाह इंकार करने वालों को राह नहीं दिखाता। (261-264)

और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए और अपने नफ्स में पुख़्तगी के लिए ख़र्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो। उस पर ज़ोर की बारिश पड़ी तो वह दुगना फल लाया। और अगर ज़ोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर किस्म के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमजोर हों। तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियां बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो। (265-266)

ऐ ईमान वालो ख़र्च करो उम्दा चीज को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए जमीन में से पैदा किया है। और घटिया चीज का इरादा न करो कि उसमें से ख़र्च करो। हालांकि तुम कभी इसे लेने वाले नहीं, यह और बात है कि चश्मपोशी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फज़्ल का और अल्लाह वुस्अत (व्यापकता) वाला है, जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिक्मत दे देता है और जिसे हिक्मत मिली उसे बड़ी दौलत मिल गई। और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (267-269)

और तुम जो ख़र्च करते हो या जो नज़्र (मन्नत) मानते हो उसे अल्लाह जानता है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम अपने सदक़ात जाहिर करके दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाकिफ है। उन्हें

हिदायत पर लाना तुम्हारा जिम्मा नहीं। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो माल तुम ख़र्च करोगे अपने ही लिए करोगे। और तुम न ख़र्च करो मगर अल्लाह की रिजा चाहने के लिए। और तुम जो माल ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे लिए इसमें कमी नहीं की जाएगी। ये उन हाजतमंदों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, जमीन में दौड़ धूप नहीं कर सकते। नावाकिफ आदमी उन्हें ग़नी ख़्याल करता है उनके न मांगने की वजह से। तुम उन्हें उनकी सूरत में पहचान सकते हो। वे लोगों से लिपट कर नहीं मांगते। और जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है। जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है। और उनके लिए न ख़ौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। (270-274)

जो लोग सूद खाते हैं वे कियामत में न उठेंगे मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर ख़बती बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हराम किया है। फिर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ से नसीहत पहुंची और वह इससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो शख़्स फिर वही करे तो वही लोग दोजख़ी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और सदकात को बढ़ाता है। और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और नमाज की पाबंदी की और जकात अदा की, उनके लिए उनका अज्र है उनके रब के पास। उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (275-277)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद बाकी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से लड़ाई के लिए ख़बरदार हो जाओ। और अगर तुम तौबा कर लो तो अस्ल रकम के तुम हकदार हो, न तुम किसी पर जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए। और अगर एक शख़्स तंगी वाला है तो उसकी फराख़ी तक मोहलत दो। और अगर माफ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ पूरा-पूरा मिल जाएगा। और उन पर जुल्म न होगा। (278-281)

ऐ ईमान वालो, जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेनेदेन करो तो उसे लिख लिया करो। और इसे लिखे तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला इंसाफ के साथ। और लिखने वाला लिखने से इंकान न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे। और वह शख़्स लिखवाए जिस पर अदायगी का हक आता है। और वह डरे

अल्लाह से जो उसका रब है और इसमें कोई कमी न करे। और अगर वह शख़्स जिस पर अदायगी का हक आता है बेसमझ हो, या कमजोर हो या ख़ुद लिखवाने की क़ुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका वली (संरक्षक) इंसाफ के साथ लिखवा दे। और अपने मर्दों में से दो आदमियों को गवाह कर लो। और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिन्हें तुम पसंद करते हो। ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। और गवाह इंकार न करें जब वे बुलाए जाएं। और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद (अवधि) के निर्धारण के साथ इसे लिखने में काहिली न करो। यह लिख लेना अल्लाह के नज़्दीक ज्यादा इंसाफ का तरीका है और गवाही को ज्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज्यादा संभावना है कि तुम शुबह में न पड़ो। लेकिन अगर कोई सौदा नकद हो जिसका तुम आपस में लेनदेन किया करते हो तुम पर कोई इल्जाम नहीं कि तुम उसे न लिखो। मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ न पहुंचाई जाए। और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह से डरो अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम सफर में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो रहन (गिरवी) रखने की चीजें कब्जे में दे दी जाएं। और अगर एक दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया वह एतबार को पूरा करे। और अल्लाह से डरे जो उसका रब है। और गवाही को न छुपाओ और जो शख़्स छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है। (282-283)

अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। तुम अपने दिल की बातों को जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सजा देगा। और अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है। रसूल ईमान लाया है उस पर जो उसके रब की तरफ से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं। सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते। और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब। और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी पर जिम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताकत के मुताबिक। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे रब हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम ग़लती कर जाएं। ऐ हमारे रब हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हम से अगलों पर। ऐ हमारे रब हमसे वह न उठवा जिसकी ताकत हम में नहीं। और दरगुजर कर हम से। और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर। तू हमारा कारसाज है। पस इंकार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर। (284-286)

सूरह-3. आले-इमरान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिंदा और सबका थामने वाला। उसने तुम पर किताब उतारी हक के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज को जो उसके आगे है और उसने तौरात और इंजील उतारी इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और अल्लाह ने फ़ुरक़ान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया उनके लिए सख़्त अजाब है और अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। बेशक अल्लाह से कोई चीज छुपी हुई नहीं न जमीन में और न आसमान में। वही तुम्हारी सूरत बनाता है मां के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1-6)

वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। इसमें कुछ आयतें मोहकम (सुदृढ़, सुस्पष्ट) हैं, वे किताब की अस्ल हैं। और दूसरी आयतें मुताशाबह (संदेहास्पद, अस्पष्ट) हैं। पस जिनके दिलों में टेढ़ है वे मुताशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फितने की तलाश में और इनके अर्थों की तलाश में। हालांकि इनका अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए। सब हमारे रब की तरफ से है। और नसीहत वही लोग कुबूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमें हिदायत दे चुका। और हमें अपने पास से रहमत दे। बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। ऐ हमारे रब, तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुबह नहीं। बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ नहीं करता। (7-9)

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे। इनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फिरऔन वालों का और इनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। इस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। इंकार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बद्र में) मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिर था। ये मुंकिर खुली आंखों से उन्हें दुगना देखते थे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का जोर दे देता है। इसमें आंख वालों के लिए बड़ा सबक है। (10-13)

लोगों के लिए ख़ुशनुमा कर दी गई है मुहब्बत ख़्वाहिशों की औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये दुनियावी जिंदगी के सामान हैं। और

अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊं इससे बेहतर चीज। उन लोगों के लिए जो डरते हैं, उनके रब के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे इनमें हमेशा रहेंगे। और सुथरी बीवियां होंगी और अल्लाह की रिजामंदी होगी। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, जो कहते हैं ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए। पस तू हमारे गुनाहों को माफ कर दे और हमें आग के अजाब से बचा। वे सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं, फरमांबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को मग़्फिरत (क्षमा) मांगने वाले हैं। (14-17)

अल्लाह की गवाही है और फरिश्तों की और अहलेइल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह कायम रखने वाला है इंसाफ का। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। दीन अल्लाह के नजदीक सिर्फ इस्लाम है। और अहले किताब ने इसमें जो इख़्तेलाफ (मतभेद) किया वह आपस की जिद की वजह से किया, बाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुंच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों का इंकार करे तो अल्लाह यकीनन जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुम से इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख़ अल्लाह की तरफ कर चुका। और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी। और अहले किताब से और अनपढ़ों से पूछो, क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो। अगर वे इस्लाम लाएं तो उन्होंने राह पा ली। और अगर वे फिर जाएं तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे। जो लोग अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हैं और पैग़म्बरों को नाहक कत्ल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसाफ की दावत लेकर उठते हैं, इन्हें एक दर्दनाक सजा की ख़ुशख़बरी दे दो। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में जाये (विनष्ट) हो गए और उनका मददगार कोई नहीं। (18-22)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था। उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दर्मियान फैसला करे। फिर उनका एक गिरोह मुंह फेर लेता है बेरुख़ी करते हुए। यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज आग न छुऐगी सिवाए गिने हुए कुछ दिनों के। और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है। फिर उस वक्त क्या होगा जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं। और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया है, इसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। तुम कहो, ऐ अल्लाह, सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले। और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील करे। तेरे हाथ में है सब ख़ूबी। बेशक तू हर चीज पर कादिर है। तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क देता है। (23-27)

मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर हक का इंकार करने वालों को दोस्त न बनाएं। और जो शख़्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई तअल्लुक नहीं। मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है। कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसे छुपाओ या जाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी। उस दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महरबान है। कहो, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा। अल्लाह बड़ा माफ करने वाला, बड़ा महरबान है। कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो अल्लाह हक का इंकार करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (28-32)

बेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सारे आलम के ऊपर मुंतख़ब किया है। ये एक-दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब मैंने नज़्र (अर्पित) किया तेरे लिए जो मेरे पेट में है वह आजाद रखा जाएगा। पस तू मुझसे कुबूल कर बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। फिर जब उसने बच्चा जन्मा तो उसने कहा ऐ मेरे रब मैंने तो लड़की को जन्मा है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्मा है और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद। और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूं। पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह कुबूल किया और उसे उम्दा तरीके से परवान चढ़ाया और जकरिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी जकरिया उनके पास हुजरे में आता तो वहां रिज़्क पाता। उसने पूछा ऐ मरयम ये चीज तुम्हें कहां से मिलती है मरयम ने कहा यह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज़्क दे देता है। उस वक्त जकरिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे रब मुझे अपने पास से पाकीजा औलाद अता कर बेशक तू दुआ का सुनने वाला है। फिर फरिश्तों ने उसे आवाज दी जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहिया की ख़ुशख़बरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नफ्स को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेकों में से। जकरिया ने कहा ऐ मेरे रब मेरे लड़का किस तरह होगा हालांकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है। फरमाया उसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर कर दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों

से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो। और जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम अल्लाह ने तुम्हें मुंतख़ब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुकाबले में मुंतख़ब किया है (चुना है)। ऐ मरयम अपने रब की फरमांबरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। यह ग़ैब की ख़बरे हैं जो हम तुम्हें 'वही' (अवतरित) कर रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने कुरअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करे और न तुम उस वक्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (33-44)

जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी तरफ से एक कलिमे की। उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया और आख़िरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुकर्रब बंदों में होगा। वह लोगों से बातें करेगा जब मां की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा। और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा। मरयम ने कहा ऐ मेरे रब, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया। फरमाया उसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है। और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखाएगा और वह रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूं। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की आकृति बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से वाकई परिंदा बन जाती है। और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूं। और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को जिंदा करता हूं। और मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या जख़ीरा करते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। और मैं तस्दीक करने वाला हूं तौरात की जो मुझ से पहले की है और मैं इसलिए आया हूं कि कुछ उन चीजों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊं जो तुम पर हराम कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से निशानी लेकर आया हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी। पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है। (45-51)

फिर जब ईसा ने उनका इंकार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्लाह की राह में। हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार। हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फरमांबरदार हैं। ऐ हमारे रब हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की। पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में। और उन्होंने ख़ुफिया तदबीर की और अल्लाह ने भी ख़ुफिया तदबीर की। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूं और तुम्हें

अपनी तरफ उठा लेने वाला हूं और जिन लोगों ने इंकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूं। और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें कियामत तक उन लोगों पर ग़ालिब करने वाला हूं जिन्होंने तुम्हारा इंकार किया है। फिर मेरी तरफ होगी सबकी वापसी। पस मैं तुम्हारे दर्मियान उन चीजों के बारे में फैसला करूंगा जिनमें तुम झगड़ते थे। फिर जो लोग मुंकिर हुए उन्हें सख़्त अजाब दूंगा दुनिया में और आख़िरत में और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज्र देगा और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिकमत भरी बातें। (52-58)

बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नजदीक आदम की-सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। हक बात है तेरे रब की तरफ से। पस तुम न हो शक करने वालों में। फिर जो तुमसे इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम ख़ुद भी जमा हों। फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो। बेशक यह सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अगर वे कुबूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालों को जानता है। (59-63)

कहो ऐ अहले किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुसल्लम (साझी) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं। और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर अगर वे इससे मुंह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फरमांबरदार हैं। ऐ अहले किताब, तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। हालांकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। क्या तुम इसे नहीं समझते। तुम वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़े जिसका तुम्हें कुछ इल्म था। अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी। बल्कि सिर्फ़ अल्लाह का ही रहे वाला मुस्लिम था और वह शिर्क करने वालों में से न था। लोगों में ज्यादा मुनासिबत इब्राहीम से उन्हें है जिन्होंने उसकी पैरवी की और यह पैग़म्बर और जो उस पर ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का साथी है। अहले किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे। हालांकि वे नहीं गुमराह करते मगर ख़ुद अपने आपको। मगर वे इसका एहसास नहीं करते। ऐ अहले किताब, अल्लाह की निशानियों का क्यों इंकार करते हो हालांकि तुम गवाह हो। ऐ अहले किताब, तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (64-71)

और अहले किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज उतारी गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी इससे

फिर जाएं। और यकीन न करो मगर सिर्फ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर। कहो हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे। और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था। या वे तुमसे तुम्हारे रब के यहां हुज्जत करें। कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा वुस्अत वाला है, इल्म वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है। और अल्लाह बड़ा फज़्ल वाला है। और अहले किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे। और इनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर-अहले किताब के बारे में हम पर कोई इल्ज़ाम नहीं। और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं हालांकि वे जानते हैं। बल्कि जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुत्तकियों को दोस्त रखता है। (72-76)

जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ देखेगा कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा। और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी जबानों को किताब में मोड़ते हैं ताकि तुम उसे किताब में से समझो हालांकि वह किताब में से नहीं। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है हालांकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं। और वे जान कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबुव्वत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो। और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फरिश्तों और पैग़म्बरों को रब बनाओ। क्या वह तुम्हें कुफ्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो। (77-80)

और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों का अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत दी, फिर तुम्हारे पास पैग़म्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशेनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे। अल्लाह ने कहा क्या तुमने इकरार किया और उस पर मेरा अहद क़ुबूल किया। उन्होंने कहा हम इकरार करते हैं। फरमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं। पस जो शख़्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं। हालांकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और जमीन में है, ख़ुशी से या नाख़ुशी से और सब उसी की तरफ लौटाए जाएंगे। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर इस्माईल पर इस्हाक पर और

याकूब पर और याकूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनके दर्मियान फर्क नहीं करते। और हम उसी के फरमांबरदार हैं। और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज क़ुबूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में नामुरादों में से होगा। अल्लाह क्योंकर ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए। हालांकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक है और उनके पास रोशन निशानियां आ चुकी हैं। और अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। ऐसे लोगों की सजा यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फरिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी। वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। अलबत्ता जो लोग इसके बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए फिर कुफ्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज क़ुबूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और इंकार की हालत में मर गए, अगर वे जमीन भर सोना भी फिद्ये में दें तो क़ुबूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दर्दनाक अजाब है और उनका कोई मददगार न होगा। (81-91)

तुम हरगिज नेकी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकते जब तक तुम उन चीजों में से ख़र्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो। और जो चीज भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है। सब खाने की चीजें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें वही जालिम हैं। कहो अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ था और वह शिर्क करने वाला न था। बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मर्कज़। इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मकामे इब्राहीम है, जो इसमें दाख़िल हो जाए वह मामून (सुरक्षित) है। और लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जो इस घर तक पहुंचने की ताकत रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई मुंकिर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज है। कहो ऐ अहले किताब तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हो। हालांकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। कहो ऐ अहले किताब तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो। तुम उसमें ऐब ढूंढते हो। हालांकि तुम गवाह बनाए गए हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (92-99)

ऐ ईमान वालो अगर तुम अहले किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुंकिर बना देंगे। और तुम किस तरह इंकार करोगे हालांकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दर्मियान उसका रसूल मौजूद है। और जो शख़्स

अल्लाह को मजबूती से पकड़ेगा तो वह पहुंच गया सीधी राह पर। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी। पस तुम उसके फ़ज़्ल से भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां बयान करता है ताकि तुम राह पाओ। (100-103)

और जरूर है कि तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िरक़ों में बंट गए और आपस में इख़्तेलाफ़ (मतभेद) कर लिया बाद इसके कि उनके पास वाजेह हुक्म आ चुके थे। और उनके लिए बड़ा अजाब है। जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा क्या तुम अपने ईमान के बाद मुंकिर हो गए, तो अब चखो अजाब अपने कुफ़्र के सबब से। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म नहीं चाहता। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे। (104-109)

अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। इनमें से कुछ ईमान वाले हैं और इनमें अक्सर नाफ़रमान हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना। और अगर वे तुमसे मुक़ाबला करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएंगे। फिर उन्हें मदद भी न पहुंचेगी और उन पर मुसल्लत कर दी गई जिल्लत चाहे वे कहीं भी पाए जाएं, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़जब के मुस्तहिक हो गए और उन पर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक कत्ल किया। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से निकल जाते थे। (110-112)

सब अहले किताब एक जैसे नहीं। इनमें एक गिरोह अहद पर कायम है। वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं। वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं। ये सालेह (नेक) लोग हैं जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेजगारों को ख़ूब जानता है। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में

उनके माल और औलाद उनके कुछ काम न आएंगे। और वे लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे इस दुनिया की जिंदगी में जो कुछ ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे। अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (113-117)

ऐ ईमान वालो, अपने ग़ैर को अपना राजदार न बनाओ, वे तुम्हें नुक्सान पहुंचाने में कोई कमी नहीं करते। उन्हें ख़ुशी होती है तुम जितनी तकलीफ पाओ। उनकी अदावत उनकी जबान से निकल पड़ती है जो उनके दिलों में है वह इससे भी सख़्त है, हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोल कर जाहिर कर दीं हैं अगर तुम अक्ल रखते हो। तुम उनसे मुहब्बत रखते हो मगर वे तुमसे मुहब्बत नहीं रखते। हालांकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो। और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर ग़ुस्से से उंगलियां काटते हैं। कहो कि तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ। बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है। अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें रंज होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे इससे ख़ुश होते हैं। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम्हें कोई नुक्सान न पहुंचा सकेगी। जो कुछ वे कर रहे हैं सब अल्लाह के बस में है। (118-120)

जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और मुसलमानों को जंग के मकामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों जमाअतों पर मददगार था। और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें। और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बद्र में जबकि तुम कमजोर थे। पस अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुजार रहो। जब तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हजार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे। अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुंचे तो तुम्हारा रब पांच हजार निशान किए हुए फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और यह अल्लाह ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिल इससे मुतमइन हो जाएं और मदद सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से है जो जबरदस्त है, हिक्मत वाला है, ताकि अल्लाह मुंकिरों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें जलील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएं। तुम्हें इस मामले में कोई दख़ल नहीं। अल्लाह इनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अजाब दे, क्योंकि वे जालिम हैं। और अल्लाह ही के इख़्तियार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है। वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अजाब दे और अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है। (121-129)

ऐ ईमान वालो, सूद कई-कई हिस्सा बढ़ाकर न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम

कामयाब हो। और डरो उस आग से जो मुंकिरों के लिए तैयार की गई है। और अल्लाह और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ और उस जन्नत की तरफ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और जमीन जैसी है। वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। जो लोग कि ख़र्च करते हैं फराग़त और तंगी में। वे ग़ुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों से दरगुजर करने वाले हैं। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। और ऐसे लोग कि जब वे कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई जुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफी मांगें। अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ करे और वे जानते बूझते अपने किए पर इसरार नहीं करते। ये लोग हैं कि इनका बदला उनके रब की तरफ से मग़्फिरत (क्षमा, मुक्ति) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। इनमें वे हमेशा रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का। तुमसे पहले बहुत-सी मिसालें गुजर चुकी हैं तो जमीन में चल-फिर कर देखो कि क्या अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए। (130-138)

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम्हें कोई जख़्म पहुंचे तो दुश्मन को भी वैसा ही जख़्म पहुंचा है। और हम इन दिनों को लोगों के दर्मियान बदलते रहते हैं। ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाए और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छांट ले और इंकार करने वालों को मिटा दे। क्या तुम ख़्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने जिहाद किया और न उन्हें जो साबितकदम रहने वाले हैं। और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे मिलने से पहले, सो अब तुमने इसे खुली आंखों से देख लिया। (139-143)

मुहम्मद बस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुजर चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे। और जो शख़्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुजारों को बदला देगा। और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के। अल्लाह का लिखा हुआ वादा है। और जो शख़्स दुनिया का फायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आख़िरत का फायदा चाहता है उसे हम आख़िरत में से दे देते हैं। और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला जरूर अता करेंगे। और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की। अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमजोरी दिखाई। और न वे दबे। और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। उनकी जबान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज्यादती हुई उसे माफ फरमा और हमें साबितक़दम रख और मुंकिर क़ौम के

मुक़ाबले में हमारी मदद फरमा। पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (144-148)

ऐ ईमान वालो अगर तुम मुंकिरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उल्टे पैरों फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे। बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। हम मुंकिरों के दिलों में तुम्हारा रौब डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है जालिमों के लिए। और अल्लाह ने तुमसे अपने वादे को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से कत्ल कर रहे थे। यहां तक कि जब तुम ख़ुद कमजोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और तुम कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज दिखा दी थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे और तुममें से कुछ आख़िरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख़ उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया और अल्लाह ईमान वालो के हक में बड़ा फज्ल वाला है। जब तुम चढ़े जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह ख़बरदार है जो कुछ तुम करते हो। (149-153)

फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर ग़म के बाद इत्मीनान उतारा यानी ऊंघ कि इसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उसे अपनी जानों कि फ़िक्र पड़ी हुई थी। वे अल्लाह के बारे में हक़ीक़त के ख़िलाफ ख़्यालात, जाहिलियत के ख़्यालात कायम कर रहे थे। वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इख़्तियार है। कहो सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है। वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर जाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दख़ल होता तो हम यहां न मारे जाते। कहो अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका कत्ल होना लिख गया था वे अपनी क़त्लगाहों की तरफ निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आजमाना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को। तुममें से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई इन्हें शैतान ने इनके कुछ आमाल के सबब से फिसला दिया था। अल्लाह ने इन्हें माफ कर दिया। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (154-155)

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इंकार किया। वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफर या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम

करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। और तुम मर गए या मारे गए बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो। अगर तुम तुंदख़ू (कठोर) और सख़्त दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। पस इन्हें माफ कर दो और इनके लिए मग़्फ़िरत मांगो और मामलात में इनसे मश्विरा लो। फिर जब फैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को। (156-160)

और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज को क़ियामत के दिन हाजिर करेगा। फिर हर जान को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ ज़ुल्म न होगा। क्या वह शख़्स जो अल्लाह की मर्जी का ताबेअ (अधीन) है वह उस शख़्स की तरह हो जाएगा जो अल्लाह का ग़जब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहां उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं। अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है। बेशक ये इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (161-164)

और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिसकी दुगनी मुसीबत तुम पहुंचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहां से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह अल्लाह के हुक्म से पहुंची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले और उन्हें भी जान ले जो मुनाफ़िक़ (पाखंडी) थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ। उन्होंने कहा अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। ये लोग उस दिन ईमान से ज्यादा कुफ्र के करीब थे। वे अपने मुंह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज को ख़ूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं। ये लोग जो ख़ुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (165-168)

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने रब के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है। वे ख़ुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फज्ल में से उन्हें दिया है और ख़ुशख़बरी ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं

उनके लिए भी न कोई ख़ौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। वे ख़ुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम और फज्ल पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र जाये नहीं करता। जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना बाद इसके कि उन्हें जख़्म लग चुका था, इनमें से जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा अज्र है जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे ख़िलाफ बड़ी ताक़त जमा कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज ने उनके ईमान में और इजाफा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह बेहतरीन कारसाज है। पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फज्ल के साथ वापस आए। इन लोगों को कोई बुराई पेश न आयी। और वे अल्लाह की रिजामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फज्ल वाला है। यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के जरिए डराता है। तुम उनसे न डरो बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (169-175)

और वे लोग तुम्हारे लिए ग़म का सबब न बनें जो इंकार में सबकत (तत्परता, जल्दी) कर रहे हैं। वे अल्लाह को हरगिज कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे। उनके लिए बड़ा अजाब है। जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ्र को ख़रीदा है वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और जो लोग कुफ्र कर रहे हैं यह ख़्याल न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं यह उनके हक में बेहतर है। हम तो बस इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वे जुर्म में और बढ़ जाएं और उनके लिए जलील करने वाला अजाब है। अल्लाह वह नहीं कि मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो जब तक कि वह नापाक को पाक से जुदा न कर ले। और अल्लाह यूं नहीं कि तुम्हें ग़ैब से ख़बरदार कर दे। बल्कि अल्लाह छांट लेता है अपने रसूलों में जिसे चाहता है। पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। और अगर तुम ईमान लाओ और परहेजगारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा अज्र है। (176-179)

और जो लोग बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं उस चीज में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फज्ल में से दिया है वे हरगिज यह न समझें कि यह उनके हक में अच्छा है। बल्कि यह उनके हक में बहुत बुरा है जिस चीज में वे बुख़्ल कर रहे हैं उसका कियामत के दिन उन्हें तौक पहनाया जाएगा। और अल्लाह ही वारिस है जमीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। अल्लाह ने उन लोगों का कौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी हैं। हम लिख लेंगे उनके इस कौल को और उनके पैग़म्बरों को नाहक मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग का अजाब चखो। यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइंसाफी करने वाला नहीं। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्लीम न करें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझसे पहले

तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियां लेकर और वह चीज लेकर जिसे तुम कह रहे हो फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियां और सहीफे और रोशन किताब लेकर आए थे। हर शख़्स को मौत का मजा चखना है और तुम्हें पूरा अज्र तो बस क़ियामत के दिन मिलेगा। पस जो शख़्स आग से बच जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की जिंदगी तो बस धोखे का सौदा है। (180-185)

यक़ीनन तुम अपने जान व माल में आजमाए जाओगे। और तुम बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया। और अगर तुम सब्र करो और तक़वा इख़्तियार करो तो यह बड़े हौसले का काम है। और जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम ख़ुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए जाहिर करोगे और उसे नहीं छुपाओगे। मगर उन्होंने इसे पीठ पीछे डाल दिया और इसे थोड़ी क़ीमत पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज है जिसे वे ख़रीद रहे हैं। जो लोग अपने इन करतूतों पर ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उस पर उनकी तारीफ हो, उन्हें अजाब से बरी न समझो। उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और अल्लाह ही के लिए है जमीन और आसमान की बादशाही, और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (186-189)

आसमानों और जमीन की पैदाइश और रात दिन के बारी-बारी आने में अक़्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और जमीन की पैदाइश पर ग़ौर करते रहते हैं। वे कह उठते हैं ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमक्सद नहीं बनाया है। तू पाक है, पस हमें आग के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाक़ई रुसवा कर दिया। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। पस हम ईमान लाए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलों के जरिए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ करने वाला नहीं है। (190-194)

उनके रब ने उनकी दुआ क़ुबूल फरमाई कि मैं तुममें से किसी का अमल जाये करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए उनकी ख़ताएं जरूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहां और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है। और मुल्क के अंदर मुंकिरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें यह थोड़ा सा फायदा है। फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अलबत्ता जो लोग अपने

रब से डरते हैं उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ से उनकी मेजबानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। और बेशक अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले ख़ुद उनकी तरफ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच नहीं देते। उनका अज्र उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो, सब्र करो और मुक़ाबले में मजबूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे। (195-200)

सूरह-4. अन-निसा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और ख़बरदार रहो संबंधियों से। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। और यतीमों का माल उनके हवाले करो। और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों के मामले में इंसाफ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उन से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह कर लो। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम अद्ल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो कनीज (दासी) तुम्हारे अधीन हो। इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ से न हटोगे। और औरतों को उनके महर ख़ुशदिली के साथ अदा करो। फिर अगर वे इसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी ख़ुशी से तो तुम उसे हंसी-ख़ुशी से खाओ। (1-4)

और नादानों को अपना वह माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़ियाम का जरिया बनाया है और इस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। और यतीमों को जांचते रहो, यहां तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुंच जाएं तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो। और उनका माल अनुचित तरीके से और इस ख़्याल से कि वे बड़े हो जाएंगे न खा जाओ। और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज करे और जो शख़्स मोहताज हो वह दस्तूर के मुवाफ़िक़ खाए। फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उन पर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) में से मर्दों का भी हिस्सा है। और मां-बाप और रिश्तेदारों के तरके में से औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो या ज्यादा हो, एक मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा। और अगर तक़्सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और

मोहताज मौजूद हों तो इसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो। और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमजोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फ़िक्र रहती। पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे। (5-10)

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर औरतें दो से ज्यादा हैं तो उनके लिए दो तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मय्यत के मां-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है बशर्ते कि मूरिस के औलाद हो। और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके मां-बाप उसके वारिस हों तो उसकी मां का तिहाई है और अगर उसके भाई बहिन हों तो उसकी मां के लिए छठा हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या कर्ज की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा नफ़ा देने वाला कौन है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ फ़रीजा है। बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनके औलाद न हो। और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरके का चौथाई है वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएं या कर्ज की अदायगी के बाद। और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का अगर तुम्हारे औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारे औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज की अदायगी के बाद। और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसके न औलाद हो और न मां-बाप जिंदा हों, और उसके एक भाई या एक बहिन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है। और अगर वे इससे ज्यादा हों तो वे एक तिहाई में शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या कर्ज की अदायगी के बाद, बग़ैर किसी को नुक्सान पहुंचाए। यह हुक्म अल्लाह की तरफ से है और अल्लाह अलीम व हलीम है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसके मुकर्रर किए हुए जाब्तों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा उसे वह आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए जिल्लत वाला अजाब है। (11-14)

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उन पर अपनों में से चार मर्द गवाह करो। फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहां तक कि उन्हें

मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुंचाओ। फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें तो उनका ख़्याल छोड़ दो। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला महरबान है। तौबा जिसे कुबूल करना अल्लाह के जिम्मे है वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह कुबूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहां तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूं, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुंकिर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (15-18)

ऐ ईमान वालो तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम औरतों को जबरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस ग़रज से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें। और उनके साथ अच्छी तरह गुजर-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज तुम्हें पसंद न हो मगर अल्लाह ने इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम इसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह जुल्म करके वापस लोगे। और तुम किस तरह उसे लोगे जबकि एक दूसरे से ख़लवत कर चुका है और वे तुमसे पुख़्ता अहद ले चुकी हैं। और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका। बेशक यह बेहयाई है और नफरत की बात है और बहुत बुरा तरीक़ा है। (19-22)

तुम्हारे ऊपर हराम की गईं तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहिनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी ख़ालाएं, तुम्हारी भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहिनें, तुम्हारी औरतों की माएं और उनकी बेटियां जो तुम्हारी परवरिश में हैं जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। और तुम्हारे सुलबी (तुमसे पैदा) बेटों की बीवियां और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहिनों को मगर जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे हाथ आएं। यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर। इनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं बशर्ते कि तुम अपने माल के जरिए से उनके तालिब बनो, उनसे निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर। फिर उन औरतों में से जिन्हें तुम काम में लाए उन्हें उनको तैशुदा महर दे दो। और महर के ठहराने के बाद जो तुमने आपस में राजीनामा किया हो तो इसमें कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत

वाला है। और तुममें से जो शख़्स सामर्थ्य न रखता हो कि आजाद मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीजों (दासियों) में से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे कब्जे में हों और मोमिना हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम आपस में एक हो। पस उनके मालिकों की इजाजत से उनसे निकाह कर लो और मारूफ तरीके से उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि आजाद शहवतरानी करें और चोरी छुपे आशनाइयां करें। फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएं और इसके बाद वे बदकारी करें तो आजाद औरतों के लिए जो सजा है उसकी आधी सजा इन पर है। यह उसके लिए है जो तुममें से बदकारी का अंदेशा रखता हो। और अगर तुम जब्त (संयम) से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (23-25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीकों की हिदायत दे जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुम से बोझ को हल्का करे और इंसान कमजोर बनाया गया है। (26-28)

ऐ ईमान वालो, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक तौर पर न खाओ। मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से। और ख़ून न करो आपस में। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा महरबान है। और जो शख़्स सरकशी और जुल्म से ऐसा करेगा उसे हम जरूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ कर देंगे और तुम्हें इज्जत की जगह दाख़िल करेंगे। और तुम ऐसी चीज की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसका फ़ज्ल मांगो। बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। और हमने वालिदेन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज। (29-33)

मर्द औरतों के ऊपर कव्वाम (प्रमुख) हैं। इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस कारण कि मर्द ने अपने माल ख़र्च किए। पस जो नेक औरतें हैं वे फरमांबरदारी करने वाली, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफ़ाजत से। और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तंहा छोड़ दो और उन्हें सजा दो। पस अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके ख़िलाफ इल्जाम की राह

न तलाश करो। बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। और अगर तुम्हें मियां-बीवी के दर्मियान तअल्लुक़ात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो। अगर दोनों इस्लाह चाहेंगे तो अल्लाह उनके दर्मियान मुवाफिक़त कर देगा। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला ख़बरदार है। (34-35)

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज को उसका शरीक न बनाओ। और अच्छा सुलूक करो मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों और रिश्तेदार पड़ौसी और अजनबी पड़ौसी और पास बैठने वाले और मुसाफिर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बड़ाई करने वाले को जोकि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फ़ज्ल से दे रखा है उसे छुपाते हैं। और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है। उनका क्या नुक्सान था अगर वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह बाख़बर है। बेशक अल्लाह जरा भी किसी की हक़तलफ़ी नहीं करेगा। अगर नेकी हो तो वह उसे दुगना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है। (36-40)

फिर उस वक्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और तुम्हें उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। वे लोग जिन्होंने इंकार किया और पैग़म्बर की नाफरमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश जमीन उन पर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे। ऐ ईमान वालो, नजदीक न जाओ नमाज के जिस वक्त कि तुम नशे में हो यहां तक कि समझने लगो जो तुम कहते हो, और न उस वक्त कि ग़ुस्ल की हाजत हो मगर राह चलते हुए, यहां तक कि ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई शौच से आए या तुम औरतों के पास गए हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। (41-43)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था। वे गुमराही को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ। अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह काफ़ी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफ़ी है मदद के लिए। यहूद में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए। वे अपनी जबान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए। और अगर वे कहते कि हमने सुना और

माना, और सुनो और हम पर नजर करो तो यह उनके हक़ में ज्यादा बेहतर और दुरुस्त होता। मगर अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उन पर लानत कर दी है। पस वे ईमान न लाएंगे मगर बहुत कम। (44-46)

ऐ वे लोगो जिन्हें किताब दी गई उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तस्दीक करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ या उन पर लानत करें जैसे हमने लानत की सब्त वालों पर। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है। बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए। लेकिन इसके अलावा जो कुछ है उसे जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफ़ान बांधा। क्या तुमने देखा उन्हें जो अपने आपको पाकीजा कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ बांध रहे हैं और सरीह गुनाह होने के लिए यही काफ़ी है। (47-50)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे जिब्त (झूठी चीजों) और ताग़ूत को मानते हैं और मुंकिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमान वालों से ज्यादा सही रास्ते पर हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। क्या ख़ुदा के इक्तेदार (संप्रभुत्व) में कुछ इनका भी दख़ल है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें। क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फज्ल से दिया है। पस हमने आले इब्राहीम को किताब और हिक्मत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सल्तनत भी दे दी। उनमें से किसी ने इसे माना और कोई इससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफी है। बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इंकार किया उन्हें हम सख़्त आग में डालेंगे। जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे ताकि वे अजाब चखते रहें। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत वाला है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए सुथरी बीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे। (51-57)

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हकदारों को पहुंचा दो। और जब लोगों के दर्मियान फ़ैसला करो तो इंसाफ के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले इख़्तियार की इताअत करो। फिर अगर तुम्हारे दर्मियान किसी चीज में इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो

दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वे चाहते हैं कि विवाद ले जाएं शैतान की तरफ, हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर बहुत दूर डाल दे। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ और रसूल की तरफ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) तुमसे कतरा जाते हैं। फिर उस वक्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर पहुंचेगी, उस वक्त ये तुम्हारे पास कसमें खाते हुए आएंगे कि ख़ुदा की कसम हमें तो सिर्फ भलाई और मिलाप से ग़रज थी। उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे ख़ूब वाकिफ है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाए। (58-63)

और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए। और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफ़ी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफ़ी चाहता तो यकीनन वे अल्लाह को बख़्शने वाला रहम करने वाला पाते। पस तेरे रब की कसम वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फ़ैसला करने वाला न मान लें। फिर जो फ़ैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे ख़ुशी से कुबूल कर लें। और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते। और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती। और उस वक्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते। और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, यानी पैग़म्बर और सिद्दीक और शहीद और सालेह। कैसी अच्छी है उनकी रिफ़ाक़त। यह फज्ल है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह का इल्म काफ़ी है। (64-70)

ऐ ईमान वालो अपनी एहतियात कर लो फिर निकलो जुदा-जुदा या इकट्ठे होकर। और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था। और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फज्ल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दर्मियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहींकि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता। पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आख़िरत के बदले दुनिया की जिंदगी को बेच देते हैं। और जो शख़्स अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या ग़ालिब हो तो हम उसे बड़ा अज्र देंगे। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमजोर मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ख़ुदाया हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिंदे जालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से

कोई मददगार खड़ा कर दे। जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुंकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो। बेशक शैतान की चाल बहुत कमजोर है। (71-76)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज क़ायम करो और ज़कात दो। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या इससे भी ज्यादा। वे कहते हैं ऐ हमारे रब, तूने हम पर लड़ाई क्यों फर्ज कर दी। क्यों न छोड़े रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक। कह दो कि दुनिया का फायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उसके लिए जो परहेजगारी करे, और तुम्हारे साथ जरा भी जुल्म न होगा। और तुम जहां भी होगे मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम मजबूत किलों में हो। अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ से है। इन लोगों का क्या हाल है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। तुम्हें जो भलाई भी पहुंचती है ख़ुदा की तरफ से पहुंचती है और तुम्हें जो बुराई पहुंचती है वह तुम्हारे अपने ही सबब से है। और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफी है। (77-79)

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुम्हें निगरां बना कर नहीं भेजा है ओर ये लोग कहते हैं कि हमें क़ुबूल है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके ख़िलाफ मश्विरा करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कुकृत्यों) को लिख रहा है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। क्या ये लोग क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इख़्तेलाफ (मतभेद) पाते। और जब उन्हें कोई बात अम्न या ख़ौफ की पहुंचती है तो वह उसे फैला देते हैं। और अगर वे उसे रसूल तक या अपने जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो उनमें से जो लोग तहक़ीक करने वाले हैं वे उसकी हक़ीक़त जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का फज्ल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते। (80-83)

पस लड़ो अल्लाह की राह में। तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की जिम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो। उम्मीद है कि अल्लाह मुंकिरों का जोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा जोर वाला और बहुत सख़्त सजा देने वाला है। जो शख़्स किसी अच्छी बात के हक में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो इसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है। और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो उससे बेहतर या उलट कर वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज का हिसाब लेने

वाला है। अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह तुम सब को कियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं। और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (84-87)

फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो। हालांकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इंकार किया है तुम भी इंकार करो ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें। फिर अगर वे इसे क़ुबूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहां कहीं उन्हें पाओ उनको कत्ल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ। मगर वे लोग जिनका तअल्लुक किसी ऐसी कौम से हो जिनके साथ तुम्हारा समझौता है। या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आएं कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी कौम की लड़ाई से। और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर जोर दे देता तो वे जरूर तुमसे लड़ते। पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके ख़िलाफ किसी इकदाम की इजाजत नहीं देता। दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अम्न में रहें और अपनी कौम से भी अम्न में रहें। जब कभी वे फित्ने का मौका पाएं वे उसमें कूद पड़ते हैं। ऐसे लोग अगर तुमसे यकसू न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवैया न रखें और अपने हाथ न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें कत्ल करो जहां कहीं पाओ। ये लोग हैं जिनके ख़िलाफ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है। (88-91)

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को कत्ल करे मगर यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए। और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से कत्ल कर दे तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आजाद करे और मक्तूल (मृतक) के वारिसों को ख़ूंबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ कर दें। फिर मक्तूल अगर ऐसी कौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह ख़ुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आजाद करे। और अगर वह ऐसी कौम से था कि तुम्हारे और उसके दर्मियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को ख़ूंबहा (कत्ल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान को आजाद करे। फिर जिसे मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने के रोजे रखे। यह तौबा है अल्लाह की तरफ से। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और जो शख़्स किसी मुसलमान को जान कर कत्ल करे तो इसकी सजा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़जब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अजाब तैयार कर रखा है। (92-93)

ऐ ईमान वालो जब तुम सफर करो अल्लाह की राह में तो ख़ूब तहक़ीक कर लिया करो

और जो शख़्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम दुनियावी जिंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान है। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर फ़ज़्ल किया तो तहक़ीक़ कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है। बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र (विवशता) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से। माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्बत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज्रे अजीम में बरतरी दी है। उनके लिए अल्लाह की तरफ से बड़े दर्जे हैं और मग़्फ़िरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (94-96)

जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं जब उनकी जान फ़रिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे। वे कहेंगे कि हम जमीन में बेबस थे। फ़रिश्ते कहेंगे क्या ख़ुदा की जमीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर वहां चले जाते। ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। मगर वे बेबस मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा रहे हैं, ये लोग उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ कर देगा और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह जमीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुस्अत पाएगा और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के यहां मुकर्रर हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (97-100)

और जब तुम जमीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज में कमी करो, अगर तुम्हें डर हो कि मुंकिर तुम्हें सताएंगे। बेशक मुंकिर लोग तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं। और जब तुम मुसलमानों के दर्मियान हो और उनके लिए नमाज कायम करो तो चाहिए कि उनकी एक जमाअत तुम्हारे साथ खड़ी हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो। पस जब वे सज्दा कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएं और दूसरी जमाअत आए जिसने अभी नमाज नहीं पढ़ी है और वे तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें। और वे भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें। मुंकिर लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह ग़ाफ़िल हो जाओ तो वे तुम पर एकबारगी टूट पड़ें। और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और अपने बचाव का सामान लिए रहो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों के लिए रुसवा करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। पस जब तुम नमाज अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और लेटे। फिर जब इत्मीनान हो जाए तो नमाज की इक़ामत करो। बेशक नमाज अहले

ईमान पर मुक़र्रर वक़्तों के साथ फ़र्ज़ है। और क़ौम का पीछा करने से हिम्मत न हारो। अगर तुम दुख उठाते हो तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो जो उम्मीद वे नहीं रखते। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (101-104)

बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और बददयानत लोगों की तरफ से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से बख़्शिश मांगो। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और तुम उन लोगों की तरफ से न झगड़ो जो अपने आप से ख़ियानत कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को पसंद नहीं करता जो ख़ियानत वाला और गुनाहगार हो। वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते। हालांकि वह उनके साथ होता है जबकि वे सरगोशियां (गुप्त वार्ता) करते हैं उस बात की जिससे अल्लाह राजी नहीं। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (105-108)

तुम लोगों ने दुनिया की जिंदगी में तो उनकी तरफ से झगड़ा कर लिया। मगर क़ियामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला। और जो शख़्स बुराई करे या अपने आप पर जुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला रहम करने वाला पाएगा। और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक में करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वज्ञान) वाला है। और जो शख़्स कोई गलती या गुनाह करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि तुम्हें बहका कर रहेगा। हालांकि वे अपने आप को बहका रहे हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (तत्वज्ञान) उतारी है और तुम्हें वह चीज सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फ़ज़्ल है तुम पर बहुत बड़ा। (109-113)

उनकी अक्सर सरगोशियों (कानाफूसियों) में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली सरगोशी सिर्फ उसकी है जो सदका करने को कहे या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे। जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशी के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज्र अता करेंगे। मगर जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफत करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालांकि उस पर राह वाजेह हो चुकी, तो उसे हम उसी तरफ चलाएंगे जिधर वह ख़ुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (114-115)

बेशक अल्लाह इसे नहीं बख़्शेगा कि उसका शरीक ठहराया जाए और इसके सिवा गुनाहों को बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह बहक कर बहुत दूर जा पड़ा। वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवियों को और वे पुकारते हैं सरकश शैतान को। उस पर अल्लाह ने लानत की है। और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों

से एक मुकर्रर हिस्सा लेकर रहूंगा। मैं उन्हें बहकाऊंगा और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा और उन्हें समझाऊंगा तो वे चौपायों के कान काटेंगे और उन्हें समझाऊंगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो शख़्स अल्लाह के सिवा शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह खुले हुए नुक्सान में पड़ गया। वह उन्हें वादा देता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है और शैतान के तमाम वादे फरेब के सिवा और कुछ नहीं। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे हमेशा उसमें रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा। (116-122)

न तुम्हारी आरजुओं (कामनाओं) पर है और न अहले किताब की आरजुओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा। और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार। और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ का था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था। और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (123-126)

और लोग तुमसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ। और जो आयतें कमजोर बच्चों के बारे में हैं और यतीमों के साथ इंसाफ करो और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को ख़ूब मालूम है। और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ से बदसुलूकी या बेरुख़ी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है। और हिर्स (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है। और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और ख़ुदातरसी (ईश परायणता) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है। और तुम हरगिज औरतों को बराबर नहीं रख सकते अगरचे तुम ऐसा करना चाहो। पस बिल्कुल एक ही तरफ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख़्शने वाल महरबान है। और अगर दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्अत (सामर्थ्य) से बेएहतियाज (निराश्रित) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्अत वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (127-130)

और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और हमने हुक्म

दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो। और अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है सब ख़ूबियों वाला है। और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफी है। अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए ऐ लोगो, और दूसरों को ले आए। और अल्लाह इस पर कादिर है। जो शख़्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी। और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। (131-134)

ऐ ईमान वालो, इंसाफ पर ख़ूब कायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे मां-बाप या अजीजों के ख़िलाफ हो। अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुमसे ज्यादा दोनों का ख़ैरख़्वाह है। पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक से हट जाओ। और अगर तुम कजी (हेर-फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (135)

ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाजिल की। और जो शख़्स इंकार करे अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर इंकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज नहीं बख़्शेगा और न उन्हें राह दिखाएगा। मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज्जत की तलाश कर रहे हैं, तो इज्जत सारी अल्लाह के लिए है। (136-139)

और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इंकार किया जा रहा है और उनका मजाक किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहां तक कि वे दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं। वर्ना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए। अल्लाह मुनाफ़िक़ों को और मुंकिरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है। वे मुनाफ़िक़ तुम्हारे लिए इंतिजार में रहते हैं। अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ से कोई फ़त्ह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और अगर मुंकिरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे ख़िलाफ लड़ने पर कादिर (समर्थ) न थे और फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के दर्मियान कियामत के दिन फैसला करेगा और अल्लाह हरगिज मुंकिरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा। (140-141)

मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह ही ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और जब वे नमाज के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े

होते हैं महज लोगों को दिखाने के लिए। और वे अल्लाह को कम ही याद करते हैं। वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। ऐ ईमान वालो, मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत कायम कर लो। बेशक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे नीचे के तबके में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें और अल्लाह को मजबूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अजाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुजारी करो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (142-147)

अल्लाह बदगोई (कुवाती) को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। अगर तुम भलाई को जाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दरगुजर करो तो अल्लाह माफ करने वाला कुदरत रखने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफरीक (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें। ऐसे लोग पक्के मुंकिर हैं और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी को जुदा न किया उन्हें अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह ग़फ़ूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) है। (148-152)

अहले किताब तुमसे यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज का मुतालबा कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो। पस उनकी इस ज्यादती के सबब उन पर बिजली आ पड़ी। फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। फिर हमने उससे दरगुजर किया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत अता की। और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते। और हमने उनसे कहा कि दरवाजे में दाख़िल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सब्त (सनीचर) के मामले में ज्यादती न करना। और हमने उनसे मजबूत अहद लिया। (153-154)

उन्हें जो सजा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया और इस पर कि उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक क़त्ल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उनके दिलों पर मुहर कर दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं। और उनके इंकार पर और मरयम पर बड़ा तूफान बांधने पर और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह

बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया हालांकि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इसके बारे में शक में पड़े हुए हैं। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल पर चल रहे हैं। और बेशक उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (155-158)

और अहले किताब में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए और कियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। पस यहूद के जुल्म की वजह से हमने वे पाक चीजें उन पर हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं। और इस वजह से कि वे अल्लाह की राह से बहुत रोकते थे। और इस वजह से कि वे सूद लेते थे हालांकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीके से खाते थे। और हमने उनमें से मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख़्ता और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई और वे नमाज के पाबंद हैं और जकात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम जरूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे। (159-162)

हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और औलादे याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने दाऊद को जबूर दी। और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। अल्लाह ने रसूलों को ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत बाकी न रहे और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (163-165)

मगर अल्लाह गवाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाही के लिए काफी है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहक कर बहुत दूर निकल गए। जिन लोगों ने इंकार किया और जुल्म किया उन्हें अल्लाह हरगिज नहीं बख़्शेगा न ही उन्हें जहन्नुम के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा जिसमें वे हमेशा रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह आसान है। ऐ लोगो, तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक बात लेकर। पस मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और जमीन में है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (166-170)

ऐ अहले किताब अपने दीन में ग़ुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात

हक के सिवा न कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलिमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि ख़ुदा तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक में बेहतर है। माबूद तो बस एक अल्लाह ही है। वह पाक है कि उसके औलाद हो। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह ही का कारसाज होना काफ़ी है। मसीह को हरगिज अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुकर्रब (प्रतिष्ठित) फरिश्तों को होगा। और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह जरूर सबको अपने पास जमा करेगा। फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा-पूरा अज्र देगा और अपने फज्ल से उन्हें और भी देगा। और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा उन्हे दर्दनाक अजाब देगा और वे अल्लाह के मुकाबले में न किसी को अपना दोस्त पाऐंगे और न मददगार। (171-174)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाजेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी। पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसे उन्होंने मजबूत पकड़ लिया उन्हें जरूर अल्लाह अपनी रहमत और फज्ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ सीधा रास्ता दिखाएगा। लोग तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (जिसका कोई वारिस न हो न ही मां बाप) के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहिन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा है। और वह मर्द उस बहिन का वारिस होगा अगर उस बहिन के कोई औलाद न हो। और अगर दो बहिनें हों तो उनके लिए उसके तरके का दो तिहाई होगा। और अगर कई भाई-बहिन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (175-177)

सूरह-5. अल-माइदह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है

ऐ ईमान वालो, अहद व पैमान को पूरा करो। तुम्हारे लिए मवेशी की किस्म के सब जानवर हलाल किए गए सिवा उनके जिनका जिक्र आगे किया जा रहा है। मगर एहराम की हालत में शिकार को हलाल न जानो। अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है। ऐ ईमान वालो, बेहुरमती न करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले महीनों की और न हरम में कुर्बानी वाले जानवरों की और न पट्टे बंधे हुए नियाज के जानवरों की और न हुरमत वाले घर की तरफ आने वालों की जो अपने रब का फज्ल और उसकी ख़ुशी ढूंढने निकले हैं। और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो। और किसी कौम की दुश्मनी

कि उसने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका है तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम ज्यादती करने लगो। तुम नेकी और तकवा में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज्यादती में एक दूसरे की मदद न करो। अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह सख़्त अजाब देने वाला है। (1-2)

तुम पर हराम किया गया मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जो ख़ुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोंटने से या चोट से या ऊंचे से गिर कर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो मगर जिसे तुमने जबह कर लिया और वह जो किसी थान पर जबह किया गया हो और यह कि तक़्सीम करो जुए के तीरों से। यह गुनाह का काम है। आज मुंकिर तुम्हारे दीन की तरफ से मायूस हो गए। पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम कोदीन की हैसियत से पसंद कर लिया। पस जो भूख से मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (3)

वे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज हलाल की गई है। कहो कि तुम्हारे लिए सुथरी चीजें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिन्हें तुमने सधाया है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया। पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है। आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीजें हलाल कर दी गईं। और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न ख़ुफिया आशनाई करो। और जो शख़्स ईमान के साथ कुफ्र करेगा तो उसका अमल जाया हो जाएगा और वह आख़िरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा। (4-5)

ऐ ईमान वालो, जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टख़नों तक धोओ और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो ग़ुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले। बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे ताकि तुम शुक्रगुजार बनो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना। और अल्लाह से

डरो। बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह के लिए कायम रहने वाले और इंसाफ के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इंसाफ न करो, इंसाफ करो। यही तक़्वा से ज्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को ख़बर है जो तुम करते हो। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख़्शिश है और बड़ा अज्र है। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे लोग दोजख़ वाले हैं। ऐ ईमान वालो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक कौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराजी करे तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (7-11)

और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज कायम करोगे और जकात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को कर्जे हसन दोगे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह जरूर दूर करूंगा और तुम्हें जरूर ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। पस तुममें से जो शख़्स इसके बाद इंकार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। पस उनकी अहदशिकनी की बिना पर हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया। वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं। और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़ियानत से आगाह होते रहते हो सिवाए थोड़े लोगों के। उन्हें माफ करो और उनसे दरगुजर करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है। (12-13)

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था। पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। फिर हमने कियामत तक के लिए उनके दर्मियान दुश्मनी और बुग्ज़ डाल दिया। और आख़िर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे। (14)

ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है। वह किताबे इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन्हें तुम छुपाते थे। और वह दरगुजर करता है बहुत सी चीजों से। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक रोशनी और एक जाहिर करने वाली किताब आ चुकी है। इसके जरिए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिजा के तालिब हैं और अपनी तौफीक से उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ उनकी रहनुमाई करता है। बेशक उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने मरयम है। कहो फिर कौन इख़्तियार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इब्ने मरयम को और उसकी मां

को और जितने लोग जमीन में हैं सब को। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (15-17)

और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सजा क्यों देता है। नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख़्लूक में से एक आदमी हो। वह जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा अजाब देगा। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है और उसी की तरफ लौट कर जाना है। ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह तुम्हें साफ-साफ बता रहा है रसूलों के एक वक़्फ़ा के बाद। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया। पस अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (18-19)

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए। और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरी कौम, इस पाक जमीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की तरफ न लौटो वर्ना नुक़सान में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा कि वहां एक जबरदस्त कौम है। हम हरगिज वहां न जाएंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं। अगर वे वहां से निकल जाएं तो हम दाख़िल होंगे। दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही गालिब होगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा हम कभी वहां दाख़िल न होंगे जब तक वे लोग वहां हैं। पस तुम और तुम्हारा ख़ुदावंद दोनों जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। (20-24)

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इख़्तियार नहीं। पस तू हमारे और इस नाफरमान कौम के दर्मियान जुदाई कर दे। अल्लाह ने कहा : वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया। ये लोग जमीन में भटकते फिरेंगे। पस तुम इस नाफ़रमान कौम पर अफ़्सोस न करो। (25-26)

और उन्हें आदम के दो बेटों का किस्सा हक के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने कुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की कुर्बानी कुबूल हुई और दूसरे की कुर्बानी कुबूल न हुई। उसने कहा मैं तुझे मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ मुत्तक़ियों से कुबूल करता है। अगर तुम मुझे कत्ल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें कत्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं डरता हूं अल्लाह से जो सारे जहान का रब है। मैं चाहता हूं

की मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले फिर तू आग वालों में शामिल हो जाए। और यही सजा है जुल्म करने वालों की। (27-29)

फिर उसके नफ्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर राजी कर लिया और उसने उसे क़त्ल कर डाला। फिर वह नुक्सान उठाने वालों में शामिल हो गया। फिर ख़ुदा ने एक कौवे को भेजा जो जमीन में कुरेदता था ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए। उसने कहा कि अफसोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को छुपा देता। पस वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। (30-31)

इसी सबब से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी को क़त्ल करे, बग़ैर इसके कि उसने किसी को क़त्ल किया हो या जमीन में फ़साद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे आदमियों को कत्ल कर डाला और जिसने एक शख़्स को बचाया तो गोया उसने सारे आदमियों को बचा लिया। और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले अहकाम लेकर आए। इसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग जमीन में ज्यादतियां करते हैं। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और जमीन में फ़साद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सजा यही है कि उन्हें कत्ल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएं या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए। यह उनकी रुस्वाई दुनिया में है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे काबू पाने से पहले तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (32-34)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और उसका क़ुर्ब (समीपता) तलाश करो और उसकी राह में जद्दोजहद करो ताकि तुम फलाह पाओ। बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और इतना ही और हो ताकि वे उसे फिदये (अर्थदण्ड) में देकर क़ियामत के दिन के अजाब से छूट जाएं तब भी वह उनसे क़ुबूल न की जाएगी और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएं मगर वे उससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक मुस्तकिल अजाब है। और चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की तरफ से इबरतनाक सजा। और अल्लाह ग़ालिब और हकीम (तत्वदर्शी) है। फिर जिसने अपने जुल्म के बाद तौबा की और इस्लाह कर ली तो अल्लाह बेशक उस पर तवज्जोह करेगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जमीन और आसमानों की सल्तनत का मालिक है। वह जिसे चाहे सजा दे और जिसे चाहे माफ कर दे। और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (35-40)

ऐ पैग़म्बर, तुम्हें वे लोग रंज में न डालें जो कुफ्र की राह में बड़ी तेजी दिखा रहे हैं। चाहे वे उनमें से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों की ख़ातिर

जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे कलाम को उसके मकाम से हटा देते हैं। वे लोगों से कहते हैं कि अगर तुम्हें यह हुक्म मिले तो कुबूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे बचकर रहना। और जिसे अल्लाह फितने में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुक़ाबिल उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते। यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने न चाहा कि उनके दिलों को पाक करे। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। (41)

वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं। अगर वे तुम्हारे पास आएं तो चाहे उनके दर्मियान फैसला करो या उन्हें टाल दो। अगर तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अगर तुम फैसला करो तो उनके दर्मियान इंसाफ के मुताबिक फैसला करो। अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। और वे कैसे तुम्हें हकम (मध्यस्थ) बनाते हैं हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। और फिर वे उससे मुंह मोड़ रहे हैं। और ये लोग हरगिज ईमान वाले नहीं हैं। (42-43)

बेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक ख़ुदा के फरमांबरदार अंबिया यहूदी लोगों का फैसला करते थे और उनके दुर्वेश और उलमा (विद्वान) भी। इसलिए कि वे खुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे। और वे उसके गवाह थे। पस तुम इंसानों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के ऐवज न बेचो। और जो कोई उसके मुवाफिक हुक्म न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुंकिर हैं। और हमने उस किताब में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उसे माफ कर दिया तो वह उसके लिए कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) है। और जो शख़्स उसके मुवाफ़िक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग जालिम हैं। और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम को भेजा तस्दीक (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तस्दीक करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए। और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफ़िक फैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके मुवाफ़िक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग नाफरमान हैं। (44-47)

और हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी हक के साथ, तस्दीक (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मजामीन पर निगहबान। पस तुम उनके दर्मियान फैसला करो उसके मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा। और जो हक तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने तुममें से हर एक लिए एक शरीअत और एक तरीका ठहराया। और अगर खुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता। मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आजमाइश करे। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो।

www.Momeen.blogspot.com

आख़िरकार तुम सबको ख़ुदा की तरफ पलटकर जाना है। फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज से जिसमें तुम इख़्तिलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे थे। (48)

और उनके दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से। पस अगर वे फिर जाएं तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सजा देना चाहता है। और यक़ीनन लोगों में से ज्यादा आदमी नाफरमान हैं। क्या ये लोग जाहिलियत का फैसला चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़कर किसका फैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यक़ीन करना चाहें। (49-50)

ऐ ईमान वालो, यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। वे एक दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो शख़्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं की तरफ दौड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह अंदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं। तो मुमकिन है कि अल्लाह फतह दे दे या अपनी तरफ से कोई ख़ास बात जाहिर करे तो ये लोग उस चीज पर जिसे ये अपने दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे। और उस वक्त अहले ईमान कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो जोर शोर से अल्लाह की कसमें खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सारे आमाल जाए (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे। (51-53)

ऐ ईमान वालो, तुममें से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा। वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुंकिरों के ऊपर सख़्त होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फज्ल है। वह जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह वुस्अत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है। (54-56)

ऐ ईमान वालो, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मजाक और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और न मुंकिरों को। और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मजाक और खेल बना लेते हैं। इसकी वजह यह है कि वे अक्ल नहीं रखते। कहो कि ऐ अहले किताब, तुम हमसे सिर्फ इसलिए जिद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा। और तुम में से अक्सर लोग नाफरमान हैं। कहो क्या मैं तुम्हें बताऊं वह जो अल्लाह के यहां

अंजाम के एतबार से इससे भी ज्यादा बुरा है। वह जिस पर ख़ुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़जब हुआ। और जिनमें से बन्दर और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की। ऐसे लोग मकाम के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं। (57-60)

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि वे मुंकिर आए थे और मुंकिर ही चले गए। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज को जिसे वे छुपा रहे हैं। और तुम उनमें से अक्सर को देखोगे कि वे गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (विद्वान) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। (61-63)

और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंध जाएं और लानत हो उन्हें इस कहने पर। बल्कि ख़ुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और इंकार को बढ़ा रहा है। और हमने उनके दर्मियान दुश्मनी और कीना कियामत तक के लिए डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे जमीन में फसाद फैलाने में सरगर्म हैं। हालांकि अल्लाह फसाद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम जरूर उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते। और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उन पर उनके रब के तरफ से उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने कदमों की नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं। लेकिन ज्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं। (65-66)

ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है उसे पहुंचा दो। और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैगाम को नहीं पहुंचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यक़ीनन मुंकिर लोगों को राह नहीं देता। (67)

कह दो, ऐ अहले किताब तुम किसी चीज पर नहीं जब तक तुम कायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतारा गया है वह यक़ीनन उनमें से अक्सर की सरकशी और इंकार को बढ़ाएगा। पस तुम इंकार करने वालों के ऊपर अफसोस न करो। बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शख़्स भी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (68-69)

हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ बहुत से रसूल भेजे। जब

कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को क़त्ल कर दिया। और ख़्याल किया कि कुछ ख़राबी न होगी। पस वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह की। फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (70-71)

यक़ीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा ही तो मसीह इब्ने मरयम है। हालांकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो शख़्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उस पर जन्नत और उसका ठिकाना आग है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। यक़ीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है। हालांकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाए एक माबूद के। और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ्र पर कायम रहने वालों को एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे माफी क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मसीह इब्ने मरयम तो सिर्फ एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत रसूल गुजर चुके हैं। और उनकी मां एक रास्तबाज (नेक) ख़ातून थीं। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं। फिर देखो वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक्सान का इख़्तियार रखती है और न नफा का। और सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ अल्लाह ही है। (72-76)

कहो, ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक़ ग़ुलू (अति) न करो और उन लोगों के ख़्यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया। और वे सीधी राह से भटक गए। (77)

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ्र किया उन पर लानत की गई दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की जबान से। इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे। वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे। निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे। तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं। कैसी बुरी चीज है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि ख़ुदा का ग़जब हुआ उन पर और वे हमेशा अजाब में पड़े रहेंगे। अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उस पर जो उसकी तरफ उतरा तो वे मुंकिरों को दोस्त न बनाते। मगर उनमें अक्सर नाफरमान हैं। (78-81)

ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुश्रिकीन को पाओगे। और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें आलिम और राहिब हैं। और इसलिए कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे

कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंनें हक को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए। पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम क्यों न ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक पर जो हमें पहुंचा है जबकि हम यह आरजू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे। पस अल्लाह उन्हें इस कौल के बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यही बदला है नेक अमल करने वालों का। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (82-86)

ऐ ईमान वालो, उन सुथरी चीजों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता, और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल चीजें दी हैं उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। अल्लाह तुमसे तुम्हारी बेमअना क़समों पर गिरफ्त नहीं करता। मगर जिन क़समों को तुमने मज़्बूत बांधा उन पर वह जरूर तुम्हारी गिरफ्त करेगा। ऐसी क़सम का कफ्फारा (प्रायश्चित) है दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक गर्दन आजाद करना। और जिसे मयस्सर न हो वह तीन दिन के रोजे रखे। यह कफ्फारा है तुम्हारी क़समों का जबकि तुम क़सम खा बैठो। और अपनी क़समों की हिफाजत करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र अदा करो। (87-89)

ऐ ईमान वालो, शराब और जुआ और देव-स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं शैतान के। पस तुम इनसे बचो ताकि तुम फलाह (कल्याण) पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुऐ के जरिए तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुग्ज (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बाज आओगे। और इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और बचो। अगर तुम ऐराज (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के जिम्मे सिर्फ खोल कर पहुंचा देना है। जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके। जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया। फिर डरे और ईमान लाए फिर डरे और नेक काम किया। और अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ मुहब्बत रखता है। (90-93)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के जरिए से आजमाइश में डालेगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेजों की जद में होगा ताकि अल्लाह जाने की कौन शख़्स उससे बिना देखे डरता है। फिर जिसने इसके बाद ज्यादती की तो उसके लिए दर्दनाक अजाब है। ऐ ईमान वालो, शिकार को न मारो जबकि तुम हालते एहराम में हो। और तुममें से जो शख़्स उसे जान बूझकर मारे तो इसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका फैसला तुममें से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नजराना काबा पहुंचाया जाए। या

इसके कफ्फ़ारे (प्रायश्चित) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा। या इसके बराबर रोजे रखने होंगे, ताकि वह अपने किए की सजा चखे। अल्लाह ने माफ किया जो कुछ हो चुका। और जो शख़्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह जबरदस्त है बदला लेने वाला है। (94-95)

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जाइज किया गया, तुम्हारे फायदे के लिए और काफिलों के लिए। और जब तक तुम एहराम में हो ख़ुश्की का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया गया। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाजिर किए जाओगे। अल्लाह ने काबा, हुरमत वाले घर, को लोगों के लिए कयाम का ज़रिया बनाया। और हुरमत वाले महीनों को और कुर्बानी के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से वाकिफ़ है। जान लो कि अल्लाह का अजाब सख़्त है और बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। रसूल पर सिर्फ पहुंचा देने की जिम्मेदारी है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। कहो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की अधिकता तुम्हें भली लगे। पस अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वालो, ताकि तुम फ़लाह पाओ। (96-100)

ऐ ईमान वालो, ऐसी बातों के मुतअल्लिक सवाल न करो कि अगर वे तुम पर जाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें गिरां गुजरें। और अगर तुम उनके मुतअल्लिक सवाल करोगे ऐसे वक्त में जबकि क़ुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर जाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उनसे दरगुजर किया। और अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल (उदारता) वाला है। ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमाअत ने पूछीं। फिर वे उनके मुंकिर होकर रह गए। अल्लाह ने बहीरा और साएबा और वसीला और हाम (बुतों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुकर्रर नहीं किए। मगर जिन लोगों ने कुफ्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अक्सर अक्ल से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ आओ और रसूल की तरफ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों। ऐ ईमान वालो, तुम अपनी फ़िक्र रखो। कोई गुमराह हो तो इससे तुम्हारा कुछ नुक्सान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौटकर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (101-105)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे दर्मियान गवाही वसीयत के वक्त, जबकि तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाए, इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुममें से गवाह हों। या अगर तुम सफर की हालत में हो और वहां मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे ग़ैरों में से दो गवाह ले लिए जाएं। फिर अगर तुम्हें शुबह हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज के बाद

रोक लो और वे दोनों ख़ुदा की कसम खाकर कहें कि हम किसी कीमत के ऐवज इसे न बेचेंगे चाहे कोई संबंधी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे। अगर हम ऐसा करें तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हक़तल्फी की है तो उनकी जगह दो और शख़्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था। वे ख़ुदा की कसम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज्यादा बरहक है और हमने कोई ज्यादती नहीं की है। अगर हम ऐसा करें तो हम जालिमों में से होंगे। यह करीबतरीन तरीका है कि लोग गवाही ठीक दें। या इससे डरें कि हमारी कसम उनकी कसम के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं चलाता। (106-108)

जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था। वह कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इब्ने मरयम, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी मां पर किया जबकि मैंने रूहे पाक से तुम्हारी मदद की। तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी। और जब मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील की तालीम दी। और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी। और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने बनी इस्राईल को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनके मुंकिरों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है। (109-110)

और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह कि हम फरमांबरदार हैं। जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़्वान (भोजन भरा थाल) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन (संतुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जाएं। ईसा इब्ने मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह, हमारे रब, तू आसमान से हम पर एक ख़्वान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और तेरी तरफ से एक निशानी हो। और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने वाला है। अल्लाह ने कहा मैं यह ख़्वान जरूर तुम पर उतारूंगा। फिर इसके बाद तुममें से जो शख़्स मुंकिर होगा उसे मैं ऐसी सजा दूंगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी। (111-115)

और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे

और मेरी मां को ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बना लो। वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक नहीं। अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे जरूर मालूम होगा। तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। बेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला। मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था। यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उन पर तू ही निगरां था और तू हर चीज पर गवाह है। अगर तू उन्हें सजा दे तो वे तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें माफ कर दे तो तू ही जबरदस्त है हिक्मत वाला है। अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उनका सच काम आएगा। उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही है बड़ी कामयाबी। आसमानों और जमीन में और जो कुछ उनमें है सबकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज पर क़ादिर है। (116-120)

सूरह-6. अल-अनआम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया और तारीकियों और रोशनी को बनाया। फिर भी मुंकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर एक मुद्दत मुक़र्रर की और मुक़र्ररह मुद्दत उसी के इल्म में है। फिर भी तुम शक करते हो। और वही अल्लाह आसमानों में है और वही जमीन में। वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है वे उससे एराज(उपेक्षा) करते हैं। चुनांचे जो हक उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया। पस अनक़रीब उनके पास उस चीज की ख़बरें आएंगी जिसका वह मजाक उड़ाते थे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी कौमों को हलाक कर दिया। उन्हें हमने जमीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया। और हमने उन पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला। और उनके बाद हमने दूसरी कौमों को उठाया। (4-6)

और अगर हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो कागज में लिखी हुई होती और वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तब भी इंकार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ जादू है। और वे कहते हैं कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया। और अगर हम कोई फरिश्ता उतारते तो मामले का फैसला हो जाता फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती। और अगर हम किसी फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते तो उसे भी आदमी बनाते और उन्हें उसी शुबह

में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो उनमें से जिन लोगों ने मजाक उड़ाया उन्हें उस चीज ने आ घेरा जिसका वे मजाक उड़ाते थे। कहो, जमीन में चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। (7-11)

पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। वह जरूर तुम्हें जमा करेगा कियामत के दिन, इसमें कोई शक नहीं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊं जो बनाने वाला है आसमानों और जमीन का। और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता। कहो मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूं और तुम हरगिज मुश्रिकों में से न बनो। कहो अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। जिस शख़्स से वह उस रोज हटा लिया गया उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम फरमाया और यही खुली कामयाबी है। (12-16)

और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वह हर चीज पर क़ादिर है। और उसी का जोर है अपने बंदों पर। और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला सबकी ख़बर रखने वाला है, तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतरा है ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार कर दूं और उसे जिसे यह पहुंचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूं तुम्हारे शिर्क से। (17-19)

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते। और उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए। यक़ीनन जालिमों को फ़लाह (कल्याण) नहीं मिलती। और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहां हैं जिनका तुम्हें दावा था। फिर उनके पास कोई फरेब न रहेगा मगर ये कि वे कहेंगे कि अल्लाह अपने रब की कसम, हम शिर्क करने वाले न थे। देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गईं उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे। (20-24)

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें। और उनके कानों मे बोझ है। अगर वे तमाम निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएंगे। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते

हैं तो वे मुंकिर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियां हैं। वे लोगों को रोकते हैं और ख़ुद भी उससे अलग रहते हैं। वे ख़ुद अपने को हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते। और अगर तुम उन्हें उस वक्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में से हो जाएं। अब उन पर वह चीज खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे। और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे। और बेशक वे झूठे हैं। (25-28)

और कहते हैं कि जिंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की जिंदगी है। और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं। और अगर तुम उस वक्त देखते जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह उनसे पूछेगा : क्या यह हकीकत नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की कसम, यह हकीकत है। ख़ुदा फरमाएगा। अच्छा तो अजाब चखो उस इंकार के बदले जो तुम करते थे। यकीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहां तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे हाय अफसोस, इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे और दुनिया की जिंदगी तो बस खेल तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तकवा (ईश-भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते। (29-32)

हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है। ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह जालिम दरअस्ल अल्लाह की निशानियों का इंकार कर रहे हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ पहुंचाने पर सब्र किया यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैग़म्बरों की कुछ ख़बरें तुम्हें पहुंच ही चुकी हैं। और अगर उनकी बेरुख़ी तुम पर गिरां गुजर रही है तो अगर तुममें कुछ जोर है तो जमीन में कोई सुरंग ढूंढो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता। पस तुम नादानों में से न बनो। कुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ लौटाए जाएंगे। (33-36)

और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ से क्यों नहीं उतरी। कहो अल्लाह बेशक कादिर है कि कोई निशानी उतारे मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जो भी जानवर जमीन पर चलता है और जो भी परिंदा अपने दोनों बाजुओं से उड़ता है वे सब तुम्हारी ही तरह के समूह हैं। हमने लिखने में कोई चीज नहीं छोड़ी है। फिर सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है। (37-39)

कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आए या कियामत आ जाए तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे। बताओ अगर तुम सच्चे हो, बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो। अगर वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो। (40-41)

और तुमसे पहले बहुत सी कौमों की तरफ हमने रसूल भेजे। फिर हमने उन्हें पकड़ा सख़्ती में और तकलीफ में ताकि वे गिड़गिड़ाएं। पस जब हमारी तरफ से उन पर सख़्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाए। बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए। और शैतान उनके अमल को उनकी नजर में ख़ुशनुमा करके दिखाता रहा। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक की जब वे उस चीज़ पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस वक्त वे नाउम्मीद होकर रह गए। पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने जुल्म किया था और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, तमाम जहानों का रब। (42-45)

कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए। देखो हम क्योंकर तरह-तरह से निशानियां बयान करते हैं फिर भी वे एराज (उपेक्षा) करते हैं। कहो, यह बताओ अगर अल्लाह का अजाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो जालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा। और रसूलों को हम सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उन्हें अजाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफरमानी करते थे। कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूं और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (46-50)

और तुम इस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें। और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी ख़ुशनूदी चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज का बोझ उन पर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइंसाफों में से हो जाओ। और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आजमाया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे दर्मियान अल्लाह का फज़्ल हुआ है। क्या अल्लाह शुक्रगुजारों

से ख़ूब वाक़िफ़ नहीं। (51-53)

और जब तुम्हारे पास वे लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। बेशक तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर इसके बाद वह तौबा करे और इस्लाह (सुधार) कर ले तो वह बख़्शने वाला महरबान है। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोल कर बयान करते हैं, और ताकि मुजरिमीन का तरीक़ा जाहिर हो जाए। (54-55)

कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता। अगर मैं ऐसा करूं तो मैं बेराह हो जाऊंगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूंगा। कहो मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूं और तुमने उसे झुठला दिया है। वह चीज मेरे पास नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। फैसले का इख़्तियार सिर्फ अल्लाह को है। वही हक़ को बयान करता है और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। कहो, अगर वह चीज मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान मामले का फैसला हो चुका होता, और अल्लाह ख़ूब जानता है जालिमों को। और उसी के पास ग़ैब (अप्रकट) की कुंजियां हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और समुद्र में है। और दरख़्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और जमीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और ख़ुश्क चीज मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है। (56-59)

और वही है जो रात में तुम्हें वफात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर तुम्हें उठा देता है उसमें ताकि मुकर्रर मुद्दत पूरी हो जाए। फिर उसी की तरफ तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो। और वह ग़ालिब (वर्चस्ववान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है। यहां तक कि जब तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह कब्ज कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह, अपने मालिके हक़ीक़ी की तरफ वापस लाए जाएंगे। सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (60-62)

कहो, कौन तुम्हें नजात देता है ख़ुश्की और समुद्र की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिजी से और चुपके-चुपके कि अगर ख़ुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुजार बंदों में से बन जाएंगे। कहो, ख़ुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो। कहो, ख़ुदा क़ादिर है इस पर कि तुम पर कोई अजाब भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके एक को दूसरे की ताकत का मजा चखा दे। देखो, हम किस तरह दलाइल

(तर्क) मुख़्तलिफ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें। और तुम्हारी कौम ने उसे झुठला दिया है हालांकि वह हक़ है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूं। हर ख़बर के लिए एक वक्त मुकर्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे। (63-67)

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ यहां तक कि वे किसी और बात में लग जाएं। और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइंसाफ लोगों के पास न बैठो। और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज की जिम्मेदारी नहीं। अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें। उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा है। और क़ुरआन के जरिए नसीहत करते रहो ताकि कोई शख़्स अपने किए में गिरफ्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफारिशी उसके लिए न हो। अगर वह दुनिया भर का मुआवजा दे तब भी क़ुबूल न किया जाए। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ्तार हो गए। उनके लिए खौलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सजा होगी इसलिए कि वे कुफ्र करते थे। (68-70)

कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफा दे सकते और न हमें नुक्सान पहुंचा सकते। और क्या हम उल्टे पांव फिर जाएं, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख़्स की मानिंद जिसे शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ अल्लाह की रहनुमाई है और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें। और यह कि नमाज क़ायम करो और अल्लाह से डरो वही है जिसकी तरफ तुम समेटे जाओगे। और वही है जिसने आसमानों और जमीन को हक़ के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा। उसकी बात हक़ है और उसी की हुकूमत होगी उस रोज जब सूर फूंका जाएगा। वह ग़ायब और जाहिर का आलिम और हकीम (तत्वदर्शी) व ख़बीर (सर्वज्ञाता) है। (71-74)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा कि क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं। और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और जमीन की हुकूमत, और ताकि उसे यकीन आ जाए। फिर जब रात ने उस पर अंधेरा कर लिया उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊं। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब गया तो उसने

अपनी कौम से कहा कि ऐ लोगो, मैं उस शिर्क (साझीदार ठहराना) से बरी हूं जो तुम करते हो। मैंने अपना रुख़ यकसू होकर उसकी तरफ कर लिया जिसने आसमानों और जमीन को पैदा कर लिया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। (75-80)

और उसकी कौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो हालांकि उसने मुझे राह दिखा दी है। और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो मगर यह कि कोई बात मेरा रब ही चाहे। मेरे रब का इल्म हर चीज पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते। और मैं क्योंकर डरूं तुम्हारे शरीकों से जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीजों को ख़ुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी। अब दोनों फरीकों (पक्षों) में से अम्न का ज्यादा मुस्तहिक कौन है, अगर तुम जानते हो। जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कोई नुक्सान, उन्हीं के लिए अम्न है और वही सीधी राह पर हैं। यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी कौम के मुक़ाबले में दी। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। बेशक तुम्हारा रब हकीम (तत्वदर्शी) व अलीम (ज्ञानवान) है। (81-84)

और हमने इब्राहीम को इस्हाक और याक़ूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी। और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं। और जकरिया और यहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था। और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत को भी और इनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) अता की। और उनके बाप दादों और उनकी औलाद और उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ उनकी रहनुमाई की। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफराज करता है अपने बंदों में से जिसे चाहता है। और अगर वे शिर्क करते तो जाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिक्मत और नुबुव्वत अता की। पस अगर ये मक्का वाले इसका इंकार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुकर्रर कर दिए हैं जो इसके मुंकिर नहीं हैं। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, पस तुम भी उनके तरीके पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई मुआवजा नहीं मांगता। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। (85-91)

और उन्होंने अल्लाह का बहुत ग़लत अंदाजा लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज नहीं उतारी। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक-वरक कर रखा है। कुछ को जाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो। और तुम्हें वे बातें सिखाई जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप दादा। कहो कि अल्लाह ने उतारी। फिर उन्हें छोड़

दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, तस्दीक करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराए मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को। और जो आख़िरत पर यकीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे। और वे अपनी नमाज की हिफ़ाजत करने वाले हैं। (92-93)

और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है हालांकि उस पर कोई 'वही' नाजिल नहीं की गई हो। और कहे कि जैसा कलाम ख़ुदा ने उतारा है मैं भी उतारूंगा। और काश तुम उस वक्त देखो जबकि ये जालिम मौत की सख़्तियों में होंगे और फरिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें जिल्लत का अजाब दिया जाएगा इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से तकब्बुर (घमंड) करते थे। और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था। और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफारिश वालों को भी नहीं देखते जिनके मुतअल्लिक तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है। तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुमसे जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे। (94-95)

बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। वही बरामद करने वाला है सुबह का और उसने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का। और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके जरिए से ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में राह पाओ। बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (96-98)

और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह। हमने दलाइल खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें। और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज। फिर हमने उससे सरसब्ज शाख़ निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और जैतून के और अनार के, आपस में मिलते जुलते और जुदा जुदा भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। बेशक इनके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं। (99-100)

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक करार दिया। हालांकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और बे जाने बूझे उसके लिए बेटियां और बेटे तराशीं। पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं। वह आसमानों और जमीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है। उसका

कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया है और वह हर चीज से बाख़बर है। यह है अल्लाह तुम्हारा रब। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही हर चीज का ख़ालिक है, पस तुम उसी की इबादत करो। और वह हर चीज का कारसाज है। उसे निगाहें नहीं पातीं। मगर वह निगाहों को पा लेता है। वह बड़ा बारीकबीं और बड़ा बाख़बर है। अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं। पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अंधा बनेगा वह ख़ुद नुक्सान उठाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूं। (101-105)

और इस तरह हम अपनी दलीलें मुख़्तलिफ तरीक़ों से बयान करते हैं और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। तुम बस उस चीज की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से एराज (उपेक्षा) करो। और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां (संरक्षक) नहीं बनाया है और न तुम उन पर मुख़्तार (साधिकार) हो। और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें गाली न दो वर्ना ये लोग हद से गुजर कर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे। इसी तरह हमने हर गिरोह की नजर में उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है। फिर उन सबको अपने रब की तरफ पलटना है। उस वक्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे। (106-109)

और ये लोग अल्लाह की कसम बड़े जोर से खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे जरूर उस पर ईमान ले आएं। कह दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियां आ जाएं तब भी ये ईमान नहीं लाएंगे। और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए। और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे। और अगर हम उन पर फरिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते और हम सारी चीजें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे इल्ला यह कि अल्लाह चाहे मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं। (110-112)

और इसी तरह हमने शरीर (दुष्ट) आदमियों और शरीर जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बना दिया। वे एक दूसरे को पुरफरेब बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें। और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ उन लोगों के दिल मायल हों जो आख़िरत (परलोक) पर यकीन नहीं रखते। और ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें। (113-114)

क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ बनाऊं। हालांकि उसने तुम्हारी तरफ

वाजेह किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे जानते हैं कि यह तेरे रब की तरफ से उतारी गई है हक के साथ। पस तुम न हो शक करने वालों में। और तुम्हारे रब की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला, जानने वाला है। और अगर तुम लोगों की अक्सरियत के कहने पर चलो जो जमीन में हैं तो वे तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देंगे। वे महज गुमान की पैरवी करते हैं और कयास आराइयां (अटकल बातें) करते हैं। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और ख़ूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं। (115-118)

पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालांकि ख़ुदा ने तफ़्सील से बयान कर दी हैं वे चीजें जिन्हें उसने तुम पर हराम किया है। सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ। और यकीनन बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं बग़ैर किसी इल्म के। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है हद से निकल जाने वालों को। और तुम गुनाह के जाहिर को भी छोड़ दो और उसके बातिन को भी। जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे। और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यकीनन यह बेहुक्मी है और शयातीन इल्का (संप्रेषित) कर रहे हैं अपने साथियों को ताकि वे तुमसे झगड़ें। और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुश्रिक (बहुदेववादी) हो जाओगे। (119-122)

क्या वह शख़्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे जिंदगी दी और हमने उसे एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है, इससे निकलने वाला नहीं। इस तरह मुंकिरों की नजर में उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और इस तरह हर बस्ती में हमने गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहां हीले (चालें) करें। हालांकि वे जो हीला करते हैं अपने ही ख़िलाफ करते हैं मगर वे उसे नहीं समझते। और जब उनके पास कोई निशान आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज न मानेंगे जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो ख़ुदा के पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैग़म्बरी किसे बख़्शे। जो लोग मुजरिम हैं जरूर उन्हें अल्लाह के यहां जिल्लत नसीब होगी और सख़्त अजाब भी, इस वजह से कि वे मक्र (चालबाजी) करते थे। (123-125)

अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस तरह अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है। हमने वाजेह कर दी हैं निशानियाँ ग़ौर

करने वालों के लिए। उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास। और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे। (126-128)

और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्नों के गिरोह तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से। और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुंच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था। ख़ुदा कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक दूसरे से, उन आमाल के सबब जो वे करते थे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे। वे कहेंगे हम खुद अपने ख़िलाफ गवाह हैं। और उन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में रखा। और वे अपने ख़िलाफ ख़ुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुंकिर थे। यह इस वजह से कि तुम्हारा रब बस्तियों को उनके जुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहां के लोग बेख़बर हों। (129-132)

और हर शख़्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज से और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं। और तुम्हारा रब बेनियाज (निस्पृह), रहमत वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से। जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम खुदा को आजिज नहीं कर सकते। कहो, ऐ लोगो तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूं। तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार किसके हक में बेहतर होता है। यक़ीनन जालिम कभी फ़लाह (कल्याण) नहीं पा सकते। (133-136)

और ख़ुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने ख़ुदा का कुछ हिस्सा मुक़र्रर किया है। पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है। फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को पहुंच जाता है। कैसा बुरा फैसला है जो ये लोग करते हैं। और इस तरह बहुत से मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की नजर में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के क़त्ल को ख़ुशनुमा बना दिया है ताकि उन्हें बर्बाद करें और उन पर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ्तिरा (झूठ गढ़ने) में लगे रहें। (137-138)

और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक। और फलां चौपाए हैं कि उनकी पीठ हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने

अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा। और कहते हैं कि जो फलां किस्म के जानवरों के पेट में है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं। अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सजा देगा। बेशक अल्लाह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को कत्ल किया नादानी से बग़ैर किसी इल्म के। और उन्होंने उस रिज्क को हराम कर लिया जो अल्लाह ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए। वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने। (139-141)

और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते। और खजूर के दरख़्त और खेती कि उसके खाने की चीजें मुख़्तलिफ होती हैं और जैतून और अनार आपस में मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुख़्तलिफ भी। खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक अदा करो उसके काटने के दिन। और इसराफ (हद से आगे बढ़ना) न करो, बेशक अल्लाह इसराफ करने वालों को पसंद नहीं करता। और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और जमीन से लगे हुए भी। खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (142-143)

अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए। दो भेड़ की किस्म से और दो बकरी की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों। मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो। और इसी तरह दो ऊंट की किस्म से हैं और दो गाय की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस वक्त हाजिर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे ताकि वह लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के। बेशक अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है उसमें तो मैं कोई चीज नहीं पाता जो हराम हो किसी खाने वाले पर सिवा इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह नापाक है। या नाजाइज जबीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो। लेकिन जो शख़्स भूख से बेइख़्तियार हो जाए, न नाफरमानी करे और न ज्यादती करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (144-146)

और यहूद पर हमने सारे नाख़ून वाले जानवर हराम किए थे और गाय और बकरी की चरबी हराम की सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह सजा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यक़ीनन हम सच्चे हैं। पस अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत वाला है। और उसका अजाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता। (147-148)

जिन्होंने शिर्क किया वे कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप दादा करते और न हम किसी चीज को हराम कर लेते। इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने भी जो इनसे पहले हुए हैं। यहां तक कि उन्होंने हमारा अजाब चखा। कहो क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जिसे तुम हमारे सामने पेश करो। तुम तो सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हो और महज अटकल से काम लेते हो। कहो कि पूरी हुज्जत तो अल्लाह की है। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो इस पर गवाही दें कि अल्लाह ने इन चीजों को हराम ठहराया है। अगर वे झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और तुम उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते और दूसरों को अपने रब का हमसर (समकक्ष) ठहराते हैं। (149-151)

कहो, आओ मैं सुनाऊं वे चीजें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं। यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मां बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के डर से क़त्ल न करो। हम तुम्हें भी रोजी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई के काम के पास न जाओ चाहे वह जाहिर हो या पोशीदा। और जिस जान को अल्लाह ने हराम ठहराया उसे न मारो मगर हक पर। ये बातें हैं जिनकी ख़ुदा ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई है ताकि तुम अक़्ल से काम लो। (152)

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और नाप तौल में पूरा इंसाफ करो। हम किसी के जिम्मे वही चीज लाजिम करते हैं जिसकी उसे ताक़त हो। और जब बोलो तो इंसाफ की बात बोलो चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो। ये चीजें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाहराह है। पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगी। यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम बचते रहो। (153-154)

फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तफ्सील और हिदायत और रहमत ताकि वे अपने रब के मिलने का यकीन करें। और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब। पस इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहमत की जाए। इसलिए कि तुम यह न कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते। पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत। तो उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और

उनसे मुंह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से एराज (उपेक्षा) करते हैं हम उन्हें उनके एराज की पादाश में बहुत बुरा अजाब देंगे। ये लोग क्या इसके मुंतजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुंचेगी तो किसी शख़्स को उसका ईमान नफा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो। कहो तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं। (155-159)

जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह-गिरोह बन गए तुम्हें उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (160-161)

कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है। सही दीने इब्राहीम की मिल्लत की तरफ जो यकसू थे और मुश्रिकीन में से न थे। कहो मेरी नमाज और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। कोई उसका शरीक नहीं। और मुझे इसी का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले फरमांबरदार हूं। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूं जबकि वही हर चीज का रब है और जो शख़्स भी कोई कमाई करता है वह उसी पर रहता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ तुम्हारा लौटना है। पस वह तुम्हें बता देगा वह चीज जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में एक दूसरे का जानशीन बनाया और तुममें से एक का रुत्बा दूसरे पर बुलन्द किया। ताकि वह आजमाए तुम्हें अपने दिए हुए में। तुम्हारा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। (162-166)

सूरह-7. अल-आराफ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम० साद०। यह किताब है जो तुम्हारी तरफ उतारी गई है। पस तुम्हारा दिल इस वजह से तंग न हो ताकि तुम इसके जरिए से लोगों को डराओ, और वह ईमान वालों के लिए याददिहानी है। जो उतरा है तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ से उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो। तुम बहुत कम नसीहत मानते हो। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया। उन पर हमारा अजाब रात को आ पहुंचा या दोपहर को जबकि वे आराम कर रहे थे। फिर जब हमारा अजाब उन पर आया तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि वाक़ई हम जालिम थे। पस हमें जरूर पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल भेजे गए और हमें जरूरी पूछना है रसूलों से। फिर हम

उनके सामने सब बयान कर देंगे इल्म के साथ और हम कहीं ग़ायब न थे। उस दिन वजनदार सिर्फ हक होगा। पस जिनकी तोलें भारी होंगी वही लोग कामयाब ठहरेंगे और जिनकी तौलें हल्की होंगी वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे हमारी निशानियों के साथ नाइंसाफी करते थे। (1-9)

और हमने तुम्हें जमीन मे जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें जिंदगी का सामान फराहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हारी सूरत बनाई। फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो। पस उन्होंने सज्दा किया। मगर इब्लीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। ख़ुदा ने कहा कि तुझे किस चीज ने सज्दा करने से रोका जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। इब्लीस ने कहा कि मैं इससे बेहतर हूं। तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। ख़ुदा ने कहा कि तू उतर यहां से। तुझे यह हक नहीं कि तू इसमें घमंड करे। पस निकल जा, यकीनन तू जलील है। इब्लीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा कि तुझे मोहलत दी गई। इब्लीस ने कहा कि चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर उन पर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पाएगा। ख़ुदा ने कहा कि निकल यहां से जलील और ठुकराया हुआ। जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा। (10-18)

और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहां से चाहो। मगर उस दरख़्त के पास न जाना वर्ना तुम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख़्त से सिर्फ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फरिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की जिंदगी हासिल हो जाए। और उसने कसम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हूं। (19-21)

पस मायल कर लिया उन्हें फरेब से। फिर जब दोनों ने दरख़्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं। और वे अपने को बाग़ के पत्तों से ढांकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त (वृक्ष) से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें माफ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे, और तुम्हारे लिए जमीन में एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफा उठाना है। ख़ुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (22-25)

ऐ बनी आदम, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के काबिले शर्म हिस्सों को

ढांके और जीनत (साज-सज्जा) भी। और तकवा (ईश-परायणता) का लिबास इससे भी बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग ग़ौर करें। ऐ आदमी की औलाद, शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास उतरवाए ताकि उन्हें उनके सामने बेपर्दा कर दे। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26-27)

और जब वे कोई फोहश (खुली बुराइ) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और ख़ुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है। कहो, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के जिम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। कहो कि मेरे रब ने किस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज के वक्त अपना रुख़ सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी। उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफीक बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं। (28-30)

ऐ औलादे आदम, हर नमाज के वक्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो। और हद से तजावुज (सीमा उल्लंघन) न करो। बेशक अल्लाह हद स ॆ तजावुज करने वालों को पसंद नहीं करता। कहो अल्लाह की जीनत (साज-सज्जा) को किसने हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीजों को। कहो वे दुनिया की जिंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आख़िरत (परलोक) में तो वे ख़ास उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। कहो मेरे रब ने तो बस फोहश (अश्लील) बातों को हराम ठहराया है वे खुली हों या छुपी। और गुनाह को और नाहक की ज्यादती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के जिम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (31-33)

और हर कौम के लिए एक मुकर्ररह मुद्दत है। फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। ऐ बनी आदम, अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएं और उनसे तकब्बुर करें वही लोग दोजख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वे उन्हें मिलकर रहेगा। यहां तक कि जब

हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुंचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते थे कहां हैं। वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए। और वे अपने ऊपर इक़रार करेंगे कि बेशक वे इंकार करने वाले थे। (34-37)

ख़ुदा कहेगा, दाख़िल हो जाओ आग में जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं। जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाख़िल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा। यहां तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएंगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब, यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया पस तू उन्हें आग का दोहरा अजाब दे। ख़ुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है मगर तुम नहीं जानते। और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फजीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं। पस अपनी कमाई के नतीजे में अजाब का मजा चखो। (38-39)

बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकब्बुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए। और हम मुजरिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। उनके लिए दोजख़ का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त के मुवाफ़िक़ ही बोझ डालते हैं यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उनके सीने की हर ख़लिश (दुराव) को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहां तक पहुंचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता। हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे। और आवाज आएगी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले। (40-43)

और जन्नत वाले दोजख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को सच्चा पाया। वे कहेंगे हां। फिर एक पुकारने वाला दोनों के दर्मियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो जालिमों पर। जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते थे और वे आख़िरत (परलोक) के मुंकिर थे। (44-45)

और दोनों के दर्मियान एक आड़ होगी। और आराफ (जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे। और जब दोजख़ वालों की तरफ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमें शामिल न करना इन जालिम लोगों के साथ। और आराफ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम

न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में तुम कसम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत न पहुंचेगी। जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम ग़मगीन होगे। (46-49)

और दोजख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीजों को मुंकिरों के लिए हराम कर दिया है। वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा था। पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। (50-51)

और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुफस्सल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। क्या अब वे इसी के मुंतजिर हैं कि उसका मजमून जाहिर हो जाए। जिस दिन उसका मजमून जाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैग़म्बर हक लेकर आए थे। पस अब क्या कोई हमारी सिफारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उससे मुख़्तलिफ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे। (52-53)

बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह उढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके। यकीनन वह हद से गुजरने वालों को पसंद नहीं करता। और जमीन में फसाद न करो उसकी इस्लाह के बाद। और उसी को पुकारो ख़ौफ के साथ और तमअ (आशा) के साथ। यकीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से करीब है। (54-56)

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। फिर जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी ख़ुश्क सरजमीन की तरफ हांक देते हैं। फिर हम उसके जरिए पानी उतारते हैं। फिर हम उसके जरिए से हर क़िस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो। और जो जमीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो जमीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है। इसी तरह हम अपनी निशानियां मुख़्तलिफ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं। (57-58)

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। उसकी कौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नजर आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुब्तिला हो। नूह ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं है। बल्कि मैं भेजा हुआ हूं सारे आलम के परवरदिगार का। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर रहा हूं। और मैं अल्लाह की तरफ से वह बात जानता हूं जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के जरिए आई ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। बेशक वे लोग अंधे थे। (59-64)

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। सो क्या तुम डरते नहीं। उसकी कौम के बड़े जो इंकार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक्ली में मुब्तिला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो। हूद ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझे कुछ बेअक्ली नहीं। बल्कि मैं खुदावंदेआलम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारा ख़ैरख़्वाह और अमीन हूं। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख़्स के जरिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराए। और याद करो जबकि उसने कौमे नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डीलडोल में तुमको फैलाव भी ज्यादा दिया। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम फलाह पाओ। (65-69)

हूद की कौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते आए हैं। पस तुम जिस अजाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो। हूद ने कहा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से नापाकी और ग़ुस्सा वाकेअ हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद नहीं उतारी। पस इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं। फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और मानते न थे। (70-72)

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक खुला हुआ निशान आ गया है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी की तौर पर है। पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की जमीन में। और इसे कोई

तकलीफ न पहुंचाना वर्ना तुम्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। और याद करो जबकि ख़ुदा ने आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें जमीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और जमीन में फसाद करते न फिरो। (73-74)

उनकी कौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमज़ोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यकीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उस पर ईमान रखते हैं। वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज के मुंकिर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह अगर तुम पैगम्बर हो तो वह अजाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे। फिर उन्हें जलजले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। और सालेह यह कहता हुआ उन की बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी कौम, मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की मगर तुम ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते। (75-79)

और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी कौम से कहा। क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया। तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो। बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। मगर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज बनते हैं। फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, उसकी बीवी के सिवा जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। और हमने उन पर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का। (80-84)

और मदयन की तरफ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से दलील पहुंच चुकी है। पस नाप और तौल पूरी करो। और मत घटाकर दो लोगों को उनकी चीजें। और फसाद न डालो जमीन में उसकी इस्लाह के बाद। यह तुम्हारे हक में बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और रास्तों पर मत बैठो कि डराओ और अल्लाह की राह से उन लोगों को रोको जो उस पर ईमान ला चुके हैं और उस राह में कजी (टेढ़) तलाश करो। और याद करो जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर तुम्हें बढ़ा दिया। और देखो फसाद करने वालों का अंजाम क्या हुआ। और अगर तुममें से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है जो देकर मैं भेजा गया हूं और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इंतिजार करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दर्मियान फैसला कर दे और वह बेहतर फैसला करने वाला है। (85-87)

कौम के बड़े जो मुतकब्बिर (घमंडी) थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारी मिल्लत में फिर

आ जाओ। शुऐब ने कहा, क्या हम बेजार हों तब भी। हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएं बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी। और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मिल्लत मे लौट आएं मगर यह कि ख़ुदा हमारा रब ही ऐसा चाहे। हमारा रब हर चीज को अपने इल्म से घेरे हुए है। हमने अपने रब पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमारे और हमारी कौम के दर्मियान हक के साथ फ़ैसला कर दे, तू बेहतरीन फैसला करने वाला है। और उन बड़ों ने जिन्होंने उसकी कौम में से इंकार किया था कहा कि अगर तुम शुऐब की पैरवी करोगे तो तुम बर्बाद हो जाओगे। फिर उन्हें जलजले ने पकड़ लिया। पस वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था गोया वे कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे। उस वक्त शुऐब उनसे मुंह मोड़ कर चला और कहा, ऐ मेरी कौम मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचा चुका और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर चुका। अब मैं क्या अफसोस करूं मुंकिरों पर। (88-93)

और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और तकलीफ में मुब्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ाएं। फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहां तक कि उन्हें ख़ूब तरक्की हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ और ख़ुशी तो हमारे बाप दादाओं को भी पहुंचती रही है। फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसका गुमान भी न रखते थे। और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उन पर आसमान और जमीन की नेमतें खोल देते। मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उन्हें पकड़ लिया उनके आमाल के बदले। फिर क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अजाब रात के वक्त आ पड़े जबकि वे सोते हों। या क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब आ पहुंचे उन पर दिन चढ़े जब वे खेलते हों। क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों से बेख़ौफ हो गए हैं। पस अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से वही लोग बेख़ौफ होते हैं जो तबाह होने वाले हों। (94-99)

क्या सबक नहीं मिला उन्हें जो जमीन के वारिस हुए हैं उसके अगले बाशिन्दों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते। ये वे बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास हमारे रसूल निशानियां लेकर आए तो हरगिज न हुआ कि वे ईमान लाएं उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस तरह अल्लाह मुंकिरों के दिलों पर मुहर कर देता है। और हमने उनके अक्सर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अक्सर को नाफरमान (अवज्ञाकारी) पाया। (100-102)

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फिरऔन और उसकी कौम के सरदारों के पास। मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ जुल्म किया। पस देखो कि मुफ्सिदों (फसाद करने वालों) का क्या अंजाम हुआ। और मूसा ने कहा ऐ फिरऔन, मैं

परवरदिगारे आलम की तरफ़ से भेजा हुआ आया हूं। सजावार हूं कि अल्लाह के नाम पर कोई बात हक के सिवा न कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूं। पस तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा, अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। तब मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक साफ अजदहा बन गया। और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है। चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी जमीन से निकाल दे। अब तुम्हारी क्या सलाह है। उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को मोहलत दो और शहरों में हरकारे भेजो कि वे तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर ले आएं। (103-112)

और जादूगर फिरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, हमें इनाम तो जरूर मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजित) रहे। फिरऔन ने कहा, हां और यकीनन तुम हमारे मुकर्रबीन (निकटवर्तियों) में दाख़िल होगे। जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। मूसा ने कहा, तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा) डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गढ़ा था। पस हक जाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया। पस वे लोग वहीं हार गए और जलील होकर रहे। और जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुलआलमीन (सृष्टि-प्रभु) पर जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का। (113-122)

फिरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। यकीनन यह एक साजिश है जो तुम लोगों ने शहर में इस ग़रज से की है कि तुम उसके बाशिन्दों को यहां से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पांओं मुख़ालिफ सम्तों से काटूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ लौटना है। तू हमें सिर्फ इस बात की सजा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियां जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ रब, हम पर सब्र उंडेल दे और हमें वफ़ात दे इस्लाम पर। (123-126)

फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी कौम को छोड़ देगा कि वे मुल्क में फसाद फैलाएं और तुझे और तेरे माबूदों (पूज्यों) को छोड़ें। फिरऔन ने कहा हम उनके बेटों को कत्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिंदा रखेंगे। और हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो। जमीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है। और आख़िरी कामयाबी अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है। मूसा की कौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहा करीब है कि तुम्हारा रब

तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और बजाए उनके तुम्हें इस सरजमीन का मालिक बना दे, फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो। (127-129)

और हमने फिरऔन वालों को कहत (अकाल) और पैदावार की कमी में मुब्तिला किया ताकि उन्हें नसीहत हो। लेकिन जब उन पर ख़ुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे लिए है और अगर उन पर कोई आफत आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते। सुनो, उनकी बदबख़्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मस्हूर (जादू ग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (130-132)

फिर हमने उनके ऊपर तूफान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और ख़ून। ये सब निशानियां अलग-अलग दिखाईं। फिर भी उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे। और जब उन पर कोई अजाब पड़ता तो कहते ऐ मूसा, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। अगर तुम हम पर से इस अजाब को हटा दो तो हम जरूर तुम पर ईमान लाएंगे और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को जाने देंगे। फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफत को कुछ मुद्दत के लिए जहां बहरहाल उन्हें पहुंचना था तो उसी वक्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते। (133-135)

फिर हमने उन्हें सजा दी और उन्हें समुद्र में ग़र्क कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गए। और जो लोग कमजोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरजमीन के पूर्व व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और बनी इस्राईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फिरऔन और उसकी कौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे। (136-137)

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका गुजर एक ऐसी कौम पर हुआ जो पूजने में लग रहे थे अपने बुतों के। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है। उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे लिए तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें तमाम अहले आलम पर फजीलत (श्रेष्ठता) दी है। और जब हमने फिरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सख़्त अजाब में डाले हुए थे। तुम्हारे बेटों को कत्ल करते और तुम्हारी औरतों को जिंदा रहने देते और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी बड़ी आजमाइश थी। (138-141)

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मजीद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा,

मेरे पीछे तुम मेरी कौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इस्लाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना। और जब मूसा हमारे वक्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूं। फरमाया, तुम मुझे हरगिज नहीं देख सकते। अलबत्ता पहाड़ की तरफ देखो, अगर वह अपनी जगह कायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डाली तो उसे रेजा-रेजा कर दिया। और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। (142-143)

अल्लाह ने फरमाया, ऐ मूसा मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने कलाम के जरिए से सरफराज किया। पस अब लो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है। और शुक्रगुजारों में से बनो। और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर किस्म की नसीहत और हर चीज की तफ्सील लिख दी। पस इसे मजबूती से पकड़ो और अपनी कौम को हुक्म दो कि इनके बेहतर मफहूम (भावार्थ) की पैरवी करें। अनकरीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा। (144-145)

मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूंगा जो जमीन में नाहक घमंड करते हैं। और अगर वे हर किस्म की निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं। और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएंगे और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ से अपने को ग़ाफिल रखा। और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाकात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे करते थे। (146-147)

और मूसा की कौम ने उसके पीछे अपने जेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है। उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े जालिम थे। और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो यकीनन हम बर्बाद हो जाएंगे। और जब मूसा रंज और ग़ुस्से में भरा हुआ अपनी कौम की तरफ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की। क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली। और उसने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचने लगे। हारून ने कहा, ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और करीब था कि मुझे मार डालें। पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मौका न दे और मुझे जालिमों के साथ शामिल न कर। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब माफ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फरमा और तू सबसे ज्यादा रहम करने वाला है। (148-151)

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को माबूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़जब पहुंचेगा और जिल्लत दुनिया की जिंदगी में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को। और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर इसके बाद तौबा की। और ईमान लाए तो बेशक इसके बाद तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (152-153)

और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाईं और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने अपनी कौम में से सत्तर आदमी चुने हमारे मुकर्रर किए हुए वक्त के लिए। फिर जब उन्हें जलजले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब, अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी। क्या तू हमें एसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवकूफ़ों ने किया। ये सब तेरी आजमाइश है तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा थामने वाला है। पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी। हमने तेरी तरफ रुजूअ किया। अल्लाह ने कहा, मैं अपना अजाब उसी पर डालता हूं जिसे चाहता हूं और मेरी रहमत शामिल है हर चीज को। पस मैं उसे लिख दूंगा उनके लिए जो डर रखते हैं और जकात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। (154-156)

जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीजा चीजें जाइज ठहराता है और नापाक चीजें हराम करता है और उन पर से वह बोझ और कैदें उतारता है जो उन पर थीं। पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। (157)

कहो ऐ लोगो, बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं तुम सबकी तरफ जिसकी हुकूमत है आसमानों और जमीन में। वही जिलाता है और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात (वाणी) पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। और मूसा की कौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक के मुताबिक रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक इंसाफ करता है। (158-159)

और हमने उन्हें बारह घरानों में तक्सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया। और जब मूसा की कौम ने पानी मांगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फलां चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह चश्मे (जलस्रोत) फूट निकले। हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मकाम मालूम कर लिया। और हमने उन पर बदलियों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ पाकीजा चीजों में से जो हमने तुम्हें दी हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं

बिगाड़ा बल्कि ख़ुद अपना ही नुक्सान करते रहे। और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहां से चाहो खाओ और कहो हमें बख़्श दे और दरवाजे में झुके हुए दाख़िल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं माफ कर देंगे। हम नेकी करने वालों को और ज्यादा देते हैं। फिर उनमें से जालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ्ज उसके सिवा जो उनके कहा गया था। फिर हमने उन पर आसमान से अजाब भेजा इसलिए कि वे जुल्म करते थे। (160-162)

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी। जब वे सब्त (सनीचर) के बारे में तजावुज (उल्लंघन) करते थे। जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब्त न होता तो न आतीं। उनकी आजमाइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफरमानी कर रहे थे। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अजाब देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे रब के सामने इल्जाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें। (163-164)

फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया एक सख़्त अजाब में पकड़ लिया। इसलिए कि वे नाफरमानी (अवज्ञा) करते थे। फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि जलील बंदर बन जाओ। (165-166)

और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह यहूद पर कियामत के दिन तक जरूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अजाब दें। बेशक तेरा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। और हमने उन्हें गिरोह-गिरोह करके जमीन में बिखेर दिया। उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुख़्तलिफ (भिन्न)। और हमने उनकी आजमाइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से ताकि वे बाज आएं। (167-168)

फिर उनके पीछे नाख़ल्फ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यकीनन बख़्श दिए जाएंगे। और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक के सिवा कोई और बात न कहें। और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और आख़िरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं। और जो लोग ख़ुदा की किताब को मजबूती से पकड़ते हैं और नमाज कायम करते हैं, बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज्र जाया नहीं करेंगे। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है। और उन्होंने गुमान किया कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ो उस चीज को जो हमने तुम्हें दी है मजबूती से, और याद रखो जो उसमें है ताकि तुम बचो। (169-171)

और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया ख़ुद उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं। उन्होंने कहा हां, हम इकरार करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम कियामत के दिन कहने लगो हमें तो इसकी ख़बर न थी। या कहो कि हमारे बाप दादा ने पहले से शिर्क (ख़ुदा का साझीदार ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लतकार लोगों ने किया। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं ताकि वे पलट आएं। (172-174)

और उन्हें उस शख़्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयतों के जरिए से बुलन्दी अता करते मगर वह तो जमीन का हो रहा और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगा। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर बोझ लादे तब भी हांपे और अगर छोड़ दे तब भी हांपे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ ताकि वे सोचें। कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक्सान करते रहे। अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं। (175-178)

और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोजख़ के लिए पैदा किया है। उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आंखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज्यादा बेराह। यही लोग हैं ग़ाफिल। और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। पस इन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी (कुटिलता) करते हैं। वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का। और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक के मुताबिक फैसला करता है। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहां से उन्हें ख़बर भी न होगी। और मैं उन्हें ढील देता हूं, बेशक मेरा दाव बड़ा मजबूत है। (179-183)

क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक साफ डराने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और जमीन के निजाम पर नजर नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज से और इस बात पर की शायद उनकी मुद्दत करीब आ गई हो। पस इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। वह तुमसे कियामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वह कब वाक़े होगा। कहो इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसके वक्त पर उसे जाहिर करेगा। वह भारी हो रही है

आसमानों में और जमीन में। वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी। वह तुमसे पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहकीक कर चुके हो। कहो इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। कहो मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक्सान न पहुंचता। मैं तो महज एक डराने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें। (184-188)

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी ने बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब मर्द ने औरत को ढांक लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया। फिर वह उसे लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अल्लाह अपने रब से दुआ की, अगर तूने हमें तंदुरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुजार रहेंगे। मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे। अल्लाह बरतर है उन मुश्रिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं। क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज को पैदा नहीं करते बल्कि वे ख़ुद मख़्लूक (सृजित) हैं। और वे न उनकी किसी किस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं। पस तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (189-194)

क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनकी आंखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ। फिर तुम लोग मेरे ख़िलाफ तदबीरें करो और मुझे मोहलत न दो। यकीनन मेरा कारसाज (कार्य-साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाजी करता है नेक बंदों की। और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें नजर आता है कि वे तुम्हारी तरफ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते। (195-198)

दरगुजर (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो। और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल उन्हें छू जाता है तो वे फौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक्त उन्हें सूझ आ जाती है। और जो शैतान के भाई हैं वे उन्हें गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते। (199-202)

और जब तुम उनके सामने कोई निशानी (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न

www.Momeen.blogspot.com

तुम छांट लाए कुछ अपनी तरफ से। कहो, मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ से मुझ पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ से और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और ख़ामोश रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिजी और ख़ौफ के साथ और पस्त आवाज से, और ग़ाफिलों में से न बनों। जो (फरिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। और वे उसकी पाक जात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं। (203-206)

सूरह-8. अल-अनफ़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

वे तुमसे अनफ़ाल (ग़नीमत का माल) के बारे में पूछते हैं। कहो कि अनफ़ाल अल्लाह और उसके रसूल के हैं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के तअल्लुकात की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो, अगर तुम ईमान रखते हो। ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाए तो उनके दिल दहल जाएं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं। वे नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। यही लोग हकीकी मोमिन हैं। उनके लिए उनके रब के पास दर्जे और मग्फिरत (क्षमा) हैं और उनके लिए इज्जत की रोज़ी है। (1-4)

जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें हक के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मुसलमानों में से एक गिरोह को यह नागवार था। वे इस हक के मामले में तुमसे झगड़ रहे थे बावजूद यह कि वह जाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ हांके जा रहे हैं आंखो देखते। और जब ख़ुदा तुमसे वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी। और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे वह तुम्हें मिले। और अल्लाह चाहता था कि वह हक का हक होना साबित कर दे अपने कलिमात से और मुंकिरों की जड़ काट दे ताकि हक (सत्य) हक होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए, चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (5-8)

जब तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फरियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हजार फरिश्ते लगातार भेज रहा हूं। और यह अल्लाह ने सिर्फ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं। और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है। यकीनन अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। जब अल्लाह ने तुम पर ऊंघ डाल दी अपनी तरफ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और

आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके जरिए से तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और उससे कदमों को जमा दे। जब तेरे रब ने फरिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों को जमाए रखो। मैं मुंकिरों के दिल में रौब डाल दूंगा। पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर जर्ब (चोट) लगाओ। यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत की। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत करता है तो अल्लाह सजा देने में सख़्त है। यह तो अब चखो और जान लो कि मुंकिरों के लिए आग का अजाब है। (9-14)

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारा मुकाबला मुंकिरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। और जिसने ऐसे मौके पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़जब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (15-16)

पस उन्हें तुमने कत्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने कत्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे। बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। यह तो हो चुका। और बेशक अल्लाह मुंकिरीन की तमाम तदबीरें (युक्तियां) बेकार करके रहेगा। अगर तुम फैसला चाहते थे तो फैसला तुम्हारे सामने आ गया। और अगर तुम बाज आ जाओ तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा चाहे वह कितना ही ज्यादा हो। और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (17-19)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगर्दानी (अवहेलना) न करो हालांकि तुम सुन रहे हो। और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालांकि वे नहीं सुनते। यकीनन अल्लाह के नजदीक बदतरीन जानवर वे बहरे गूंगे लोग हैं जो अक्ल से काम नहीं लेते। और अगर उनमें किसी भलाई का इल्म अल्लाह को होता तो वह जरूर उन्हें सुनने की तौफीक देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे जरूर रूगर्दानी करेंगे बेरुख़ी करते हुए। (20-23)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ बुला रहा है जो तुम्हें जिंदगी देने वाली है। और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल (बाधित) हो जाता है। और यह कि उसी की तरफ तुम्हारा इकट्ठा होना है। और डरो उस फित्ने से जो ख़ास उन्हीं लोगों पर वाकेअ न होगा जो तुममें से जुल्म के करने वाले हुए हैं। और जान लो कि अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। (24-25)

और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और जमीन में कमजोर समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीजा रोजी दी ताकि तुम शुक्रगुजार बनो। ऐ ईमान वालो, ख़ियानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में हालांकि तुम जानते हो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आजमाइश हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज्र। (26-28)

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ुरक़ान बहम पहुंचाएगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है, और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें कैद कर दें या कत्ल कर डालें या जलावतन (निर्वासित) कर दें। वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (29-30)

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया। अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें। यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह अगर यही हक है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अजाब हम पर ले आ। और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अजाब दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उन पर अजाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तग़फ़ार (क्षमा-याचना) कर रहे हों। और अल्लाह उन्हें क्यों न अजाब देगा हालांकि वे मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (संरक्षक) नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। मगर उनमें से अक्सर इसे नहीं जानते। और बैतुलल्लाह के पास उनकी नमाज सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं। पस अब चखो अजाब अपने कुफ्र का। (31-35)

जिन लोगों ने इंकार किया वे अपने माल को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोकें। वे उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा फिर वे मग़लूब (परास्त) किए जाएंगे। और जिन्होंने इंकार किया उन्हें जहन्नम की तरफ इकट्ठा किया जाएगा। ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले। (36-37)

इंकार करने वालों से कहो कि अगर वे बाज आ जाएं तो जो कुछ हो चुका है वह उन्हें माफ कर दिया जाएगा। और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगलों के साथ गुजर चुका है। और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फितना बाकी न रहे और दीन सब अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का। और अगर उन्होंने एराज (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार। (38-40)

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (जंग में हासिल माल) तुम्हें हासिल हो उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर उतारी फैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (41)

और जबकि तुम वादी के करीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर। और काफ़िला तुमसे नीचे की तरफ था। और अगर तुम और वे वक्त मुकर्रर करते तो जरूर इस तकर्रुर के बारे में तुममें इख़्तेलाफ (मतभेद) हो जाता। लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे जिंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ जिंदा रहे। यकीनन अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब अल्लाह तुम्हारे ख़्वाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा। अगर वह उन्हें ज्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते इस मामले में। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। यकीनन वह दिलों तक का हाल जानता है। और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नजर में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नजर में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसका होना तै था। और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं। (42-44)

ऐ ईमान वालो जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो तुम साबितकदम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो। और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वर्ना तुम्हारे अंदर कमजोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। हालांकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (45-47)

और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूं। मगर जब दोनों गिरोह आमने सामने हुए तो वह उल्टे पांव भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी हूं, मैं वह कुछ देख रहा हूं जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूं और अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। जब मुनाफ़िक (पाखंडी) और जिनके दिलों में रोग है कहते थे कि इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा जबरदस्त और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (48-49)

और अगर तुम देखते जबकि फ़रिश्ते इन मुंकिरीन की जान कब्ज करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अजाब चखो। यह

बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला है, सख़्त सजा देने वाला है। यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी कौम पर करता है उस वक्त तक नहीं बदलता जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ्सों (अंतःकरणों) में है। और बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों को झुठलाया फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फिरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया और ये सब लोग जालिम थे। (50-54)

बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नजदीक वे लोग हैं जिन्होंने इंकार किया और वे ईमान नहीं लाते। जिनसे तुमने अहद (वचन) लिया, फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं। पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सजा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देखकर भाग जाएं, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो। और अगर तुम्हें किसी कौम से बदअहदी (वचन भंग) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ फेंक दो, ऐसी तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएं। बेशक अल्लाह बदअहदों को पसंद नहीं करता। (55-58)

और इंकार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते। और उनके लिए जिस क़द्र तुमसे हो सके तैयार रखो कुव्वत और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और इनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी। और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफी है। वही है जिसने अपनी नुसरत (मदद) और मोमिनों के जरिए तुम्हें कुव्वत दी। और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ (जुड़ाव) पैदा कर दिया। अगर तुम जमीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने उन में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह जोरआवर है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (59-63)

ऐ नबी तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। ऐ नबी मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो। अगर तुम में बीस आदमी साबितक़दम (दृढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में सौ होंगे तो हजार मुंकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम में कुछ कमजोरी है। पस अगर तुम में सौ साबितक़दम होंगे तो दो

सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हजार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हजार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबितक़दम रहने वालों के साथ है। (64-66)

किसी नबी के लिए लायक नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक वह जमीन में अच्छी तरह ख़ूंरेजी न कर ले। तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत को चाहता है। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीका तुमने इख़्तियार किया उसके सबब तुम्हें सख़्त अजाब पहुंच जाता। पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (67-69)

ऐ नबी तुम्हारे हाथ में जो कैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर ये तुमसे बदअहदी (वचन-भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने ख़ुदा से बदअहदी की तो ख़ुदा ने तुम्हें उन पर क़ाबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (70-71)

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया। और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफ़ाक़त का कोई तअल्लुक नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं। और वे तुमसे दीन के मामले में मदद मांगे तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (जरूरी) है, इल्ला यह कि मदद किसी ऐसी कौम के ख़िलाफ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा (संधि) है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और जो लोग मुंकिर हैं वे एक दूसरे के रफीक (सहयोगी) हैं। अगर तुम ऐसा न करोगे तो जमीन में फित्ना फैलेगा और बड़ा फसाद होगा। (72-73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (स्थान परिवर्तन) की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं। इनके लिए बख़्शिश है और बेहतरीन रिज़्क है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वे भी तुम में से हैं। और ख़ून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (74-75)

सूरह-9. अत-तौबह

बरा-त (विरक्ति) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उन मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदे (संधि) किए थे। पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह

मुंकिरों को रुसवा करने वाला है। एलान है अल्लाह और रसूल की तरफ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बरीउज्जिम्मा (जिम्मेदारी-मुक्त) हैं। अब अगर तुम लोग तौबा करो तो तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम मुंह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज करने वाले नहीं हो। और इंकार करने वालों को सख़्त अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। मगर जिन मुश्रिकों से तुमने मुआहिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) उनकी मुद्दत तक पूरा करो। बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। (1-4)

फिर जब हुरमत (गरिमा) वाले महीने गुजर जाएं तो मुश्रिकीन को कत्ल करो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में। फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज क़ायम करें और जकात अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर मुश्रिकीन में से कोई शख़्स तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुंचा दो। यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते। (5-6)

इन मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के जिम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मस्जिदे हराम के पास, पस जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर काबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न कराबत (निकट के संबंधों) का लिहाज करें और न अहद का। वे तुम्हें अपने मुंह की बात से राजी करना चाहते हैं मगर उनके दिल इंकार करते हैं। और उनमें अक्सर बदअहद हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका। बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं। किसी मोमिन के मामले में वे न कराबत का लिहाज करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं ज्यादती करने वाले। पस अगर वे तौबा करें और नमाज कायम करें और जकात अदा करें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए। (7-11)

और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ़्र के इन सरदारों से लड़ो। बेशक उनकी कसमें कुछ नहीं, ताकि वे बाज आएं। क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने की जसारत (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुमसे जंग में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह ज्यादा मुस्तहिक है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो। उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सजा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उन पर गलबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और

अल्लाह तौबा नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (12-15)

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (16)

मुश्रिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालांकि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं। उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं। अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज क़ायम करे और जकात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें। क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मस्जिदे हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख़्स के जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नजदीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहां बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं। उनका रब उन्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी रहमत और ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बाग़ों की जिनमें उनके लिए दाइमी (हमेशा रहने वाली) नेमत होगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (17-22)

ऐ ईमान वालो अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अजीज रखें। और तुम में से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही लोग जालिम हैं। कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा ख़ानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा महबूब हैं तो इंतिजार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफरमान लोगों को रास्ता नहीं देता। (23-24)

बेशक अल्लाह ने बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज में मुब्तिला कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुंकिरों को सजा दी और यही मुंकिरों का बदला है। फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहे तौबा नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला

मेहरबान है। ऐ ईमान वालो, मुश्रिकीन बिल्कुल नापाक हैं। पस वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आएं और अगर तुम्हें मुफ्लिसी का अंदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फ़ज्ल से तुम्हें धनी कर देगा अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (25-28)

उन अहले किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने हक को अपना दीन बनाते यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज्या (जान माल की हिफाज़त के बदले कर) दें और छोटे बनकर रहें। और यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उनके अपने मुंह की बातें हैं। वे उन लोगों की बात की नकल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ्र किया। अल्लाह इन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं। उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख़ (धर्म गुरुओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने मरयम को भी। हालांकि उन्हें सिर्फ यह हुक्म था कि वे एक माबूद (पूज्य) की इबादत करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह पाक है इससे जो वे शरीक करते हैं। (29-31)

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बग़ैर मानने वाला नहीं, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सारे दीन पर ग़ालिब कर दे चाहे यह मुश्रिकों को कितना ही नागवार हो। (32-33)

ऐ ईमान वालो, अहले किताब के अक्सर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्म गुरु) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीकों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। उस दिन इस माल पर दोज़ख़ की आग दहकाई जाएगी। फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी। यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था। पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे। (34-35)

महीनों की गिनती अल्लाह के नजदीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, इनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं। यही है सीधा दीन। पस उनमें तुम अपने ऊपर जुल्म न करो। और मुश्रिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तकियों (ईश परायण लोगों) के साथ है। महीनों का हटा देना कुफ्र में एक इजाफा है। इससे कुफ्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं। वे किसी साल हराम महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हराम कर देते हैं ताकि ख़ुदा के हराम किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हराम किए हुए

को हलाल कर लें। उनके बुरे आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। और अल्लाह इंकार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता। (36-37)

ऐ ईमान वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम जमीन से लगे जाते हो। क्या तुम आख़िरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी पर राजी हो गए। आख़िरत के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुम्हें दर्दनाक सजा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा और तुम ख़ुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और ख़ुदा हर चीज पर कादिर है। अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह ख़ुद उसकी मदद कर चुका है जबकि मुंकिरों उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ दो में का दूसरा था। जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम्हें नजर न आते थे और अल्लाह ने मुंकिरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (38-40)

हल्के और बोझल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अगर नफ़ा करीब होता और सफर हल्का होता तो वे जरूर तुम्हारे पीछे हो लेते मगर यह मंजिल उन पर कठिन हो गई। अब वे कसमें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (41-42)

अल्लाह तुम्हें माफ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाजत दे दी। यहां तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे यह दरख़्वास्त न करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है। तुमसे इजाजत तो वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं। पस वे अपने शक में भटक रहे हैं। और अगर वे निकलना चाहते तो जरूर वे इसका कुछ सामान कर लेते। मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो। (43-46)

अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दर्मियान फितनापरदाजी (उपद्रव) के लिए दौड़धूप करते और तुम में उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह जालिमों से ख़ूब वाकिफ है। ये पहले भी फित्ने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलट फेर करते रहे हैं। यहां तक कि हक आ गया और अल्लाह का हुक्म जाहिर हो गया और वे नाख़ुश ही रहे। (47-48)

और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझे फितने में न

डालिए। सुन लो, वे तो फितने में पड़ चुके। और बेशक जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे ख़ुश होकर लौटते हैं। कहो, हमें सिर्फ वही चीज पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। वह हमारा कारसाज (कार्य साधक) है और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। कहो तुम हमारे लिए सिर्फ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंतजिर हो। मगर हम तुम्हारे हक में इसके मुंतजिर हैं कि अल्लाह तुम पर अजाब भेजे अपनी तरफ से या हमारे हाथों से। पस तुम इंतिजार करो हम भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हैं। (49-52)

कहो तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाखुशी से, तुमसे हरगिज न क़ुबूल किया जाएगा। बेशक तुम नाफरमान लोग हो। और वे अपने ख़र्च की क़ुबूलियत से सिर्फ इसलिए महरूम हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और ये लोग नमाज के लिए आते हैं तो गरानी (बेदिली) के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो नागवारी के साथ। तुम उनके माल और औलाद को कुछ वकअत (महत्व) न दो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उनके जरिए से उन्हें दुनिया की जिंदगी में अजाब दे और उनकी जानें इस हालत में निकलें कि वे मुंकिर हों। वे ख़ुदा की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुम में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं। बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। अगर वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर उसमें जा छुपें। (53-57)

और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदकात के बारे में ऐब लगाते हैं। अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राजी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज हो जाते हैं। क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उस पर वे राजी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफी है। अल्लाह अपने फज्ल से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह ही चाहिए। सदकात (जकात) तो दरअस्ल फकीरों और मिस्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदकात के काम पर मुकर्रर हैं। और उनके लिए जिनकी तालीफेकल्ब (दिल भराइ) मत्लूब है। और गर्दनों के छुड़ाने में और जो तावान भरें और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिर की इम्दाद में। यह एक फरीजा है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (58-60)

और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स तो कान है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुम में अहले ईमान हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सजा है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाते हैं ताकि तुम्हें राजी करें। हालांकि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा हकदार हैं कि वे उसे राजी करें अगर वे मोमिन हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और

उसके रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। (61-63)

मुनाफिक़ीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाजिल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे। कहो कि तुम मजाक उड़ा लो, अल्लाह यकीनन उसे जाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो। और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी दिल्लगी कर रहे थे। बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है। अगर हम तुम में से एक गिरोह को माफ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो जरूर सजा देंगे क्योंकि वे मुजरिम हैं। (64-66)

मुनाफिक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफिक़ औरतें सब एक ही तरह के हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं। और अपने हाथों को बंद रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। बेशक मुनाफिक़ीन बहुत नाफरमान हैं। मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों और मुंकिरों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए बस है। उन पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए कायम रहने वाला अजाब है। जिस तरह तुमसे अगले लोग, वे तुमसे जोर में ज्यादा थे और माल व औलाद की कसरत में तुमसे बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से फायदा उठाया था। और तुमने भी वही बहसें कीं जैसी बहसें उन्होंने की थीं। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आख़िरत में जाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो इनसे पहले गुजरे। कौमे नूह और आद और समूद और कौमे इब्राहीम और असहाबे मदयन और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए। तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर जुल्म करता मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे। (67-70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बाग़ों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और वादा है, सुथरे मकानों का हमेशगी के बाग़ों में, और अल्लाह की रिजामंदी जो सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71-72)

ऐ नबी मुंकिरों (सत्य का इंकार करने वालों) और मुनाफिक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर कड़े बन जाओ। और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना

है। वे ख़ुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। हालांकि उन्होंने कुफ़्र की बात कही और वे इस्लाम के बाद मुंकिर हो गए और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सकी। और यह सिर्फ इसका बदला था कि उन्हें अल्लाह और रसूल ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। अगर वे तौबा करें तो उनके हक में बेहतर है और अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो ख़ुदा उन्हें दर्दनाक अजाब देगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी। और जमीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार। (73-74)

और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो हम जरूर सदका करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वे बुख़्ल करने लगे और बेपरवाह होकर मुंह फेर लिया। पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह के किए हुए वादे की ख़िलाफ़वर्जी की और इस सबब से कि वे झूठ बोलते रहे। क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके राज और उनकी सरगोशी (गुप्त वार्ता) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है। वे लोग जो तअन (कटाक्ष) करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खोल कर सदकात देते हैं और जो सिर्फ अपनी मेहनत मजदूरी में से देते हैं उनका मजाक उड़ाते हैं। अल्लाह इन मजाक उड़ाने वालों का मजाक उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। तुम उनके लिए माफी की दरख़्वास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा उन्हें माफ करने की दरख़्वास्त करोगे तो अल्लाह उन्हें माफ करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इंकार किया और अल्लाह नाफरमानों को राह नहीं दिखाता। (75-80)

पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत ख़ुश हुए और उन्हें गिरां (भारी) गुजरा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो कि दोजख़ की आग इससे ज्यादा गर्म है, काश उन्हें समझ होती। पस वे हंसें कम और रोएं ज्यादा, इसके बदले में जो वे करते थे। पस अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ वापस लाए और वे तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाजत मांगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर तुम कभी नमाज न पढ़ो और न उसकी कब्र पर खड़े हो। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफरमान थे। (81-84)

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें तअज्जुब में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके जरिए से उन्हें दुनिया में अजाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुंकिर हों। और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके

रसूल के साथ जिहाद करो तो उनके मकदूर वाले (सामर्थ्यवान) तुमसे रुख़्सत मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं। उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं। और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते। लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियां और वही फलाह (कल्याण) पाने वाले हैं। उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (85-89)

देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाजत मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वह बैठा रहे। उनमें से जिन्होंने इंकार किया उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ेगा। कोई गुनाह कमजोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ैरख़्वाही करें। नेककारों पर कोई इल्जाम नहीं और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और न उन लोगों पर कोई इल्जाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज नहीं कि तुम्हें उस पर सवार कर दूं तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे ख़र्च करें। इल्जाम तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे इजाजत मांगते हैं हालांकि वे मालदार हैं। वे इस पर राजी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते। (90-93)

तुम जब उनकी तरफ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज्र (विवशताएं) पेश करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम हरगिज तुम्हारी बात न मानेंगे। बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुजर करो। पस तुम उनसे दरगुजर करो बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे। वे तुम्हारे सामने कसमें खाएंगे कि तुम उनसे राजी हो जाओ। अगर तुम उनसे राजी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफरमान लोगों से राजी होने वाला नहीं। (94-96)

देहात वाले कुफ़्र व निफ़ाक में ज्यादा सख़्त हैं और इसी लायक हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुदूद से बेख़बर रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिक्मत वाला है। और देहातियों में ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए जमाने की गर्दिशों के मुंतजिर हैं। बुरी गर्दिश ख़ुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहां

क़ुर्ब (समीपता) का और रसूल के लिए दुआएं लेने का जरिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए क़ुर्ब का जरिया है। अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (97-99)

और मुहाजिरीन व अंसार में जो लोग साबिक और मुक़द्दम हैं और जिन्होंने ख़ूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे उससे राजी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफ़िक (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफ़िक हैं। वे निफ़ाक़ (पाखंड) पर जम गए हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दोहरा अजाब देंगे। फिर वे एक अजाबे अजीम (महा-यातना) की तरफ भेजे जाएंगे। (100-101)

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने क़ुसूरों का एतराफ कर लिया है। उन्होंने मिले जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उन पर तवज्जोह करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। तुम उनके मालों में से सदक़ा लो, इससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज्किया (पवित्रीकरण) करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है। और वही सदक़ों को क़ुबूल करता है। और अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है। कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले और छुपे को जानता है। वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी ख़ुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सजा देगा या उनकी तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (102-106)

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई नुक्सान पहुंचाने के लिए और कुफ्र के लिए और अहले ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि कमीनगाह (शरण-स्थल) फराहम करें उस शख़्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है। और ये लोग कसमें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना। अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अव्वल दिन से तकवे (ईश-परायणता) पर पड़ी है वह इस लायक है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है। क्या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा से डर पर और ख़ुदा की ख़ुशनूदी पर रखी या वह शख़्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी।

और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (107-110)

बिलाशुबह अल्लाह ने मोमिनों से उनके जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले। वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है। पस तुम ख़ुशियां करो उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी कामयाबी। वे तौबा करने वाले हैं। इबादत करने वाले हैं। हम्द (ईश-प्रशंसा) करने वाले हैं। ख़ुदा की राह में फिरने वाले हैं। रुकूअ करने वाले हैं। सज्दा करने वाले हैं। भलाई का हुक्म देने वाले है। बुराई से रोकने वाले हैं। अल्लाह की हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो। (111-112)

नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं रवा नहीं कि मुश्रिकों के लिए मग्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उन पर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग्फ़िरत की दुआ मांगना सिर्फ इस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था। फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेतअल्लुक हो गया। बेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुर्दबार (उदार) था। और अल्लाह किसी कौम को, उसे हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ-साफ वे चीजें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। अल्लाह ही की सल्तनत है आसमानों में और जमीन में, वह जिलाता है और वही मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है ओर न मददगार। (113-116)

अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फरमाई जिन्होंने तंगी के वक्त मे नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ मायल हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह फरमाई। बेशक अल्लाह उन पर महरबान है रहम करने वाला है। और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फरमाई जिनका मामला उठा रखा गया था। यहां तक कि जब जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए ख़ुद अल्लाह के सिवा कोई जाएपनाह (शरण-स्थल) नहीं। फिर अल्लाह उनकी तरफ पलटा ताकि वे उसकी तरफ पलट आएं। बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (117-118)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीना वालों और अतराफ (आसपास) के देहातियों के लिए जेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे

बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अजीज रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें ख़ुदा की राह में लाहिक होती है और जो कदम भी वे मुंकिरों को रंज पहुंचाने वाला उठाते हैं और जो चीज भी वे दुश्मन से छीनते हैं इनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है। अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करता। और जो छोटा या बड़ा ख़र्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तै किए वे सब उनके लिए लिखा गया ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे। (119-121)

और यह मुमकिन न था कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी कौम के लोगों को आगाह (दीक्षित) करता ताकि वे भी परहेज करने वाले बनते। (122)

ऐ ईमान वालो, उन मुंकिरों से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख़्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि इसने तुम में से किस का ईमान ज्यादा कर दिया। पस जो ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान ज्यादा कर दिया और वे ख़ुश हो रहे हैं। और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी। और वे मरने तक मुंकिर ही रहे। क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक हासिल करते हैं। और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं। (123-127)

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुम में से है। तुम्हारा नुक्सान में पड़ना उस पर शाक (असह्य) है। वह तुम्हारी भलाई का हरीस (लालसा रखने वाला) है। ईमान वालों पर निहायत शफ़ीक (करुणामय) और महरबान है। फिर भी अगर वे मुंह फेरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही मालिक है अर्शे अजीम का। (128-129)

सूरह-10. यूनुस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। ये पुरहिक्मत (तत्वदर्शितामय) किताब की आयतें हैं। क्यों लोगों को इस पर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स पर 'वही' (प्रकाशना) की कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएं उन्हें ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा

मर्तबा है। मुंकिरों ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है। (1-2)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर कायम हुआ। वही मामलात का इंतिजाम करता है। उसकी इजाजत के बग़ैर कोई सिफारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं। उसी की तरफ तुम सबको लौट कर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। बेशक वह पैदाइश की इब्तिदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसाफ के साथ बदला दे। और जिन्होंने इंकार किया उनके इंकार के बदले उनके लिए खौलता पानी और दर्दनाक अजाब है। (3-4)

अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंजिलें मुकर्रर कर दीं ताकि तुम वर्षों का शुमार और हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक्सद नहीं बनाया है। वह निशानियां खोल कर बयान करता है उनके लिए जो समझ रखते हैं। यकीनन रात और दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और जमीन में पैदा किया है उनमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डरते हैं। (5-6)

बेशक जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की जिंदगी पर राजी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवा हैं, उनका ठिकाना जहन्नम होगा इस सबब से कि जो वे करते थे। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बाग़ों में। उसमें उनका कौल होगा कि ऐ अल्लाह तू पाक है। और मुलाकात उनकी सलाम होगी। और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (7-10)

अगर अल्लाह लोगों के लिए अजाब उसी तरह जल्दी पहुंचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत ख़त्म कर दी गई होती। लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और इंसान को जब कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक्त पर हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुजर जाने वालों के लिए उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं। (11-12)

और हमने तुमसे पहले कौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने जुल्म किया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को। फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो। (13-14)

और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे

पास आने का खटका नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और कुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूं। मैं तो सिर्फ उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता। मैं इससे पहले तुम्हारे दर्मियान एक उम्र बसर कर चुका हूं, फिर क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते, उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए। यकीनन मुजरिमों को फ्लाह हासिल नहीं होती। (15-17)

और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक्सान पहुंचा सकें और न नफा पहुंचा सकें। और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफारिशी हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की ख़बर देते हो जो उसे आसमानों और जमीन में मालूम नहीं। वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं। और लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ किया। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दर्मियान उस अम्र (मामले) का फैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तेलाफ कर रहे हैं। (18-19)

और वे कहते हैं कि नबी पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कहो कि ग़ैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है। तुम लोग इंतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में से हूं। और जब कोई तकलीफ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं तो वे फौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं। कहो कि ख़ुदा अपने हीलों में उनसे भी ज्यादा तेज है। यकीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी हीलाबाजियों को लिख रहे हैं। (20-21)

वह अल्लाह ही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है। चुनांचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफिक हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे ख़ुश होते हैं कि यकायक तुंद हवा आती है और उन पर हर जानिब से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए। उस वक्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यकीनन हम शुक्रगुजार बंदे बनेंगे। फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फ़ौरन ही जमीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ है, दुनिया की जिंदगी का नफा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे। (22-23)

दुनिया की जिंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो जमीन का सब्जा ख़ूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं। यहां तक कि

जब जमीन पूरी रौनक पर आ गई और संवर उठी और जमीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे काबू में है तो अचानक उस पर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियां खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ बुलाता है और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे अधिक भी। और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न जिल्लत। यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयां कमाईं तो बुराई का बदला उसके बराबर है। और उन पर रुस्वाई छाई हुई होगी। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा। गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांक दिए गए हैं। यही लोग दोजख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (25-27)

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान तफ़रीक (विभेद) कर देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। अल्लाह हमारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। उस वक्त हर शख़्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था और लोग अल्लाह अपने मालिके हकीकी की तरफ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उन्होंने गढ़े थे वे सब उनसे जाते रहेंगे। (28-30)

कहो कि कौन तुम्हें आसमान और जमीन से रोजी देता है। या कौन है जो कान पर और आंखों पर इख़्तियार रखता है। और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। और कौन मामलात का इंतिजाम कर रहा है। वे कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। पस वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार (पालनहार) हकीकी है। तौफीक के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किधर फिरे जाते हो, इसी तरह तेरे रब की बात सरकशी करने वालों के हक में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे। (31-33)

कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दुबारा भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा। फिर तुम कहां भटके जाते हो। कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है जो हक की तरफ रहनुमाई करता हो, कह दो कि अल्लाह ही हक की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक की तरफ रहनुमाई करता है वह पैरवी किए जाने का मुस्तहिक है या वह जिसे ख़ुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फैसला करते हो। उनमें से अक्सर सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और गुमान हक बात में कुछ भी काम नहीं देता। अल्लाह को ख़ूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (34-36)

और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले। बल्कि यह तस्दीक (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं। और किताब की तफ़्सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह ख़ुदावंदे आलम की तरफ से है। क्या लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ये लोग उस चीज को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आई। और जिसकी हकीकत अभी उन पर नहीं खुली। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुजरे हैं, पस देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। (37-39)

और उनमें से वे भी हैं जो कुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे। और तेरा रब मुफ्सिदों (उपद्रवियों) को ख़ूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूं और मैं उससे बरी हूं जो तुम कर रहे हो। और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे अगरचे वे देख न रहे हों। अल्लाह लोगों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता मगर लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (40-44)

और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की एक घड़ी दुनिया में थे। वे एक दूसरे को पहचानेंगे। बेशक सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए। हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं। और हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला कर दिया जाता है और उन पर कोई जुल्म नहीं होता। (45-47)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक वक्त है। जब उनका वक्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे। कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अजाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए तो मुजरिम लोग इससे पहले क्या कर लेंगे। फिर क्या जब अजाब वाकेअ (घटित) हो चुकेगा तब उस पर यकीन करोगे। अब कायल हुए और तुम इसी का तकाजा करते थे, फिर जालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अजाब चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे। (48-52)

और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हां मेरे रब की कसम यह सच

है और तुम उसे थका न सकोगे। और अगर हर जालिम के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है तो वह उसे फिदये (आर्थिक दंड) में दे देना चाहेगा और जब वे अजाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे। और उनके दर्मियान इंसाफ से फैसला कर दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा। याद रखो जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। वही जिंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (53-56)

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत। कहो कि यह अल्लाह के फज्ल और उसकी रहमत से है। अब चाहिए कि लोग ख़ुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज्क उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया और कुछ को हलाल। कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। और कियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज्ल फरमाने वाला है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (57-60)

और तुम जिस हाल में भी हो और कुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक्त तुम उसमें मशग़ूल होते हो। और तेरे रब से जर्रा बराबर भी कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में और न इससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाजेह किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, उनके लिए ख़ुशख़बरी है दुनिया की जिंदगी में भी और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। और तुम्हें उनकी बात गम में न डाले। जोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (61-65)

सुनो, जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज अटकल दौड़ा रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम सुकून हासिल करो। और दिन को रोशन बनाया। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66-67)

कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह पाक है, बेनियाज (निस्पृह) है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते। कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे फलाह नहीं पाएंगे। उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फायदा उठा लेना है। फिर हमारी ही तरफ उनका लौटना है। फिर उनको हम इस इंकार के बदले सख़्त अजाब का

मजा चखाएंगे। (68-70)

और उनको नूह का हाल सुनाओ। जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरां (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम अपना मुत्तफ़िका फ़ैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फैसले में कोई शुबह बाकी न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो कर गुजरो और मुझको मोहलत न दो। अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो मैंने तुमसे कोई मजदूरी नहीं मांगी है। मेरी मजदूरी तो अल्लाह के जिम्मे है। और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारों में से हूं। फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया। और उन लोगों को गर्क कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था। (71-73)

फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे। वे उनके पास खुली खुली दलीलें लेकर आए, मगर वे उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (74)

फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियां देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से सच्ची बात पहुंची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। मूसा ने कहा कि क्या तुम हक को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालांकि जादू वाले कभी फलाह नहीं पाते। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई कायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं। (75-78)

और फिरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ। जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। बेशक अल्लाह इसको बातिल (विनष्ट) कर देगा, अल्लाह यकीनन मुफ्सिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता। और अल्लाह अपने हुक्म से हक को हक कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (79-82)

फिर मूसा को उसकी कौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फिरऔन के डर से और ख़ुद अपनी कौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फितने में न डाल दे, बेशक फिरऔन जमीन में ग़लबा (संप्रभुत्व) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुजर जाते हैं। और मूसा ने कहा ऐ मेरी कौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाकई फरमांबरदार हो। उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें जालिम लोगों के लिए फितना न बना। और अपनी रहमत से हमें मुंकिर लोगों से नजात दे। (83-86)

और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि अपनी कौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुकर्रर कर लो और अपने इन घरों को क़िब्ला बनाओ और नमाज कायम करो। और अहले ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो। (87)

और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब, तूने फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की जिंदगी में रौनक और माल दिया है। ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे तेरी राह से लोगों को भटकाएं। ऐ हमारे रब, उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अजाब को देख लें। फरमाया, तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई। अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। (88-89)

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया तो फिरऔन और उसके लश्कर ने उनका पीछा किया। सरकशी और ज्यादती की ग़रज से। यहां तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। और मैं उसके फरमांबरदारों में हूं। क्या अब, और इससे पहले तू नाफरमानी करता रहा और तू फसाद बरपा करने वालों में से था। पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफिल रहते हैं। (90-92)

और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर उस वक्त जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यकीनन तेरा रब क़ियामत के दिन उनके दर्मियान उस चीज का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ करते रहे। (93)

पस अगर तुम्हें उस चीज के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक आया है तुम्हारे रब की तरफ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो। और तुम उन लोगों में शामिल न हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वर्ना तुम नुक्सान उठाने वालों में से होगे। (94-95)

बेशक जिन लोगों पर तेरे रब की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे, चाहे उनके पास सारी निशानियां आ जाएं जब तक कि वे दर्दनाक अजाब को सामने आता न देख लें। पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफा देता, यूनुस की कौम के सिवा। जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की जिंदगी में रुस्वाई का अजाब टाल

दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्पन्न) होने का मौका दिया। (96-98)

और अगर तेरा रब चाहता तो जमीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं। और किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाजत के बग़ैर ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक्ल से काम नहीं लेते। (99-100)

कहो कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है उसे देखो और निशानियां और डरावे उन लोगों को फायदा नहीं पहुंचाते जो ईमान नहीं लाते। वे तो बस उस तरह के दिन का इंतिजार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुजरे हुए लोगों को पेश आए। कहो, इंतिजार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हूं फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए। इसी तरह हमारा जिम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे। (101-103)

कहो, ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन के मुताल्लिक शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा। बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम्हें वफात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूं। और यह कि अपना रुख़ यकसू (एकाग्र) होकर दीन की तरफ करूं। और मुश्रिकों में से न बनूं। और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफा पहुंचा सकते हैं और न नुक्सान। फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में से हो जाओगे। और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके। और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उसके फज्ल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपना फज्ल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख़्शने वाला महरबान है। (104-107)

कहो, ऐ लोगो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास हक आ गया है। जो हिदायत क़ुबूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा, और मैं तुम्हारे ऊपर जिम्मेदार नहीं हूं। और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। (108-109)

सूरह-11. हूद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। यह किताब है जिसकी आयतें पहले मोहकम (दृढ़) की गईं फिर एक दाना (तत्वदर्शी) और ख़बीर (सर्वज्ञ) हस्ती की तरफ से उनकी तफ़्सील की गई कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो। मैं तुम्हें उसकी तरफ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं। और यह कि तुम अपने रब से माफी चाहो और उसकी तरफ पलट

आओ, वह तुम्हें एक मुद्दत तक बरतवाएगा अच्छा बरतवाना, और हर ज्यादा के मुस्तहिक को अपनी तरफ से ज्यादा अता करेगा। और अगर तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक में एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। तुम सबको अल्लाह की तरफ पलटना है और वह हर चीज पर क़ादिर है। (1-4)

देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं। ख़बरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे जाहिर करते हैं। वह दिलों की बात तक जानने वाला है। और जमीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोजी अल्लाह की जिम्मे न हो। और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है। (5-6)

और वही है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है। और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुंकिरीन कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सजा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज उसे रोके हुए है। आगाह, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो वह उनसे फेरा न जा सकेगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज जिसका वे मजाक उड़ा रहे थे। (7-8)

और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाजते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है। और अगर किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहुंची थी, उसे हम नेमत से नवाजते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें मुझसे दूर हो गईं, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। मगर जो लोग सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं उनके लिए बख़्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल)। (9-11)

कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फरिश्ता क्यों नहीं आया। तुम तो सिर्फ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज का जिम्मेदार है। क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो। (12-14)

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बर्बाद हुआ और ख़राब गया जो उन्होंने कमाया था। (15-16)

भला एक शख़्स जो अपने रब की तरफ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई इसका इंकार करे तो उसके वादे की जगह आग है। पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो। यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (17)

और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की लानत है जालिमों के ऊपर। उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते हैं। यही लोग आख़िरत के मुंकिर हैं। वे लोग जमीन में अल्लाह को बेबस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उन पर दोहरा अजाब होगा। वे न सुन सकते थे और न देखते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। और वे सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था। इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत (परलोक) में सबसे ज्यादा घाटे में रहेंगे। (18-22)

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिजी (समर्पण) की वही लोग जन्नत वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। इन दोनों फरीकों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों यकसां (समान) हो जाएंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (23-24)

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूं। यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक अजाब के दिन का अंदेशा रखता हूं। उसकी कौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इंकार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबेअ हुआ हो सिवाए उनके जो हम में पस्त लोग हैं, बेसमझे बूझे। और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (25-27)

नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूं और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नजर न आई तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम उससे बेजार (खिन्न) हो। और ऐ मेरी कौम, मैं उस पर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता। मेरा अज्र (प्रतिफल) तो बस अल्लाह के जिम्मे है और मैं हरगिज उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। उन लोगों को अपने रब से मिलना है। मगर मैं देखता हूं तुम लोग जहालत में मुब्तिला हो। और ऐ मेरी कौम, अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूं तो ख़ुदा के मुकाबले में कौन मेरी मदद करेगा। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। और न मैं ग़ैब की ख़बर

रखता हूं। और न यह कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर (तुच्छ) हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। अगर मैं ऐसा कहूं तो मैं ही जालिम हूंगा। (28-31)

उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। और वह चीज ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो। नूह ने कहा उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके काबू से बाहर न जा सकोगे। और मेरी नसीहत तुम्हें फायदा नहीं देगी अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूं जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है। (32-34)

क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने उसे गढ़ लिया है। कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूं। (35)

और नूह की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई कि अब तुम्हारी कौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो ईमान ला चुका। पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न हो जो वे कर रहे हैं। और हमारे रूबरू और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और जालिमों के हक में मुझसे बात न करो, बेशक ये लोग गर्क होंगे। और नूह कश्ती बनाने लगा। और जब उसकी कौम का कोई सरदार उस पर गुजरता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा अगर तुम हम पर हंसते हो तो हम भी तुम पर हंस रहे हैं। तुम जल्द जान लोगे कि वे कौन हैं जिन पर वह अजाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उस पर वह अजाब उतरता है जो दाइमी है। (36-39)

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तूफान उबल पड़ा हमने नूह से कहा कि हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घर वालों को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दर्मियान उन्हें लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और मुंकिरों के साथ मत रह। उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे। और दोनों के दर्मियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। और कहा गया कि ऐ जमीन, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का फैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो जालिमों की कौम। (40-44)

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर वालों में है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा हाकिम है। ख़ुदा ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घर वालों में नहीं। उसके काम ख़राब हैं। पस मुझसे उस चीज के बारे में सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि तुम जाहिलों में से न बनो। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मुझे माफ न करे और मुझ पर रहम न फरमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। (45-47)

कहा गया कि ऐ नूह, उतरो, हमारी तरफ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ, तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे जुहूर में आने वाले) गिरोह कि हम उन्हें फायदा देंगे, फिर उन्हें हमारी तरफ से एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिनको हम तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी कौम। पस सब्र करो बेशक आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। (48-49)

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुमने महज झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ मेरी कौम, मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (प्रतिफल) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। और ऐ मेरी कौम, अपने रब से माफी चाहो, फिर उसकी तरफ पलटो। वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें बरसाएगा। और तुम्हारी कुव्वत पर मजीद कुव्वत का इजाफ़ा करेगा। और तुम मुजरिम होकर रूगर्दानी (अवहेलना) न करो। (50-52)

उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम हरगिज तुम्हें मानने वाले नहीं हैं। हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूं और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूं उनसे जिनको तुम शरीक करते हो उसके सिवा। पस तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है। (53-56)

अगर तुम एराज (उपेक्षा) करते हो तो मैंने तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था। और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (ख़लीफा, उत्तराधिकारी) बनाएगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज पर निगहबान है। और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, हमने अपनी रहमत से बचा दिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे। और हमने उन्हें एक सख़्त

अजाब से बचा दिया। और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इंकार किया। और उसके रसूलों को ना माना और हर सरकश और मुख़ालिफ की बात की इत्तिबाअ (अनुसरण) की। और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और कियामत के दिन। सुन लो, आद ने अपने रब का इंकार किया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की कौम थी। (57-60)

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी ने तुम्हें जमीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया। पस माफी चाहो, फिर उसकी तरफ रुजूअ करो। बेशक मेरा रब करीब है, कुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा कि ऐ सालेह इससे पहले हमें तुमसे उम्मीद थी। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख़्त शुबह है और हम बड़े ख़लजान (दुविधा) में हैं। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे ख़ुदा से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफरमानी करूं। पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाए नुक्सान के। (61-63)

और ऐ मेरी कौम, यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की जमीन में खाए। और इसे कोई तकलीफ न पहुंचाओ वर्ना बहुत जल्द तुम्हें अजाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फायदा उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से (महफूज रखा)। बेशक तेरा रब ही कवी (शक्तिमान) और जबरदस्त है। और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो, समूद ने अपने रब से कुफ्र किया। सुनो, फिटकार है समूद के लिए। (64-68)

और इब्राहीम के पास हमारे फरिश्ते ख़ुशख़बरी लेकर आए। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर देर न गुजरी कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की कौम की तरफ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, वह हंस पड़ी। पस हमने उसे इस्हाक की ख़ुशख़बरी दी और इस्हाक के आगे याकूब की। उसने कहा, ऐ ख़राबी, क्या मैं बच्चा जनूंगी, हालांकि मैं बुढ़िया हूं और यह मेरा ख़ाविंद भी बूढ़ा है। यह तो एक अजीब बात है। फरिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो। इब्राहीम के घर वालो, तुम पर अल्लाह की

रहमतें और बरकतें हैं। बेशक अल्लाह निहायत काबिले तारीफ और बड़ी शान वाला है। (69-73)

फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ दूर हुआ और उसे ख़ुशख़बरी मिली तो वह हमसे कौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था। ऐ इब्राहीम उसे छोड़ो। तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उन पर एक ऐसा अजाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता। (74-76)

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा सख़्त है। और उसकी कौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए। और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी कौम, ये मेरी बेटियां हैं, वे तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा हैं। पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं है। उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ ग़रज नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं। (77-79)

लूत ने कहा, काश मेरे पास तुमसे मुक़ाबले की कुव्वत होती या मैं जा बैठता किसी मुस्तहकम (सुदृढ़) पनाह में। फरिश्तों ने कहा कि ऐ लूत, हम तेरे रब के भेजे हुए हैं। वे हरगिज तुम तक न पहुंच सकेंगे। पस तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाओ। और तुम में से कोई मुड़कर न देखे। मगर तुम्हारी औरत कि उस पर वही कुछ गुजरने वाला है जो उन लोगों पर गुजरेगा। उनके लिए सुबह का वक्त मुकर्रर है, क्या सुबह करीब नहीं। फिर जब हमारा हुक्म आया तो हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उस पर पत्थर बरसाए कंकर के, तह-ब-तह, तुम्हारे रब के पास से निशान लगाए हुए। और वह बस्ती उन जालिमों से कुछ दूर नहीं। (80-83)

और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। और नाप और तोल में कमी न करो। मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूं, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अजाब से डरता हूं। और ऐ मेरी कौम, नाप और तोल को पूरा करो इंसाफ के साथ। और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो। और जमीन पर फसाद न मचाओ। जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (रखवाला) नहीं हूं। (84-86)

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, क्या तुम्हारी नमाज तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीजों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। या अपने माल में अपनी मर्जी के मुताबिक तसर्रुफ (उपभोग) करना छोड़ दें। बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो। (87)

शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ, अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजेह

दलील पर हूं और उसने अपनी जानिब से मुझे अच्छा रिज्क भी दिया। और मैं नहीं चाहता कि मैं ख़ुद वही काम करूं जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूं। मैं तो सिर्फ इस्लाह (सुधार) चाहता हूं, जहां तक हो सके। और मुझे तौफीक तो अल्लाह ही से मिलेगी। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूं। और ऐ मेरी कौम, ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह आफत पड़े जो कौमे नूह या कौमे हूद या कौमे सालेह पर आई थी, और लूत की कौम तो तुमसे दूर भी नहीं। और अपने रब से माफी मांगो फिर उसकी तरफ पलट आओ। बेशक मेरा रब महरबान और मुहब्बत वाला है। (88-90)

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमजोर है। और अगर तेरी बिरादरी न होती तो हम तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर देते। और तुम हम पर कुछ भारी नहीं। शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज्यादा भारी है। और अल्लाह को तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया। बेशक मेरे रब के काबू में है जो कुछ तुम करते हो। और ऐ मेरी कौम, तुम अपने तरीके पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीके पर करता रहूंगा। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अजाब आता है और कौन झूठा है। और इंतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिजार करने वालों में हूं। (91-93)

और जब हमारा हुक्म आया हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। पस वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे। सुनो, फिटकार है मदयन को जैसे फिटकार हुई थी समूद को। (94-95)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाजेह सनद (स्पष्ट प्रमाण) के साथ भेजा, फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ। फिर वे फ़िरऔन के हुक्म पर चले हालांकि फ़िरऔन का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था। कियामत के दिन वह अपनी कौम के आगे होगा और उन्हें आग पर पहुंचाएगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुंचेंगे। और इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी गई और कियामत के दिन भी। कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला। (96-99)

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से कुछ अब तक कायम हैं और कुछ मिट गईं। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया। बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर जुल्म किया। फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे। और उन्होंने उनके हक में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया। (100-101)

और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके जुल्म पर पकड़ता है।

बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख़्त है। इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आख़िरत के अजाब से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे। और वह हाजिरी का दिन होगा। और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुक़र्रर है। जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाजत के बग़ैर कलाम न कर सकेगी। पस उनमें कुछ बदबख़्त (अभागे) होंगे। और कुछ नेकबख़्त (भाग्यशाली)। (102-105)

पस जो लोग बदबख़्त हैं वे आग में होंगे। उन्हें वहां चीख़ना है और दहाड़ना। वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे। बेशक तेरा रब कर डालता है जो चाहता है। और जो लोग नेकबख़्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन क़ायम हैं, मगर जो तेरा रब चाहे बख़्शिश है बेइंतिहा। पस तू उन चीजों से शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा पूरा देंगे बग़ैर किसी कमी के। (106-109)

और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गई। और अगर तेरे रब की तरफ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दर्मियान फ़ैसला कर दिया जाता। और उन्हें इसमें शुबह है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता और यक़ीनन तेरा रब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं। (110-111)

पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की है और हद से न बढ़ो बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो। और उनकी तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया, वर्ना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे और नमाज क़ायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। बेशक नेकियां दूर करती हैं बुराइयों को। यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए और सब्र करो अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र जाए (नष्ट) नहीं करता। (112-115)

पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की क़ौमों में ऐसे अहले ख़ैर होते जो लोगों को जमीन में फ़साद करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और जालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे। और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक तबाह कर दे हालांकि उसके बाशिंदे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों। (116-117)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) में रहेंगे सिवा उनके जिन पर तेरा रब रहम फरमाए। और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है। और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से इकट्ठे भर दूंगा। (118-119)

और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज तुम्हें सुना रहे हैं। जिससे तुम्हारे दिल को मजबूत करें और इसमें तुम्हारे पास हक़ आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (अनुस्मरण)। और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीक़े पर करते रहो और हम अपने तरीक़े पर कर रहे हैं। और इंतिजार करो हम भी मुंतजिर हैं। और आसमानों और जमीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजअ (उन्मुख-केन्द्र) है। पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। (120-123)

सूरह-12. यूसुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० रा०। ये वाज़ेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं। हमने इसे अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। हम तुम्हें बेहतरीन सरगुजश्त (क़िस्से) सुनाते हैं इस क़ुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) किया। इससे पहले बेशक तू बेख़बरों में था। (1-3)

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे हैं। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह ख़्वाब अपने भाइयों को न सुनाना कि वे तुम्हारे ख़िलाफ कोई साजिश करने लगें। बेशक शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुंतख़ब करेगा और तुम्हें बातों की हक़ीक़त तक पहुंचना सिखाएगा और तुम पर और आले याक़ूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (पूर्वजों) इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है। यक़ीनन तेरा रब अलीम (ज्ञानवान) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (4-6)

हक़ीक़त यह है कि यूसुफ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं। जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज्यादा महबूब हैं। हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। यक़ीनन हमारा बाप एक खुली हुई गलती में मुब्तिला है। यूसुफ को क़त्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाए। और इसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को क़त्ल न करो। अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुवें में डाल दो। कोई राह चलता क़ाफ़िला उसे निकाल ले जाएगा। (7-10)

उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप, क्या बात है कि आप यूसुफ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते। हालांकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं। कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहबान हैं। बाप ने कहा मैं इससे ग़मगीन होता हूं कि तुम

उसे ले जाओ और मुझे अंदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो। उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमाअत हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे। (11-14)

फिर जब वे उसे ले गए और यह तै कर लिया कि उसे एक अंधे कुवें में डाल दें और हमने यूसुफ को 'वही' (प्रकाशना) की कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे बाप हम दौड़ का मुकाबला करने लगे और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया। फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हमारी बात का यकीन न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। और वे यूसुफ की कमीज पर झूठा ख़ून लगाकर ले आए। बाप ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही बेहतर है। और जो बात तुम जाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं। (15-18)

और एक काफिला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटकाया। उसने कहा, ख़ुशख़बरी हो यह तो एक लड़का है। और उसे तिजारत का माल समझ कर महफूज कर लिया। और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वे कर रहे थे। और उन्होंने उसे थोड़ी सी कीमत चन्द दिरहम के ऐवज बेच दिया। और वे उससे बेरग़बत (उदासीन) थे। (19-20)

और अहले मिस्र में से जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो। उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफीद हो या हम उसे बेटा बना लें। और इस तरह हमने यूसुफ को उस मुल्क में जगह दी। और ताकि हम उसे बातों की तावील (निहितार्थ) सिखाएं। और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब (अधिकार प्राप्त) रहता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया। और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (21-22)

और यूसुफ जिस औरत के घर में था वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज दरवाजे बंद कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ ने कहा ख़ुदा की पनाह। वह मेरा आका है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है। बेशक जालिम लोग कभी फलाह नहीं पाते। और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट-प्रमाण) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें। बेशक वह हमारे चुने हुए बंदों में से था। (23-24)

और दोनों दरवाजे की तरफ भागे। और औरत ने यूसुफ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके शौहर को दरवाजे पर पाया। औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सजा इसके सिवा क्या है कि उसे कैद किया जाए या उसे सख़्त अजाब दिया जाए। यूसुफ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की। और औरत के कुनबे

वालों में से एक शख़्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है। और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है। फिर जब अजीज ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। यूसुफ, इससे दरगुजर करो। और ऐ औरत तू अपनी गलती की माफी मांग। बेशक तू ही ख़ताकार थी। (25-29)

और शहर की औरतें कहने लगीं कि अजीज की बीवी अपने नौजवान ग़ुलाम के पीछे पड़ी हुई है। वह उसकी मुहब्बत में फरेफ्ता है। हम देखते हैं कि वह खुली हुई गलती पर है। फिर जब उसने उनका फरेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा। और उनके लिए एक मज्लिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ से कहा कि तुम उनके सामने आओ। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं। और उन्होंने अपने हाथ काट डाले। और उन्होंने कहा पाक है अल्लाह, यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है। उसने कहा यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिझाने की कोशिश की थी मगर वह बच गया। और अगर उसने वह नहीं किया जो मैं उससे कह रही हूं तो वह कैद में पड़ेगा और जरूर बेइज्जत होगा। यूसुफ ने कहा, ऐ मेरे रब, कैदख़ाना मुझे उस चीज से ज्यादा पसंद है जिसकी तरफ ये मुझे बुला रही हैं। और अगर तूने उनके फरेब को मुझसे दफा न किया तो मैं उनकी तरफ मायल हो जाऊंगा और जाहिलों में से हो जाऊंगा। पस उसके रब ने उसकी दुआ कुबूल कर ली और उनके फरेब को उससे दफा कर दिया। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है। (30-34)

फिर निशानियां देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया कि एक मुद्दत के लिए इसको कैद कर दें। और कैदख़ाने में उसके साथ दो और जवान दाख़िल हुए। उनमें से एक ने (एक रोज) कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि मैं शराब निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूं जिसमें से चिड़ियां खा रही हैं। हमें इसकी ताबीर (अर्थ) बताओ। हम देखते हैं कि तुम नेक लोगों में से हो। (35-36)

यूसुफ ने कहा, जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा। यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। मैंने उन लोगों के मजहब को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे लोग आख़िरत (परलोक) के मुंकिर हैं और मैंने अपने बुजुर्गों इब्राहीम और इस्हाक और याकूब के मजहब की पैरवी की। हमें यह हक नहीं कि हम किसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराएं। यह अल्लाह का फज्ल है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। ऐ मेरे जेल के साथियो, क्या जुदा जुदा कई माबूद (पूज्य) बेहतर हैं या अल्लाह अकेला जबरदस्त। तुम उसके सिवा नहीं पूजते हो मगर कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह

ने इसकी कोई सनद नहीं उतारी। इक्तेदार (संप्रभुत्व) सिर्फ अल्लाह के लिए है। उसने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है। मगर बहुत लोग नहीं जानते। (37-40)

ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियो तुम में से एक अपने आक़ा को शराब पिलाएगा। और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी। फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे। उस अम्र मामला का फैसला हो गया जिस अम्र के बारे में तुम पूछ रहे थे। और यूसुफ ने उस शख़्स से कहा जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि बच जाएगा कि अपने आक़ा के पास मेरा ज़िक्र करना। फिर शैतान ने उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया। पस वह क़ैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा। (41-42)

और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूं कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो मेरे ख़्वाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर देते हो। वे बोले ये ख़्याली ख़्वाब हैं। और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर मालूम नहीं। उन दो कैदियों में से जो शख़्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊंगा, पस मुझे (यूसुफ के पास) जाने दो। (43-45)

यूसुफ ऐ सच्चे, मुझे इस ख़्वाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात बालें हरी हैं और सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊं ताकि वे जान लें। यूसुफ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे। पस जो फस्ल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ। फिर इसके बाद सात सख़्त साल आएंगे। उस जमाने में वह ग़ल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफूज कर लोगे। फिर इसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर मेंह बरसेगा। और वे उसमें रस निचोड़ेंगे। (46-49)

और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ। फिर जब क़ासिद (संदेशवाहक) उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा रब तो उनके फरेब से ख़ूब वाकिफ है। बादशाह ने पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ को फुसलाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह, हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई। अजीज की बीवी ने कहा अब हक खुल गया। मैंने ही इसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबह वह सच्चा है। (50-51)

यह इसलिए कि (अजीजे मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपर्दा उसकी ख़ियानत नहीं की। और बेशक अल्लाह ख़ियानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता। और मैं अपने नफ्स को बरी नहीं करता। नफ्स (मन) तो बदी ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब

रहम फरमाए। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (52-53)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा। फिर जब यूसुफ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहां मुअज्जज और मोअतमद (विश्वसनीय) हुए। यूसुफ ने कहा मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दो। मैं निगहबान हूं और जानने वाला हूं। और इस तरह हमने यूसुफ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया। वह उसमें जहां चाहे जगह बनाए। हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें। और हम नेकी करने वालों का अज्र जाए (नष्ट) नहीं करते। और आख़िरत का अज्र (प्रतिफल) कहीं ज्यादा बढ़कर है ईमान और तकवा (ईश-भय) वालों के लिए। (54-57)

और यूसुफ के भाई मिस्र आए फिर उसके पास पहुंचे, पस यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया। और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं ग़ल्ला भी पूरा नाप कर देता हूं और बेहतरीन मेजबानी करने वाला भी हूं। और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए ग़ल्ला है और न तुम मेरे पास आना। उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राजी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है। (58-61)

और उसने अपने कारिंदों से कहा कि इनका माल इनके असबाब में रख दो ताकि जब वे अपने घर पहुंचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएं। फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप, हमसे ग़ल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम ग़ल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं। याक़ूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूं जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूं। पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। (62-64)

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप और हमें क्या चाहिए। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है। अब हम जाएंगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएंगे। और अपने भाई की हिफाजत करेंगे। और एक ऊंट का बोझ गल्ला और ज्यादा लाएंगे। यह ग़ल्ला तो थोड़ा है। याक़ूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज न भेजूंगा जब तक तुम मुझसे ख़ुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम इसे जरूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का कौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है। (65-66)

और याक़ूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटो, तुम सब एक ही दरवाजे से दाख़िल न होना बल्कि अलग-अलग दरवाजों से दाख़िल होना। और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा

सकता। हुक्म तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। और जब वे दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से। वह बस याक़ूब के दिल में एक ख़्याल था जो उसने पूरा किया। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (67-68)

और जब वे यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूं। पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं। फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालो, तुम लोग चोर हो। उन्होंने उनकी तरफ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज खोई गई है। उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं। और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर ग़ल्ला है और मैं इसका जिम्मेदार हूं। उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फ़साद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे। उन्होंने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सजा क्या है। उन्होंने कहा, इसकी सजा यह है कि जिस शख़्स के असबाब में मिले पस वही शख़्स अपनी सजा है। हम लोग जालिमों को ऐसी ही सजा दिया करते हैं। फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थेले से उसे बरामद कर लिया। इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की। वह बादशाह के कानून की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। और हर इल्म वाले के उपर एक इल्म वाला है। (69-76)

उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। पस यूसुफ ने इस बात को अपने दिल में रखा। और इसे उन पर जाहिर नहीं किया। उसने अपने जी में कहा, तुम ख़ुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। उन्होंने कहा कि ऐ अजीज, इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है सो तू इसकी जगह हम में से किसी को रख ले। हम तुझे बहुत नेक देखते हैं। उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज पाई है। इस सूरत में हम जरूर जालिम ठहरेंगे। (77-79)

जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर बाहम मश्विरा करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इकरार लिया और इससे पहले यूसुफ के मामले में जो ज्यादती तुम कर चुके हो वह भी तुम्हें मालूम है। पस मैं इस सरजमीन से हरगिज नहीं टलूंगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाजत न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फैसला फरमा दे। और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है। तुम लोग अपने

बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अप्रकट) के निगहबान नहीं और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहां हम थे और उस क़ाफ़िले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं। और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (80-82)

बाप ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, पस मैं सब्र करूंगा। उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा। वह जानने वाला, हकीम (तत्वदर्शी) है। और उसने रुख़ फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ, और ग़म से उसकी आंखे सफेद पड़ गईं। वह घुटा घुटा रहने लगा। उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम तू यूसुफ ही की याद में रहेगा। यहां तक कि घुल जाए या हलाक हो जाए। उसने कहा, मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म का शिकवा सिर्फ अल्लाह से करता हूं और मैं अल्लाह की तरफ से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। ऐ मेरे बेटो, जाओ यूसुफ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो। अल्लाह की रहमत से सिर्फ मुंकिर ही नाउम्मीद होते हैं। (83-87)

फिर जब वे यूसुफ के पास पहुंचे, उन्होंने कहा, ऐ अजीज, हमें और हमारे घर वालों को बड़ी तकलीफ पहुंच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं, तू हमें पूरा ग़ल्ला दे और हमें सदका भी दे। बेशक अल्लाह सदका करने वालों को उसका बदला देता है। उसने कहा, क्या तुम्हें ख़बर है कि तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुम्हें समझ न थी। उन्होंने कहा, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ हो। उसने कहा हां मैं यूसुफ हूं और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर फज्ल फरमाया। जो शख़्स डरता है और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाए (नष्ट) नहीं करता। (88-90)

भाइयों ने कहा, ख़ुदा की कसम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फजीलत दी, और बेशक हम ग़लती पर थे। यूसुफ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ करे और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बीनाई (दृष्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ। (91-93)

और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कंआन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ की ख़ुशबू पा रहा हूं। लोगों ने कहा, ख़ुदा की कसम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुब्तिला हो। पस जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुर्ता याक़ूब के चहरे पर डाल दिया, पस उसकी बीनाई (दृष्टि) लौट आई। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। बिरादराने यूसुफ ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की माफी की दुआ कीजिए। बेशक हम ख़तावार थे। याक़ूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) की दुआ करूंगा। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (94-98)

पस जब वे सब यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने वालिदैन को अपने पास बिठाया। और कहा कि मिस्र में इंशाअल्लाह अम्न चैन से रहो और उसने अपने वालिदैन को तख़्त पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए। और यूसुफ ने कहा ऐ बाप, यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे कैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहां लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दर्मियान फसाद डाल दिया था। बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (99-100)

ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की ताबीर करना सिखाया। ऐ आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, तू मेरा कारसाज (कार्य-साधक) है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। मुझे फरमांबरदारी की हालत में वफ़ात दे और मुझे नेक बंदों में शामिल फरमा। (101)

यह गैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं और तुम उस वक्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ के भाइयों ने अपनी राय पुख़्ता की और वे तदबीरें कर रहे थे और तुम चाहे कितना ही चाहो, अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और तुम इस पर उनसे काई मुआवजा (बदला) नहीं मांगते। यह तो सिर्फ एक नसीहत है तमाम जहान वालों के लिए। (102-104)

और आसमानों और जमीन में कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उनका गुजर होता रहता है और वे उन पर ध्यान नहीं करते। और अक्सर लोग जो ख़ुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं। क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उन पर अजाबे इलाही की कोई आफत आ पड़े या अचानक उन पर कियामत आ जाए और वे इससे बेख़बर हों। कहो यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बुलाता हूं समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है। और अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूं। (105-108)

और हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ बस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे। हम उनकी तरफ 'वही' (प्रकाशना) करते थे। क्या ये लोग जमीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आख़िरत (परलोक) का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं। यहां तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए और वे ख़्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुंची। पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अजाब टाला नहीं जा सकता। (109-110)

उनके किस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है। यह कोई गढ़ी हुई बात

नहीं, बल्कि तस्दीक (पुष्टि) है उस चीज की जो इससे पहले मौजूद है। और तफ़्सील है हर चीज की। और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (111)

सूरह-13. अर-रअ़्द

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम० रा०। ये किताबे इलाही की आयतें हैं। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है वह हक (सत्य) है। मगर अक्सर लोग नहीं मानते। अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलन्द किया बग़ैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नजर आएं। फिर वह अपने तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज और चांद को एक कानून का पाबंद बनाया, हर एक एक मुकर्रर वक्त पर चलता है। अल्लाह ही हर काम का इंतिजाम करता है। वह निशानियों को खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन करो। (1-2)

और वही है जिसने जमीन को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर किस्म के फलों के जोड़े इसमें पैदा किए। वह रात को दिन पर उढ़ा देता है। बेशक इन चीजों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (3)

और जमीन में पास-पास मुख़्तलिफ कितऐ (भू-भाग) हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे। सब एक ही पानी से सैराब होते हैं। और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फौकियत (श्रेष्ठता) देते हैं बेशक इनमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें। (4)

और अगर तुम तअज्जुब (आश्चर्य) करो तो तअज्जुब के काबिल उनका यह कौल है कि जब वे मिट्‌टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इंकार किया और ये वे लोग हैं जिनकी गर्दनों में तौक पड़े हुए हैं वे आग वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)

वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालांकि उनसे पहले मिसालें गुजर चुकी हैं और तुम्हारा रब लोगों के जुल्म के बावजूद उन्हें माफ करने वाला है। और बेशक तुम्हारा रब सख़्त सजा देने वाला है। (6)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। तुम तो सिर्फ ख़बरदार कर देने वाले हो। और हर कौम के लिए एक राह बताने वाला है। (7)

अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को। और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे भी। और हर चीज का उसके यहां एक अंदाजा है। वह पोशीदा और जाहिर को जानने वाला है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर। तुम में से कोई शख़्स चुपके से बात कहे और जो पुकार

कर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो। और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब यकसां (समान) हैं। (8-10)

हर शख़्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी कौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसे न बदल डालें जो उनके जी में है। और जब अल्लाह किसी कौम पर कोई आफ़त लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुक़ाबले में कोई उनका मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ से। और वह बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग ख़ुदा के बाब (विषय) में झगड़ते हैं, हालांकि वह जबरदस्त है क़ुव्वत वाला है। (12-13)

सच्चा पुकारना सिर्फ ख़ुदा के लिए है। और उसके सिवा जिनको लोग पुकारते हैं वे उनकी इससे ज्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना पानी उस शख़्स की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुंह तक पहुंच जाए और वह उसके मुंह तक पहुंचने वाला नहीं। और मुंकिरीन की पुकार सब बेफायदा है। (14)

और आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब ख़ुदा ही को सज्दा करते हैं। ख़ुशी से या मजबूरी से और उनके साये भी सुबह व शाम। कहो, आसमानों और जमीन का रब कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो ख़ुद अपनी जात के नफ़ा और नुक़्सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएंगे। क्या उन्होंने ख़ुदा के ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नजर में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई। कहो, अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, जबरदस्त। (15-16)

अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी मिक्दार के मुवाफि क बह निकले। फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीजों में भी उभर आता है जिन्हें लोग जेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह हक (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है। पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज इंसानों को नफ़ा पहुंचाने वाली है वह जमीन में ठहर जाती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (17)

जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को लब्बैक कहा उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है, और उसके

बराबर और भी तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (18)

जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ से उतारा गया है वह हक (सत्य) है, क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है। नसीहत तो अक्ल वाले लोग ही क़ुबूल करते हैं। (19)

वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते। और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने रब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं और जिन्होंने अपने रब की रिजा के लिए सब्र किया। और नमाज कायम की। और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया ख़र्च किया। और जो बुराई को भलाई से मिटाते हैं। आख़िरत का घर इन्हीं लोगों के लिए है। अबदी (चिरस्थाई) बाग़ जिनमें वे दाख़िल होंगे। और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज) और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। और फ़रिश्ते हर दरवाजे से उनके पास आएंगे, कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया। पस क्या ही ख़ूब है यह आख़िरत का घर। (20-24)

और जो लोग अल्लाह के अहद को मजबूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और जमीन में फसाद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसे चाहता है रोजी ज्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। और वे दुनिया की जिंदगी पर ख़ुश हैं। और दुनिया की जिंदगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक मताए कलील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं। (25-26)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह हो। वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है। जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए ख़ुशख़बरी है और अच्छा ठिकाना है। (27-29)

इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैग़ाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ भेजा है। और वे महरबान ख़ुदा का इंकार कर रहे हैं। कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ लौटना है। (30)

और अगर ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे जमीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते बल्कि सारा इख़्तियार अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान

लाने वालों को इससे इत्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता। और इंकार करने वालों पर कोई न कोई आफत आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के करीब कहीं नाजिल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। यकीनन अल्लाह वादे के ख़िलाफ नहीं करता। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो मैंने इंकार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो देखो कैसी थी मेरी सजा। (31-32)

फिर क्या जो हर शख़्स से उसके अमल का हिसाब करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं। कहो कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की ख़बर दे रहे हो जिसे वह जमीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो बल्कि इंकार करने वालों को उनका फरेब ख़ुशनुमा बना दिया गया है। और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं। और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की जिंदगी में भी अजाब है और आख़िरत का अजाब तो बहुत सख़्त है। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (33-34)

और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तकियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा। यह अंजाम उन लोगों का है जो ख़ुदा से डरें और मुंकिरों का अंजाम आग है। (35)

और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज पर ख़ुश हैं जो तुम पर उतारी गई है। और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इंकार करते हैं। कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं। मैं उसी की तरफ बुलाता हूं और उसी की तरफ मेरा लौटना है और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है। और अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो ख़ुदा के मुकाबले में तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (36-37)

और हमने तुमसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें बीवियां और औलाद अता किया और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर कोई निशानी ले आए। हर एक वादा लिखा हुआ है। अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाकी रखता है। और उसी के पास है अस्ल किताब। (38-39)

और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें वफात दे दें, पस तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। क्या वे देखते नहीं कि हम जमीन की तरफ उसे उसके अतराफ (चतुर्दिक) से कम करते चले आ रहे हैं। और अल्लाह फैसला करता है, कोई उसके फैसले को हटाने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। जो उनसे पहले थे उन्होंने भी तदबीरें कीं मगर तमाम तदबीरें अल्लाह

के इख़्तियार में हैं। वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और मुंकिरीन जल्द जान लेंगे कि आख़िरत का घर किस के लिए है। (40-42)

और मुंकिरीन कहते हैं कि तुम ख़ुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की गवाही काफी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का इल्म है। (43)

सूरह-14. इब्राहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ नाजिल किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाओ, उनके रब के हुक्म से ख़ुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंसित) के रास्ते की तरफ, उस अल्लाह की तरफ कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है और मुंकिरों के लिए एक सख़्त अजाब शदीद की तबाही है जो कि आख़िरत के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़) निकालना चाहते हैं। ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं। (1-3)

और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा उसकी कौम की जबान में भेजा ताकि वह उनसे बयान कर दे फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी कौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (5)

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुम्हें फिरऔन की कौम से छुड़ाया जो तुम्हें सख़्त तकलीफें पहुंचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को जिंदा रखते थे और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से बड़ा इम्तेहान था। और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा। और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अजाब बड़ा सख़्त है। और मूसा ने कहा कि अगर तुम इंकार करो और जमीन के सारे लोग भी मुंकिर हो जाएं तो अल्लाह बेपरवा है, ख़ूबियों वाला है। (6-8)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं कौमे नूह और आद और समूद और जो लोग इनके बाद हुए हैं, जिन्हें ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह में दे दिए और कहा कि जो तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज की

तरफ तुम हमें बुलाते हो हम उसके बारे में सख़्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं। (9)

उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या ख़ुदा के बारे में शक है जो आसमानों और जमीन को वजूद में लाने वाला है। वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें उन चीजों की इबादत से रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ। (10)

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना इनाम फरमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोजिजा (चमत्कार) दिखाएं बग़ैर ख़ुदा के हुक्म के। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए। और जो तकलीफ तुम हमें दोगे हम उस पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (11-12)

और इंकार करने वालों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी जमीन से निकाल देंगे या तुम्हें तुम्हारी मिल्लत में वापस आना होगा। तो पैग़म्बरो के रब ने उन पर ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन जालिमों को हलाक कर देंगे। और उनके बाद तुम्हें जमीन पर बसाएंगे। यह उस शख़्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे। (13-14)

और उन्होंने फैसला चाहा और हर सरकश, जिद्दी नामुराद हुआ। उसके आगे दोजख़ है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा वह उसे घूंट-घूंट पिएगा और उसे हलक से मुश्किल से उतार सकेगा। मौत हर तरफ से उस पर छाई हुई होगी। मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सख़्त अजाब होगा। (15-17)

जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके आमाल उस राख की तरह हैं जिसे एक तूफानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो। वे अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की गुमराही है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह ख़ुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं। (18-20)

और ख़ुदा के सामने सब पेश होंगे। फिर कमजोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अजाब से कुछ हमें बचाओगे। वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी जरूर वह राह दिखा देते। अब हमारे लिए यकसां (समान) है कि हम बेकरार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)

और जब मामले का फैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसकी ख़िलाफवर्जी की। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था। मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्जाम न दो, और तुम अपने आपको इल्जाम दो। न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूं और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो। मैं ख़ुद इससे बेजार हूं कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे। बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। (22)

और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बागों में दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे। उसमें उनकी मुलाकात एक दूसरे पर सलामती होगी। (23)

क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फरमाई अल्लाह ने कलिमा-ए-तय्यिबा (शुभ बात) की। वह एक पाकीजा दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ जमीन में जमी हुई है। और जिसकी शाख़ें आसमान तक पहुंची हुई हैं। वह हर वक्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें। और कलिमा-ए-ख़बीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की है जो जमीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए। उसे कोई सबात (दृढ़ता) न हो। (24-26)

अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत (परलोक) में मजबूत करता है। और अल्लाह जालिमों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर में पहुंचा दिया, वे उसमें दाख़िल होंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। और उन्होंने अल्लाह के मुकाबिल ठहराए ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें। कहो कि चन्द दिन फायदा उठा लो, आख़िरकार तुम्हारा ठिकाना दोजख़ है। (28-30)

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज कायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे ख़र्च करें इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न ख़रीद व फरोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी। (31)

अल्लाह वह है जिसने आसमान और जमीन बनाए और आसमान से पानी उतारा। फिर उससे मुख़्तलिफ फल निकाले तुम्हारी रोजी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) कर दिया कि समुद्र में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया। और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया। और उसने तुम्हें हर चीज में से दिया जो तुमने मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं

सकते। बेशक इंसान बहुत बेइंसाफ और बड़ा नाशुक्रा है। (32-34)

और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब, इस शहर को अम्न वाला बना। और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया। पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख़्शने वाला महरबान है। (35-36)

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तेरे मोहतरम घर के पास बसाया है। ऐ हमारे रब ताकि वे नमाज कायम करें। पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोजी अता फरमा। ताकि वे शुक्र करें। (37)

ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम जाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में। शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक दिए। बेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज कायम करने वाला बना। और मेरी औलाद में भी। ऐ मेरे रब मेरी दुआ कुबूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे माफ फरमा और मेरे वालिदेन को और मोमिनीन को, उस रोज जबकि हिसाब कायम होगा। (38-41)

और हरगिज मत ख़्याल करो कि अल्लाह इससे बेख़बर है जो जालिम लोग कर रहे हैं। वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी। वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे। उनकी नजर उनकी तरफ हटकर न आएगी और उनके दिल बदहवास होंगे। (42-43)

और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उन पर अजाब आ जाएगा। उस वक्त जालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत(आह्वान) कुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुमने इससे पहले कसमें नहीं खाई थीं कि तुम पर कुछ जवाल (पतन) आना नहीं है। और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर जुल्म किया। और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया। और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। और उन्होंने अपनी सारी तदबीरें (युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। अगरचे उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं। (44-46)

पस तुम अल्लाह को अपने पैग़म्बरों से वादाख़िलाफी करने वाला न समझो। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह जमीन दूसरी जमीन में से बदल जाएगी और आसमान भी। और सब एक जबरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। और तुम उस दिन मुजरिमों को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके किए का बदला दे। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि इसके

जरिए से वे डरा दिए जाएं। और ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है और ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें। (47-52)

सूरह-15. अल-हिज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० रा०। ये आयतें हैं किताब की और एक वाज़ेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन की। वह वक्त आएगा जब इंकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते। उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फायदा उठाएं और ख़्याली उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे। और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुक़र्रर वक्त लिखा हुआ था। कोई कौम न अपने मुक़र्रर वक्त से आगे बढ़ती और न पीछे हटती। (1-5)

और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फरिश्तों को क्यों नहीं ले आता। हम फरिश्तों को सिर्फ फैसले के लिए उतारते हैं और उस वक्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती। (6-8)

यह याददिहानी (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफिज (संरक्षक) हैं। (9)

और हम तुमसे पहले गुजरी हुई कौमों में रसूल भेज चुके हैं। और जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मजाक उड़ाते रहे। इसी तरह हम यह (मजाक) मुजरिमीन के दिलों में डाल देते हैं। वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे। और यह दस्तूर अगलों से होता आया है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाजा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (10-15)

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक दी। और उसे हर शैतान मर्दूद से महफ़ूज किया। अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है। (16-18)

और हमने जमीन को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज एक अंदाजे से उगाई। और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए और वे चीजें जिन्हें तुम रोजी नहीं देते। (19-20)

और कोई चीज ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन (निर्धारित) अंदाजे के साथ ही उतारते हैं। और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम उसका जख़ीरा जमा करके रखते। (21-22)

और बेशक हम ही जिंदा करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही बाकी रह जाएंगे और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा। वह इल्म वाला है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (23-25)

और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया और इससे पहले जिन्नों को हमने आग की लपट से पैदा किया। (26-27)

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूं। जब मैं उसे पूरा बना लूं और उसमें अपनी रूह में से फूंक दूं तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इंकार कर दिया। ख़ुदा ने कहा ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूं जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है। (28-33)

ख़ुदा ने कहा तू यहां से निकल जा क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, और बेशक तुझ पर रोजे जजा (बदले के दिन) तक लानत है। इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा, तुझे मोहलत है उस मुक़र्रर वक्त के दिन तक। (34-38)

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझे गुमराह किया है इसी तरह मैं जमीन में उनके लिए मुज्य्यन (दिलकशी) करूंगा और सबको गुमराह कर दूंगा। सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (39-40)

अल्लाह ने फरमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा। सिवा उनके जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें। और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है। उसके सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (41-44)

बेशक डरने वाले बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में होंगे। दाख़िल हो जाओ इनमें सलामती और अम्न के साथ। और उनके सीनों की कुदूरतें (मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख़्तों पर आमने सामने। वहां उन्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं बख़्शने वाला रहमत वाला हूं और मेरी सजा दर्दनाक सजा है। (45-50)

और उन्हें इब्राहीम के महमानों से आगाह करो। जब वे उसके पास आए फिर उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने कहा कि हम तुम लोगों से डरते हैं। उन्होंने कहा कि अंदेशा न करो हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। इब्राहीम ने कहा क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो। पस तुम किस चीज की बशारत मुझे

दे रहे हो। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें हक के साथ बशारत देते हैं। पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन नाउम्मीद हो सकता है। (51-56)

कहा ऐ भेजे हुए फरिश्तो अब तुम्हारी मुहिम क्या है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम की तरफ भेजे गए हैं। मगर लूत के घर वाले कि हम उन सबको बचा लेंगे सिवाए उसकी बीवी के कि हमने ठहरा लिया है कि वह जरूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी। (57-60)

फिर जब भेजे हुए फरिश्ते लूत के ख़ानदान के पास आए। उन्होंने कहा कि तुम लोग अजनबी मालूम होते हो। उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक करते हैं। और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। पस तुम कुछ रात रहे अपने घर वालों के साथ निकल जाओ। और तुम उनके पीछे चलो और तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहां चले जाओ जहां तुम्हें जाने का हुक्म है। और हमने लूत के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (61-66)

और शहर के लोग ख़ुश होकर आए। उसने कहा ये लोग मेरे महमान हैं, तुम लोग मुझे रुसवा न करो। और तुम अल्लाह से डरो और मुझे जलील न करो। उन्होंने कहा, क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर दिया। उसने कहा ये मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है। (67-71)

तेरी जान की कसम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे। पस दिन निकलते ही उन्हें चिंघाड़ ने पकड़ लिया। फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के पत्थर की बारिश कर दी। बेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए। और यह बस्ती एक सीधी राह पर वाकेअ (स्थित) है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (72-77)

और ऐका वाले यकीनन जालिम थे। पस हमने उनसे इंतिकाम लिया। और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाकेअ (स्थित) हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं। मगर वे उससे मुंह फेरते रहे और वे पहाड़ों को तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अम्न में रहें। पस उन्हें सुबह के वक्त सख़्त आवाज ने पकड़ लिया। पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया। (78-84)

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है हिक्मत (तत्वदर्शिता) के बग़ैर नहीं बनाया और बिलाशुबह कियामत आने वाली है। पस तुम ख़ूबी के साथ दरगुजर (क्षमा) करो। बेशक तुम्हारा रब सबका ख़ालिक (स्रष्टा) है, जानने वाला है। (85-86)

और हमने तुम्हें सात मसानी और कुरआने अजीम अता किया है। तुम इस दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) की तरफ आंख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ लोगों को

दी हैं और उन पर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ़क़त (स्नेह) के बाज़ू झुका दो और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूं। इसी तरह हमने तक़्सीम करने वालों पर भी उतारा था जिन्होंने अपने क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पस तेरे रब की क़सम, हम उन सबसे जरूर पूछेंगे, जो कुछ वे करते थे। (87-93)

पस जिस चीज का तुम्हें हुक्म मिला है उसे खोलकर सुना दो और मुश्रिकों से एराज (उपेक्षा) करो। हम तुम्हारी तरफ से उन मजाक उड़ाने वालों के लिए काफ़ी हैं जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं। पस अनकरीब वे जान लेंगे। और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है। पस तुम अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और सज्दा करने वालों में से बनो और अपने रब की इबादत करो। यहां तक कि तुम्हारे पास यकीनी बात आ जाए। (94-99)

सूरह-16. अन-नहल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

आ गया अल्लाह का फैसला, पस उसकी जल्दी न करो। वह पाक है और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं। वह फरिश्तों को अपने हुक्म की रूह के साथ उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। पस तुम मुझसे डरो। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है। वह बरतर है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं। (1-3)

उसने इंसान को एक बूंद से बनाया। फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा और उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ुराक भी और दूसरे फायदे भी, और उनमें से खाते भी हो। और उनमें तुम्हारे लिए रौनक है, जबकि शाम के वक्त उन्हें लाते हो और जब सुबह के वक्त छोड़ते हो और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मकामात तक पहुंचाते हैं जहां तुम सख़्त महनत के बग़ैर नहीं पहुंच सकते थे। बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक (करुणामय) महरबान है। और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार हो और जीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीजें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (4-8)

और अल्लाह तक पहुंचती है सीधी राह। और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। (9)

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त होते हैं जिनमें तुम चराते हो। वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है। बेशक इसके अंदर निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (10-11)

और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को और सितारे भी उसके हुक्म से मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं अक्लमंद लोगों के लिए। और जमीन में जो चीजें मुख़्तलिफ किस्म की तुम्हारे लिए फैलाई, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक हासिल करें। (12-13)

और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताजा गोश्त खाओ और उससे जेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फज्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिह्न) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। (15-16)

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। (17-19)

और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं। वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा माबूद एक ही माबूद (पूज्य) है मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुंकिर हैं और वे तकब्बुर (घमंड) करते हैं अल्लाह यकीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। बेशक वह तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (20-23)

और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियां हैं, ताकि वे कियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बग़ैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं। याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं। (24-25)

उनसे पहले वालों ने भी तदबीरें कीं। फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया। पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर अजाब वहां से आ गया जहां से उन्हें गुमान भी न था। फिर कियामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिन्हें इल्म दिया गया था वे कहेंगे कि आज रुस्वाई और अजाब मुंकिरों पर है। (26-27)

जिन लोगों को फरिश्ते इस हाल में वफ़ात (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर जुल्म कर रहे होंगे तो उस वक्त वे सिपर डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह

जानता है जो कुछ तुम करते थे। अब जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ। उसमें हमेशा हमेशा रहो। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (28-29)

और जो तकवा (ईश-परायणता) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर बेहतर है और क्या ख़ूब घर है तकवा वालों का। हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी। उनके लिए वहां सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेजगारों को ऐसा ही बदला देगा। जिनकी रूह फरिश्ते इस हालत में कब्ज करते हैं कि वे पाक हैं। फ़रिश्ते कहते हैं तुम पर सलामती हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ अपने आमाल के बदले में। (30-32)

क्या ये लोग इसके मुंतजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। फिर उन्हें उनके बुरे काम की सजाएं मिलीं। और जिस चीज का वे मजाक उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया। (33-34)

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज को हराम ठहराते। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के जिम्मे तो सिर्फ साफ-साफ पहुंचा देना है। (35)

और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (बढ़े हुए उपद्रवी) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई। पस जमीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। अगर तुम उसकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और उनका कोई मददगार नहीं। (36-37)

और ये लोग अल्लाह की कसमें खाते हैं, सख़्त कसमें कि जो शख़्स मर जाएगा अल्लाह उसे नहीं उठाएगा। हां, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ताकि उनके सामने उस चीज को खोल दे जिसमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं और इंकार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है। (38-40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में जरूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते। वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (41-42)

और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ हम 'वही'

(प्रकाशना) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी याददिहानी (अनुस्मृति) उतारी ताकि तुम लोगों पर उस चीज को वाज़ेह कर दो जो उनकी तरफ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें। (43-44)

क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं वे इस बात से बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह उन्हें जमीन में धंसा दे या उन पर अजाब वहां से आ जाए जहां से उन्हें गुमान भी न हो या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग ख़ुदा को आजिज नहीं कर सकते या उन्हें अंदेशे की हालत में पकड़ ले। पस तुम्हारा रब शफ़ीक (करुणामय) और महरबान है। (45-47)

क्या नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज भी पैदा की है उसके साये दाईं तरफ और बाईं तरफ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज (नम्र) हैं। और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीजें चलने वाली आसमानों और जमीन में हैं। और फ़रिश्ते भी और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। (48-50)

और अल्लाह ने फरमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ। वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो और उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो। (51-52)

और तुम्हारे पास जो नेमत भी है वह अल्लाह ही की तरफ से है। फिर जब तुम्हें तकलीफ पहुंचती है तो उससे फरयाद करते हो। फिर जब वह तुमसे तकलीफ दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है ताकि मुंकिर हो जाएं उस चीज से जो हमने उन्हें दी है। पस चन्द रोज फ़ायदे उठा लो। जल्द ही तुम जान लोगे। और ये लोग हमारी दी हुई चीजों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुतअल्लिक उन्हें कुछ इल्म नहीं। ख़ुदा की कसम, जो झूठ तुम गढ़ रहे हो उसकी तुमसे जरूर बाजपुर्स (पूछगछ) होगी। (53-56)

और वे अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह इससे पाक है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है। और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़ुशख़बरी दी जाए तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह जी में घुटता रहता है। जिस चीज की उसे ख़ुशख़बरी दी गई है उसके आर (लाज) से लोगों से छुपा फिरता है। उसे जिल्लत के साथ रख छोड़े या उसे मिट्टी में गाड़ दे। क्या ही बुरा फैसला है जो वे करते हैं। बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं। वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (57-60)

और अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म पर पकड़ता तो जमीन पर किसी जानदार को न छोड़ता। लेकिन वह एक मुकर्रर वक्त तक लोगों को मोहलत देता है। फिर जब उनका

मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61)

और वे अल्लाह के लिए वह चीज ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी जबानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चय ही उनके लिए दोज़ख़ है और वे जरूर उसमें पहुंचा दिए जाएंगे। (62)

ख़ुदा की क़सम हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ क़ौमों की तरफ रसूल भेजे। फिर शैतान ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए। पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। और हमने तुम पर किताब सिर्फ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज खोल कर सुना दो जिसमें वे इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। (63-64)

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उससे जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद जिंदा कर दिया। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (65)

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक है। हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और ख़ून के दर्मियान से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते है, ख़ुशगवार पीने वालों के लिए और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे नशे की चीजें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीजें भी। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (66-67)

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों और दरख़्तों और जहां टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना। फिर हर किस्म के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज निकलती है, इसके रंग मुख़्तलिफ हैं, इसमें लोगों के लिए शिफा (आरोग्य) है। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (68-69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात (मौत) देता है। और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुंचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें। बेशक अल्लाह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है। (70)

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोजी में बड़ाई दी है। पस जिन्हें बड़ाई दी गई है वे अपनी रोजी अपने ग़ुलामों को नहीं दे देते कि वे इसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। (71)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाईं और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर क्या ये बातिल (असत्य) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। और वे अल्लाह के सिवा उन चीजों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोजी पर इख़्तियार रखती हैं और न जमीन से, और न वे क़ुदरत रखती हैं। पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (72-74)

और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक ग़ुलाम ममलूक की जो किसी चीज पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख़्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिज़्क दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च करता है। क्या ये यकसां (समान) होंगे। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (75)

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख़्स हैं जिनमें से एक गूंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है। वह उसे जहां भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा शख़्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है। (76)

और आसमानों और जमीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और कियामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आंख झपकना बल्कि इससे भी जल्द। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज को न जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो। (78)

क्या लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की फजा में मुसख़्ख़र (अधीनस्थ) हो रहे हैं। उन्हें सिर्फ अल्लाह थामे हुए है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मकाम बनाया और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और कयाम के दिन हल्का पाते हो। और उनकी ऊन और उनके रूऐं और उनके बालों से घर का सामान और फायदे की चीजें एक मुद्दत तक के लिए बनाईं। (79-80)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों की साये बनाए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमांबरदार बनो। (81)

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ साफ-साफ पहुंचा देने की जिम्मेदारी है। वे लोग ख़ुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर वे उसके मुंकिर हो जाते हैं और उनमें अक्सर नाशुक्र हैं। (82-83)

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे। फिर इंकार करने वालों को हिदायत न दी जाएगी। और न उनसे तौबा ली जाएगी। और जब जालिम लोग अजाब को देखेंगे तो वह अजाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (84-85)

और जब मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब, यही हमारे वे शुर्का (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे। तब वे बात

उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो। और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और उनकी इफ्तिरा परदाजियां (गढ़े हुए झूठ) उनसे गुम हो जाएंगी। जिन्होंने इंकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अजाब पर अजाब का इजाफा करेंगे उस फसाद की वजह से जो वे करते थे। (86-88)

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज को खोल देने के लिए। वह हिदायत और रहमत और बशारत (शुभ सूचना) है फरमांबरदारों के लिए। (89)

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और कराबतदारों (नातेदारों) को देने का। और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों और बुराई से और सरकशी से। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करो। (90)

और तुम अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो जबकि तुम आपस में अहद कर लो। और कसमों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को जामिन भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना महनत से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी कसमों को आपस में फसाद डालने का जरिया बनाते हो महज इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। अल्लाह इसके जरिए से तुम्हारी आजमाइश करता है और वह क़ियामत के दिन उस चीज को अच्छी तरह तुम पर जाहिर कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हो। (91-92)

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और जरूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ होगी। (93)

और तुम अपनी क़समों को आपस में फरेब का जरिया न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सजा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अजाब है। और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फायदे के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (94-95)

जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाकी रहने वाला है। और जो लोग सब्र करेंगे हम उनके अच्छे कामों का अज्र (प्रतिफल) उन्हें जरूर देंगे। जो शख़्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे जिंदगी देंगे, एक अच्छी जिंदगी। और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे। (96-97)

पस जब तुम कुरआन को पढ़ो तो शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो। उसका जोर

उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका जोर सिर्फ उन लोगों पर चलता है जो उससे तअल्लुक रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (98-100)

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम गढ़ लाए हो। बल्कि उनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। कहो कि इसे रूहुल क़ुद्स (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ उतारा है ताकि वह ईमान वालों को साबित कदम रखे और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी हो फरमांबरदारों के लिए। (101-102)

और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। जिस शख़्स की तरफ वे मंसूब करते हैं। उसकी जबान अजमी (ग़ैर अरबी) है और यह क़ुरआन साफ अरबी जबान है। बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सजा है। झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं। (103-105)

जो शख़्स ईमान लाने के बाद अल्लाह से मुंकिर होगा, सिवा उसके जिस पर जबरदस्ती की गई हो बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख़्स दिल खोलकर मुंकिर हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़जब होगा और उन्हें बड़ी सजा होगी। यह इस वास्ते कि उन्होंने आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनिया की जिंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुंकिरों को रास्ता नहीं दिखाता। ये वे लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी। और ये लोग बिल्कुल ग़ाफिल हैं। लाजिमी बात है कि आख़िरत में ये लोग घाटे में रहेंगे। (106-109)

फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आजमाइश में डाले जाने के बाद हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की, फिर जिहाद किया और कायम रहे तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शने वाला, महरबान है। जिस दिन हर शख़्स अपनी ही तरफदारी में बोलता हुआ आएगा। और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (110-111)

और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वे अम्न और इत्मीनान में थे। उन्हें उनका रिज़्क फराग़त के साथ हर तरफ से पहुंच रहा था। फिर उन्होंने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ का मजा चखाया। और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठा बताया फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। (112-113)

सो जो चीजें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो। उसने तो तुम पर सिर्फ मुर्दार को हराम किया है और ख़ून को और सुअर के गोश्त को और जिस पर ग़ैर-अल्लाह का नाम

लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला, तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (114-115)

और अपनी जबानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है, और यह हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फलाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। वे थोड़ा सा फ़ायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (116-117)

और यहूदियों पर हमने वे चीजें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे। (118)

फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, इसके बाद तौबा की और अपनी इस्लाह की तो तुम्हारा रब इसके बाद बख़्शने वाला महरबान है। (119)

बेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फरमांबरदार, और उसकी तरफ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क (ख़ुदा के साझीदार बनाना) करने वालों में से न था। वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था। ख़ुदा ने उसे चुन लिया। और सीधे रास्ते की तरफ उसकी रहनुमाई की। और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी। वह अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने वालों में से न था। (120-123)

सब्त उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख़्तेलाफ (मतभेद) किया था। और बेशक तुम्हारा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा जिस बात में वे इख़्तेलाफ कर रहे थे। (124)

अपने रब के रास्ते की तरफ हिक्मत (तत्वदर्शिता) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीके से बहस करो। बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह में भटका हुआ है और वह उन्हें भी ख़ूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं। (125)

और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है और सब्र करो और तुम्हारा सब्र ख़ुदा ही की तौफ़ीक से है और तुम उन पर गम न करो और जो कुछ तदबीरें वे कर रहे हैं उससे तंग दिल न हो। बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेजगार (ईश-परायणता) हैं और जो नेकी करने वाले हैं। (126-128)

सूरह-17. बनी इस्राईल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदे हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाएं।

बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज (कार्य-साधक) न बनाओ। तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुजार बंदा था। (2-3)

और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा जमीन (शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे। फिर जब उनमें से पहला वादा आया तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत जोर वाले। वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज्यादा बड़ी जमाअत बना दिया। (4-6)

अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का वक्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मक़्दिस) में घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज पर उनका जोर चले उसे बर्बाद कर दें। बईद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुंकिरीन के लिए कैदख़ाना बना दिया है। (7-8)

बिला शुबह यह कुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और यह कि जो लोग आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (9-10)

और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसे भलाई मांगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज है। और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया ताकि तुम अपने रब का फज्ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज को ख़ूब खोलकर बयान किया है। (11-12)

और हमने हर इंसान की किस्मत उसके गले के साथ बांध दी है। और हम कियामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफी है। जो शख़्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है। और जो शख़्स बेराही करता है वह भी अपने ही नुक्सान के लिए बेराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम कभी सजा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें। (13-15)

और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके ख़ुशऐश (सुखभोगी) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफरमानी करते हैं। तब उन पर बात साबित हो जाती

है। फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं। और तेरा रब काफी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए। (16-17)

जो शख़्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें। फिर हमने उसके लिए जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाख़िल होगा बदहाल और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। और जिसने आख़िरत को चाहा और उसके लिए दौड़ की जो कि उसकी दौड़ है और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों की कोशिश मकबूल होगी। (18-19)

हम हर एक को तेरे रब की बख़्शिश में से पहुंचाते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी। और तेरे रब की बख़्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं। देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस तरह फौकियत (अग्रसरता) दी है। और यकीनन आख़िरत और भी ज्यादा बड़ी है दर्जे के एतबार से और फजीलत (श्रेष्ठता) के एतबार से। (20-21)

तू अल्लाह के साथ किसी और को माबूद (पूज्य) न बना वर्ना तू मज्मूम (निंदित) और बेकस होकर रह जाएगा। और तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर वे तेरे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहतराम के साथ बात करो। और उनके सामने नर्मी से इज्ज (सदाशयता) के बाज़ू झुका दो। और कहो कि ऐ रब इन दोनों पर रहम फरमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ कर देने वाला है। (22-25)

और रिश्तेदार को उसका हक दो और मिस्कीन को और मुसाफिर को। और फुज़ूल ख़र्ची न करो। बेशक फुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें अपने रब के फज्ल (अनुग्रह) के इंतिजार में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नर्मी की बात कहो। (26-28)

और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलामतजदा (निंदित) और आजिज (असहाय) बनकर रह जाओ। बेशक तेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रिज्क देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (29-30)

और अपनी औलाद को मुफ्लिसी के अंदेशे से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रिज्क देते हैं और तुम्हें भी। बेशक उन्हें कत्ल करना बड़ा गुनाह है। और जिना (व्यभिचार) के करीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है। (31-32)

और जिस जान को ख़ुदा ने मोहतरम ठहराया है उसे कत्ल मत करो मगर हक पर। और

जो शख़्स नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है। पस वह कत्ल में हद से न गुजरे, उसकी मदद की जाएगी। (33)

और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो। यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और अहद (वचन) को पूरा करो। बेशक अहद की पूछ होगी। और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराजू से तौल कर दो। यह बेहतर तरीका है और इसका अंजाम भी अच्छा है। (34-35)

और ऐसी चीज के पीछे न लगो जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। बेशक कान और आंख और दिल सबकी आदमी से पूछ होगी। और जमीन में अकड़ कर न चलो। तुम जमीन को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की लम्बाई को पहुंच सकते हो। ये सारे बुरे काम तेरे रब के नजदीक नापसंदीदा हैं। (36-38)

ये वे बातें हैं जो तुम्हारे रब ने हिक्मत (तत्वदर्शिता) में से तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वर्ना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामतजदा (निंदित) और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। (39)

क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फरिश्तों में से बेटियां बना लीं। बेशक तुम बड़ी सख़्त बात कहते हो। और हमने इस कुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे यاददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें। लेकिन उनकी बेजारी बढ़ती ही जाती है। कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ जरूर रास्ता निकालते। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो ये लोग कहते हैं। सातों आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं। और कोई चीज ऐसी नहीं जो तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो। मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। बिला शुबह वह हिल्म (उदारता) वाला, बख़्शने वाला है। (40-44)

और जब तुम कुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आख़िरत को नहीं मानते। और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोझ) पैदा कर देते हैं और जब तुम कुरआन में तंहा अपने रब का जिक्र करते हो तो वे नफरत के साथ पीठ फेर लेते हैं। (45-46)

और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं। ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सहरजदा (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चसपां कर रहे हैं। ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते। (47-48)

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएंगे। कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज जो तुम्हारे ख़्याल

में इनसे भी ज्यादा मुश्किल हो। फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा जिंदा करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है। फिर वे तुम्हारे आगे अपना सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि अजब नहीं कि उसका वक्त करीब आ पहुंचा हो, जिस दिन ख़ुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे। (49-52)

और मेरे बंदों से कहो कि वही बात कहें जो बेहतर हो। शैतान उनके दर्मियान फसाद डालता है। बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (53)

तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अजाब दे। और हमने तुम्हें उनका जिम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उन्हें जो आसमानों और जमीन में हैं और हमने कुछ नबियों को कुछ पर फजीलत (श्रेष्ठता) दी है और हमने दाऊद को जबूर दी। (54-55)

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है। वे न तुमसे किसी मुसीबत को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न उसे बदल सकते हैं। जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे ख़ुद अपने रब का कुर्ब (सामीप्य) ढूंढते हैं कि उनमें से कौन सबसे ज्यादा करीब हो जाए। और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं। और वे उसके अजाब से डरते हैं। वाक़ई तुम्हारे रब का अजाब डरने ही की चीज है। (56-57)

और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम कियामत से पहले हलाक न करें या सख़्त अजाब न दें। यह बात किताब में लिखी हुई है। (58)

और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया। और हमने समूद को ऊंटनी दी उन्हें समझाने के लिए। फिर उन्होंने उस पर जुल्म किया। और निशानियां हम सिर्फ डराने के लिए भेजते हैं। (59)

और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख़्त को भी जिसकी कुरआन में मजम्मत (निंदा) की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है। (60)

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया है। उसने कहा, जरा देख, यह शख़्स जिसे तूने मुझ पर इज्जत दी है अगर तू मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी तमाम औलाद को खा जाऊंगा। (61-62)

ख़ुदा ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्नम तुम सबका पूरा-पूरा बदला है। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज से उनका कदम उखाड़ दे

और उन पर अपने सवार और प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर। और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा और तेरा रब कारसाजी (कार्य-सिद्धि) के लिए काफी है। (63-65)

तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फज्ल (अनुग्रह) तलाश करो। बेशक वह तुम्हारे ऊपर महरबान है। और जब समुद्र में तुम पर कोई आफ्त आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (66-67)

क्या तुम इससे बेडर हो गए कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ लाकर जमीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज न पाओ। या तुम इससे बेडर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुद्र में ले जाए फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इंकार के सबब से ग़र्क कर दे। फिर तुम इस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ। (68-69)

और हमने आदम की औलाद को इज्जत दी और हमने उन्हें ख़ुश्की और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीजा (पवित्र) चीजों का रिज्क दिया और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख़्लूक़ात पर फौक़ियत (श्रेष्ठता) दी। (70)

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे। पस जिसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उनके साथ जरा भी नाइंसाफी न की जाएगी। और जो शख़्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से। (71-72)

और करीब था कि ये लोग फितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें जो हमने तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की है ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ ग़लत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो करीब था कि तुम उनकी तरफ कुछ झुक पड़ो। फिर हम तुम्हें जिंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अजाब) चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुकाबले में अपना कोई मददगार न पाते। (73-75)

और ये लोग इस सरजमीन से तुम्हारे कदम उखाड़ने लगे थे ताकि तुम्हें इससे निकाल दें। और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीका रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे तरीके में तब्दीली न पाओगे। (76-77)

नमाज क़ायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे तक। और ख़ास कर फज्र की किरात। बेशक फज्र की किरात मशहूद (उपस्थित) होती है। (78)

और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ्ल है तुम्हारे लिए। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद (प्रशंसित-स्थल) पर खड़ा करे। (79)

और कहो कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना। और मुझे अपने पास से मददगार कुव्वत (शक्ति) अता कर और कह कि हक (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया। बेशक बातिल मिटने ही वाला था। (80-81)

और हम कुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और जालिमों के लिए इससे नुक्सान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता। (82)

और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है। कहो कि हर एक अपने तरीके पर अमल कर रहा है। अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज्यादा ठीक रास्ते पर है। (83-84)

और वे तुमसे रूह (आत्मा) के बारे में पूछते हैं। कहो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने 'वही' (प्रकाशना) के जरिए तुम्हें दिया है, फिर तुम इसके लिए हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न पाओ, मगर यह सिर्फ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फज्ल है। कहो कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि ऐसा कुरआन बना लाएं तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे। अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (86-88)

और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म का मज़्मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इंकार ही पर जमे रहे और वे कहते हैं कि हम हरगिज तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए जमीन से कोई चशमा (स्रोत) जारी न कर दो या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो। या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फरिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहां से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहो कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ एक बशर (इंसान) हूं, अल्लाह का रसूल। (89-93)

और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है। कहो कि अगर जमीन में फरिश्ते होते कि उसमें चलते फिरते तो अलबत्ता हम उन पर आसमान से फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफ़ी है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (94-96)

अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है। और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे। और हम कियामत के दिन उन्हें उनके मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे उनका ठिकाना जहन्नम है। जब-जब उसकी आग धीमी होगी हम उसे मजीद भड़का देंगे। यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इंकार किया। और कहा कि जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे। (97-98)

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुकर्रर कर रखी है, इसमें कोई शक नहीं। इस पर भी जालिम लोग बेइंकार किए न रहे। (99)

कहो कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते तो इस सूरत में तुम ख़र्च हो जाने के अंदेशे से जरूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है। (100)

और हमने मूसा को नौ निशानियां खुली हुई दीं। तो बनी इस्राईल से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फिरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे ख़्याल में तो जरूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। मूसा ने कहा कि तू ख़ूब जानता है कि उन्हें आसमानों और जमीन के रब ही ने उतारा है, आंखें खोल देखने के लिए और मेरा ख़्याल है कि ऐ फिरऔन, तू जरूर शामतजदा (प्रकोपित) आदमी है। फिर फिरऔन ने चाहा कि उन्हें इस सरजमीन से उखाड़ दे। पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क कर दिया। और हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम जमीन में रहो। फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे। (101-104)

और हमने क़ुरआन को हक के साथ उतारा है और वह हक ही के साथ उतरा है। और हमने तुम्हें सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और हमने कुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा ताकि तुम उसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ो। और उसे हमने बतदरीज (क्रमवार) उतारा है। (105-106)

कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है। बेशक हमारे रब का वादा जरूर पूरा होता है। और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और कुरआन उनका ख़ुशूअ (विनय) बढ़ा देता है। (107-109)

कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपाशील) कहकर पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के दर्मियान का तरीका इख़्तियार करो। और कहो कि तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है। और न कमजोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और तुम उसकी ख़ूब बड़ाई बयान करो। (110-111)

सूरह-18. अल कहफ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी। और उसमें कोई कजी (टेढ़) नहीं रखी। बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ से एक सख़्त अजाब से आगाह कर दे। और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को। यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वे सिर्फ झूठ कहते हैं। (1-5)

शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएं। जो कुछ जमीन पर है उसे हमने जमीन की रौनक बनाया है ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है और हम जमीन की तमाम चीजों को एक साफ मैदान बना देंगे। (6-8)

क्या तुम ख़्याल करते हो कि कहफ और रकीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे। जब उन नौजवानों ने गार मे पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले को दुरुस्त कर दे। पस हमने ग़ार में उनके कानों पर सालहा साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पर्दा) डाल दिया। फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन टहरने की मुद्दत का ज्यादा ठीक शुमार करता है। (9-12)

हम तुम्हें उनका अस्ल किस्सा सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मजीद तरक्क़ी दी और हमने उनके दिलों को मजबूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और जमीन का रब है। हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे। ये हमारी कौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं। ये उनके हक में वाजेह दलील क्यों नहीं लाते। फिर उस शख़्स से बड़ा जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (13-15)

और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा। और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा। (16)

और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके ग़ार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे ग़ार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे

अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाओगे। (17)

और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालांकि वे सो रहे थे। हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे। और उनका कुत्ता ग़ार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती। (18)

और इसी तरह हमने उन्हें जगाया ताकि वे आपस में पूछ गछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहां ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे। पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीजा खाना कहां मिलता है, और तुम्हारे लिए इसमें से कुछ खाना लाए। और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फलाह न पाओगे। (19-20)

और इस तरह हमने उन पर लोगों को मुतलअ (सूचित) कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो। उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है। जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके गार पर एक इबादतगाह बनाएंगे। (21)

कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहकीक बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। पस तुम सरसरी बात से ज्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से पूछो। (22)

और तुम किसी काम के बारे में यूं न कहो कि मैं इसे कल कर दूंगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज्यादा करीब राह दिखा दे। (23-24)

और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की शुमार में) 9 साल और बढ़ गए हैं, कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज्यादा जानता है। आसमानों और जमीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। ख़ुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है। (25-26)

और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनाओ, ख़ुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते। और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिजा (प्रसन्नता) के तालिब हैं। और तुम्हारी आंखे हयाते दुनिया की रौनक की ख़ातिर उनसे हटने न पाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जिसके कल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से ग़ाफिल कर दिया। और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है। और उसका मामला हद से गुजर गया है। (27-28)

और कहो कि यह हक (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ से, पस जो शख़्स चाहे इसे माने और जो शख़्स चाहे न माने। हमने जालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी। और अगर वे पानी के लिए फरयाद करेंगे तो उनकी फरयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना। (29)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। और वे बारीक और दबीज (गाढ़े) रेशम के सब्ज कपड़े पहनेंगे, तख़्तों पर टेक लगाए हुए। कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह। (30-31)

तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख़्स थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए। और उनके गिर्द खजूर के दरख़्तों का इहाता बनाया और दोनों के दर्मियान खेती रख दी। दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की। और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर जारी कर दी और उसे ख़ूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज्यादा हूं और तादाद में भी ज्यादा ताक़तवर हूं। वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ और वह अपने आप पर जुल्म कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा। और मैं नहीं समझता कि कियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटा दिया गया तो जरूर इससे ज्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी। (32-36)

उसके साथी ने बात करते हुए कहाक्या तुम उस जात से इंकार कर रहे हो जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से। फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया। लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई कुव्वत (शक्ति) नहीं। अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूं तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे

बाग़ से बेहतर बाग़ दे दे। और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफत भेज दे जिससे वह बाग़ साफ मैदान होकर रह जाए या उसका पानी खुश्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको। (37-41)

और उसके फल पर आफत आई तो जो कुछ उसने उस पर ख़र्च किया था उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग़ अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह कहने लगा कि ऐ काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। और उसके पास कोई जत्था न था जो ख़ुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह ख़ुद बदला लेने वाला बन सका। यहां सारा इख़्तियार सिर्फ ख़ुदाए बरहक का है। वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम वाला है। (42-44)

और उन्हें दुनिया की जिंदगी की मिसाल सुनाओ। जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा। फिर उससे जमीन की नबातात (पौध) ख़ूब घनी हो गई। फिर वे रेजा-रेजा हो गई जिसे हवाएं उड़ाती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। माल और औलाद दुनियावी जिंदगी की रौनक हैं। और बाक़ी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं। (45-46)

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे जमीन को बिल्कुल खुली हुई। और हम उन सबको जमा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। और सब लोग तेरे रब के सामने सफ बांधकर पेश किए जाएंगे। तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक्त मुक़र्रर नहीं करेंगे। (47-48)

और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी। कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है वह सब सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी के ऊपर जुल्म न करेगा। (49)

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने न किया, वह जिन्नों में से था। पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की। अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। यह जालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है। (50)

मैंने उन्हें न आसमानों और जमीन पैदा करने के वक्त बुलाया। और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक्त बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊं। (51)

और जिस दिन ख़ुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो। पस वे उन्हें पुकारेंगे मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे। और हम उनके दर्मियान (अदावत की) आड़

कर देंगे। और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। (52-53)

और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर किस्म की मिसाल बयान की है और इंसान सबसे ज्यादा झगड़ालू है। और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुंच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख़्शिश मांगने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी जाहिर हो जाए, या अजाब उनके सामने आ खड़ा हो। (54-55)

और रसूलों को हम सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुंकिर लोग नाहक की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं ताकि इसके जरिए से हक को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उन्हें मजाक बना दिया। उससे बड़ा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए याददिहानी की जाए तो वह उससे मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को भूल जाए। हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डाट है। और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं। (56-57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फौरन उन पर अजाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़र्रर वक्त है और वे उसके मुकाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे। और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया जबकि वे जालिम हो गए। और हमने उनकी हलाकत का एक वक्त मुकर्रर किया था। (58-59)

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊं या इसी तरह वर्षों तक चलता रहूं। पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वे अपनी मछली को भूल गए। और मछली ने दरिया में अपनी राह ली। फिर जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफर से हमें बड़ी थकान हो गई। (60-62)

शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया। और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता। और मछली अजीब तरीके से निकल कर दरिया में चली गई। मूसा ने कहा, उसी मौके की तो हमें तलाश थी। पस दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था। (63-65)

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूं ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते और

तुम उस चीज पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाकफियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है। मूसा ने कहा, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफरमानी नहीं करूंगा। उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं ख़ुद तुमसे उसका जिक्र न करूं। (66-70)

फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क कर दें। यह तो आपने बड़ी सख़्त चीज कर डाली। उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए। फिर वे दोनों चले यहां तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला हालांकि उसने किसी का ख़ून नहीं किया था। यह तो आपने एक नामाकूल बात की है। (71-74)

उस शख़्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज के मुतअल्लिक पूछूं तो आप मुझे साथ न रखें। आप मेरी तरफ से उज्र की हद को पहुंच गए। फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा। उन्होंने उनकी मेजबानी से इंकार कर दिया। फिर उन्हें वहां एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते। उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है। मैं तुम्हें उन चीजों की हकीकत बताऊंगा जिन पर तुम सब्र न कर सके। (75-78)

कश्ती का मामला यह है कि वह चन्द मिस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे। तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को जबरदस्ती छीन कर ले लेता था। (79)

और लड़के का मामला यह है कि उसके मां-बाप ईमानदार थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफरमानी से उन्हें तंग करेगा। पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीजगी में उससे बेहतर हो और शफ़क़त करने वाली हो। (80-81)

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ्न था और उनका बाप एक नेक आदमी था पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ। और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया। यह है हकीकत उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

और वे तुमसे जुलकरनैन का हाल पूछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा। हमने उसे जमीन में इक्तेदार (शासन) दिया था। और हमने उसे हर चीज का सामान दिया था। (83-84)

फिर जुलकरनैन एक राह के पीछे चला। यहां तक कि वह सूरज के ग़ुरूब होने के मकाम तक पहुंच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उसे एक कौम मिली। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन तुम चाहो तो उन्हें सजा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करो। उसने कहा कि जो उनमें से जुल्म करेगा हम उसे सजा देंगे। फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा, फिर वह उसे सख़्त सजा देगा। और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जजा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे। (85-88)

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुंचा तो उसने सूरज को एक ऐसी कौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। यह इसी तरह है। और हम जुलकरनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं। (89-91)

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो उनके पास उसने एक कौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। उन्होंने कहा कि ऐ जुलकरनैन, याजूज और माजूज हमारे मुल्क में फसाद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल (शुल्क) इसके लिए मुकर्रर कर दें कि तुम हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बना दो। (92-94)

जुलकरनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम महनत से मेरी मदद करो। मैं तुम्हारे और उनके दर्मियान एक दीवार बना दूंगा। तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो। यहां तक कि जब उसने दोनों के दर्मियानी ख़ला (रिक्त स्थल) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ यहां तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं। पस याजूज व माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख़ कर सकते थे। जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (95-98)

और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। वे मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे। और सूर फूंका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे और उस दिन हम जहन्नम को मुंकिरों के सामने लाएंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याददिहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे। (99-101)

क्या इंकार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना कारसाज

बनाएं। हमने मुंकिरों की महमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है। (102)

कहो क्या मैं तुम्हें बता दूं कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज्यादा घाटे में कौन लोग हैं। वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की जिंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इंकार किया। पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया। फिर कियामत के दिन हम उन्हें कोई वजन न देंगे। यह जहन्नम उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इंकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मजाक उड़ाया। (103-106)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए फिरदौस के बाग़ों की महमानी है। उसमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कभी निकलना न चाहेंगे। (107-108)

कहो कि अगर समुद्र मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुद्र ख़त्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुद्र मिला दें। (109)

कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं। मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक ही माबूद है। पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए। (110)

सूरह-19. मरयम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ० हा० या० अइन० साद०। यह उस रहमत का जिक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे जकरिया पर की। जब उसने अपने रब को छुपी आवाज से पुकारा। (1-3)

जकरिया ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियां कमजोर हो गई हैं। और सर में बालों की सफेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब, तुझसे मांग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा। और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ से अंदेशा रखता हूं। और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे जो मेरी जगह ले और याकूब की आल (संतति) की भी। और ऐ मेरे रब उसे अपना पसंदीदा बना। (4-6)

ऐ जकरिया, हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मेरे यहां लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है। और मैं बुढ़ापे के इंतिहाई दर्जे को पहुंच चुका हूं। (7-8)

जवाब मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैंने इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालांकि तुम कुछ भी न थे। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब,

मेरे लिए कोई निशानी मुकर्रर कर दे। फरमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज लोगों से बात न कर सकोगे हालांकि तुम तंदुरुस्त होगे। फिर जकरिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम ख़ुदा की पाकी बयान करो। (9-11)

ऐ यहया किताब को मजबूती से पकड़ो। और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की। और अपनी तरफ से उसे नर्मदिली और पाकीजगी (पवित्रता) अता की। और वह परहेज़गार और अपने वालिदैन का ख़िदमतगुज़ार था। और वह सरकश और नाफ़रमान न था। और उस पर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जिंदा करके उठाया जाएगा। (12-15)

और किताब में मरयम का जिक्र करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरकी (पूर्वी) मकान में चली गई। फिर उसने अपने आपको उनसे पर्दे में कर लिया। फिर हमने उसके पास अपना फरिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर जाहिर हुआ। मरयम ने कहा, मैं तुझसे ख़ुदाए रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तू ख़ुदा से डरने वाला है। उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक पाकीजा लड़का दूं। मरयम ने कहा, मेरे यहां कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुवा और न मैं बदकार (बदचलन) हूं। फरिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत। और यह एक तैशुदा बात है। (16-21)

पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई। फिर दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के दरख़्त की तरफ ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी चीज हो जाती। (22-23)

फिर मरयम को उसने उसके नीचे से आवाज दी कि ग़मगीन न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी खजूरें गिरेंगी। पस खाओ और पियो और आंखे ठंडी करो। फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोजा मान रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी। (24-26)

फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी कौम के पास आई। लोगों ने कहा, ऐ मरयम, तुमने बड़ा तूफान कर डाला। ऐ हारून की बहिन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी मां बदकार (बदचलन) थी। (27-28)

फिर मरयम ने उसकी तरफ इशारा किया। लोगों ने कहा, हम इससे किस तरह बात करें जो कि गोद में बच्चा है। बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूं। उसने मुझे किताब दी और मुझे

नबी बनाया। और मैं जहां कहीं भी हूं उसने मुझे बरकत वाला बनाया है। और उसने मुझे नमाज और जकात की ताकीद की है जब तक मैं जिंदा रहूं। और मुझे मेरी मां का ख़िदमतगुजार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख़्त नहीं बनाया है। और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं जिंदा करके उठाया जाऊंगा। (29-33)

यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (34-35)

और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर उनके फिरक़ों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया। पस इंकार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से ख़राबी है। जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे। वे ख़ूब सुनते और ख़ूब देखते होंगे, मगर आज ये जालिम खुली हुई गुमराही में हैं। (36-38)

और इन लोगों को उस हसरत (पश्चाताप) के दिन से डरा दो जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, और वे गफलत में हैं। और वे ईमान नहीं ला रहे हैं। बेशक हम ही जमीन और जमीन के रहने वालों के वारिस होंगे। और लोग हमारी ही तरफ लौटाए जाएंगे। (39-40)

और किताब में इब्राहीम का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसी चीज की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान खुदाए रहमान की नाफरमानी करने वाला है। ऐ मेरे बाप, मुझे डर है कि तुम्हें ख़ुदाए रहमान का कोई अजाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ। (41-45)

बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो। अगर तुम बाज न आए तो मैं तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर दूंगा। और तुम मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जाओ इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने रब से तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करूंगा, बेशक वह मुझ पर महरबान है। और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूं और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूंगा। (46-48)

पस जब वह लोगों से जुदा हो गया। और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक और याकूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया। और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (49-50)

और किताब में मूसा का जिक्र करो। बेशक वह चुना हुआ था और रसूल नबी था। और हमने उसे कोहे तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज की बातें करने के लिए करीब किया। और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। (51-53)

और किताब में इस्माईल का जिक्र करो। वह वादे का सच्चा था और रसूल नबी था। वह अपने लोगों को नमाज और जकात का हुक्म देता था। और अपने रब के नजदीक पसंदीदा था। और किताब में इदरीस का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। और हमने उसे बुलन्द रुतबे तक पहुंचाया। (54-57)

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैग़म्बरों में से अपना फ़ज़्ल फ़रमाया। आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्राईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मकबूल बनाया। जब उन्हें ख़ुदाए रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते। (58)

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनकरीब वे अपनी ख़राबी को देखेंगे, अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी जरा भी हक़तलफ़ी नहीं की जाएगी। (59-60)

उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। उसमें वे लोग कोई फ़ुजूल बात नहीं सुनेंगे सिवाए सलाम के। और उसमें उनका रिज्क सुबह व शाम मिलेगा, यह वह जन्नत है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो ख़ुदा से डरने वाले हों। (61-63)

और हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। वह रब है आसमानों का और जमीन का और जो इनके बीच में है, पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर क़ायम रहो। क्या तुम उसका कोई हमसिफ्त (उसके गुणों जैसा) जानते हो। (64-65)

और इंसान कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर जिंदा करके निकाला जाऊंगा। क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। पस तेरे रब की कसम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस तरह हाजिर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (66-68)

फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुकाबले में सबसे ज्यादा सरकश बने हुए थे। फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने

के ज्यादा मुस्तहिक हैं और तुम में से कोई नहीं जिसका उस पर से गुजर न हो, यह तेरे रब के ऊपर लाजिम है जो पूरा होकर रहेगा। फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और जालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे। (69-72)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इंकार करने वाले ईमान लाने वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मज्लिस ज्यादा अच्छी है। और उनसे पहले हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं जो उनसे ज्यादा असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज्यादा शान वाली थीं। (73-74)

कहो कि जो शख़्स गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है यहां तक कि जब वे देख लेंगे उस चीज को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अजाब या कियामत, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का जत्था कमजोर। (75)

और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इजाफ़ा करता है और बाक़ी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के एतबार से भी बेहतर। (76)

क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे। क्या उसने ग़ैब में झांक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई अहद (वचन) ले लिया है, हरगिज नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसकी सजा में इजाफ़ा करेंगे। और जिन चीजों का वह दावेदार है उसके वारिस हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा। (77-80)

और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं ताकि वे उनके लिए मदद बनें। हरगिज नहीं, वे उनकी इबादत का इंकार करेंगे और उनके मुख़ालिफ बन जाएंगे। (81-82)

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुंकिरों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें ख़ूब उभार रहे हैं। पस तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ महमान बनाकर जमा करेंगे। और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ प्यासा हांकेंगे। किसी को शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा मगर उसे जिसने रहमान के पास से इजाजत ली हो। (83-87)

और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है। करीब है कि इससे आसमान फट पड़ें और जमीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, इस पर कि लोग रहमान की तरफ औलाद की निस्बत करते हैं। हालांकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे। (88-92)

आसमानों और जमीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए। उसके पास उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है और उनमें से हर एक कियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल

किए उनके लिए ख़ुदा मुहब्बत पैदा कर देगा। (93-96)

पस हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी जबान में इसलिए आसान कर दिया है कि तुम मुत्तक़ियों (ईश परायण लोगों) को ख़ुशख़बरी सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। और इनसे पहले हम कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो। (97-98)

सूरह-20. ता० हा०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० हा०। हमने कुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो डरता हो। यह उसकी तरफ से उतारा गया है जिसने जमीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है। वह रहमत वाला है, अर्श पर कायम है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और जो इन दोनों के दर्मियान है और जो कुछ जमीन के नीचे है। (1-6)

और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है। और इससे ज्यादा छुपी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। (7-8)

और क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊं या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए। (9-10)

फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि ऐ मूसा। मैं ही तुम्हारा रब हूं, पस तुम अपने जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुकद्दस (पवित्र) वादी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है। पस जो 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनो। मैं ही अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज कायम करो। बेशक कियामत आने वाली है। मैं उसे छुपाए रखना चाहता हूं। ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिले। पस इससे तुम्हें वह शख़्स गाफिल न कर दे जो इस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ। (11-16)

और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा, उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। फरमाया कि ऐ मूसा इसे जमीन पर डाल दो। उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया। फरमाया कि इसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। (17-21)

और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर

किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है। ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां तुम्हें दिखाएं। तुम फिरऔन के पास जाओ। वह हद से निकल गया है। (22-24)

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी जबान की गिरह खोल दे। ताकि लोग मेरी बात समझें। और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुकर्रर कर दे, हारून को जो मेरा भाई है। उसके जरिए से मेरी कमर को मजबूत कर दे। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे ताकि हम दोनों कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें और कसरत से तेरा चर्चा करें। बेशक तू हमें देख रहा है। फरमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल। (25-36)

और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है जबकि हमने तुम्हारी मां की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की जो 'वही' की जा रही है, कि उसे संदूक में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे। उसे एक शख़्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है। और मैंने अपनी तरफ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी। और ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जबकि तुम्हारी बहिन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूं जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे। पस हमने तुम्हें तुम्हारी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो और उसे ग़म न रहे। और तुमने एक शख़्स को कत्ल कर दिया। फिर हमने तुम्हें इस ग़म से नजात दी। और हमने तुम्हें ख़ूब जांचा। फिर तुम कई साल मदयन वालों में रहे। फिर तुम एक अंदाजे पर आ गए ऐ मूसा। (37-40)

और मैंने तुम्हें अपने लिए मुंतख़ब किया। जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है। पस उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत कुबूल करे या डर जाए। (41-44)

दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब, हमें अंदेशा है कि वह हम पर ज्यादती करे या सरकशी करने लगे। फरमाया कि तुम अंदेशा न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूं, सुन रहा हूं और देख रहा हूं। पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। और उन्हें न सता। हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं। और सलामती उस शख़्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे। हम पर यह 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि उस शख़्स पर अजाब होगा जो झुठलाए और एराज (उपेक्षा) करे। (45-48)

फिरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा। मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर चीज को उसकी सूरत अता की, फिर रहनुमाई फरमाई। फिरऔन ने कहा, फिर

अगली कौमों का क्या हाल है। मूसा ने कहा। इसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ्तर में है। मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है। (49-52)

वही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन का फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकालीं और आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके जरिए से मुख़्तलिफ किस्म की नबातात (पौधें) पैदा कीं। खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। इसके अंदर अक्ल वालों के लिए निशानियां हैं। उसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे। (53-55)

और हमने फिरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाईं तो उसने झुठलाया और इंकार किया। उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। तो हम तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। पस तुम हमारे और अपने दर्मियान एक वादा मुकर्रर कर लो, न हम उसके ख़िलाफ करें और न तुम। यह मुक़ाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो। (56-58)

मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएं। फिरऔन वहां से हटा, फिर अपने सारे दाव जमा किए, इसके बाद वह मुकाबले पर आया। मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफत से ग़ारत कर दे। और जिसने ख़ुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ। (59-61)

फिर उन्होंने अपने मामले में इख़्तेलाफ (मतभेद) किया। और उन्होंने चुपके-चुपके बाहम मश्विरा किया। उन्होंने कहा ये दोनों यकीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के जोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीके का ख़ात्मा कर दें। पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो। फिर मुत्तहिद होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा। (62-64)

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें। मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के जोर से उसे इस तरह दिखाई दीं गोया कि वे दौड़ रही हैं। पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फरेब है। और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए। पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए। (65-70)

फिरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ सम्तों से कटवाऊंगा। और मैं तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूंगा। और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अजाब ज्यादा सख़्त है और ज्यादा देर तक रहने वाला है। (71)

जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं। और उस जात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम इसी दुनिया की जिंदगी का कर सकते हो। हम अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को बख़्श दे और उस जादू को भी जिस पर तुमने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है और बाकी रहने वाला है। (72-73)

बेशक जो शख़्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाजिर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा। और जो शख़्स अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस शख़्स का जो पाकीजगी इख़्तियार करे। (74-76)

और हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि रात के वक्त मेरे बंदों को लेकर निकलो। फिर उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआकुब (पीछा करने) से डरो और न किसी और चीज से डरो। फिर फिरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया फिर उन्हें समुद्र के पानी ने ढांप लिया। जैसा कि ढांप लिया और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और उसे सही राह न दिखाई। (77-79)

ऐ बनी इस्राईल हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। खाओ हमारी दी हुई पाक रोजी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़जब नाजिल हो। और जिस पर मेरा ग़जब उतरा वह तबाह हुआ। अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज्यादा बख़्शने वाला हूं। (80-82)

और ऐ मूसा, अपनी कौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज ने उभारा। मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे रब, तेरी तरफ जल्द आ गया ताकि तू राजी हो। फरमाया तो हमने तुम्हारी कौम को तुम्हारे बाद एक फित्ने में डाल दिया। और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया। (83-85)

फिर मूसा अपनी कौम की तरफ ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर ज्यादा जमाना गुजर गया। या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का गजब (प्रकोप) नाजिल हो, इसलिए तुमने मुझसे वादाख़िलाफी की। (86)

उन्होंने कहा कि हमने अपने इख़्तियार से आपके साथ वादाख़िलाफी नहीं की। बल्कि कौम के जेवरात का बोझ हमसे उठवाया गया था तो हमने उसे फेंक दिया। फिर इस तरह सामरी ने ढाल लिया। पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया। एक मूर्ति जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। फिर उसने कहा कि यह तुम्हारा माबूद (पूज्य) है और मूसा

का माबूद भी, मूसा इसे भूल गए। क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफ़ा या नुक़्सान पहुंचा सकता है। (87-89)

और हारून ने उनसे पहले ही कहा था कि ऐ मेरी क़ौम, तुम इस बछड़े के जरिए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है। पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा कि हम तो इसी की परस्तिश (पूजा) में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए। (90-91)

मूसा ने कहा कि ऐ हारून, जब तूने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज ने रोका कि तुम मेरी पैरवी करो। क्या तुमने मेरे कहने के ख़िलाफ किया। हारून ने कहा कि ऐ मेरी मां के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर। मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दर्मियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज न किया। (92-94)

मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। उसने कहा कि मुझे वह चीज नजर आई जो दूसरों को नजर नहीं आई तो मैंने रसूल के नक़्शेक़दम (पद चिन्हों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी। मेरे नफ़्स (अंतःकरण) ने मुझे ऐसा ही समझाया। मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तेरे लिए जिंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न छूना। और तेरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ (एकाग्र) रहता था, हम उसे जलाएंगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। तुम्हारा माबूद तो सिर्फ़ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका इल्म हर चीज पर हावी है। (95-98)

इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तांत) सुनाते हैं जो पहले गुजर चुके। और हमने तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो इससे एराज (उपेक्षा) करेगा वह क़ियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा। वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस हाल में जमा करेंगे कि ख़ौफ से उनकी आंखें नीली होंगी। आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ़ दस दिन रहे होगे। हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे। जबकि उनका सबसे ज्यादा वाक़िफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक दिन ठहरे। (99-104)

और लोग तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं। कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर देगा। फिर जमीन को साफ मैदान बनाकर छोड़ देगा। तुम इसमें न कोई कजी (टेढ़) देखोगे और न कोई ऊंचान। उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। जरा भी कोई कजी न होगी। तमाम आवाजें रहमान के आगे दब जाएंगी। तुम एक सरसराहट के सिवा कुछ न सुनोगे। (105-108)

उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसा शख़्स जिसे रहमान ने इजाजत दी हो और उसके लिए बोलना पसंद किया हो। वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है।

और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता। और तमाम चेहरे उस हय्य व क़य्यूम (जीवंत एवं शाश्वत) के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख़्स नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म लेकर आया होगा। और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न किसी ज्यादती का अंदेशा होगा और न किसी कमी का। (109-112)

और इसी तरह हमने अरबी का क़ुरआन उतारा है और इस में हमने तरह-तरह से वईद (चेतावनी) बयान की है ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। पस बरतर है अल्लाह, बादशाह हक़ीक़ी। और तुम क़ुरआन के लेने में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' (प्रकाशना) तक्मील को न पहुंच जाए। और कहो कि ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज्यादा कर दे। (113-114)

और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उस में अज़्म (दृढ़-संकल्प) न पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) कि उसने इंकार किया। फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह बिलाशुबह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम महरूम होकर रह जाओ। (115-117)

यहां तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे। और तुम यहां न प्यासे होगे, और न तुम्हें धूप लगेगी। फिर शैतान ने उन्हें बहकाया। उसने कहा कि क्या मैं तुम्हें हमेशगी (अमरता) का दरख़्त बताऊं। और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमजोरी न आए। पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों से सत्र एक दूसरे के सामने खुल गए। और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो भटक गए। फिर उसके रब ने उसे नवाजा। पस उसकी तौबा क़ुबूल की और उसे हिदायत दी। (118-122)

ख़ुदा ने कहा कि तुम दोनों यहां से उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो गए। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा। और जो शख़्स मेरी नसीहत से एराज (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा। और क़ियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था। इर्शाद होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियां आईं तो तुमने उनका कुछ ख़्याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख़्याल न किया जाएगा। और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुजर जाए और अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए। और आख़िरत (परलोक) का अजाब बड़ा सख़्त है और बहुत बाक़ी रहने वाला। (123-127)

क्या लोगों को इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए। ये उनकी बस्तियों में चलते हैं बेशक इसमें अहले अक़्ल के लिए बड़ी निशानियां हैं। और

अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती। और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो जरूर उनका फ़ैसला चुका दिया जाता। पस जो ये कहते हैं उस पर सब्र करो। और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (अर्चना) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औकात में भी तस्बीह करो। और दिन के किनारों पर भी। ताकि तुम राजी हो जाओ। (128-130)

और हरगिज उन चीजों की तरफ आंख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरोहों को उनकी आजमाइश के लिए उन्हें दे रखा है। और तुम्हारे रब का रिज़्क ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है। और अपने लोगों को नमाज का हुक्म दो और उसके पाबंद रहो। हम तुमसे कोई रिज़्क नहीं मांगते। रिज़्क तो तुम्हें हम देंगे और बेहतर अंजाम तो तकवा (ईश-परायणता) ही के लिए है। (131-132)

और लोग कहते हैं कि यह अपने रब के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उन्हें अगली किताबों की दलील नहीं पहुंची। और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अजाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे रब तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरी निशानियों की पैरवी करते। कहो कि हर एक मुन्तजिर है तो तुम भी इंतिजार करो। आइंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंजिल तक पहुंचा। (133-135)

सूरह-21. अल-अंबिया

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगों के लिए उनका हिसाब नज़दीक आ पहुंचा। और वे गफ़लत में पड़े हुए एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। उनके रब की तरफ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वे उसे हंसी करते हुए सुनते हैं। उनके दिल गफ़लत में पड़े हुए हैं। और जालिमों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की कि यह शख़्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। फिर तुम क्यों आंखों देखे इसके जादू में फंसते हो। रसूल ने कहा कि मेरा रब हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या जमीन में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (1-4)

बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़्वाब (दुस्वप्न) हैं। बल्कि इसे उन्होंने गढ़ लिया है। बल्कि वह एक शायर हैं। उन्हें चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे। इनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएंगे। (5-6)

और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजते थे। पस तुम अहले किताब से पूछ लो, अगर

तुम नहीं जानते। और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों। और वे हमेशा रहने वाले न थे। फिर हमने उनसे वादा पूरा किया। पस उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया। और हमने हद से गुजरने वालों को हलाक कर दिया। (7-9)

हमने तुम्हारी तरफ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याददिहानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं। और कितनी ही जालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी कौम को उठाया। पस जब उन्होंने हमारा अजाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे। भागो मत। और अपने सामाने ऐश की तरफ और अपने मकानों की तरफ वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाए। उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख़्ती, बेशक हम लोग जालिम थे। पस वे यही पुकारते रहे। यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो। (10-15)

और हमने आसमान और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता। बल्कि हम हक (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे तो वह उसका सर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो। (16-18)

और उसी के हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। और जो (फरिश्ते) उसके पास हैं वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं। वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते। (19-20)

क्या उन्होंने जमीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को जिंदा करते हों। अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम-बरहम हो जाते। पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं। वह जो कुछ करता है उस पर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी। (21-23)

क्या उन्होंने खुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं। उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि उनमें से अक्सर हक को नहीं जानते। पस वे एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ हमने यह 'वही' (प्रकाशना) न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो। (24-25)

और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फरिश्ते) तो मुअज्जज (सम्मानीय) बंदे हैं। वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते। और वे उसी के हुक्म के मुताबिक अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और

वे सिफारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे। और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं। और उनमें से जो शख़्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद (पूज्य) हूं तो हम उसे जहन्नम की सजा देंगे। हम जालिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। (26-29)

क्या इंकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों बंद थे फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज को बनाया। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते। (30)

और हमने जमीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग राह पाएं। और हमने आसमान को एक महफूज (सुरक्षित) छत बनाया। और वे उसकी निशानियों से एराज (उपेक्षा) किए हुए हैं। और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए। सब एक-एक मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं। (31-33)

और हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को हमेशा की जिंदगी नहीं दी तो क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं। हर जान को मौत का मजा चखना है। और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आजमाते हैं परखने के लिए। और तुम सब हमारी तरफ लौटाए जाओगे। (34-35)

और मुंकिर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का जिक्र किया करता है। और ख़ुद ये लोग रहमान के जिक्र का इंकार करते हैं। (36)

इंसान उजलत (जल्दबाज़ी) के ख़मीर से पैदा हुआ है। मैं तुम्हें अनकरीब अपनी निशानियां दिखाऊंगा, पस तुम मुझसे जल्दी न करो और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। काश इन मुंकिरों को उस वक्त की ख़बर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उन्हें मदद पहुंचेगी। बल्कि वह अचानक उन पर आ जाएगी, पस उन्हें बदहवास कर देगी। फिर वे न उसे दफा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से मजाक उड़ाया था उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (37-41)

कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफाजत करता है। बल्कि वे लोग अपने रब की याददिहानी से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं। वे ख़ुद अपनी हिफाजत की कुदरत नहीं रखते। और न हमारे मुकाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (42-43)

बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि इसी हाल में उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई। क्या वे नहीं देखते कि हम जमीन को उसके

अतराफ (चतुर्दिक) से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं। (44)

कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से तुम्हें डराता हूं। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए और अगर तेरे रब के अजाब का झोंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी बदबख़्ती, बेशक हम जालिम थे। (45-46)

और हम कियामत के दिन इंसाफ की तराज़ू रखेंगे। पस किसी जान पर जरा भी जुल्म न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाजिर कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफी हैं। (47)

और हमने मूसा और हारून को फुरकान (सत्य-असत्य की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की ख़ुदातरसों (ईश परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे कियामत का ख़ौफ रखने वाले हैं। और यह एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुंकिर हो। (48-50)

और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की। और हम उसे ख़ूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे। (51-54)

उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मजाक कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और जमीन का रब है। जिसने उन्हें पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूं और ख़ुदा की कसम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करूंगा। जबकि तुम पीठ फेरकर चले जाओगे। पस उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवा उनके एक बड़े के ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। (55-58)

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है बेशक वह बड़ा जालिम है। लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को इनका तज्किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाजिर करो। ताकि वे देखें। उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है। इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों। (59-63)

फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हकीकत में तुम ही नाहक पर हो। फिर अपने सरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फायदा पहुंचा सकें और न कोई नुकसान। अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीजों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं। (64-67)

उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा कि ऐ आग तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा। और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया। (68-70)

और हमने उसे और लूत को उस जमीन की तरफ नजात दे दी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हमने उसे इस्हाक़ दिया और मजीद बरआं (तदधिक) याक़ूब। और हमने उन सबको नेक बनाया। और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे। और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज की इक़ामत और जकात की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे। (71-73)

और लूत को हमने हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया। और उसे उस बस्ती से नजात दी जो गंदे काम करती थी। बिलाशुबह वे बहुत बुरे, फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग थे। और हमने उसे अपनी रहमत में दाख़िल किया बेशक वह नेकों में से था। (74-75)

और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की। पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी। और उन लोगों के मुक़ाबले में उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। बेशक वे बहुत बुरे लोग थे। पस हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया। (76-77)

और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियां रात के वक्त जा पड़ीं। और हम उनके इस फ़ैसले को देख रहे थे। पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को हिक्मत (त्वदर्शिता) और इल्म अता किया था। और हमने दाऊद के साथ ताबेअ कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी। और हम ही करने वाले थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की संअत (शिल्पकला) सिखाई। ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफ़ूज रखे। तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो। (78-80)

और हमने सुलैमान के लिए तेज हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरजमीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज को जानने वाले हैं। और शयातीन में से भी हमने उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ौता लगाते थे। और इसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे। (81-82)

और अय्यूब को जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे जो तकलीफ़ थी उसे दूर कर दिया। और हमने उसे उसका कुंबा (परिवार) अता किया और इसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत और नसीहत, इबादत करने वालों के लिए। (83-84)

और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ्ल को, ये सब सब्र करने वालों में से थे। और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे। (85-86)

और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी क़ौम से बरहम (क्रुद्ध) होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है। बेशक मैं क़ुसूरवार हूं। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम ईमान वालों को नजात (मुक्ति) देते हैं। (87-88)

और जकरिया को, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब, तू मुझे अकेला न छोड़। और तू बेहतरीन वारिस है। तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसे यहया अता किया। और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया। ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और ख़ौफ़ के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे। (89-90)

और वह ख़ातून जिसने अपनी नामूस (स्तीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (91)

और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत करो। और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। पस जो शख़्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी महनत की नाक़द्री न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं। (92-94)

और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुक़द्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रुजूअ करें। यहां तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे। और सच्चा वादा नजदीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने इंकार किया था। हाय हमारी कमबख़्ती, हम इससे ग़फ़लत में पड़े रहे। बल्कि हम जालिम थे। (95-97)

बेशक तुम और जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं। वहीं तुम्हें जाना है। अगर ये वाक़ई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते। और सब उसमें हमेशा रहेंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे। बेशक जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई का पहले फ़ैसला हो चुका है वे उससे दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वे अपनी पसंदीदा चीजों में हमेशा रहेंगे। उन्हें बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी। और फ़रिश्ते उनका इस्तक़बाल करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था। (98-103)

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक़ (पन्ने)

www.Momeen.blogspot.com

लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह पहले हमने तख़्लीक की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे। यह हमारे जिम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे। और जबूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि जमीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादतगुजार लोगों के लिए। (104-106)

और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअतगुजार (आज्ञाकारी) बनते हो। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ तौर पर इत्तिला कर चुका हूं। और मैं नहीं जानता कि वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, करीब है या दूर। बेशक वह खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो। और मुझे नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इम्तेहान हो और फायदा उठा लेने की एक मोहलत हो। पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब, हक के साथ फैसला कर दे। और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो। (107-112)

सूरह-22. अल-हज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ लोगो, अपने रब से डरो। बेशक कियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी। और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नजर आएंगे हालांकि वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अजाब बड़ा ही सख़्त है। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के विषय में झगड़ता है। और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है। उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसे दोस्त बनाएगा वह उसे बेराह कर देगा और उसे अजाबे जहन्नम का रास्ता दिखाएगा। (1-4)

ऐ लोगो, अगर तुम दुबारा जी उठने के मुताल्लिक शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुत्फा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर गोश्त की बोटी से, शक्ल वाली और बग़ैर शक्ल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाजेह करें। और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक। फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुंच जाओ। और तुम में से कोई शख़्स पहले ही मर जाता है और कोई शख़्स बदतरीन उम्र तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम जमीन को देखते हो कि ख़ुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताजा हो गई और उभर आई और वह तरह-तरह की ख़ुशनुमा चीजें उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक है और वह बेजानों में जान

डालता है, और वह हर चीज पर कादिर है। और यह कि कियामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह जरूर उन लोगों को उठाएगा जो कब्रों में हैं। (5-7)

और लोगों में कोई शख़्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर तकब्बुर (घमंड) करते हुए ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और कियामत के दिन हम उसे जलती आग का अजाब चखाएंगे। यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (8-10)

और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है। पस अगर उसे कोई फायदा पहुंचा तो वह उस इबादत पर कायम हो गया। और अगर कोई आजमाइश पेश आई तो उल्टा फिर गया। उसने दुनिया भी खो दी और आख़िरत भी। यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है। (11)

वह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज को पुकारता है जो न उसे नुक्सान पहुंचा सकती और न उसे नफा पहुंचा सकती। यह इंतिहा दर्जे की गुमराही है। वह ऐसी चीज को पुकारता है जिसका नुक्सान उसके नफा से करीबतर है। कैसा बुरा कारसाज है और कैसा बुरा रफीक (साथी)। बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (12-14)

जो शख़्स यह गुमान रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके ग़ुस्से को दूर करने वाली बनती है। और इस तरह हमने कुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है। और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। (15-16)

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क (ख़ुदा का साझीदार बनाना) किया। अल्लाह उन सबके दर्मियान कियामत के रोज फैसला फरमाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज से वाकिफ है। (17)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं। और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाए और बहुत से इंसान। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अजाब साबित हो चुका है और जिसे ख़ुदा जलील कर दे तो उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

येदोफरीक (पक्ष) हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया। पस जिन्होंने इंकार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे। उनके सरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी

डाला जाएगा। इससे उनके पेट की चीजें तक गल जाएंगी और खालें भी और उनके लिए वहां लोहे के हथौड़े होंगे। जब भी वे घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएंगे और चखते रहो जलने का अजाब। (19-22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उन्हें वहां सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उनकी पोशाक रेशम होगी। और उन्हें पाकीजा कौल (कथन) की हिदायत बख़्शी गई थी। और उन्हें ख़ुदाए हमीद (प्रशंसित) का रास्ता दिखाया गया था। (23-24)

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मस्जिदे हराम से रोकते हैं जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मकामी (स्थानीय) बाशिंदे और बाहर से आने वाले बराबर हैं। और जो इस मस्जिद में रास्ती (शालीनता) से हटकर जुल्म का तरीक़ा इख़्तियार करेगा उसे हम दर्दनाक अजाब का मजा चखाएंगे। (25)

और जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की जगह बता दी, कि मेरे साथ किसी चीज को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना तवाफ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और कियाम करने वालों के लिए और रुकूअ और सज्दा करने वालों के लिए। (26)

और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे। पैरों पर चलकर और दुबले ऊंटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज रास्तों से आएंगे ताकि वे अपने फायदे की जगह पर पहुंचें और चन्द मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे हैं। पस उसमें से खाओ और मुसीबतजदा मोहताज को खिलाओ। तो चाहिए कि वे अपना मेल कुचैल ख़त्म कर दें। और अपनी नज़्रें (मन्नतें) पूरी करें। और इस कदीम (प्राचीन) घर का तवाफ (परिक्रमा) करें। (27-29)

यह बात हो चुकी और जो शख़्स अल्लाह की हुरमतों (मर्यादाओं) की ताजीम करेगा तो वह उसके हक में उसके रब के नजदीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं। तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो। (30)

अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ। और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियां उसे उचक लें या हवा उसे किसी दूर दराज मकाम पर ले जाकर डाल दे। (31)

यह बात हो चुकी। और जो शख़्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज रखेगा तो यह दिल के तक्वे (ईश-परायणता) की बात है। तुम्हें उनसे एक मुकर्रर वक़्त तक फायदा उठाना है। फिर उन्हें क़ुर्बानी के लिए कदीम (प्राचीन) घर की तरफ ले जाना है। (32-33)

और हमने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी करना मुकर्रर किया ताकि वे उन चौपायों पर

अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं। पस तुम्हारा इलाह (पूज्य-प्रभु) एक ही इलाह है तो तुम उसी के होकर रहो और आजिजी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो उनके दिल कांप उठते हैं। और जो उन पर पड़े उसे सहने वाले और नमाज की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है वे उसमें से ख़र्च करते हैं। (34-35)

और क़ुर्बानी के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। पस उन्हें खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वे करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज और साइल (मांगने वाले) को खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका ख़ून बल्कि अल्लाह को सिर्फ तुम्हारा तक्वा (ईश-परायणता) पहुंचता है इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है। ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो। (36-37)

बेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफिअत (प्रतिरक्षा) करता है जो ईमान लाए। बेशक अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता। इजाजत दे दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उन पर जुल्म किया गया है। और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर कादिर है। वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए। सिर्फ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा रब (प्रभु) अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे लिए जरिए हटाता न रहे तो ख़ानकाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतख़ाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है ढा दिए जाते। और अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, जोर वाला है। (38-40)

ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम जमीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज का एहतिमाम करेंगे और जकात अदा करेंगे और मअरूफ (भलाई) का हुक्म देंगे और मुंकर (बुराई) से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के इख़्तियार में है। (41)

और अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो उनसे पहले कौमे नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत और मदयन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने मुंकिरों को ढील दी। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। पस कैसा हुआ मेरा अजाब। (42-44)

पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे जालिम थीं। पस अब वे अपनी छतों पर उल्टी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुवें और कितने पुख़्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे

समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते। क्योंकि आंखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (45-46)

और ये लोग तुमसे अजाब के लिए जल्दी किए हुए हैं। और अल्लाह हरगिज अपने वादे के ख़िलाफ करने वाला नहीं है। और तेरे रब के यहां का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हजार साल के बराबर होता है। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे जालिम थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ लौट कर आना है। (47-48)

कहो कि ऐ लोगो मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए मग्फ़िरत (क्षमा) है और इज्ज़त की रोज़ी। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े वही दोजख़ वाले हैं। (49-51)

और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया। फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है। और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं। और जालिम लोग मुख़ालिफत में बहुत दूर निकल गए हैं और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म मिला है जान लें कि यह सच है तेरे रब की तरफ से है। फिर वे उस पर यकीन लाएं। और उनके दिल उसके आगे झुक जाएं। और अल्लाह ईमान लाने वालों को जरूर सीधा रास्ता दिखाता है। (52-54)

और इंकार करने वाले लोग हमेशा उसकी तरफ से शक में पड़े रहेंगे। यहां तक कि अचानक उन पर कियामत आ जाए। या एक मनहूस दिन का अजाब आ जाए। उस दिन सारा इख़्तियार सिर्फ अल्लाह को होगा। वह उनके दर्मियान फैसला फरमाएगा। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए वे नेमत के बाग़ों में होंगे और जिन्होंने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (55-57)

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे कत्ल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह जरूर उन्हें अच्छा रिज्क देगा। और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिज्क देने वाला है। वह उन्हें ऐसी जगह पहुंचाएगा जिससे वे राजी होंगे। और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है। (58-59)

यह हो चुका, और जो शख़्स बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उस पर ज्यादती की जाए तो अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, दरगुजर करने वाला है। (60)

यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक (सत्य)

है और वे सब बातिल (असत्य) हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (61-62)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर जमीन सरसब्ज हो गई। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। बेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। (63-64)

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने जमीन की चीजों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुद्र में चलती है। और वह आसमान को जमीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से। बेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, महरबान है। और वही है जिसने तुम्हें जिंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है। फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्र है। (65-66)

और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीका मुकर्रर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे। पस वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ। यकीनन तुम सीधे रास्ते पर हो। अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। अल्लाह कियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व जमीन की हर चीज अल्लाह के इल्म में है। सब कुछ एक किताब में है। बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है। (67-70)

और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। और जब उन्हें हमारी वाजेह (सुस्पष्ट) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम मुंकिरों के चेहरे पर बुरे आसार देखते हो। गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं। कहो कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि इससे बदतर चीज क्या है। वह आग है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इंकार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (71-72)

ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे ग़ौर से सुनो। तुम लोग ख़ुदा के सिवा जिस चीज को पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमजोर और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमजोर। उन्होंने अल्लाह की कद्र न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक है। बेशक अल्लाह ताक़तवर है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है। (73-74)

अल्लाह फरिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुंचाने वाला चुनता है। और इंसानों में से भी।

बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामलात। (75-76)

ऐ ईमान वालो, रुकूअ और सज्दा करो। और अपने रब की इबादत करो और भलाई के काम करो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि कोशिश करने का हक है। उसी ने तुम्हें चुना है। और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन। उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा, इससे पहले और इस क़ुरआन में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह बनो। पस नमाज क़ायम करो और ज़कात अदा करो। और अल्लाह को मजबूत पकड़े, वही तुम्हारा मालिक है। पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार। (77-78)

सूरह-23. अल-मोमिनून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यक़ीनन फ़लाह पाई ईमान वालों ने जो अपनी नमाज में झुकने वाले हैं और जो लग्व (घटिया, निरर्थक) बातों से बचते हैं। और जो जकात अदा करने वाले हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करने वाले हैं, सिवा अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके अधीन दासियां हों कि उन पर वे काबिले मलामत नहीं। अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही ज्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद (वचन) का ख़्याल रखने वाले हैं। और जो अपनी नमाजों की हिफ़ाजत करते हैं। यही लोग वारिस होने वाले हैं जो फिरदौस की विरासत पाएंगे। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (1-11)

और हमने इंसान को मिट्टी के ख़ुलासा (सत) से पैदा किया। फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसे एक महफूज ठिकाने में रखा। फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन (भ्रूण) की शक्ल दी। फिर जनीन को गोश्त का एक लौथड़ा बनाया। पस लौथड़े के अंदर हड्डियां पैदा कीं। फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया। फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना खड़ा किया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला। फिर इसके बाद तुम्हें जरूर मरना है। फिर तुम कियामत के दिन उठाए जाओगे। (12-16)

और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए। और हम मख़्लूक (सृष्टि) से बेख़बर नहीं हुए। और हमने आसमान से पानी बरसाया एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उसे जमीन में ठहरा दिया। और हम उसे वापस लेने पर कादिर हैं। फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक है। हम तुम्हें उनके पेट की चीज से पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फायदे हैं। और तुम उन्हें खाते हो।

और तुम उन पर और कश्तियों पर सवारी करते हो। (17-22)

और हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। तो उसकी कौम के सरदार जिन्होंने इंकार किया था उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है। वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे। और अगर अल्लाह चाहता तो वह फरिश्ते भेजता। हमने यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी। यह तो बस एक शख़्स है जिसे जुनून हो गया है। पस एक वक्त तक इसका इंतिजार करो। (23-25)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब तू मेरी मदद फरमा कि इन्होंने मुझे झुठला दिया। तो हमने उसे 'वही' (प्रकाशना) की कि तुम कश्ती तैयार करो हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक। तो जब हमारा हुक्म आ जाए और जमीन से पानी उबल पड़े तो हर किस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ। और अपने घर वालों को भी, सिवा उनके जिनके बारे में पहले फैसला हो चुका है। और जिन्होंने जुल्म किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना। बेशक उन्हें डूबना है। (26-27)

फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएं तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें जालिम लोगों से नजात दी और कहो कि ऐ मेरे रब तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है। बेशक इसमें निशानियां हैं और बेशक हम बंदों को आजमाते हैं। (28-30)

फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। और उसकी कौम के सरदारों ने जिन्होंने इंकार किया। और आख़िरत की मुलाकात को झुठलाया, और उन्हें हमने दुनिया की जिंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, कहा यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। (31-34)

क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। बहुत ही बईद और बहुत ही बईद (असंभव) है जो बात उनसे कही जा रही है। जिंदगी तो यही हमारी दुनिया की जिंदगी है। यहीं हम मरते हैं और जीते हैं। और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस एक ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। और हम उसे मानने वाले नहीं। (35-38)

रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी मदद फरमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया। फरमाया कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे। पस उन्हें एक सख़्त आवाज ने हक के मुताबिक पकड़ लिया। फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया। पस दूर हो जालिम कौम। (39-41)

फिर हमने उनके बाद दूसरी कौमें पैदा कीं। कोई कौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे। जब भी किसी कौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया। और हमने उन्हें कहानियां बना दिया। पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते। (42-44)

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकब्बुर (घमंड) किया और वे मग़रूर (अभिमानी) लोग थे। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालांकि उनकी कौम के लोग हमारे ताबेअदार हैं। पस उन्होंने उन्हें झुठला दिया। फिर वे हलाक कर दिए गए। और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे राह पाएं। (45-49)

और हमने मरयम के बेटे को और उसकी मां को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची जमीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहां चशमा जारी था। (50)

ऐ पैग़म्बरो, सुथरी चीजें खाओ और नेक काम करो। मैं जानता हूं जो कुछ तुम करते हो। और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है। और मैं तुम्हारा रब हूं, तो तुम मुझसे डरो। (51-52)

फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाजां (गौरवांवित) है। पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो। क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं तो हम उन्हें फायदा पहुंचाने में सरगर्म हैं। बल्कि वे बात को नहीं समझते। (53-56)

बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं। और जो लोग अपने रब की आयतों पर यकीन रखते हैं। और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। ये लोग भलाइयों की राह में सबकत (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उन पर पहुंचने वाले हैं सबसे आगे। और हम किसी पर उसकी ताकत से ज्यादा बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब हे जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उन पर जुल्म न होगा। (57-62)

बल्कि उनके दिल इसकी तरफ से ग़फलत में हैं। और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उन्हें करते रहेंगे। यहां तक कि जब हम उनके खुशहाल लोगों को अजाब में पकड़ेंगे तो वे फरयाद करने लगेंगे। अब फरयाद न करो। अब हमारी तरफ से तुम्हारी कोई मदद न होगी। तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे, उससे तकब्बुर (घमंड) करके। गोया किसी किस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो। (63-67)

फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया। या उनके पास ऐसी चीज आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई। या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं। इस वजह से वे उसे नहीं मानते। या वे कहते हैं कि उसे जुनून है। बल्कि वह उनके पास हक सत्य

लेकर आया है। और उनमें से अक्सर को हक बात बुरी लगती है। और अगर हक उनकी ख़्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) होता तो आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते। बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। (68-71)

क्या तुम उनसे कोई माल मांग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है। और वह बेहतरीन रोजी देने वाला है। और यकीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ बुलाते हो। और जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वे रास्ते से हट गए हैं। (72-74)

और अगर हम उन पर रहम करें और उन पर जो तकलीफ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे बहके हुए। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा। लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिजी की। यहां तक कि जब हम उन पर सख़्त अजाब का दरवाजा खोल देंगे तो उस वक्त वे हैरतज़दा रह जाएंगे। (75-77)

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया। और तुम उसी की तरफ जमा किए जाओगे। और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं। (78-80)

बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएंगे। इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। ये महज अगलों के अफ़साने हैं। (81-83)

कहो कि जमीन और जो कोई इसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्शे अजीम का। वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज का इख़्तियार है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहां से तुम मस्हूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो। (84-89)

बल्कि हम उनके पास हक लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं। अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं। ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक को लेकर अलग हो जाता। और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं। वह खुले और छुपे का जानने वाला है। वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं। (90-92)

कहो कि ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। तो ऐ मेरे रब मुझे जालिम लोगों में शामिल न कर। और बेशक हम कादिर हैं कि हम उनसे

जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। (93-95)

तुम बुराई को उस तरीके से दूर करो जो बेहतर हो। हम ख़ूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब मैं पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कि वे मेरे पास आएं। (96-98)

यहां तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे। ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूं उसमें कुछ नेकी कमाऊं। हरगिज नहीं,यह एक बात है कि वही वह कहता है। और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर फूंका जाएगा तो फिर उनके दर्मियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही लोग कामयाब होंगे। और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे। उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे। (99-104)

क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम जालिम हैं। ख़ुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (105-108)

मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए, पस तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। पस तुमने उन्हें मजाक बना लिया। यहां तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हंसते रहे। मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले। (109-111)

इर्शाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर जमीन में रहे। वे कहेंगे हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। इर्शाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे। काश तुम जानते होते। (112-114)

पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक्सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाह हक़ीक़ी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह मालिक है अर्शे अजीम का। और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक में उसके पास कोई दलील नहीं। तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को फलाह न होगी। और कहो कि ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फरमा, तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। (115-118)

सूरह-24. अन-नूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फर्ज किया है। और इसमें हमने

साफ-साफ आयतें उतारी हैं। जानी (व्यभिचारी) औरत और जानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो। और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम न आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। और चाहिए कि दोनों की सजा के वक्त मुसलमानों का एक गिरोह मौजूद रहे। जानी निकाह न करे मगर जानिया (व्यभिचारिणी) के साथ या मुश्रिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ। और जानिया के साथ निकाह न करे मगर जानी या मुश्रिक (बहुदेववादी पुरुष)। और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर। (1-3)

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएं उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी क़ुबूल न करो। यही लोग नाफरमान हैं। लेकिन जो लोग इसके बाद तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (4-5)

और जो लोग अपनी बीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख़्स की गवाही की सूरत यह है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है। और पांचवीं बार यह कहे कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो। और औरत से सजा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि यह शख़्स झूठा है। और पांचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह शख़्स सच्चा हो। और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फज़्ल और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-10)

जिन लोगों ने यह तूफान बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमाअत है। तुम उसे अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अजाब है। (11)

जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बाबत नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है। ये लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए। पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नजदीक वही झूठे हैं। (12-13)

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फज़्ल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफत आ जाती। जबकि तुम उसे अपनी जबानों से नकल कर रहे थे। और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था। और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे। हालांकि वह अल्लाह के नजदीक बहुत भारी बात है। और जब तुमने उसे सुना तो यूं क्यों न कहा कि हमें

जेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुंह से निकालें। मआजल्लाह, यह बहुत बड़ा बोहतान (आक्षेप) है। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (14-18)

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सजा है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला रहमत करने वाला है। (19-20)

ऐ ईमान वालो, तुम शैतान के क़दमों पर न चलो। और जो शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स पाक न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (21)

और तुम में से जो लोग फ़ज्ल वाले और वुस्अत (सामर्थ्य) वाले हैं वे इस बात की कसम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिस्कीनों और ख़ुदा की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वे माफ कर दें और दरगुजर करें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ करे। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (22)

बेशक जो लोग पाक दामन, बेख़बर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गई। और उनके लिए बड़ा अजाब है। उस दिन जबकि उनकी जबानें उनके ख़िलाफ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक है, खोलने वाला है। (23-25)

ख़बीसात (गंदी बातें) ख़बीसों के लिए हैं और ख़बीस (गंदे लोग) ख़बीसात के लिए हैं। और तय्यिबात (अच्छी बातें) तय्यबों के लिए हैं और तय्यब (अच्छे लोग) तय्यिबात के लिए। वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं। उनके लिए बख़्शिश है और इज्जत की रोजी है। (26)

ऐ ईमान वालो तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाजत हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो। फिर अगर वहां किसी को न पाओ तो उनमें दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाजत न दे दी जाए। और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे फायदे की

कोई चीज हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। (27-29)

मोमिन मर्दों से कहो वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। यह उनके लिए पाकीजा है। बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं। (30)

और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। और अपनी जीनत (बनाव-सिंगार) को जाहिर न करें। मगर जो उसमें से जाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपनी जीनत को जाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहिनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (गुलाम) पर या जेरेदस्त (अधीन) मर्दों पर जो कुछ ग़रज नहीं रखते। या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हों। वे अपने पांव जोर से न मारें कि उनकी छुपी जीनत मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वालो, तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ। (31)

और तुम में जो बेनिकाह हों उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे गुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक हों उनका भी। अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फज्ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह वुस्अत (सामर्थ्य) वाला, जानने वाला है। और जो निकाह का मौक़ा न पाएं उन्हें चाहिए कि वे जब्त करें यहां तक कि अल्लाह अपने फ़ज्ल से उन्हें ग़नी कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) में से जो मुकातब (लिखित) होने के तालिब हों तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ। और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज इसलिए कि दुनियावी जिंदगी का कुछ फ़ायदा तुम्हें हासिल हो जाए। और जो शख़्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस जब्र के बाद बख़्शने वाला महरबान है। और बेशक हमने तुम्हारी तरफ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी। (32-34)

अल्लाह आसमानों और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक शीशे के अंदर है। शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा। वह जैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही ख़ुद-ब-ख़ुद जल उठेगा। अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (35)

ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलन्द किए जाएं और उनमें उसके नाम का जिक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं वे लोग जिन्हें

तिजारत और ख़रीद व फरोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफिल नहीं करती और न नमाज की इक़ामत से और जकात की अदायगी से। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें उलट जाएंगी। कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मजीद (अतिरिक्त) अपने फ़ज़्ल से नवाजे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (36-38)

और जिन लोगों ने इंकार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (मरीचिका)। प्यासा उसे पानी ख़्याल करता है यहां तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया। और उसने वहां अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है। या जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए। और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (39-40)

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए। हर एक अपनी नमाज को और अपनी तस्बीह को जानता है। और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। और अल्लाह ही की हुकूमत है आसमानों और जमीन में। और अल्लाह ही की तरफ है सबकी वापसी। (41-42)

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उन्हें आपस में मिला देता है। फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके बीच से निकलती है और वह आसमान सेउसके अंदर के पहाड़ों सेओले बरसाता है। फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है। और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है। उसकी बिजली की चमक से मालूम होता है कि निगाहों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। बेशक इसमें सबक है आंख वालों के लिए। (43-44)

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है। और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। (45-46)

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की। मगर उनमें से एक गिरोह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाया जाता है ताकि ख़ुदा का रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूगर्दानी (अवहेलना) करता है। और अगर हक उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ फरमांबरदार बनकर आ जाते हैं। क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अंदेशा है कि अल्लाह और

उसका रसूल उनके साथ जुल्म करेंगे। बल्कि यही लोग जालिम हैं। (47-50)

ईमान वालों का कौल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालिफत (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे। (51-52)

और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं, बड़ी सख़्त कसमें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे जरूर निकलेंगे। कहो कि कसमें न खाओ दस्तूर के मुताबिक इताअत (आज्ञापालन) चाहिए। बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो। कहो कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उस पर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल के जिम्मे सिर्फ साफ-साफ पहुंचा देना है। (53-54)

अल्लाह ने वादा फरमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें कि वह उन्हें जमीन में इक़्तेदार (सत्ता) देगा जैसा कि उसने पहले लोगों को इक़्तेदार दिया था। और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है। और उनकी ख़ौफ की हालत के बाद उसे अम्न से बदल देगा। वे सिर्फ मेरी इबादत करेंगे और किसी चीज को मेरा शरीक न बनाएंगे। और जो इसके बाद इंकार करे तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। (55)

और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो लोग इंकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे जमीन में अल्लाह को आजिज कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है। (56-57)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) को और तुम में जो बुलूग़ (युवावस्था) को नहीं पहुंचे उन्हेंतीन वक़्तों में इजाजत लेना चाहिए। फ़ज्र की नमाज से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और इशा की नमाज के बाद। ये तीन वक़्त तुम्हारे लिए पर्दे के हैं। इनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर। तुम एक दूसरे के पास बकसरत (अधिकता से) आते जाते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वजाहत करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और जब तुम्हारे बच्चे अक्ल की हद को पहुंच जाएं तो वे भी इसी तरह इजाजत लें जिस तरह उनके अगले इजाजत लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वजाहत करता है और अल्लाह अलीम (जानने वाला) व हकीम (तत्वदर्शी) है। और बड़ी बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद

नहीं रखतीं, उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें, बशर्ते कि वे जीनत (बनाव-सिंगार) की नुमाइश करने वाली न हों। और अगर वे भी एहतियात करें तो उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (58-60)

अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी मांओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत दुआ है अल्लाह की तरफ से। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वजाहत करता है ताकि तुम समझो। (61)

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यकीन लाएं। और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौके पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुमसे इजाजत न ले लें वहां से न जाएं। जो लोग तुमसे इजाजत लेते हैं वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाजत मांगे तो उन्हें इजाजत दे दो। और उनके लिए अल्लाह से माफी मांगो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है। (62)

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफवर्जी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आजमाइश आ जाए। या उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ ले। याद रखो कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो। और जिस दिन लोग उसकी तरफ लाए जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने किया था वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (63-64)

सूरह-25. अल-फ़ुरक़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो। वह जिसके लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया और उसका एक अंदाजा मुक़र्रर किया। और लोगों ने उसके सिवा ऐसे माबूद

(पूज्य) बनाए जो किसी चीज को पैदा नहीं करते, वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं। और वे ख़ुद अपने लिए न किसी नुक्सान का इख़्तियार रखते हैं और न किसी नफा का। और न वे किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का। (1-3)

और मुंकिर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है। पस ये लोग जुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है। पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं। कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और जमीन के भेद को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (4-6)

और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाजारों में चलता फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फरिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता या इसके लिए कोई ख़जाना उतारा जाता। या इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और जालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरजदा (जादूग्रस्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो। देखो वे कैसी-कैसी मिसालें तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते। (7-9)

बड़ा बाबरकत है वह। अगर वह चाहे तो तुम्हें इससे भी बेहतर चीज दे दे। ऐसे बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे। बल्कि उन्होंने कियामत को झुठला दिया है। और हमने ऐसे शख़्स के लिए जो कियामत को झुठलाए दोजख़ तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहां मौत को पुकारेंगे। आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौत को पुकारो। कहो क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा ख़ुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह तेरे रब के जिम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा। (10-16)

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बंदों को गुमराह किया या वे ख़ुद रास्ते से भटक गए। वे कहेंगे कि पाक है तेरी जात। हमें यह सजावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज तज्वीज करें। मगर तूने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि वे नसीहत को भूल गए। और हलाक होने वाले बने। पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम ख़ुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और तुम में से जो शख़्स जुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अजाब चखाएंगे। (17-19)

और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाजारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आजमाइश बनाया है। क्या तुम सब्र करते हो।

और तुम्हारा रब सब कुछ देखता है। (20)

और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेशा नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गए। या हम अपने रब को देख लेते। उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुजर गए हैं सरकशी में। जिस दिन वे फरिश्तों को देखेंगे। उस दिन मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी। और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह। और हम उनके हर अमल की तरफ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती हुई ख़ाक बना देंगे। जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे। और निहायत अच्छी आरामगाह में। (21-24)

और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा। और फरिश्ते लगातार उतारे जाएंगे। उस दिन हकीकी बादशाही सिर्फ रहमान की होगी। और वह दिन मुंकिरों पर बड़ा सख़्त होगा। और जिस दिन जालिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इख़्तियार की होती। हाय मेरी शामत, काश मैं फलां शख़्स को दोस्त न बनाता। उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही इंसान को दग़ा देने वाला। और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब मेरी कौम ने इस कुरआन को बिल्कुल नजरअंदाज कर दिया। और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए। और तुम्हारा रब काफी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए। (25-31)

और इंकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा कुरआन क्यों नहीं उतारा गया। ऐसा इसलिए है ताकि इसके जरिए से हम तुम्हारे दिल को मजबूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है। और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वजाहत तुम्हें बता देंगे। जो लोग अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ ले जाए जाएंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं राह से बहुत भटके हुए। (32-34)

और हमने मूसा को किताब दी। और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया। और नूह की कौम को भी हमने ग़र्क कर दिया जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। और आद और समूद को और अर-रस वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी कौमों को। और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाईं और हमने हर एक को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। और ये लोग उस बस्ती पर से गुजरे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते। (35-40)

और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जिसे खुदा

ने रसूल बनाकर भेजा है। इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता। अगर हम उन पर जमे न रहते। और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अजाब को देखेंगे कि सबसे ज्यादा बेराह कौन है। (41-42)

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है। पस क्या तुम उसका जिम्मा ले सकते हो। या तुम ख़्याल करते हो कि उनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं। वे तो महज जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज्यादा बेराह हैं। (43-44)

क्या तुमने अपने रब की तरफ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है। और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता। फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया। फिर हमने आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपनी तरफ समेट लिया। और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को जी उठना का वक्त बनाया। और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं। ताकि उसके जरिये से मुर्दा जमीन में जान डाल दें। और उसे पिलाएं अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को। (45-49)

और हमने इसे उनके दर्मियान तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे सोचें। फिर भी अक्सर लोग नाशुक्री किए बग़ैर नहीं रहते। और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। पस तुम मुंकिरों की बात न मानो और इस (कुरआन) के जरिये से उनके साथ बड़ा जिहाद करो। (50-52)

और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारी है कड़ुवा। और उसने उनके दर्मियान एक पर्दा रख दिया और एक मजबूत आड़। और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। फिर उसे ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तुम्हारा रब बड़ी कुदरत वाला है। (53-54)

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफा पहुंचा सकती हैं और न नुक्सान। और मुंकिर तो अपने रब के ख़िलाफ मददगार बना हुआ है। और हमने तुम्हें सिर्फ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत (बदला) नहीं मांगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले। (55-57)

और जिंदा खुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफी है। जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है, छः दिन में। फिर वह तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। रहमान, पस उसे किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या

हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है। (58-60)

बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराग़ (सूरज) और एक चमकता चांद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक के बाद दूसरे आने वाला बनाया, उस शख़्स के लिए जो सबक लेना चाहे और शुक्रगुजार बनना चाहे। (61-62)

और रहमान के बंदे वे हैं जो जमीन पर आजिजी (नम्रता) के साथ चलते हैं। और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम। और जो अपने रब के आगे सज्दा और कियाम में रातें गुजारते हैं। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब जहन्नम के अजाब को हमसे दूर रख। बेशक उसका अजाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मकाम है। और वे लोग कि जब वे ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न तंगी करते हैं। और उनका ख़र्च इसके दर्मियान एतदाल (मध्य-मार्ग) पर होता है। (63-67)

और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते। और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को क़त्ल नहीं करते मगर हक पर। और वे बदकारी (व्यभिचार) नहीं करते। और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो वह सजा से दो चार होगा। कियामत के दिन उसका अजाब बढ़ता चला जाएगा। और वह उसमें हमेशा जलील होकर रहेगा। मगर जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और जो शख़्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहक़ीक़त अल्लाह की तरफ रुजूअ कर रहा है। (68-71)

और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते। और जब किसी बेहूदा चीज से उनका गुजर होता है तो संजीदगी के साथ गुजर जाते हैं। और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाती है तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवी और औलाद की तरफ से आंखों की ठंडक अता फरमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना। (72-74)

ये लोग हैं कि उन्हें बालाख़ाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया। और उनमें उनका इस्तकबाल दुआ और सलाम के साथ होगा। वे उनमें हमेशा रहेंगे। वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की। कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता। अगर तुम उसे न पुकारो। पस तुम झुठला चुके तो वह चीज अनकरीब होकर रहेगी। (75-77)

सूरह-26. अश-शुअरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इस पर कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी उतार

दें। फिर उनकी गर्दनें उसके आगे झुक जाएं। उनके पास रहमान की तरफ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुख़ी न करते हों। पस उन्होंने झुठला दिया। तो अब अनकरीब उन्हें उस चीज की हकीक़त मालूम हो जाएगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (1-6)

क्या उन्होंने जमीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस कद्र तरह-तरह की उम्दा चीजें उगाई हैं। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है। (7-9)

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम जालिम कौम के पास जाओ, फिरऔन की कौम के पास, क्या वे नहीं डरते। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब, मुझे अंदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे। और मेरा सीना तंग होता है और मेरी जबान नहीं चलती। पस तू हारून के पास पैग़ाम भेज दे। और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूं कि वे मुझे कत्ल कर देंगे। (10-14)

फरमाया कभी नहीं। पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। पस तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कहो कि हम ख़ुदावंद आलम के रसूल हैं। कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। फिरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने अंदर नहीं पाला। और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहां गुजारे। और तुमने अपना वह फेअल (कृत्य) किया जो किया। और तुम नाशुक्रों में से हो। (15-19)

मूसा ने कहा। उस वक्त मैंने किया था और मुझसे ग़लती हो गई। फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया। फिर मुझे मेरे रब ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फरमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया। और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना लिया। (20-22)

फिरऔन ने कहा कि रब्बुल आलमीन क्या है। मूसा ने कहा, आसमानों और जमीन का रब और उन सबका जो उनके दर्मियान हैं, अगर तुम यकीन लाने वाले हो। फिरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी रब है। और तुम्हारे अगले बुजुर्गों का भी। फिरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है मजनून है। मूसा ने कहा, मश्रिक (पूर्व) व मग़रिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ इनके दर्मियान है, अगर तुम अक्ल रखते हो। फिरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें कैद कर दूंगा। मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई वाजेह दलील पेश करूं तब भी। फिरऔन ने कहा फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अजदहा था। और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। फिरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा, यकीनन यह शख़्स एक माहिर जादूगर है। वह चाहता है कि

अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे। पस तुम क्या मश्विरा देते हो। (23-35)

दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए। और शहरों में हरकारे भेजिए कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं। पस जादूगर एक दिन मुक़र्रर वक़्त पर इकट्ठा किए गए और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होगे। ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे। उसने कहा हां, और तुम इस सूरत में मुक़र्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे। (36-42)

मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो डालो। पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं। और कहा कि फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उस स्वांग को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा हम ईमान लाए रब्बुल आलमीन पर जो मूसा और हारून का रब है। (43-48)

फ़िरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं। बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं। हम अपने मालिक के पास पहुंच जाएंगे। हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने। (49-51)

और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ। बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। पस फ़िरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे। ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। और उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया है। और हम एक मुस्तइद (चुस्त) जमाअत हैं। पस हमने उन्हें बाग़ों और चश्मों (स्रोतों) से निकाला, और ख़ज़ानों और उम्दा मकानात से। यह हुआ, और हमने बनी इस्राईल को इन चीज़ों का वारिस बना दिया। (52-59)

पस उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त उनका पीछा किया। फिर जब दोनों जमाअतें आमने सामने हुईं तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा कि हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है। वह मुझे राह बताएगा। फिर हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि अपना असा दरिया पर मारो। पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और हमने दूसरे फ़रीक़ (पक्ष) को भी उसके क़रीब पहुंचा दिया। और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। फिर दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तेरा रब

ज़बरदस्त है रहमत वाला है। (60-68)

और उन्हें इब्राहीम का क़िस्सा सुनाओ। जबकि उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर इस पर जमे रहेंगे। इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो। या वे तुम्हें नफ़ा नुक़्सान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है। (69-74)

इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीज़ों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो, तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवा एक ख़ुदावंद आलम के जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फ़रमाता है। और जो मुझे खिलाता है और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूं तो वही मुझे शिफ़ा देता है। और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे ज़िंदा करेगा। और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूं कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ़ करेगा। (75-82)

ऐ मेरे रब, मुझे हिक्मत (तत्वदर्शिता) अता फ़रमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फ़रमा। और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में। और मुझे बाग़े नेमत के वारिसों में से बना। और मेरे बाप को माफ़ फ़रमा, बेशक वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जबकि लोग उठाए जाएंगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मगर वह जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम (पाकदिल) लेकर आए। (83-89)

और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी। और जहन्नम गुमराहों के लिए ज़ाहिर की जाएगी। और उनसे कहा जाएगा। कहां हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, अल्लाह के सिवा। क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे। या वे अपना बचाव कर सकते हैं। फिर उसमें औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वे और गुमराह लोग और इब्लीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब। वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे। ख़ुदा की क़सम, हम खुली हुई गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें ख़ुदावंद आलम के बराबर करते थे। और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया। पस अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं। और न कोई मुख़्लिस (निष्ठावान) दोस्त। पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है। (90-104)

नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो। और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (बदला) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें। हालांकि तुम्हारी पैरवी रज़ील (नीच) लोगों ने की है। नूह ने कहा कि मुझे क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं। उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है, अगर तुम समझो। और

मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूं। मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूं। (105-115)

उन्होंने कहा कि ऐ नूह अगर तुम बाज न आए तो जरूर संगसार कर दिए जाओगे। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया। पस तू मेरे और उनके दर्मियान वाजेह फैसला फरमा दे। और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात दे। फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया। फिर इसके बाद हमने बाकी लोगों को ग़र्क कर दिया। यकीनन इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वही जबरदस्त है, रहमत वाला है। (116-122)

आद ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम हर ऊंची जमीन पर लाहासिल (व्यर्थ) एक यादगार इमारत बनाते हो और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो। गोया तुम्हें हमेशा रहना है। और जब किसी पर हाथ डालते हो तो जब्बार (दमनकारी) बनकर डालते हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीजों से तुम्हें मदद पहुंचाई जिन्हें तुम जानते हो। उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से और बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। (123-135)

उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो। यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। और हम पर हरगिज अजाब आने वाला नहीं है। पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है रहमत वाला है। (136-140)

समूद ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम्हें उन चीजों में बेफिक्री से रहने दिया जाएगा जो यहां हैं, बाग़ों और चशमों में। और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में। और तुम पहाड़ खोदकर फ़ख्र करते हुए मकान बनाते हो। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और हद से गुजर जाने वालों की बात न मानो जो जमीन में ख़राबी करते हैं। और इस्लाह नहीं करते। (141-152)

उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। तुम सिर्फ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, सालेह ने कहा यह एक ऊंटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक मुकर्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है। और इसे

बुराई के साथ मत छेड़ना वर्ना एक बड़े दिन का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला फिर पशेमां (पछतावा-ग्रस्त) होकर रह गए। फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (153-159)

लूत की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो। और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं उन्हें छोड़ते हो, बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। (160-166)

उन्होंने कहा कि ऐ लूत, अगर तुम बाज न आए तो जरूर तुम निकाल दिए जाओगे। उसने कहा मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेजार हूं। ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरे घर वालों को उनके अमल से नजात दे। पस हमने उसे और उसके सब घर वालों को बचा लिया। मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और हमने उन पर बरसाया एक मेंह। पस कैसा बुरा मेंह था जो उन पर बरसा जिन्हें डराया गया था। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (167-175)

ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया। जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला ख़ुदावंद आलम के जिम्मे है। तुम लोग पूरा-पूरा नापो और नुक्सान देने वालों में से न बनो। और सीधी तराजू से तोलो और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो और जमीन में फ़साद न फैलाओ। और उस जात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नस्लों को भी। (176-184)

उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं। पस हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो। शुऐब ने कहा, मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक वह एक बड़े दिन का अजाब था। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (185-191)

और बेशक यह ख़ुदावंद आलम का उतारा हुआ कलाम है। इसे अमानतदार फरिश्ता लेकर उतरा है तुम्हारे दिल पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। साफ अरबी जबान में और इसका जिक्र अगले लोगों की किताबों में है और क्या उनके लिए यह निशानी नहीं है कि इसे

बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं। (192-197)

और अगर हम इसे किसी अजमी (ग़ैर अरबी) पर उतारते फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इस पर ईमान लाने वाले न बनते। इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है। ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख़्त अजाब न देख लें। पस वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है। (198-203)

क्या वे हमारे अजाब को जल्द मांग रहे हैं। बताओ कि अगर हम उन्हें चन्द साल तक फायदा पहुंचाते रहें फिर उन पर वह चीज आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है तो यह फायदामंदी उनके किस काम आएगी। और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले थे याद दिलाने के लिए, और हम जालिम नहीं हैं। और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उनके लिए लायक है। और न वे ऐसा कर सकते हैं। वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं। (204-212)

पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सजा पाने वालों में से हो जाओ। और अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ। और उन लोगों के लिए अपने बाजू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाख़िल होकर तुम्हारी पैरवी करें। पस अगर वे तुम्हारी नाफरमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूं। और जबरदस्त और महरबान ख़ुदा पर भरोसा रखो। जो देखता है तुम्हें जबकि तुम उठते हो और तुम्हारी चलत-फिरत नमाजियों के साथ, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (213-220)

क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं। वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं। वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर झूठे हैं। और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं और वह कहते हैं जो वह करते नहीं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उन पर जुल्म हुआ। और जुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है। (221-227)

सूरह-27. अन-नम्ल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन०। ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाजेह किताब की। रहनुमाई और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए। जो नमाज क़ायम करते हैं और जकात देते हैं और वे आख़िरत पर यकीन रखते हैं। जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं। ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सजा है

और वे आख़िरत में सख़्त ख़सारे (घाटे) में होंगे। और बेशक क़ुरआन तुम्हें एक हकीम (तत्वदर्शी) और अलीम (ज्ञानवान) की तरफ से दिया जा रहा है। (1-6)

जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहां से कोई ख़बर लाता हूं या आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम तापो। फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है। और पाक है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। (7-8)

ऐ मूसा यह मैं हूं अल्लाह, जबरदस्त हकीम (तत्वदर्शी)। और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं मेरे हुजूर पैग़म्बर डरा नहीं करते। मगर जिसने ज्यादती की। फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया। तो मैं बख़्शने वाला महरबान हूं। और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो, वह किसी ऐब के बग़ैर सफेद निकलेगा। यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फिरऔन और उसकी कौम के पास जाओ। बेशक वे नाफरमान लोग हैं। पस जब उनके पास हमारी वाजेह निशानियां आईं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। और उन्होंने उनका इंकार किया हालांकि उनके दिलों ने उनका यकीन कर लिया था, जुल्म और घमंड की वजह से। पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ्सिदों (उपद्रवियों) का। (9-14)

और हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया। और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फजीलत (श्रेष्ठता) अता फरमाई। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर किस्म की चीज दी गई। बेशक यह खुला हुआ फज़्ल है। (15-16)

और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं, यहां तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुंचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो, अपने सुराख़ों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो। पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे रब मुझे तौफीक दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाख़िल कर। (17-19)

और सुलैमान ने परिंदों का जायजा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूं। क्या वह कहीं ग़ायब हो गया है। मैं उसे सख़्त सजा दूंगा। या उसे जिब्ह कर दूंगा, या वह मेरे सामने कोई साफ हुज्जत लाए। ज्यादा देर नहीं गुजरी थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज की ख़बर लाया हूं जिसकी आपको ख़बर न थी। और मैं सबा से एक यकीनी ख़बर लेकर आया हूं। मैंने पाया कि एक औरत उन पर बादशाही करती है और उसे

सब चीज मिली है। और उसका एक बड़ा तख़्त है। मैंने उसे और उसकी कौम को पाया कि सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा। और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते, कि वे अल्लाह को सज्दा न करें जो आसमानों और जमीन की छुपी चीज को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्शे अजीम (महान सिंहासन) का। (20-26)

सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। मेरा यह ख़त लेकर जाओ। फिर इसे उन लोगों की तरफ डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल (प्रतिक्रिया) जाहिर करते हैं। मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मेरी तरफ एक बावकअत (प्रतिष्ठित) ख़त डाला गया है। वह सुलैमान की तरफ से है। और वह है शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है कि तुम मेरे मुकाबले में सरकशी न करो। और मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ। मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती जब तक तुम लोग मौजूद न हो। उन्होंने कहा, हम लोग जोरआवर हैं। और सख़्त लड़ाई वाले हैं। और फैसला आपके इख़्तियार में है। पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं। मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज्जत वालों को जलील कर देते हैं। और यही ये लोग करेंगे। और मैं उनकी तरफ एक हदिया (उपहार) भेजती हूं, फिर देखती हूं कि सफीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं। (27-35)

फिर जब सफीर (दूत) सुलैमान के पास पहुंचा, उसने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। बल्कि तुम ही अपने तोहफे से ख़ुश हो। उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुकाबला वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहां से बेइज्जत करके निकाल देंगे। और वे ख़्वार सम्मानहीन होंगे। (36-37)

सुलैमान ने कहा ऐ दरबार वालो, तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है इससे पहले की वे लोग मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएं। जिन्नों में से एक देव ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, और मैं इस पर कुदरत रखने वाला, अमानतदार हूं। जिसके पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे रब का फज्ल है। ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री। और जो शख़्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है। और जो शख़्स नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज (निस्पृह) है करम करने वाला है। (38-40)

सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है

या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं। पस जब वह आई तो कहा गया क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है। उसने कहा, गोया कि यह वही है। और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था। और हम फरमांबरदारों में थे। और उसे रोक रखा था उन चीजों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी। वह मुंकिर लोगों में से थी। उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो। पस जब उसने उसे देखा तो उसे ख़्याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं। सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया। और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई। (41-44)

और हमने समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फरीक (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो। तुम अल्लाह से माफी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए। उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं। उसने कहा कि तुम्हारी बुरी किस्मत अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो आजमाए जा रहे हो। (45-47)

और शहर में नौ शख़्स थे जो जमीन में फसाद करते थे और इस्लाह (सुधार) का काम न करते थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की कसम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे। फिर उसके वली (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे। और बेशक हम सच्चे हैं। और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई। पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम। हमने उन्हें और उनकी पूरी कौम को हलाक कर दिया। पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके जुल्म के सबब से। बेशक इसमें सबक है उन लोगों के लिए जो जानें। और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे। (48-53)

और लूत को जब उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो और तुम देखते हो। क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो। औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो। फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ बनते हैं। फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था। और हमने उन पर बरसाया एक हौलनाक बरसाना। पस कैसा बुरा बरसाव था उन पर जिन्हें आगाह किया जा चुका था, कहो हम्द है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुंतख़ब फरमाया। क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिन्हें वे शरीक करते हैं। (54-59)

भला वह कौन है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया। और तुम्हारे लिए

आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक वाले बाग़ उगाए। तुम्हारे वश में न था कि तुम इन दरख़्तों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है। बल्कि वे राह से इंहिराफ करने वाले लोग हैं। भला किसने जमीन का ठहरने के लायक बनाया और उसके दर्मियान नदियां जारी कीं। और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए। और दो समुद्रों के दर्मियान पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते। (60-61)

कौन है जो बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुम्हें जमीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है। क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है। तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र के अंधेरों में रास्ता दिखाता है। और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं। कौन है जो ख़ल्क (सृष्टि) की इब्तिदा करता है और फिर उसे दोहराता है। और कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (62-64)

कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और जमीन में कोई ग़ैब (अप्रकट) का इल्म नहीं रखता। और वे नहीं जानते वे कब उठाए जाएंगे। बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है। बल्कि वे उसकी तरफ से शक में हैं। बल्कि वे उससे अंधे हैं। और इंकार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी, तो क्या हम जमीन से निकाले जाएंगे। इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी। यह महज अगलों की कहानियां हैं। कहो कि जमीन में चलो फिरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ। (65-69)

और उन पर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं। और वे कहते हैं कि यह वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। कहो कि जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। और बेशक तुम्हारा रब लोगों पर बड़े फज्ल वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते। और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे जाहिर करते हैं। और आसमानों और जमीन की कोई पोशीदा चीज नहीं है जो एक वाजेह किताब में दर्ज न हो। (70-75)

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीजों को वाजेह कर रहा है जिनमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) रखते हैं। और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म के जरिए उनके दर्मियान फ़ैसला करेगा और वह जबरदस्त है, जानने वाला है। पस अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक तुम सरीह हक (सुस्पष्ट सत्य) पर हो। तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ

फेरकर चले जाएं। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो। तुम तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फरमांबरदार बन जाते हैं। (76-81)

और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए जमीन से एक दाब्बह (जानवर) निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा। कि लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनकी जमाअतबंदी की जाएगी। यहां तक कि जब वे आ जाएंगे तो ख़ुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुठलाया हालांकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस सबब से कि उन्होंने जुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें। और दिन कि उसमें देखें। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन करते हैं। (82-86)

और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं मगर वह जिसे अल्लाह चाहे। और सब चले आएंगे उसके आगे आजिजी से। और तुम पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को मोहकम (सुदृढ़) किया है। बेशक वह जानता है जो तुम करते हो। जो शख़्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए इससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफूज होंगे। और जो शख़्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग औंधे मुंह आग में डाल दिए जाएंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (87-90)

मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूं जिसने इसे मोहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज उसी की है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारी करने वालों में से बनूं। और यह कि क़ुरआन को सुनाऊं। फिर जो शख़्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूं। और कहो कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (91-93)

सूरह-28. अल-क़सस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। हम मूसा और फिरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। बेशक फिरऔन ने जमीन में सरकशी की। और उसने उसके बाशिंदों को गिरोहों में तक्सीम कर दिया। उनमें से एक गिरोह को उसने कमजोर कर रखा था। वह उनके लड़कों को जबह करता था और उनकी

औरतों को जिंदा रखता था। बेशक वह फसाद करने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो जमीन में कमजोर कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें और उन्हें जमीन में इक्तेदार (सत्ता) अता करें। और फ़िरऔन और हामान और उनकी फौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1-6)

और हमने मूसा की मां को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ। फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो। और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो। हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे। और उसे पैग़म्बरों में से बनाएंगे। फिर उसे फ़िरऔन के घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने। बेशक फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि यह आंख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसे क़त्ल न करो। क्या अजब कि यह हमें नफा दे या हम इसे बेटा बना लें। और वे समझते न थे। (7-9)

और मूसा की मां का दिल बेचैन हो गया। करीब था कि वह उसे जाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यकीन करने वालों में से रहे। और उसने उसकी बहिन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। और हमने पहले ही मूसा से दाइयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूं जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरख़्वाही करें। पस हमने उसे उसकी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंखें ठंडी हों। और वह ग़मगीन न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हो गया तो हमने उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को। (10-14)

और शहर में वह ऐसे वक्त में दाख़िल हुआ जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहां दो आदमियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी कौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था। तो जो उसकी कौम में से था उसने उसके ख़िलाफ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था। पस मूसा ने उसे घूंसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है। बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया है। पस तू मुझे बख़्श दे तो ख़ुदा ने उसे बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, जैसा तूने मेरे ऊपर फज़्ल किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा। (15-17)

फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। तो देखा कि वही शख़्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सरीह गुमराह हो। फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा क्या तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने

कल एक शख़्स को क़त्ल किया। तो तुम जमीन में सरकश बनकर रहना चाहते हो। तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते। और एक शख़्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले मश्विरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़्वाहों में से हूं। फिर वह वहां से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे जालिम लोगों से नजात दे। (18-21)

और जब उसने मदयन का रुख़ किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे। और जब वह मदयन के पानी पर पहुंचा तो वहां लोगों की एक जमाअत को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक तरफ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें। और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर साये की तरफ हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे रब, तू जो चीज मेरी तरफ उतारे मैं उसका मोहताज हूं। (22-24)

फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से चलती हुई। उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी ख़ातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा किस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अंदेशा न करो। तुमने जालिमों से नजात पाई। उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप इसे मुलाजिम रख लीजिए। बेहतरीन आदमी जिसे आप मुलाजिम रखें वही है जो मजबूत और अमानतदार हो। उसने कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूं। इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाजिमत करो। फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ से है। और मैं तुम पर मशक्क़त डालना नहीं चाहता। इंशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे। मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दर्मियान तै है। इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी करूं तो मुझ पर कोई जब्र न होगा। और अल्लाह हमारे कौल व करार पर गवाह है। (25-28)

फिर मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घर वालों के साथ रवाना हुआ तो उसने तूर की तरफ से एक आग देखी। उसने अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है। शायद मैं वहां से कोई ख़बर ले आऊं या आग का अंगारा ताकि तुम तापो। फिर जब वह वहां पहुंचा तो वादी के दाहिने किनारे से बरकत वाले ख़ित्ते में दरख़्त से पुकारा गया कि ऐ मूसा, मैं अल्लाह हूं, सारे जहान का मालिक। और यह कि तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। तो जब उसने उसे हरकत करते हुए देखा कि गोया सांप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर न देखा। ऐ मूसा आगे आओ और न डरो। तुम बिल्कुल महफ़ूज हो। अपना हाथ गरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी मरज के, और ख़ौफ के वास्ते अपना बाजू अपनी तरफ मिला लो। पस यह तुम्हारे रब की तरफ से दो सनदें हैं

फिरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए। बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं। (29-32)

मूसा ने कहा ऐ मेरे रब मैंने उनमें से एक शख़्स को कत्ल किया है तो मैं डरता हूं कि वे मुझे मार डालेंगे। और मेरा भाई हारून वह मुझसे ज्यादा फसीह (वाक-कुशल) है जबान में, पस तू उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी ताईद करे। मैं डरता हूं कि वे लोग मुझे झुठला देंगे। फ़रमाया कि हम तुम्हारे भाई के जरिए तुम्हारे बाज़ू को मजबूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुंच सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही ग़ालिब रहेंगे। (33-35)

फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाजेह निशानियों के साथ पहुंचा, उन्होंने कहा कि यह महज गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप दादा में नहीं सुनी। और मूसा ने कहा मेरा रब ख़ूब जानता है उसे जो उसकी तरफ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आख़िरत का घर मिलेगा। बेशक जालिम फलाह न पाएंगे। और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद को नहीं जानता। तो ऐ हामान मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं मूसा के रब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूं। (36-38)

और उसने और उसकी फ़ौजों ने जमीन में नाहक घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ लौट कर आना नहीं है। तो हमने उसे और उसकी फौजों को पकड़ा। फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। और हमने उन्हें सरदार बनाया कि आग की तरफ बुलाते हैं। और कियामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी। और कियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39-43)

और तुम पहाड़ के मग़्रिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद न थे जबकि हमने मूसा को अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे। लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बहुत जमाना गुजर गया। और तुम मदयन वालों में भी न रहते थे कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते। मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले। और तुम तूर के किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि तुम एक ऐसी कौम को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वे नसीहत पकड़ें। (44-46)

और अगर ऐसा न होता कि उन पर उनके आमाल के सबब से कोई आफत आई तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसा मिला जैसा मूसा को मिला था। क्या लोगों ने उसका इंकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू

हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का इंकार करते हैं। (47-48)

कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं। और उससे ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। और हमने उन लोगों के लिए पे दर पे अपना कलाम भेजा ताकि वे नसीहत पकड़ें। (49-51)

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए। बेशक यह हक (सत्य) है हमारे रब की तरफ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं। ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा इस पर कि इन्होंने सब्र किया। और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं और जब वे लग्व (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और वही ख़ूब जानता है जो हिदायत कुबूल करने वाले हैं। (52-56)

और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगें तो हम अपनी जमीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें अम्न व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी। जहां हर किस्म के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी तरफ से रिज़्क के तौर पर, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (57)

और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधन) पर नाजां (गौरवांवित) थीं। पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुई मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर जबकि वहां के लोग जालिम हों। (58-59)

और जो चीज भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की जिंदगी का सामान और उसकी रौनक है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाकी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं। भला वह शख़्स जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख़्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ दुनियावी जिंदगी का फ़ायदा दिया है, फिर कियामत के दिन वह हाजिर किए जाने वालों में से है। (60-61)

और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम

दावा करते थे। जिन पर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ये लोग हैं जिन्होंने हमें बहकाया। हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके थे। हम इनसे बरा-त (विरक्ति) करते हैं। ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे। (62-63)

और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उन्हें जवाब न देंगे। और वे अजाब को देखेंगे। काश वे हिदायत इख़्तियार करने वाले होते। और जिस दिन ख़ुदा उन्हें पुकारेगा और फरमाएगा कि तुमने पैग़ाम पहुंचाने वालों को क्या जवाब दिया था। फिर उस दिन उनकी तमाम बातें गुम हो जाएंगी। तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे। अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वालों में से होगा। (64-67)

और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसंद करना। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आख़िरत में। और उसी के लिए फ़ैसला है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (68-70)

कहो कि बताओ, अगर अल्लाह कियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। कहो कि बताओ अगर अल्लाह कियामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फज्ल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (71-73)

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे। और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक अल्लाह की तरफ है। और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे गढ़ते थे। (74-75)

कारून मूसा की कौम में से था। फिर वह उनके ख़िलाफ सरकश हो गया। और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताकतवर मर्द थक जाते थे। जब उसकी कौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें आख़िरत के तालिब बनो। और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और जमीन में फसाद के तालिब न बनो, अल्लाह फसाद करने वालों को पसंद नहीं करता। (76-77)

उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज्यादा कुव्वत और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं। और मुजरिमों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते। (78)

पस वह अपनी कौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भव्यता) के साथ निकला। जो लोग हयाते दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो कारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी किस्मत वाला है, और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख़्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं। (79-80)

फिर हमने उसे और उसके घर को जमीन में धंसा दिया। फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुकाबले में उसकी मदद करती। और न वह ख़ुद ही अपने को बचा सका। और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफसोस, बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी जमीन में धंसा देता। अफसोस, बेशक इंकार करने वाले फलाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। (81-82)

यह आख़िरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो जमीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फसाद करना। और आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है। जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया। (83-84)

बेशक जिसने तुम पर क़ुरआन को फर्ज किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुंचा कर रहेगा। कहो कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है। और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे रब की महरबानी से। पस तुम मुंकिरों के मददगार न बनो। और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे तुम्हारी तरफ उतारी जा चुकी हैं। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ और मुश्रिकों में से न बनो। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। हर चीज हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी जात के। फ़ैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (85-88)

सूरह-29. अल-अनकबूत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज यह कहने पर छोड़ दिए

जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा न जाएगा। और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी जरूर मालूम करेगा। (1-3)

क्या जो लोग बुराइयां कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएंगे। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा जरूर आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। और जो शख़्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है। बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज (निस्पृह) है। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला देंगे। (4-7)

और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करे। और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते थे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे। (8-9)

और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए। फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अजाब की तरह समझ लेता है। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है। और अल्लाह जरूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह जरूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) को। (10-11)

और मुंकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे। और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। बेशक वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं कियामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी। (12-13)

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हजार साल रहा। फिर उन्हें तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। फिर हमने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया। और हमने इस वाकये को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (14-15)

और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो वे तुम्हें रिज़्क देने का इख़्तियार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह के पास रिज़्क तलाश करो

और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी कौमें झुठला चुकी हैं। और रसूल पर साफ़-साफ पहुंचा देने के सिवा कोई जिम्मेदारी नहीं। (16-18)

क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर वह उसे दोहराएगा। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। कहो कि जमीन में चलो फिरो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। वह जिसे चाहेगा अजाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और तुम न जमीन में आजिज करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज है और न कोई मददगार। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इंकार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (19-23)

फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे क़त्ल कर दो या उसे जला दो। तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए। और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे आपसी दुनिया के तअल्लुक़ात की वजह से है, फिर कियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का इंकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा। फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने रब की तरफ हिजरत करता हूं। बेशक वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और हमने अता किए उसे इस्हाक और याक़ूब और उसकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। और हमने दुनिया में उसे अज्र (प्रतिफल) अता किया और आख़िरत में यकीनन वह सालिहीन में से होगा। (24-27)

और लूत को, जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राह मारते हो। और अपनी मज्लिस में बुरा काम करते हो। पस उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अजाब लाओ। लूत ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुफ्सिद (उपद्रवी) लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा। (28-30)

और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुंचे, उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं। बेशक इसके लोग सख़्त जालिम हैं। इब्राहीम ने कहा कि इसमें तो लूत भी है। उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहां कौन है। हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे मगर उसकी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ। और

उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे मगर तुम्हारी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अजाब उनकी बदकारियों की सजा में नाजिल करने वाले हैं। और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत (सीख) के लिए जो अक्ल रखते हैं। (31-35)

और मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को। पस उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो और जमीन में फसाद फैलाने वाले न बनो। तो उन्होंने उसे झुठला दिया। पस जलजले ने उन्हें आ पकड़ा। फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (36-37)

और आद और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से। और उनके आमाल को शैतान ने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया। फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे। (38)

और कारून को और फिरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने जमीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे। पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने जमीन में धंसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने ग़र्क कर दिया। और अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। (39-40)

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है। उसने एक घर बनाया। और बेशक तमाम घरों से ज्यादा कमजोर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। बेशक अल्लाह जानता है उन चीजों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं। अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बरहक पैदा किया है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (41-44)

तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और नमाज कायम करो। बेशक नमाज बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज है। ओर अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (45)

और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीके पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइंसाफ हैं। और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज पर जो हमारी तरफ भेजी गई है। और उस पर जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है। हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फरमांबरदारी करने वाले हैं। (46)

और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। तो जिन लोगों को हमने किताब दी

है वे उस पर ईमान लाते हैं। और इन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इंकार सिर्फ मुंकिर ही करते हैं। और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग शुबह में पड़ते। बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें इल्म अता हुआ है। और हमारी आयतों का इंकार नहीं करते मगर वे जो जालिम हैं। (47-49)

और वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं। कहो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। क्या उनके लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है। बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इंकार किया वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं। (50-52)

और ये लोग तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और अगर एक वक्त मुक़र्रर न होता तो उन पर अजाब आ जाता। और यकीनन वह उन पर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। वे तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। जिस दिन अजाब उन्हें ऊपर से ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो उसे जो तुम करते थे। (53-55)

ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी जमीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जान को मौत का मजा चखना है। फिर तुम हमारी तरफ लौटाए जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के बालाख़ानों (उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। क्या ही अच्छा अज्र है अमल करने वालों का। जिन्होंने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं। और कितने जानवर हैं जो अपना रिज्क उठाए नहीं फिरते। अल्लाह उन्हें रिज्क देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला जानने वाला है। (56-60)

और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और जमीन को, और मुसख़्ख़र किया सूरज को और चांद को, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां से फेर दिए जाते हैं। अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिज्क कुशादा कर देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसने जमीन को जिंदा किया उसके मर जाने के बाद, तो जरूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं समझते। (61-63)

और यह दुनिया की जिंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। और

आख़िरत का घर ही अस्ल जिंदगी की जगह है, काश कि वे जानते। पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ ले जाता है तो वे फौरन शिर्क करने लगते हैं। ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुक्री करें और चन्द दिन फायदा उठाएं। पस वे अनकरीब जान लेंगे। (64-66)

क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअम्न हरम बनाया। और उनके गिर्द व पेश (आस पास) लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे बातिल (असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। और उस शख़्स से बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक को झुठलाए जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक्कत उठाएंगे उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे। और यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है। (67-69)

सूरह-30. अर-रूम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। रूमी पास के इलाके में मग़लूब (परास्त) हो गए, और वे अपनी मग़लूबियत के बाद अनकरीब ग़ालिब होंगे। चन्द वर्षों में। अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे, अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। और वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। वे दुनिया की जिंदगी के सिर्फ जाहिर को जानते हैं, और वे आख़िरत से बेख़बर हैं। (1-7)

क्या उन्होंने अपने जी में ग़ौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ इनके दर्मियान है बरहक पैदा किया है। और सिर्फ एक मुकर्रर मुद्दत के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने रब से मुलाकात के मुंकिर हैं। क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे। वे उनसे ज्यादा ताकत रखते थे। और उन्होंने जमीन को जोता और उसे उससे ज्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और उनके पास उनके रसूल वाजेह निशानियां लेकर आए। पस अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे ख़ुद ही अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था उनका अंजाम बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वे उनकी हंसी उड़ाते थे। (8-10)

अल्लाह ख़ल्क (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे और जिस दिन कियामत बरपा होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरतजदा रह जाएंगे। और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफारिशी न होगा

और वे अपने शरीकों के मुंकिर हो जाएंगे। और जिस दिन कियामत बरपा होगी उस दिन सब लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर (प्रसन्न) होंगे। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे अजाब में पकड़े हुए होंगे। पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो। और असमानों और जमीन में उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम जुहर करते हो। (11-18)

वह जिंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिंदा से निकालता है। और वह जमीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद जिंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है। फिर यकायक तुम बशर इंसान बनकर फैल जाते हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत रख दी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (19-21)

और उसकी निशानियों में से आसमानों और जमीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों ओर तुम्हारे रंगों का इख़्तेलाफ (मतभेद) है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं इल्म वालों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारा उसके लज़्फ (जीविका) को तलाश करना है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, ख़ौफ के साथ और उम्मीद के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे जमीन को जिंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (22-24)

और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और जमीन उसके हुक्म से कायम है। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक्त जमीन से निकल पड़ोगे। और आसमानों और जमीन में जो भी है उसी का है। सब उसी के ताबेअ (अधीन) हैं और वही है जो अव्वल बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा। और यह उसके लिए ज्यादा आसान है। और आसमानों और जमीन में उसी के लिए सबसे बरतर सिफ्त (गुण) है। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारी जात से एक मिसाल बयान करता है। क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों। और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज करते हो। इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। बल्कि अपनी जानों पर जुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़्यालात की पैरवी कर रखी

है तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका मददगार नहीं। (28-29)

पस तुम यकसू होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ रखो, अल्लाह की फितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाए हुए को बदलना नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। उसी की तरफ मुतवज्जह होकर और उसी से डरो और नमाज कायम करो और मुश्रिकीन में से न बनो जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने तरीके पर नाजां (मग्न) है जो उसके पास है। (30-32)

और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की तरफ मुतवज्जह होकर। फिर जब वह अपनी तरफ से उन्हें महरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुंकिर हो जाएं। तो चन्द दिन फायदा उठा लो, अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें ख़ुदा के साथ शिर्क करने को कह रही है। (33-35)

और जब हम लोगों को महरबानी चखाते हैं तो वे उससे ख़ुश हो जाते हैं। और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ पहुंचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं। क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज्यादा रोजी देता है और जिसे चाहे कम। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। पस रिश्तेदार को उसका हक दो और मिस्कीन को और मुसाफिर को। यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिजा चाहते हैं और वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नजदीक वह नहीं बढ़ता। और जो जकात तुम दोगे अल्लाह की रिजा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहां अपने माल को बढ़ाने वाले हैं। (36-39)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। ख़ुश्की और तरी में फसाद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मजा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज आएं। कहो कि जमीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुजरे हैं। उनमें से अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) थे। (40-42)

पस अपना रुख़ दीने कय्यिम (सीधे-सहज धर्म) की तरफ सीधा रखो। इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। जिसने इंकार किया तो उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और जिसने नेक अमल किया

तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं। ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फज्ल से जजा (प्रतिफल) दे। बेशक अल्लाह मुंकिरों को पसंद नहीं करता। (43-45)

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाजे। और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें। और ताकि तुम उसका फज्ल तलाश करो। और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा उनकी कौम की तरफ। पस वे उनके पास खुली निशानियां लेकर आए। तो हमने उन लोगों से इंतिकाम लिया जिन्होंने जुर्म किया था। और हम पर यह हक था कि हम मोमिनों की मदद करें। (46-47)

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। पस वे बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है। और वह उन्हें तह-ब-तह करता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है। फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुंचा देता है तो यकायक वे ख़ुश हो जाते हैं। और वे उसके नाजिल किए जाने से पहले, ख़ुशी से पहले, नाउम्मीद थे। पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह जमीन को जिंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक वही मुर्दों को जिंदा करने वाला है। और वह हर चीज पर कादिर है। और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को जर्द हुई देखें तो इसके बाद वे इंकार करने लगेंगे। तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम सिर्फ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं। (48-53)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत (शक्ति) दी, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन कियामत बरपा होगी, मुजरिम कसम खाकर कहेंगे कि वे एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इस तरह वे फेरे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्र (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे। पस यह हश्र (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे। पस उस दिन जालिमों को उनकी मअजरत (सफ़ाई पेश करना) कुछ नफ़ा न देगी और न उनसे माफी मांगने के लिए कहा जाएगा। (54-57)

और हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर किस्म की मिसालें बयान की हैं। और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इंकार किया है वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो। इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर

जो नहीं जानते। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यकीन नहीं रखते। (58-60)

सूरह-31. लुक़मान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ० लाम० मीम०। ये पुरहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए। जो कि नमाज क़ायम करते हैं और जकात अदा करते हैं। और वे आख़िरत पर यकीन रखते हैं। ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। (1-5)

और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है जो ग़ाफिल करने वाली हैं। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे, बग़ैर किसी इल्म के। और उसकी हंसी उड़ाए। ऐसे लोगों के लिए जलील करने वाला अजाब है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकब्बुर (घमंड) करता हुआ मुंह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसे एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया। उनके लिए नेमत के बाग़ हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-9)

अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बग़ैर जो तुम्हें नजर आएं। और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए। और उसमें हर किस्म के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा फिर जमीन में हर किस्म की उम्दा चीजें उगाईं। यह है अल्लाह की तख़्लीक, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि जालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (10-11)

और हमने लुक़मान को हिक्मत (तत्वज्ञान) अता फरमाई कि अल्लाह का शुक्र करो। और जो शख़्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (12-13)

और हमने इंसान को उसके मां-बाप के मामले में ताकीद की। उसकी मां ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ। कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का। मेरी ही तरफ लौट कर आना है और अगर वे दोनों तुझ पर जोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना। और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना। और तुम उस शख़्स के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ रुजूअ किया है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुम्हें बता दूंगा

जो कुछ तुम करते रहे। (14-15)

ऐ मेरे बेटे, कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या जमीन में हो, अल्लाह उसे हाजिर कर देगा। बेशक अल्लाह बारीकबीं है, बाख़बर है। ऐ मेरे बेटे नमाज क़ायम करो, अच्छे काम की नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचे उस पर सब्र करो। बेशक यह हिम्मत के कामों में से है। और लोगों से बेरुख़ी न कर। और जमीन में अकड़ कर न चल। बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इख़्तियार कर और अपनी आवाज को पस्त कर। बेशक सबसे बुरी आवाज गधे की आवाज है। (16-19)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बग़ैर। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर शैतान उन्हें आग के अजाब की तरफ बुला रहा हो तब भी। (20-21)

और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेक अमल करने वाला भी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह ही की तरफ है तमाम मामलात का अंजामकार। और जिसने इंकार किया तो उसका इंकार तुम्हें ग़मगीन न करे। हमारी ही तरफ है उनकी वापसी। तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाकिफ़ है। उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फायदा देंगे। फिर उन्हें एक सख़्त अजाब की तरफ खींच लाएंगे। (22-24)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जमीन में। बेशक अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, ख़ूबियों वाला है। और अगर जमीन में जो दरख़्त हैं वे कलम बन जाएं और समुद्र, सात अतिरिक्त समुद्रों के साथ, रोशनाई बन जाएं, तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हों। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

तुम सबका पैदा करना और जिंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है। और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक चलता है एक मुकर्रर वक्त तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह

उससे बाख़बर है। यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ है। और उसके सिवा जिन चीजों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं और बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है। (28-30)

क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुद्र में अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए। बेशक इसमें निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब मौत उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर ख़ुश्की की तरफ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं। और हमारी निशानियों का इंकार वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुजार हैं। (31-32)

ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ से कुछ बदला देने वाला होगा। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की जिंदगी तुम्हें धोखे में न डाले न धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक अल्लाह ही को कियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है। और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस जमीन में मरेगा। बेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है। (33-34)

सूरह-32. अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़० लाम० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबह नहीं, ख़ुदावंद आलम की तरफ से है। क्या वे कहते हैं कि इस शख़्स ने इसे ख़ुद गढ़ लिया है। बल्कि यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएं। (1-3)

अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो इनके दर्मियान है छः दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर कायम हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। वह आसमान से जमीन तक तमाम मामलात की तदबीर करता है। फिर वे उसकी तरफ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिक्दार तुम्हारी गिनती से हजार साल के बराबर है। वही है पोशीदा और जाहिर को जानने वाला। जबरदस्त है, रहमत वाला है। उसने जो चीज भी बनाई ख़ूब बनाई। और उसने इंसान की तख़्लीक की इब्तिदा मिट्टी से की। फिर उसकी नस्ल हकीर पानी के ख़ुलासा (सत्त) से चलाई। फिर उसके आजा (शरीरांग) दुरुस्त किए। और उसमें अपनी रूह फूंकी। तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (4-9)

और उन्होंने कहा कि क्या जब हम जमीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किया जाएंगे। बल्कि वे अपने रब की मुलाकात के मुंकिर हैं। कहो कि मौत का फरिश्ता तुम्हारी जान क़ब्ज करता है जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है। फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश तुम देखो जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें। हम यकीन करने वाले बन गए। और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते। लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूंगा। तो अब मजा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और अपने किए की बदौलत हमेशा का अजाब चखो। (10-14)

हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके जरिए से यاददिहानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते हैं। और वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते। उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं। वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है। (15-17)

तो क्या जो मोमिन है वह उस शख़्स जैसा होगा जो नाफरमान है। दोनों बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की कियामगाहें हैं, जियाफ़त (सत्कार) उन कामों की वजह से जो वे करते थे। और जिन लोगों ने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे। और उनसे कहा जाएगा कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। और हम उन्हें बड़े अजाब से पहले करीब का अजाब चखाएंगे शायद कि वे बाज आ जाएं। और उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाए। फिर वह उनसे मुंह मोड़े हम ऐसे मुजरिमों से जरूर बदला लेंगे। (18-22)

और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो। और हमने उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे। जबकि उन्होंने सब्र किया। और वे हमारी आयतों पर यकीन रखते थे। बेशक तेरा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान उन मामलों में फैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। क्या उनके लिए यह चीज हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी कौमों को हलाक कर दिया। जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं। (23-26)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल जमीन की तरफ हांककर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे ख़ुद भी। फिर क्या

वे देखते नहीं। और वे कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि फ़ैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इंकार किया। और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। तो उनसे दूर रहो और इंतिज़ार करो, ये भी मुंतज़िर हैं। (27-30)

सूरह-33. अल-अहज़ाब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी, अल्लाह से डरो और मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) की इताअत (आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और पैरवी करो उस चीज की जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह कारसाज (कार्यपालक) होने के लिए काफी है। (1-3)

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शहिर अपनी बीबी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हो तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। ये सब तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं। और अल्लाह हक बात कहता है और वह सीधा रास्ता दिखाता है। मुंह बोले बेटों को उनके बापों की निस्बत से पुकारो यह अल्लाह के नजदीक ज्यादा मुंसिफ़ाना बात है। फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफ़ीक हैं। और जिस चीज में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो। और अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (4-5)

और नबी का हक मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज्यादा है, और नबी की बीवियां उनकी माएं हैं। और रिश्तेदार ख़ुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरीन की बनिस्बत, एक दूसरे से ज्यादा तअल्लुक रखते हैं। मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (6)

और जब हमने पैग़म्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से। और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया। ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुंकिरों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (7-8)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर फौजें चढ़ आईं तो हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की तरफ से और तुम्हारे नीचे की तरफ से। और जब आंखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक्त ईमान

वाले इम्तेहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए। (9-11)

और जब मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ फरेब था। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो, तुम्हारे लिए ठहरने का मौका नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से इजाजत मांगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफ़ूज़ हैं और वे ग़ैर महफ़ूज़ नहीं। वे सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर मदीना के अतराफ से उन पर कोई घुस आता और उन्हें फ़ितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे इसमें बहुत कम देर करते। और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी। कहो कि अगर तुम मौत से या कत्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और इस हालत में तुम्हें सिर्फ थोड़े दिनों फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिलेगा। कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक्सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे। और वे अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे। (12-17)

अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वे लड़ाई में कम ही आते हैं। वे तुमसे बुख़्ल (कृपणता) करते हैं। पस जब ख़ौफ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें उस शख़्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो। फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिर्स में तुमसे तेज जबानी के साथ मिलते हैं। ये लोग यकीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि फौजें अभी गई नहीं हैं। और अगर फौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें। और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते। (18-20)

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे। और जब ईमान वालों ने फौजों को देखा, वे बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा। और इसने उनके ईमान और इताअत में इजाफ़ा कर दिया। ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया। पस उनमें से कोई अपना जिम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंतज़िर है। और उन्होंने जरा भी तब्दीली नहीं की। ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) को अजाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा कुबूल करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (21-24)

और अल्लाह ने मुंकिरों को उनके ग़ुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी

न हुई और मोमिनीन की तरफ से अल्लाह लड़ने के लिए काफ़ी हो गया। अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला जबरदस्त है। और अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने हमलाआवरों का साथ दिया उनके किलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रौब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को कत्ल कर रहे हो और एक गिरोह को कैद कर रहे हो। और उसने उनकी जमीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया। और ऐसी जमीन का भी जिस पर तुमने कदम नहीं रखा। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। (25-27)

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़्सत कर दूं। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदारों के लिए बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो, तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अजाब दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (28-30)

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज्र देंगे। और हमने उसके लिए बाइज्जत रोजी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की बीवियो, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नर्मी न इख़्तियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारूफ (सामान्य नियम) के मुताबिक बात कहो। (31-32)

और तुम अपने घर में करार से रहो और पहले की जाहिलियत की तरह दिखलाती न फिरो। और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहलेबैत (रसूल के घर वालों) से आलूदगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिक्मत (तत्वज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो। बेशक अल्लाह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है ख़बर रखने वाला है। (33-34)

बेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें। और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें। और फरमांबरदारी करने वाले मर्द और फरमांबरदारी करने वाली औरतें। और रास्तबाज (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज औरतें। और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें। और ख़ुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें। और सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और रोजा रखने वाले मर्द और रोजा रखने वाली औरतें। और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले मर्द और हिफाजत करने वाली औरतें। और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें। इनके लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है। (35)

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इख़्तियार बाकी रहे। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया। (36)

और जब तुम उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम किया कि अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह जाहिर करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह ज्यादा हकदार है कि तुम उससे डरो। फिर जब जैद उससे अपनी ग़रज तमाम कर चुका, हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कुछ तंगी न रहे। जबकि वे उनसे अपनी ग़रज पूरी कर लें। और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था। (37)

पैगम्बर के लिए इसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) उन पैगम्बरों के साथ रही है जो पहले गुजर चुके हैं। और अल्लाह का हुक्म एक कतई फैसला होता है। वे अल्लाह के पैग़ामों को पहुंचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (समापक) हैं। और अल्लाह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (38-40)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो। और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फरिश्ते भी ताकि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाए। और वह मोमिनों पर बहुत महरबान है। जिस रोज वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तकबाल सलाम से होगा। और उसने उनके लिए बाइज्जत सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है। (41-44)

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। और अल्लाह की तरफ, उसके इज्न (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आह्वानकर्ता) और एक रोशन चराग़। और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा फज्ल (अनुग्रह) है। और तुम मुंकिरों और मुनाफिकों की बात न मानो और उनके सताने को नजरअंदाज करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। (45-48)

ऐ ईमान वालो, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाजिम नहीं है जिसका तुम शुमार करो। पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और ख़ूबी के साथ उन्हें रुख़्सत कर दो। (49)

ऐ नबी हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो

और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो। और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्ते कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग। हमें मालूम है जो हमने उन पर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फर्ज किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (50)

तुम उनमें से जिस-जिसको चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो। और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज्यादा तवक्क़ोअ (संभावना) है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी, और वे रंजीदा न होंगी। और वे इस पर राजी रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, बुर्दबार (उदार) है। इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे। मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हो। और अल्लाह हर चीज पर निगरां है। (51-52)

ऐ ईमान वालो, नबी के घरों में मत जाया करो मगर जिस वक्त तुम्हें खाने के लिए इजाजत दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतजिर न रहो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाख़िल हो। फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से नबी को नागवारी होती है। मगर वह तुम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह हक बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज मांगो तो पर्दे की ओट से मांगो। यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए ज्यादा पाकीजा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ दो और न यह जाइज है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी निकाह करो। यह अल्लाह के नजदीक बड़ी संगीन बात है। तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (53-54)

पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है। और न अपने बेटों के बारे में और न अपने भाइयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के बारे में और न अपनी औरतों के बारे में और न अपनी दासियों के बारे में। और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज पर निगाह रखता है। (55)

अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी उस पर दुरूद व सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अजिय्यत (यातना) देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की और उनके लिए जलील करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अजिय्यत देते

हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया। (56-58)

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें इससे जल्दी पहचान हो जाएगी तो वे सताई न जाएंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज न आए तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे। फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रहने पाएंगे। फिटकारे हुए, जहां पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे। यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुजर चुके हैं। और तुम अल्लाह के दस्तूर में कोई तब्दीली न पाओगे। (59-62)

लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर, शायद क़ियामत करीब आ लगी हो। बेशक अल्लाह ने मुंकिरों को रहमत से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, उसमें वे हमेशा रहेंगे। वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे, वे कहेंगे, ऐ काश हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत (आज्ञापालन) की होती। और वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे रब, उन्हें दोहरा अजाब दे और उन पर भारी लानत कर। (63-68)

ऐ ईमान वालो, तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अजिय्यत (यातना) पहुंचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया। और वह अल्लाह के नजदीक बाइज्जत था। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो। वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (69-71)

हमने अमानत को आसमानों और जमीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसे उठाने से इंकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया। बेशक वह जालिम और जाहिल था। ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सजा दे। और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फरमाए। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (72-73)

सूरह-34. सबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ ख़ुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो जमीन में है और उसी की तारीफ है आख़िरत में और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला जानने वाला

है। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है। और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह रहमत वाला बख़्शने वाला है। (1-2)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि हम पर कियामत नहीं आएगी। कहो कि क्यों नहीं, क़सम है मेरे परवरदिगार आलिमुलग़ैब की, वह जरूर तुम पर आएगी। उससे जर्रा बराबर कोई चीज छुपी नहीं, न आसमानों में और न जमीन में। और न कोई चीज उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किया। यही लोग हैं जिनके लिए माफ़ी है और इज्जत की रोजी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को आजिज (मात) करने की कोशिश की, उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अजाब है। और जिन्हें इल्म दिया गया वे, उस चीज को जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह हक है और वह ख़ुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंस्य) का रास्ता दिखाता है। (3-6)

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं, क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेजा-रेजा हो जाओगे तो फिर तुम्हें नए सिरे से बनना है। क्या उसने अल्लाह पर झूठ बांधा है या उसे किसी तरह का जुनून है। बल्कि जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वही अजाब में और दूर की गुमराही में मुब्तिला हैं। तो क्या उन्होंने आसमान और जमीन की तरफ नजर नहीं की जो उनके आगे है और उनके पीछे भी। अगर हम चाहें तो उन्हें जमीन में धंसा दें या उन पर आसमान से टुकड़ा गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला हो। (7-9)

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ी नेमत दी। ऐ पहाड़ो तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो। और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया। और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया कि तुम कुशादा जिरहें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाजे से जोड़ो। और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूं। (10-11)

और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्ख़र (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की मंजिल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंजिल एक महीने की। और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया। और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अजाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देगें। ऐ आले दाऊद, शुक्रगुजारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुजार हैं। (12-13)

फिर जब हमने उस पर मौत का फ़ैसला नाफिज किया तो किसी चीज ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया मगर जमीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। पस जब

वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अप्रकट) को जानते तो इस जिल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)

सबा के लिए उनके अपने मस्कन (आवासीय क्षेत्र) में निशानी थी। दो बाग़ दाएं और बाएं, अपने रब के रिज्क से खाओ और उसका शुक्र करो। उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब। पस उन्होंने सरताबी (विमुखता) की तो हमने उन पर बांध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें बदमजा फल और झाव के दरख़्त और कुछ थोड़े से बेर। यह हमने उनकी नाशुक्री का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो नाशुक्र हो। (15-17)

और हमने उनके और उनकी बस्तियों के दर्मियान, जहां हमने बरकत रखी थी, ऐसी बस्तियां आबाद कीं जो नजर आती थीं। और हमने उनके दर्मियान सफर की मंजिलें ठहरा दीं। उनमें रात दिन अम्न के साथ चलो। फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारे सफरों के दर्मियान दूरी डाल दे। और उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तो हमने उन्हें अफ़साना बना दिया और हमने उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। बेशक इसमें निशानी है हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (18-19)

और इब्लीस (शैतान) ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया। पस उन्होंने उसकी पैरवी की मगर ईमान वालों का एक गिरोह। और इब्लीस को उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम कर लें उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके जो उसकी तरफ से शक में हैं) और तुम्हारा रब हर चीज पर निगरां (निगरानी करने वाला) है। (20-21)

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने ख़ुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में जर्रा बराबर इख़्तियार रखते और न जमीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है। और न इनमें से कोई उसका मददगार है। और उसके सामने कोई शफ़ाअत (सिफारिश) काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाजत दे। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया। वे कहेंगे कि हक बात का हुक्म फरमाया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (22-23)

कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रिज्क देता है। कहो कि अल्लाह। और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में। कहो कि जो क़ुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा। कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान हक के मुताबिक फ़ैसला फरमाएगा। और वह फ़ैसला फरमाने वाला है, इल्म वाला है। कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर ख़ुदा के साथ मिला रखा है। हरगिज नहीं, बल्कि वह अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (24-27)

और हमने तुम्हें तमाम इंसानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (28-30)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज न इस क़ुरआन को मानेंगे और न उसे जो इसके आगे है। और अगर तुम उस वक्त को देखो जबकि ये जालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। एक दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग कमजोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान वाले होते। बड़ा बनने वाले कमजोर लोगों को जवाब देंगे, क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था। जबकि वह तुम्हें पहुंच चुकी थी, बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम हो। और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और उसके शरीक ठहराएं। और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे जबकि वे अजाब देखेंगे। और हम मुंकिरों की गर्दन में तौक डालेंगे। वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे। (31-33)

और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज्यादा हैं और हम कभी सजा पाने वाले नहीं। कहो कि मेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रोजी देता है। और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज नहीं जो दर्जे में तुम्हें हमारा मुकर्रब (निकटवर्ती) बना दे, अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है। और वे बालाख़ानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अजाब में दाख़िल किए जाएंगे। कहो कि मेरा रब अपने बंदों में से जिसे चाहता है कुशादा रोजी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है। और जो चीज भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह बेहतर रिज्क देने वाला है। (34-39)

और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फरिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे। वे कहेंगे पाक है तेरी जात, हमारा तअल्लुक तुझसे है न कि इन लोगों से। बल्कि ये जिन्नों की इबादत करते थे। उनमें से अक्सर लोग उन्हीं के मोमिन थे। पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फायदा पहुंचा सकता है और न नुक्सान। और हम जालिमों से कहेंगे कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे। (40-42)

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख़्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे।

और उन्होंने कहा, यह तो महज एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन मुंकिरों के सामने जब हक आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया। और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था। पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, तो कैसा था उन पर मेरा अजाब। (43-45)

कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूं। यह कि तुम ख़ुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है। वह तो बस एक सख़्त अजाब से पहले तुम्हें डराने वाला है। कहो कि मैंने तुमसे कुछ मुआवजा मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा मुआवजा तो बस अल्लाह के ऊपर है। और वह हर चीज पर गवाह है। (46-47)

कहो कि मेरा रब हक को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीजों को जानने वाला है। कहो कि हक (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आग़ाज करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति)। कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूं तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूं तो यह उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा रब मेरी तरफ भेज रहा है। बेशक वह सुनने वाला है, करीब है। (48-50)

और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे। पस वे भाग न सकेंगे और करीब ही से पकड़ लिए जाएंगे। और वे कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहां। और इससे पहले उन्होंने उसका इंकार किया। और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे। और उनकी और उनकी आरजू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ किया गया। वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे। (51-54)

सूरह-35. फातिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ अल्लाह के लिए है, आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला, फरिश्तों को पैग़ामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह पैदाइश में जो चाहे ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने वाला नहीं। और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक है जो तुम्हें आसमान और जमीन से रिज्क देता हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तो तुम कहां से धोखा खा रहे हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होने वाले हैं। (3-4)

ऐ लोगो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। तो दुनिया की जिंदगी तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोजख़ वालों में से हो जाएं। जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए सख़्त अजाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफी है और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (5-7)

क्या ऐसा शख़्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे, पस अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। पस उन पर अफसोस करके तुम अपने को हल्कान (व्यथित) न करो। अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (8)

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं। फिर हम उसे एक मुर्दा देस की तरफ ले जाते हैं। पस हमने उससे उस जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर जिंदा कर दिया। इसी तरह होगा दुबारा जी उठना। जो शख़्स इज्जत चाहता हो तो इज्जत तमामतर अल्लाह के लिए है। उसकी तरफ पाकीजा (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है। और जो लोग बुरी तदबीरें कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अजाब है। और उनकी तदबीरें नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी। (9-10)

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न जन्म देती है मगर उसके इल्म से। और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है मगर वह एक किताब में दर्ज है। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (11)

और दोनों दरिया यकसां (समान) नहीं। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए ख़ुशगवार। और यह खारी कड़ुवा है। और तुम दोनों से ताजा गोश्त खाते हो और जीनत की चीज निकालते हो जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो जहाजों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसका फज्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। वह दाख़िल करता है रात को दिन में और वह दाख़िल करता है दिन को रात में। और उसने सूरज और चांद को सक्रिय कर दिया है। हर एक चलता है एक मुकर्रर वक्त के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फरयादरसी नहीं कर सकते। और वे कियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार करेंगे। और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता। (12-14)

ऐ लोगो, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज (निस्पृह) है तारीफ

वाला है। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से जरा भी न उठाया जाएगा, अगरचे वह करीबी संबंधी क्यों न हो। तुम तो सिर्फ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज कायम करते हैं। और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है। (15-18)

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं। और न अंधेरा और न उजाला। और न साया और न धूप। और जिंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे वह चाहता है। और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो कब्रों में हैं। तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो। हमने तुम्हें हक (सत्य) के साथ भेजा है, ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं। उन्होंने भी झुठलाया। उनके पास उनके पैग़म्बर खुले दलाइल और सहीफे (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए। फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अजाब। (19-26)

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे मुख़्तलिफ रंगों के फल पैदा कर दिए। और पहाड़ों में भी सफेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी। और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ रंग के हैं। अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। (27-28)

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मांद न होगी ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे। और उनके लिए अपने फज्ल से और ज्यादा कर दे। बेशक वह बख़्शने वाला है, कद्रदां है। और हमने तुम्हारी तरफ जो किताब 'वही' (प्रकाशना) की है वह हक है, उसकी तस्दीक करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है। बेशक अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है। (29-31)

फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफीक से भलाइयों में सबकत (अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सबसे बड़ा फज्ल है। हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे, वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा रब माफ करने

वाला, क़द्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक़्क़त पहुंचेगी और न कभी थकान लाहिक़ होगी। (32-35)

और जिन्होंने इंकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनकी कज़ा! आएगी कि वे मर जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर मुंकिर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे। ऐ हमारे रब हमें निकाल ले। हम नेक अमल करेंगे, उससे मुख़्तलिफ़ जो हम किया करते थे। क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (36-37)

अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब (अप्रकट) को जानने वाला है। बेशक वह दिल की बातों से भी बाख़बर है। वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया। तो जो शख़्स इंकार करेगा उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार, उनके रब के नज़दीक, नाराज़ी ही बढ़ने का सबब होता है। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार ख़सारे (घाटे) ही में इज़ाफ़ा करेगा। (38-39)

कहो, ज़रा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से क्या बनाया है। या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है। या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं। बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएं। और अगर वे टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता। बेशक वह तहम्मुल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है। (40-41)

और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी क़समें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले होंगे। फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो सिर्फ़ उनकी बेज़ारी (अरुचि) ही को तरक़्क़ी हुई, ज़मीन में अपने को बड़ा समझने की वजह से, और उनकी बुरी तदबीरों को। और बुरी तदबीरों का वबाल तो बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है। तो क्या ये उसी दस्तूर के मुंतज़िर हैं जो अगले लोगों के बारे में ज़ाहिर हुआ। पस तुम ख़ुदा के दस्तूर में न कोई तब्दीली पाओगे और न ख़ुदा के दस्तूर को टलता हुआ पाओगे। क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ अंजाम उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं, और वे क़ुव्वत (शक्ति) में इनसे बढ़े हुए थे। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसे आजिज़ (निर्बल) कर दे, न आसमानों में और न ज़मीन में। बेशक वह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है। (42-44)

और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो ज़मीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत देता है। फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़ुद देखने वाला है। (45)

सूरह-36. या० सीन०

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

या० सीन०। क़सम है बाहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) क़ुरआन की। बेशक तुम रसूलों में से हो। निहायत सीधे रास्ते पर। यह ख़ुदाए अज़ीज़ (प्रभुत्वशाली) व रहीम (दयावान) की तरफ़ से उतारा गया है। ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके अगलों को नहीं डराया गया। पस वे बेख़बर हैं। (1-6)

उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे। हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं सो वे ठोडियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं। और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी। फिर हमने उन्हें ढांक दिया तो उन्हें दिखाई नहीं देता। और उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे। तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और ख़ुदा से डरे, बिना देखे। तो ऐसे शख़्स को माफ़ी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (7-11)

यक़ीनन हम मुर्दों को ज़िंदा करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज़ हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में और उन्हें बस्ती वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए। (12-13)

जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम महज़ झूठ बोलते हो। उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं। और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर पहुंचा देना है। लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज़ न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ़ से सख़्त तकलीफ़ पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम्हें नसीहत की गई। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (14-19)

और शहर के दूर मक़ाम से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम रसूलों की पैरवी करो। उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं मांगते। और वे ठीक रास्ते पर हैं। (20-21)

और मैं क्यों न इबादत करूं उस ज़ात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊं। अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। बेशक उस वक़्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा। मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो

तुम भी मेरी बात सुन लो। इर्शाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उसने कहा काश मेरी क़ौम जानती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज्जतदारों में शामिल कर दिया। (22-27)

और इसके बाद उसकी क़ौम पर हमने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम फ़ौज नहीं उतारा करते। बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बुझकर रह गए। अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मजाक ही उड़ाते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं। अब वे उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं। और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे पास हाजिर न किया जाए। (28-32)

और एक निशानी उनके लिए मुर्दा जमीन है। उसे हमने जिंदा किया और उससे हमने ग़ल्ला निकाला। पस वे उसमें से खाते हैं। और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए। और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए। ताकि लोग उसके फल खाएं। और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र नहीं करते। पाक है वह जात जिसने सब चीज के जोड़े बनाए, उनमें से भी जिन्हें जमीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी। और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते। (33-36)

और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में रह जाते हैं। और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (ज्ञानवान) का बांधा हुआ अंदाजा है। और चांद के लिए हमने मंजिलें मुक़र्रर कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़। न सूरज के वश में है कि वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (37-40)

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीजें पैदा कीं जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न कोई उनकी फ़रयाद सुनने वाला हो और न वे बचाए जा सकें। मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक्त तक फ़ायदा देना है। (41-44)

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर रहम किया जाए। और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिसकी वे उपेक्षा न करते हों। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो तो जिन लोगों ने इंकार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता। तुम लोग तो खुली गुमराही में हो। (45-47)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे। फिर वे न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ़ लौट सकेंगे। और सूर फूंका जाएगा तो यकायक वे क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ चल पड़ेंगे। वे कहेंगे, हाय हमारी बदबख़्ती, हमारी क़ब्र से किसने हमें उठाया यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाजिर कर दिए जाएंगे। (48-53)

पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई जुल्म न होगा। और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। बेशक जन्नत के लोग आज अपने मशग़लों में ख़ुश होंगे। और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे। उनके लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे। उन्हें सलाम कहलाया जाएगा महरबान रब की तरफ़ से। (54-58)

और ऐ मुजरिमो, आज तुम अलग हो जाओ। ऐ औलादे आदम, क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। अब अपने कुफ़्र के बदले में इसमें दाख़िल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे। (59-65)

और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते। फिर वे रास्ते की तरफ़ दौड़ते तो उन्हें कहां नजर आता। और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। और हम जिसकी उम्र ज्यादा कर देते हैं तो उसे उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं। (66-68)

और हमने उसे शेअर (काव्य) नहीं सिखाया और न यह उसके लायक है। यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है और वाजेह (सुस्पष्ट) क़ुरआन है ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार कर दे जो जिंदा हो और इंकार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए। (69-70)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीजों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं। और हमने उन्हें उनका ताबेअ (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें फ़ायदे हैं और पीने की चीजें भी, तो क्या वे शुक्र नहीं करते। और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए। वे उनकी मदद न कर सकेंगे, और वे उनकी फ़ौज होकर हाजिर किए जाएंगे। तो उनकी बात तुम्हें ग़मगीन न करे। हम जानते हैं जो कुछ

वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। (71-76)

क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया। और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन जिंदा करेगा जबकि वे बोसीदा हो गई हों। कहो, उन्हें वही जिंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया। और वह सब तरह पैदा करना जानता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। क्या जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे। हां वह कादिर है। और वही है अस्ल पैदा करने वाला, जानने वाला। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। पस पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज का इख़्तियार है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (77-83)

सूरह-37. अस-साफ़्फ़ात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है क़तार दर क़तार सफ बांधने वाले फ़रिश्तों की। फिर डांटने वालों की झिड़क कर। फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं। कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है। आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है और सारे मश्रिकों (पूर्वी दिशाओं) का रब। (1-5)

हमने आसमाने दुनिया को सितारों की जीनत (शोभा) से सजाया है। और हर शैतान सरकश से उसे महफ़ूज किया है। वे मलए आला (आकाश लोक) की तरफ कान नहीं लगा सकते और वे हर तरफ से मारे जाते हैं, भगाने के लिए। और उनके लिए एक दाइमी (स्थाई) अजाब है। मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है। (6-10)

पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज्यादा मुश्किल है या उन चीजों की जो हमने पैदा की हैं। हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। बल्कि तुम तअज्जुब करते हो और वे मजाक उड़ा रहे हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं। और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं। और कहते हैं कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे तो फिर हम उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि हां, और तुम जलील भी होगे। (11-18)

पस वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी वक्त वे देखने लगेंगे और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबख़्ती यह तो जजा (बदले) का दिन है। यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम

झुठलाते थे। जमा करो उन्हें जिन्होंने जुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दोजख़ का रास्ता दिखाओ और उन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। बल्कि आज तो वे फरमांबरदार हैं। (19-26)

और वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे। कहेंगे तुम हमारे पास दाईं तरफ से आते थे। वे जवाब देंगे, बल्कि तुम ख़ुद ईमान लाने वाले नहीं थे। और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था, बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे। पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मजा चखना ही है। हमनें तुम्हें गुमराह किया, हम ख़ुद भी गुमराह थे। पस वे सब उस दिन अजाब में मुशतरक (सह भागी) होंगे। (27-33)

हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकब्बुर (घमंड) करते थे। और वे कहते थे कि क्या हम एक शायर दीवाने के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें। बल्कि वह हक लेकर आया है। और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) का मिस्दाक (पुष्टि रूप) है। बेशक तुम्हें दर्दनाक अजाब चखना होगा। और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो जो तुम करते थे। (34-39)

मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। उनके लिए मालूम रिज्क होगा। मेवे, और वे निहायत इज्जत से होंगे, आराम के बाग़ों में। तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। साफ शफ़्फ़ाफ पीने वालों के लिए लज्जत। न उसमें कोई जरर (हानिकारकता) होगा और न उससे अक्ल ख़राब होगी। और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी। गोया कि वे अंडे हैं जो छुपे हुए रखे हों। (40-49)

फिर वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाकाती था। वह कहा करता था कि क्या तुम भी तस्दीक (पुष्टि) करने वालों में से हो। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें जजा मिलेगी। कहेगा, क्या तुम झांक कर देखोगे। तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा कि ख़ुदा की कसम तुम तो मुझे तबाह कर देने वाले थे। और अगर मेरे रब का फ़ज्ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं। क्या अब हमें मरना नहीं है, मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अजाब न होगा। बेशक यही बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (50-61)

यह ज़ियाफ़त (सत्कार) अच्छी है या जक्कूम का दरख़्त। हमने उसे जालिमों के लिए फ़ितना बनाया है। वह एक दरख़्त है जो दोजख़ की तह से निकलता है। उसका ख़ोशा ऐसा

है जैसे शैतान का सर। तो वे लोग उससे खाएंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन्हें खौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा। फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ होगी। उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया। फिर वे भी उन्हीं के कदम बकदम दौड़ते रहे, और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हुए। और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे। (62-74)

और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। और हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया। और हमने उसकी नस्ल को बाकी रहने वाला बनाया। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। फिर हमने दूसरों को ग़र्क कर दिया। (75-82)

और उसी के तरीके वालों में से इब्राहीम भी था। जबकि वह आया अपने रब के पास क़ल्बे सलीम (पाक दिल) के साथ। जब उसने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि तुम किस चीज की इबादत करते हो। क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो तो ख़ुदावंद आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है। (83-87)

फिर इब्राहीम ने सितारों पर एक नजर डाली। पस कहा कि मैं बीमार हूं। फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए। तो वह उनके बुतों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो। तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं। फिर उन्हें मारा पूरी कुव्वत के साथ। फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आए। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीजों को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो। और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुम्हें भी और उन चीजों को भी जिन्हें तुम बनाते हो। उन्होंने कहा, इसके लिए एक मकान बनाओ फिर इसे दहकती आग में डाल दो। पस उन्होंने उसके ख़िलाफ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। और उसने कहा कि मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूं, वह मेरी रहनुमाई फरमाएगा। ऐ मेरे रब, मुझे नेक औलाद अता फरमा। तो हमने उसे एक बुर्दबार (संयमी) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। (88-101)

पस जब वह उसके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुंचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूं कि तुम्हें जबह कर रहा हूं पस तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है। उसने कहा कि ऐ मेरे बाप, आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। पस जब दोनों मुतीअ (आज्ञाकारी) हो गए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल डाल दिया। और हमने उसे आवाज दी कि ऐ इब्राहीम, तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया। बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। यकीनन यह एक खुली हुई आजमाइश थी और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी के एवज उसे छुड़ा लिया। और हमने

उस पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इब्राहीम पर। हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। और हमने उसे इस्हाक की ख़ुशख़बरी दी, एक नबी सालेहीन (नेकों) में से। और हमने उसे और इस्हाक को बरकत दी। और इन दोनों की नस्ल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफ्स पर सरीह जुल्म करने वाले हैं। (102-113)

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया। और उन्हें और उनकी कौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने। और हमने उन दोनों को वाजेह किताब दी। और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया। और हमने उनके तरीके पर पीछे वालों के एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो मूसा और हारून पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे। (114-122)

और इलयास भी पैग़म्बरों में से था। जबकि उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम बअल (एक बुत का नाम) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक को छोड़ देते हो, अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी। पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इलयास पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। (123-132)

और बेशक लूत भी पैग़म्बरों में से था। जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी। मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और तुम उनकी बस्तियों पर गुजरते हो सुबह को भी और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते। (133-138)

और बेशक यूनुस भी रसूलों में से था। जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुंचा। फिर कुरआ (कई में से एक का चयन) डाला तो वही ख़तावार निकला। फिर उसे मछली ने निगल लिया। और वह अपने को मलामत कर रहा था। पस अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता। फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। और हमने उस पर एक बेलदार दरख़्त उगा दिया। और हमने उसे एक लाख या इससे ज्यादा लोगों की तरफ भेजा। फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक। (139-148)

पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे। क्या हमने फरिश्तों को औरत बनाया है और वे देख रहे थे। सुन लो, ये लोग सिर्फ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और यकीनन वे झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटों के मुकाबले में बेटियां पसंद की हैं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो। फिर क्या

तुम सोच से काम नहीं लेते। क्या तुम्हारे पास कोई वाजेह दलील है। तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो। (149-157)

और उन्होंने ख़ुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी करार दी है। और जिन्नों को मालूम है कि यकीनन वे पकड़े हुए आएंगे। अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, ख़ुदा से किसी को फेर नहीं सकते। मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है। और हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मकाम है। और हम ख़ुदा के हुज़ूर बस सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं। और हम उसकी तस्बीह करने वाले हैं। (158-166)

और ये लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते। फिर उन्होंने उसका इंकार कर दिया तो अनकरीब वे जान लेंगे। और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फैसला पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएंगे। और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है। तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, अनकरीब वे भी देख लेंगे। (167-175)

क्या वे हमारे अजाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। पस जब वह उनके सेहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है। तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो। और देखते रहो, अनकरीब वे ख़ुद देख लेंगे। पाक है तेरा रब, इज्जत का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं। और सलाम है पैग़म्बरों पर। और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (176-182)

सूरह-38. साद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

साद०। कसम है नसीहत वाले कुरआन की। बल्कि जिन लोगों ने इंकार किया, वे घमंड और जिद में हैं। उनसे पहले हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक्त बचने का न था। (1-3)

और उन लोगों ने तअज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और इंकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है। और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। हमने यह बात पिछले मजहब में नहीं सुनी, यह सिर्फ एक बनाई बात है। क्या हम सब में से इसी शख़्स पर कलामे इलाही नाजिल किया गया। बल्कि ये लोग मेरी याददिहानी की तरफ से शक में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अजाब का मजा नहीं चखा। (4-8)

क्या तेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं जो जबरदस्त है, फय्याज (दाता) है।

क्या आसमानों और जमीन और इनके दर्मियान की चीजों की बादशाही उनके इख़्तियार में है। फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएं। एक लश्कर यह भी यहां तबाह होगा सब लश्करों में से। इनसे पहले कौमे नूह और आद और मेख़ों (कीलों) वाला फिरऔन। और समूद और कौमे लूत और ऐका वालों ने झुठलाया। ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे। उन सब ने रसूलों को झुठलाया तो मेरा अजाब नाजिल होकर रहा। और ये लोग सिर्फ एक चिंघाड़ के मुंतजिर हैं जिसके बाद कोई ढील नहीं। और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे। (9-16)

जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो कुव्वत वाला, रुजूअ करने वाला था। हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया कि वे उसके साथ सुबह व शाम तस्बीह करते थे, और परिंदों को भी जमा होकर। सब अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वाले थे। और हमने उसकी सल्तनत मजबूत की, और उसे हिक्मत अता की। और मामलात का फैसला करने की सलाहियत दी। (17-20)

और क्या तुम्हें ख़बर पहुंची है मुकदमा वालों की जबकि वे दीवार फांदकर इबादतख़ाने में दाख़िल हो गए। जब वे दाऊद के पास पहुंचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम दो फरीके मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज्यादती की है तो आप हमारे दर्मियान हक के साथ फैसला कीजिए, बेइंसाफी न कीजिए और हमें राहेरास्त (सन्मार्ग) बताइए। (21-22)

यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुंबी है। तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे। और उसने गुफ्तुगू में मुझे दबा लिया। दाऊद ने कहा, उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाकई तुम पर जुल्म किया है। और अक्सर शुरका (साझीदार) एक दूसरे पर ज्यादती किया करते हैं। मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद को ख़्याल आया कि हमने उसका इम्तेहान किया है, तो उसने अपने रब से माफी मांगी और सज्दे में गिर गया। और रुजूअ हुआ। फिर हमने उसे वह माफ कर दिया। और बेशक हमारे यहां उसके लिए तकर्रुब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम। (23-25)

ऐ दाऊद हमने तुम्हें जमीन में ख़लीफा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटका देगी। जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सख़्त अजाब है इस वजह से कि वे रोजे हिसाब को भूले रहे। (26)

और हमने जमीन और आसमान और जो इनके दर्मियान है अबस (व्यर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इंकार किया, तो जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए बर्बादी है आग से। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी

मानिंद कर देंगे जो जमीन में फसाद करने वाले हैं। या हम परहेजगारों को बदकारों जैसा कर देंगे। यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें। (27-29)

और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। जब शाम के वक्त उसके सामने तेज रफ्तार, उम्दा घोड़े पेश किए गए। तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहां तक कि छुप गया ओट में। उन्हें मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियां और गर्दनें। (30-33)

और हमने सुलैमान को आजमाया। और हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उसने रुजूअ किया। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सजावार (उपलब्ध) न हो। बेशक तू बड़ा देने वाला है। तो हमने हवा को उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया। वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। और जिन्नात को भी उसका ताबेअ कर दिया। हर तरह के कामगर और ग़ोताख़ोर। और दूसरे जो जंजीरों में जकड़े हुए रहते। यह हमारा अतिया (देन) है तो चाहे उसे दो या रोको, बेहिसाब। और उसके लिए हमारे यहां कुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम। (34-40)

और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे तकलीफ और अजाब में डाल दिया है। अपना पांव मारो। यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए। और हमने उसे उसका कुंबा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत के तौर पर और अक्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर। और अपने हाथ में सींकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो और कसम न तोड़ो। बेशक हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। (41-44)

और हमारे बंदो, इब्राहीम और इस्हाक और याक़ूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत (परलोक) की याददिहानी है। और वे हमारे यहां चुने हुए नेक लोगों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और जुलकिफ्ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे। (45-48)

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, हमेशा के बाग़ जिनके दरवाजे उनके लिए खुले होंगे। वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे। और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे। और उनके पास शर्मीली हमसिन (समान अवस्था वाली) बीवियां होंगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे रोजे हिसाब आने पर वादा किया जाता है। यह हमारा रिज़्क है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (49-54)

यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। जहन्नम, उसमें वे दाख़िल होंगे। पस क्या ही बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें। और इस किस्म की दूसरी और भी चीजें होंगी। यह एक फौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई ख़ुशआमदीद (स्वागत) नहीं। वे आग में पड़ने वाले हैं। वे कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई ख़ुशआमदीद नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, जो शख़्स इसे हमारे आगे लाया उसे तू दुगना अजाब दे, जहन्नम में। और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहां नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। क्या हमने उन्हें मजाक बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। बेशक यह बात सच्ची है, अहले दोजख़ का आपस में झगड़ना। (55-64)

कहो कि मैं तो सिर्फ एक डराने वाला हूं। और कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर अल्लाह, यकता (एक) और ग़ालिब (वर्चस्वशील)। वह रब है आसमानों और जमीन का और उन चीजों को जो इनके दर्मियान हैं, वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो। मुझे आलमे बाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे। मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूं। (65-70)

जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बशर (इंसान) बनाने वाला हूं। फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सज्दे मे गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने घमंड किया और वह इंकार करने वालों में से हो गया। फरमाया कि ऐ इब्लीस, किस चीज ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया। यह तूने तकब्बुर (घमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है। उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूं। तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से। फरमाया कि तू यहां से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद (धुत्कारा हुआ) है। और तुझ पर मेरी लानत है जजा के दिन तक। (71-78)

इब्लीस ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएंगे। फरमाया कि तुझे मोहलत दी गई, मुअय्यन (निश्चित) वक्त तक के लिए। उसने कहा कि तेरी इज्जत की कसम, मैं उन सबको गुमराह करके रहूंगा, सिवाए तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है। फरमाया, तो हक यह है और मैं हक ही कहता हूं कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूंगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे। (79-85)

कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मेहनताना) नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ (बनावट) करने वालों में से हूं। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। और तुम जल्द उसकी दी हुई ख़बर को जान लोगे। (86-88)

सूरह-39. अज़-ज़ुमर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यह किताब अल्लाह की तरफ से उतारी गई है जो जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ इसलिए करते हैं कि वे हमें ख़ुदा से करीब कर दें। बेशक अल्लाह उनके दर्मियान उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा, हक को न मानने वाला हो। (1-3)

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर रखा है। हर एक एक ठहरी हुई मुद्दत पर चलता है। सुन लो कि वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। (4-5)

अल्लाह ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ किस्में उतारीं। वह तुम्हें तुम्हारी मांओं के पेट में बनाता है, एक ख़िलकत (सृजनरूप) के बाद दूसरी ख़िलकत, तीन तारीकियों के अंदर। यही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहां से फेरे जाते हो। (6)

अगर तुम इंकार करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज (निस्पृह) है। और वह अपने बंदों के लिए इंकार को पसंद नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारे रब ही की तरफ तुम्हारी वापसी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की बात को जानने वाला है। (7)

और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह अपने रब को पुकारता है, उसकी तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर। फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे। कहो कि अपने कुफ़्र से थोड़े दिन फायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है। भला जो शख़्स रात की घड़ियों में सज्दा और कियाम की हालत में आजिजी (विनय) कर रहा हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत का उम्मीदवार हो, कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते

हैं। नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक्ल वाले हैं। (8-9)

कहो कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, अपने रब से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है। और अल्लाह की जमीन वसीअ (विस्तृत) है। बेशक सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा। (10)

कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं। कहो कि अगर मैं अपने रब की नाफरमानी (अवज्ञा) करूं तो मैं एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूं उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो। कहो कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को कियामत के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही खुला हुआ घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायबान होंगे और उनके नीचे से भी। यह चीज है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है। ऐ मेरे बंदो, पस मुझसे डरो। (11-16)

और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ रुजूअ हुए, उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है और यही हैं जो अक्ल वाले हैं। (17-18)

क्या जिस पर अजाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शख़्स को बचा सकते हो जो कि आग में है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता। (19-20)

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसे जमीन के चशमों (स्रोतों) में जारी कर दिया। फिर वह उससे मुख़्तलिफ किस्म की खेतियां निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उसे जर्द देखते हो। फिर वह उसे रेजा-रेजा कर देता है। बेशक इसमें नसीहत है अक्ल वालों के लिए। क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ से एक रोशनी पर है। तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए। ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (21-22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है। एक ऐसी किताब आपस में मिलती-जुलती, बार-बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं। फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है। और जिसे अल्लाह

गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

क्या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अजाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और जालिमों से कहा जाएगा कि चखो मजा उस कमाई का जो तुम करते थे। उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर अजाब वहां से आ गया जिधर उनका ख़्याल भी न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की जिंदगी में रुसवाई का मजा चखाया और आख़िरत का अजाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (24-26)

और हमने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें बयान की हैं ताकि वे नसीहत हासिल करें। यह अरबी कुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें। अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख़्स की जिसकी मिल्कियत में कई जिद्दी आका (स्वामी) शरीक हैं। और दूसरा शख़्स पूरा का पूरा एक ही आका का ग़ुलाम है। क्या इन दोनों का हाल यकसां (समान) होगा। सब तारीफ अल्लाह के लिए है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं। फिर तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुकदमा पेश करोगे। (27-31)

उस शख़्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आई। क्या ऐसे मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो शख़्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज उन्हें उनका सवाब दे। (32-35)

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफी नहीं। और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह जबरदस्त, इंतिकाम (प्रतिशोध) लेने वाला नहीं। (36-37)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और जमीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई महरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी महरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं। कहो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। कहो कि ऐ मेरी कौम, तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूं, तो तुम जल्द जान लोगे कि किस पर रुसवा करने वाला अजाब आता है और किस पर वह अजाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं। हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक के साथ उतारी है। पस जो शख़्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए

करेगा। और जो शख़्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं हो। (38-41)

अल्लाह ही वफात देता है जानों को उनकी मौत के वक्त, और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें सोने के वक्त। फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक्त मुकर्रर तक के लिए रिहा कर देता है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (42)

क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफारिशी बना रखा है। कहो, अगरचे वे न कुछ इख़्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहो, सिफारिश सारी की सारी अल्लाह के इख़्तियार में है। आसमानों और जमीन की बादशाही उसी की है। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। और जब अकेले अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उसके सिवा दूसरों का जिक्र होता है तो उस वक्त वे ख़ुश हो जाते हैं। कहो कि ऐ अल्लाह, आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाजिर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दर्मियान उस चीज का फैसला करेगा जिसमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं। और अगर जुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे क़ियामत के दिन सख़्त अजाब से बचने के लिए उसे फिदये (बदल) में दे दें। और अल्लाह की तरफ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उनके सामने आ जाएंगे उनके बुरे आमाल और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (43-48)

पस जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे इल्म की बिना पर दिया गया है। बल्कि यह आजमाइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया। पस उन पर वे बुराइयां आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो जालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नताइज जल्द आएंगे। वे हमें आजिज (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क कुशादा कर देता है। और वही तंग कर देता है। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं। (49-52)

कहो कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ कर देता है, वह बड़ा बख़्शने वाला महरबान है। और तुम अपने रब की तरफ रुजूअ करो और उसके फरमांबरदार बन जाओ। इससे पहले कि तुम पर अजाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए। (53-54)

और तुम पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले

इसके कि तुम पर अचानक अजाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। कहीं कोई शख़्स यह कहे कि अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैंने ख़ुदा की जनाब में की, और मैं तो मजाक उड़ाने वालों में शामिल रहा। या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता। या अजाब को देखकर कोई शख़्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं। हां तुम्हारे पास मेरी आयतें आईं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर (घमंड) किया और तू मुंकिरों में शामिल रहा। और तुम कियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग डरते रहे। अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचेगी और न वे ग़मगीन होंगे। (55-61)

अल्लाह हर चीज का ख़ालिक है और वही हर चीज पर निगहबान है। आसमानों और जमीन की कुंजियां उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही घाटे में रहने वाले हैं। कहो कि ऐ नादानो, क्या तुम मुझे ग़ैर अल्लाह की इबादत करने के लिए कहते हो। और तुमसे पहले वालों की तरफ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल जाया हो जाएगा। और तुम ख़सारे (घाटे) में रहोगे। बल्कि सिर्फ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो। (62-66)

और लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक है। और जमीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी कियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। और सूर फूंका जाएगा तो आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर जिसे अल्लाह चाहे। फिर दुबारा उसमें फूंका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे और जमीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी। और किताब रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाजिर किए जाएंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म न होगा। और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा। और वह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं। (67-70)

और जिन लोगों ने इंकार किया वे गिरोह-गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे। यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंचेंगे उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से डराते थे। वे कहेंगे कि हां, लेकिन अजाब का वादा मुंकिरों पर पूरा होकर रहा। कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकब्बुर (घमंड) करने वालों का। (71-72)

और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ ले जाए जाएंगे। यहां तक कि जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, ख़ुशहाल रहो, पस इसमें दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस जमीन का वारिस बना दिया। हम जन्नत में जहां चाहें रहें। पस क्या ख़ूब बदला है अमल करने वालों का। और तुम फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलका बनाए हुए अपने रब की हम्द व तस्बीह करते होंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का ख़ुदावंद। (73-75)

सूरह-40. अल-मोमिन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ से जो जबरदस्त है, जानने वाला है। माफ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सजा देने वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी की तरफ लौटना है। (1-3)

अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुंकिर हैं। तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। उनसे पहले नूह की कौम ने झुठलाया। और उनके बाद के गिरोह ने भी। और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक के झगड़े निकाले ताकि उससे हक को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी थी मेरी सजा। और इसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इंकार किया कि वे आग वाले हैं। (4-6)

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ। और वे उस पर ईमान रखते हैं। और वे ईमान वालों के लिए मग़्फिरत (क्षमा) की दुआ करते हैं। ऐ हमारे रब तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज का इहाता किए हुए है। पस तू माफ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब, और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा ले। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर तूने रहम किया। और यही बड़ी कामयाबी है। (7-9)

जिन लोगों ने इंकार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, ख़ुदा की बेजारी (खिन्नता) तुमसे इससे ज्यादा है जितनी बेजारी तुम्हें अपने आप पर है। जब तुम्हें ईमान की तरफ

बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें जिंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इकरार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है। यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते। पस फैसला अल्लाह के इख़्तियार में है जो अजीम है, बड़े मर्तबे वाला है। (10-12)

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज्क उतारता है। और नसीहत सिर्फ वही शख़्स क़ुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वाला हो। पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, चाहे मुंकिरों को नागवार क्यों न हो। वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श का मालिक है। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है ताकि वह मुलाकात के दिन से डराए। जिस दिन कि वे जाहिर होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज छुपी हुई न होगी। आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद कह्हार (वर्चस्वशाली) की। आज हर शख़्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई जुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (13-17)

और उन्हें करीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ जबकि दिल हलक तक आ पहुंचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे। जालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारिशी जिसकी बात मानी जाए। वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं। और अल्लाह हक के साथ फैसला करेगा। और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज का फैसला नहीं करते। बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है। (18-20)

क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुजर चुके हैं। वे इनसे बहुत ज्यादा थे कुव्वत में और उन आसार के एतबार से भी जो उन्होंने जमीन में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था। यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने इंकार किया। तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यकीनन वह ताकतवर है सख़्त सजा देने वाला है। (21-22)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ, फिरऔन और हामान और कारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। फिर जब वह हमारी तरफ से हक लेकर उनके पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को कत्ल कर डालो जो इसके साथ ईमान लाएं और उनकी औरतों को जिंदा रखो। और उन मुंकिरों की तदबीर महज बेअसर रही। (23-25)

और फिरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को कत्ल कर डालूं और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अंदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फसाद फैला

दे। और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (घमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। (26-27)

और आले फिरऔन में से एक मोमिन शख़्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ इस बात पर कत्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालांकि वह तुम्हारे रब की तरफ से खुली दलीलें भी लेकर आया है। और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुंच कर रहेगा। जिसका वादा वह तुमसे करता है। बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुजरने वाला हो, झूठा हो। ऐ मेरी कौम, आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम जमीन में ग़ालिब हो। फिर अल्लाह के अजाब के मुक़ाबिल हमारी कौन मदद करेगा, अगर वह हम पर आ गया। फिरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूं जिसे मैं समझ रहा हूं, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ कर रहा हूं। (28-29)

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूं कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए, जैसा दिन कौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बंदों पर कोई जुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूं कि तुम पर चीख़ पुकार का दिन आ जाए, जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे। और तुम्हें ख़ुदा से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे ख़ुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (30-33)

और इससे पहले यूसुफ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ से शक ही में पड़े रहे। यहां तक कि जब उनकी वफात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुजरने वाले और शक करने वाले होते हैं। जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो। अल्लाह और ईमान वालों के नजदीक यह सख़्त मबग़ूज (अप्रिय) है। इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मग़रूर (अभिमानी), सरकश के दिल पर। (34-35)

और फिरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं रास्तों पर पहुंचूं, आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूं, और मैं तो उसे झूठा ख़्याल करता हूं। और इस तरह फिरऔन के लिए उसकी बदअमली ख़ुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया। और फिरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही। (36-37)

और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूं। ऐ मेरी कौम, यह दुनिया की जिंदगी महज चन्द रोजा है और अस्ल ठहरने का मकाम आख़िरत (परलोक) है। जो शख़्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला

पाएगा। और जो शख़्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहां वे बेहिसाब रिज़्क पाएंगे। और ऐ मेरी कौम, क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ बुलाता हूं और तुम मुझे आग की तरफ बुला रहे हो। तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं ख़ुदा के साथ कुफ्र करूं और ऐसी चीज को उसका शरीक बनाऊं जिसका मुझे कोई इल्म नहीं। और मैं तुम्हें जबरदस्त मग़्फिरत (क्षमा) करने वाले ख़ुदा की तरफ बुला रहा हूं। यकीनी बात है कि तुम जिस चीज की तरफ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज न दुनिया में है और न आख़िरत में। और बेशक हम सबकी वापसी अल्लाह ही की तरफ है और हद से गुजरने वाले ही आग में जाने वाले हैं। पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगरां (निगाह रखने वाला) है। (38-44)

फिर अल्लाह ने उसे उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया। और फिरऔन वालों को बुरे अजाब ने घेर लिया। आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत कायम होगी, फ़िरऔन वालों को सख़्ततरीन अजाब में दाख़िल करो। (45-46)

और जब वे दोजख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो। बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं। अल्लाह ने बंदों के दर्मियान फैसला कर दिया। और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने रब से दरख़्वास्त करो कि हमारे अजाब में से एक दिन की तख़्फ़ीफ (कमी) कर दे। वे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाजेह दलीलें लेकर नहीं आए। वे कहेंगे कि हां। निगहबान कहेंगे फिर तुम ही दरख़्वास्त करो। और मुंकिरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है। (47-50)

बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की जिंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे, जिस दिन जालिमों को उनकी मअजरत (सफाई पेश करना) कुछ फायदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत अक्ल वालों के लिए। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है और अपने कुसूर की माफी चाहो। और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ। (51-55)

जो लोग किसी सनद के बग़ैर जो उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं। पस तुम अल्लाह की पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है। (56)

यकीनन आसमानों और जमीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्बत ज्यादा

बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और अंधा और आंखों वाला यकसां (समान) नहीं हो सकता, और न ईमानदार और नेकोकार (सत्कर्मी) और वे जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम सोचते हो। बेशक कियामत आकर रहेगी। इसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (57-59)

और तुम्हारे रब ने फरमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से सरताबी (विमुखता) करते हैं वे अनकरीब जलील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को रोशन किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज्ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। फिर तुम कहां से बहकाए जाते हो। इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (60-63)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक्शा बनाया पस उम्दा नक्शा बनाया। और उसने तुम्हें उम्दा चीजों का रिज्क दिया। यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। वही जिंदा है उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम उसी को पुकारो। दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (64-65)

कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रब्बुल आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फा (वीर्य) से, फिर ख़ून के लौथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है ताकि तुम अपनी पूरी ताकत को पहुंचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम मुकर्रर वक्त तक पहुंच जाओ और ताकि तुम सोचो। वही है जो जिलाता है और मारता है। पस जब वह किसी काम का फैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है। (66-68)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वे कहां से फेरे जाते हैं। जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा। तो अनकरीब वे जानेंगे, जबकि उनकी गर्दनों में तौक होंगे। और जंजीरें, वे घसीटे जाएंगे जलते हुए पानी में। फिर वे आग में झोंक दिए जाएंगे। फिर उनसे कहा जाएगा, कहां हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे अल्लाह के सिवा। वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए बल्कि हम इससे पहले किसी चीज को पुकारते न थे। इस तरह अल्लाह गुमराह करता

www.Momeen.blogspot.com

है मुंकिरों को। यह इस सबब से कि तुम जमीन में नाहक ख़ुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे। जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का। (69-76)

पस सब्र करो बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे। या तुम्हें वफात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ है। (77)

और हमने तुमसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए। और किसी रसूल को यह मकदूर (सामर्थ्य) न था कि वह अल्लाह की मर्जी के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक के मुताबिक फैसला कर दिया गया। और ग़लतकार लोग उस वक्त ख़सारे (घाटे) में रह गए। (78)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उनमें और भी फायदे हैं। और ताकि तुम उनके जरिए से अपनी जरूरत तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और कश्ती पर तुम सवार किए जाते हो और वह तुम्हें और भी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इंकार करोगे। (79-81)

क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुजरे हैं। वे इनसे ज्यादा थे, और कुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो कि वे जमीन पर छोड़ गए, बढ़े हुए थे। पस उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। पस जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर नाजां (गौरवांवित) रहे जो उनके पास था, और उन पर वह अजाब आ पड़ा जिसका वे मजाक उड़ाते थे। फिर जब उन्होंने हमारा अजाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद (एकेश्वर) पर ईमान लाए और हम इंकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे। पस उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अजाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक्त इंकार करने वाले ख़सारे (घाटे) में रह गए। (82-85)

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह बड़े महरबान, निहायत रहम वाले की तरफ से उतारा हुआ कलाम है। यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं, अरबी जबान का कुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। पस

उन लोगों में से अक्सर ने इससे मुंह मोड़ा। पस वे नहीं सुन रहे हैं। और उन्होंने कहा हमारे दिल उससे पर्दे में हैं जिसकी तरफ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एक हिजाब (ओट) है। पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं। (1-5)

कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूं तुम जैसा। मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसी की तरफ और उससे माफी चाहो। और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए, जो जकात नहीं देते और वे आख़िरत के मुंकिर हैं। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौक़ूफ़ (बाधित) होने वाला नहीं। (6-8)

कहो क्या तुम लोग उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने जमीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो। वह रब है तमाम जहान वालों का। और उसने जमीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए। और उसमें फायदे की चीजें रख दीं। और उसमें उसकी ग़िजाएं ठहरा दीं चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। फिर वह आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ, और वह धुवां था। फिर उसने आसमान और जमीन से कहा कि तुम दोनों आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से। दोनों ने कहा कि हम ख़ुशी से हाजिर हैं। फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया। और हमने आसमाने दुनिया को चराग़ों से जीनत (साज-सज्जा) दी, और उसे महफ़ूज कर दिया। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (सर्वज्ञ) की मंसूबाबंदी है। (9-12)

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अजाब से डराता हूं जैसा अजाब आद व समूद पर नाजिल हुआ। जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो। उन्होंने कहा कि अगर हमारा रब चाहता तो वह फरिश्ते उतारता, पस हम उस चीज के मुंकिर हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो। (13-14)

आद का यह हाल था कि उन्होंने जमीन में बग़ैर किसी हक के घमंड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो कुव्वत (शक्ति) में हमसे ज्यादा है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने उन्हें पैदा किया है वह कुव्वत में उनसे ज्यादा है और वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। तो हमने चन्द मनहूस दिनों में उन पर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दी ताकि उन्हें दुनिया की जिंदगी में रुसवाई का अजाब चखाएं, और आख़िरत का अजाब इससे भी ज्यादा रुसवाकुन है और उन्हें कोई मदद न पहुंचेगी। और वे जो समूद थे, तो हमने उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाया मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले में अंधेपन को पसंद किया, तो उन्हें अजाबे जिल्लत के कड़के ने पकड़ लिया उनकी बदकिरदारियों की वजह से। और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और डरने वाले थे। (15-18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ जमा किए जाएंगे, फिर वे जुदा-जुदा किए जाएंगे, यहां तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे, उनके कान और उनकी आंखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाल की गवाही देंगी। और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे ख़िलाफ क्यों गवाही दी। वे कहेंगी कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की ताकत) दी है जिसने हर चीज को गोया कर दिया है। और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो। और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो। और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने रब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए। पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफी मांगें तो उन्हें माफी नहीं मिलेगी। (19-24)

और हमने उन पर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज उन्हें ख़ुशनुमा बनाकर दिखाई। और उन पर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुजर चुके थे। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे। (25)

और कुफ्र करने वालों ने कहा कि इस कुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो। पस हम इंकार करने वालों को सख़्त अजाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे। यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग। उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (26-28)

और कुफ्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया, हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे ताकि वे जलील हों। जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितकदम रहे, यकीनन उन पर फरिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की बशारत (शुभ सूचना) से ख़ुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है। हम दुनिया की जिंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत में भी। और तुम्हारे लिए वहां हर चीज है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज है जो तुम तलब करोगे, ग़फूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) की तरफ से मेहमानी के तौर पर। (29-32)

और उससे बेहतर किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं फरमांबरदारों में से हूं। और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त कराबत (घनिष्टता) वाला। और यह बात उसी को मिलती

है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है। और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (33-36)

और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चांद। तुम सूरज और चांद को सज्दा न करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने इन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो। पस अगर वे तकब्बुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं वे शब व रोज उसी की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते। (37-38)

और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम जमीन को फरसूदा (मृत) हालत में देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। बेशक जिसने उसे जिंदा कर दिया वह मुर्दों को भी जिंदा कर देने वाला है। बेशक वह हर चीज पर कादिर है। जो लोग हमारी आयतों को उल्टे मअना पहनाते हैं वे हमसे छुपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख़्स जो कियामत के दिन अम्न के साथ आएगा। जो कुछ चाहे कर लो, बेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो। (39-40)

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इंकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और बेशक यह एक जबरदस्त किताब है। इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह हकीम (तत्वदर्शी) व हमीद (प्रशंस्य) की तरफ से उतारी गई है। तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले रसूलों को कही गई हैं। बेशक तुम्हारा रब मग्फ़िरत वाला (क्षमाशील) है और दर्दनाक सजा देने वाला भी। (41-43)

और अगर हम इसे अजमी (ग़ैर-अरबी) कुरआन बनाते तो वे कहते कि इसकी आयतें साफ-साफ क्यों नहीं बयान की गईं। क्या अजमी किताब और अरबी लोग। कहो कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफा (निदान) है, और लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक में अंधापन है। ये लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं। (44)

और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें इख़्तेलाफ पैदा किया गया। और अगर तेरे रब की तरफ से एक बात पहले तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और ये लोग उसकी तरफ से ऐसे शक में हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल रखा है। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो शख़्स बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा। और तेरा रब बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (45-46)

कियामत का इल्म अल्लाह ही से मुतअल्लिक है। और कोई फल अपने ख़ोल से नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला (गर्भवती) होती और न जनती है मगर यह सब उसकी इत्तिला से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा कि मेरे शरीक कहां हैं, वे कहेंगे

कि हम आपसे यही अर्ज करते हैं कि हम में कोई इसका दावेदार नहीं। और जिन्हें वे पहले पुकारते थे वे सब उनसे गुम हो जाएंगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं। (47-48)

और इंसान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई तकलीफ पहुंच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता हो जाता है। और अगर हम उसे तकलीफ के बाद जो कि उसे पहुंची थी, अपनी महरबानी का मजा चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा हक ही है, और मैं नहीं समझता कि कियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतरी ही है। पस हम उन मुंकिरों को उनके आमाल से जरूर आगाह करेंगे। और उन्हें सख़्त अजाब का मजा चखाएंगे। (49-50)

और जब हम इंसान पर फ़ज़्ल करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और अपनी करवट फेर लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह लम्बी-लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है। कहो कि बताओ, अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ से आया हो, फिर तुमने इसका इंकार किया तो उस शख़्स से ज्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुख़ालिफ़त (विरोध) में बहुत दूर चला जाए। (51-52)

हम उन्हें अपनी निशानियां दिखाएंगे आफ़ाक (वाह्य क्षेत्रों) में भी और ख़ुद उनके अंदर भी। यहां तक कि उन पर जाहिर हो जाएगा कि यह क़ुरआन हक है। और क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तेरा रब हर चीज का गवाह है। सुन लो, ये लोग अपने रब की मुलाकात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (53-54)

सूरह-42. अश-शूरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। अइन० सीन० काफ०। इसी तरह अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) व हकीम (तत्वदर्शी) 'वही' (प्रकाशना) करता है तुम्हारी तरफ और उनकी तरफ जो तुमसे पहले गुजरे हैं। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा। करीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फरिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और जमीन वालों के लिए माफी मांगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही माफ करने वाला, रहमत करने वाला है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं। (1-6)

और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ अरबी क़ुरआन उतारा है ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डरा दो और उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में। (7)

और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता। लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और जालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं। क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज है और वही मुर्दों को जिंदा करता है और वह हर चीज पर क़ादिर है। और जिस किसी बात में तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) करते हो उसका फैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूं। (8-10)

वह आसमानों का और जमीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए। उसके जरिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है। कोई चीज उसके मिस्ल (सदृश) नहीं और वह सुनने वाला, देखने वाला है। उसी के इख़्तियार में आसमानों और जमीन की कुंजियां हैं। वह जिसके लिए चाहता है ज्यादा रोजी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है। बेशक वह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (11-12)

अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुकर्रर किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' (प्रकाशना) हमने तुम्हारी तरफ की है और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को कायम रखो और उसमें इख़्तेलाफ (मत-भिन्नता, बिखराव) न डालो। मुश्रिकीन पर वह बात बहुत गिरां (भार) है जिसकी तरफ तुम उन्हें बुला रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ चुन लेता है। और वह अपनी तरफ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह होते हैं। (13)

और जो लोग मुतफ़र्रिक (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ आपस की जिद की वजह से। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक वक्त मुअय्यन (निर्धारित) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वे उसकी तरफ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है। (14)

पस तुम उसी की तरफ बुलाओ और उस पर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं। और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दर्मियान इंसाफ करूं। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी। हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है। और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, बाद इसके कि वह मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नजदीक बातिल (झूठ) है और उन पर ग़जब है और उनके लिए सख़्त अजाब है। (15-16)

अल्लाह ही है जिसने हक के साथ किताब उतारी और तराज़ू भी। और तुम्हें क्या ख़बर

शायद वह घड़ी करीब हो। जो लोग उसका यकीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग यकीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। (17-18)

अल्लाह अपने बंदों पर महरबान है। वह जिसे चाहता है रोजी देता है। और वह क़ुव्वत वाला, जबरदस्त है। जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक्की देंगे। और जो शख़्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (19-20)

क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाजत नहीं दी। और अगर फ़ैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फ़ैसला कर दिया जाता। और बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। तुम जालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर जरूर पड़ने वाला है। और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नत के बाग़ों में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है। यह चीज है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर कराबतदारी की मुहब्बत। और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए इसमें भलाई बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, क़द्रदां है। (21-23)

क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और हक (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से। बेशक वह दिलों की बातें जानता है। और वही है जो अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और बुराइयों को माफ करता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआएं क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। और वह उन्हें अपने फ़ज्ल से ज्यादा दे देता है। और जो इंकार करने वाले हैं उनके लिए सख़्त अजाब है। (24-26)

और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोजी को खोल देता तो वे जमीन में फ़साद करते। लेकिन वह अंदाजे के साथ उतारता है जितना चाहता है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है। और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, काबिले तारीफ है। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और जमीन का पैदा करना। और वे जानदार जो उसने इनके दर्मियान फैलाए हैं। और वह उन्हें जमा करने पर कादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे। (27-29)

और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से, और बहुत से क़ुसूरों को वह माफ कर देता है। और तुम जमीन में ख़ुदा के क़ाबू से निकल नहीं

सकते। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार। (30-31)

और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज समुद्र में चलते हैं जैसे पहाड़। अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुद्र की सतह पर ठहरे रह जाएं। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है। या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ कर दे बहुत से लोगों को। और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं। (32-35)

पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज दुनियावी जिंदगी के बरतने के लिए है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं। (36)

और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें ग़ुस्सा आता है तो वे माफ कर देते हैं और वे जिन्होंने अपने रब की दावत (आह्वान) को क़ुबूल किया और नमाज कायम की और वे अपना काम आपस के मश्विरे से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। और वे लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं। और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने माफ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह के जिम्मे है। बेशक वह जालिमों को पसंद नहीं करता। और जो शख़्स अपने मजलूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्जाम नहीं। इल्जाम सिर्फ उन पर है जो लोगों के ऊपर जुल्म करते हैं और जमीन में नाहक सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अजाब है। और जिस शख़्स ने सब्र किया और माफ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (37-43)

और जिस शख़्स को अल्लाह भटका दे तो इसके बाद उसका कोई कारसाज (संरक्षक) नहीं। और तुम जालिमों को देखोगे कि जब वे अजाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है। और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोजख़ के सामने लाए जाएंगे, वे जिल्लत से झुके हुए होंगे। छुपी निगाह से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि ख़सारे (घाटे) वाले वही लोग हैं जिन्होंने कियामत के दिन अपने आपको और अपने मुताल्लिकीन (संबंधियों) को ख़सारे में डाल दिया। सुन लो, जालिम लोग दाइमी (स्थाई) अजाब में रहेंगे। और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के मुकाबले में उनकी मदद करें। और ख़ुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं। (44-46)

तुम अपने रब की दावत (आह्वान) क़ुबूल करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए ख़ुदा की तरफ से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज को रद्द कर सकोगे। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके

ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा जिम्मा सिर्फ पहुंचा देना है। और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाजते हैं तो वह उस पर ख़ुश हो जाता है। और अगर उनके आमाल के बदले में उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुक्री करने लगता है। (47-48)

आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है। वह जिसे चाहता है बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियां भी। और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह जानने वाला है, कुदरत वाला है। (49-50)

और किसी आदमी की यह ताकत नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (प्रकाशना) के जरिए से या पर्दे के पीछे से या वह किसी फरिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज्न (आज्ञा) से जो वह चाहे। बेशक वह सबसे ऊपर है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। लेकिन हमने उसे एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहे हो। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और जमीन में है। सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटने वाले हैं। (51-53)

सूरह-43. अज़्ज़ुख़रुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। कसम है इस वाजेह किताब की। हमने इसे अरबी जबान का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। और बेशक यह अस्ल किताब में हमारे पास है, बुलन्द और पुरहिक्मत (तत्वदर्शितापूर्ण)। (1-4)

क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नजर फेर लेंगे कि तुम हद से गुजरने वाले हो और हमने अगले लोगों में कितने ही नबी भेजे। और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने मजाक न उड़ाया हो। फिर जो लोग उनसे ज्यादा ताकतवर थे उन्हें हमने हलाक कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें गुजर चुकीं। (5-8)

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया तो वे जरूर कहेंगे कि उन्हें जबरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया। जिसने तुम्हारे लिए जमीन को फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और जिसने आसमान से पानी उतारा एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उससे मुर्दा जमीन को जिंदा कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और जिसने तमाम किस्में बनाईं और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो। फिर तुम

अपने रब की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीजों को हमारे वश में कर दिया, और हम ऐसे न थे कि उन्हें काबू में करते। और बेशक हम अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। (9-14)

और उन लोगों ने ख़ुदा के बंदों में से ख़ुदा का जुज (अंश) ठहराया, बेशक इंसान खुला नाशुक्रा है। क्या ख़ुदा ने अपनी मख़्लूकात में से बेटियां पसंद कीं और तुम्हें बेटों से नवाजा। और जब उनमें से किसी को उस चीज की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है। क्या वह जो आराइश (आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके। और फरिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत करार दे रखा है। क्या वे उनकी पैदाइश के वक्त मौजूद थे। उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी। (15-19)

और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं। वे महज बेतहकीक बात कह रहे हैं। क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मजबूत पकड़ रखा है। बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। और इसी तरह हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई नजीर (डराने वाला) भेजा तो उसके ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। नजीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊं जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। तो हमने उनसे इंतिकाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। (20-25)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि मैं उन चीजों से बरी हूं जिसकी तुम इबादत करते हो। मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा और इब्राहीम यही कलिमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहां तक कि उनके पास हक (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला। और जब उनके पास हक आ गया उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुंकिर हैं। (26-30)

और उन्होंने कहा कि यह कुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। क्या ये लोग तेरे रब की रहमत को तक्सीम करते हैं। दुनिया की जिंदगी में उनकी रोजी को तो हमने तक्सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फौकियत (उच्चता) दी है ताकि वे एक दूसरे से काम लें। और तेरे रब की रहमत इससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं। और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीके के हो जाएंगे तो जो लोग रहमान का इंकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और जीने भी जिन पर वे चढ़ते हैं। और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर वे तकिया

लगाकर बैठते हैं। और सोने के भी, और ये चीजें तो सिर्फ दुनिया की जिंदगी का सामान हैं और आख़िरत तेरे रब के पास मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) के लिए है। (31-35)

और जो शख़्स रहमान की नसीहत से एराज (उपेक्षा) करता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है और वे उन्हें राहे हक (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं। और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं। यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दर्मियान मश्रिक और मग़्रिब की दूरी होती। पस क्या ही बुरा साथी था। और जबकि तुम जुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फ़ायदा नहीं देगी कि तुम अजाब में एक दूसरे के शरीक हो। (36-39)

पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं। पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज जिसका हमने उनसे वादा किया है। पस हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। पस तुम उसे मजबूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। बेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो। और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए नसीहत है। और अनकरीब तुमसे पूछ होगी। और जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए। (40-45)

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं ख़ुदावंद आलम का रसूल हूं। पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उस पर हंसने लगे। और हम उन्हें जो निशानियां दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा ताकि वे रुजूअ करें। और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने रब से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम जरूर राह पर आ जाएंगे। फिर जब हमने वह अजाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया। (46-50)

और फिरऔन ने अपनी कौम के दर्मियान पुकार कर कहा कि ऐ मेरी कौम क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। बल्कि मैं बेहतर हूं उस शख़्स से जो कि हकीर (तुच्छ) है। और साफ बोल नहीं सकता। फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फरिश्ते उसके साथ परा बांध कर (पार्श्ववर्ती होकर) आते। पस उसने अपनी कौम को बेअक्ल कर दिया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। ये नाफरमान किस्म के लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। फिर हमनें उन्हें माजी (अतीत) की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए एक नमूनए इबरत (सीख)। (51-56)

और जब इब्ने मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी कौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह। यह मिसाल वे तुमसे सिर्फ झगड़ने

के लिए बयान करते हैं। बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं। ईसा तो बस हमारा एक बंदा था जिस पर हमने फज्ल फरमाया और उसे बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बना दिया। और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फरिश्ते बना दें जो जमीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों। और बेशक ईसा कियामत का एक निशान हैं, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो। यही सीधा रास्ता है। और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (57-62)

और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (तत्वदर्शिता) लेकर आया हूं और ताकि मैं तुम पर वाजेह कर दूं कुछ बातें जिनमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। तो तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तेलाफ किया। पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने जुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अजाब से। (63-65)

ये लोग बस कियामत का इंतिजार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो। तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए डरने वालों के। ऐ मेरे बंदो आज तुम पर न कोई ख़ौफ है और न तुम ग़मगीन होगे। जो लोग ईमान लाए और फरमांबरदार रहे। जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद (हर्षित) किए जाओगे। उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएंगे। और वहां वे चीजें होंगी जिन्हें जी चाहेगा और जिनसे आंखों को लज्जत होगी। और तुम यहां हमेशा रहोगे। और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए इसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे। (66-73)

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोजख़ के अजाब में रहेंगे। वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही जालिम थे। और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा ख़ात्मा ही कर दे। फरिश्ता कहेगा तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है। हम तुम्हारे पास हक (सत्य) लेकर आए मगर तुम में से अक्सर हक से बेजार रहे। क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे। क्या उनका गुमान है कि हम उनके राजों को और उनके मश्विरों को नहीं सुन रहे हैं। हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं। (74-80)

कहो कि अगर रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूं। आसमानों और जमीन का ख़ुदावंद, अर्श का मालिक। वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और खेलें यहां तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (81-83)

और वही है जो आसमान में ख़ुदावंद है और वही जमीन में ख़ुदावंद है और वह हिक्मत

(तत्वदर्शिता) वाला, इल्म वाला है। और बड़ी बाबरकत है वह जात जिसकी बादशाही आसमानों और जमीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है। और उसी के पास कियामत की ख़बर है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (84-85)

और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफारिश का इख़्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक की गवाही देंगे और वे जानते होंगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां भटक जाते हैं। और उसे रसूल के इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। पस उनसे दरगुजर करो (रुख़ फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनकरीब उन्हें मालूम हो जाएगा। (86-89)

सूरह-44. अद-दुख़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। कसम है इस वाजेह (सुस्पष्ट) किताब की। हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे। इस रात में हर हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला मामला तै किया जाता है, हमारे हुक्म से। बेशक हम थे भेजने वाले। तेरे रब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वही जिंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब। (1-8)

बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं। पस इंतिजार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुवें के साथ जाहिर होगा। वह लोगों को घेर लेगा। यह एक दर्दनाक अजाब है। ऐ हमारे रब, हम पर से अजाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं। उनके लिए नसीहत कहां, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला। फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है। हम कुछ वक्त के लिए अजाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे। (9-16)

और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की कौम को आजमाया। और उनके पास एक मुअज्जज (सम्मानीय) रसूल आया कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। और यह कि अल्लाह के मुकाबले में सरकशी न करो। मैं तुम्हारे सामने एक वाजेह दलील पेश करता हूं। और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो। (18-21)

पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं। तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है। उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) और खेतियां और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिनमें वे ख़ुश रहते थे सब छोड़ दिए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरी कौम को उनका मालिक बना दिया। पस न उन पर आसमान रोया और न जमीन, और न उन्हें मोहलत दी गई। (22-29)

और हमने बनी इस्राईल को जिल्लत वाले अजाब से नजात दी। यानी फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था। और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी। और हमने उन्हें ऐसी निशानियां दीं जिनमें खुला हुआ इनाम था। (30-33)

ये लोग कहते हैं, बस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे। अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को। क्या ये बेहतर हैं या तुब्बअ की कौम और जो उनसे पहले थे। हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफरमान थे। (34-37)

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। इन्हें हमने हक के साथ बनाया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते। बेशक फैसले का दिन उन सबका तैशुदा वक्त है। जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। हां मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फरमाए। बेशक वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (38-42)

जक्कूम का दरख़्त गुनाहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा जिस तरह गर्म पानी खौलता है। उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ। फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अजाब उंडेल दो। चख इसे, तू बड़ा मुअज्जज, मुकर्रम है। यह वही चीज है जिसमें तुम शक करते थे। (43-50)

बेशक ख़ुदा से डरने वाले अम्न की जगह में होंगे, बाग़ों और चशमों (स्रोतों) में। बारीक रेशम और दबीज रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। यह बात इसी तरह है, और हम उनसे ब्याह देंगे हूरें बड़ी-बड़ी आंखों वाली। वे उसमें तलब करेंगे हर किस्म के मेवे निहायत इत्मीनान से। वे वहां मौत को न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा लिया। यह तेरे रब के फज्ल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी। (51-57)

पस हमने इस किताब को तुम्हारी जबान में आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें। पस तुम भी इंतिजार करो, वे भी इंतिजार कर रहे हैं। (58-59)

सूरह-45. अल-जासियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है। अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से। बेशक आसमानों और जमीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिए। और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने जमीन में फैला रखे हैं, निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं और रात और दिन के आने जाने में और उस रिज़्क में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे जमीन को जिंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद, और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम हक के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वे ईमान लाएंगे। (1-6)

ख़राबी है हर शख़्स के लिए जो झूठा हो। जो ख़ुदा की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकब्बुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं। पस तुम उसे एक दर्दनाक अजाब की ख़ुशख़बरी दे दो। और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज की ख़बर पाता है तो वह उसे मजाक बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए जिल्लत का अजाब है। उनके आगे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम अपने वाला नहीं। और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज बनाया। और उनके लिए बड़ा अजाब है। यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अजाब है। (7-11)

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फज्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। और उसने आसमानों और जमीन की तमाम चीजों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ से। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (12-13)

ईमान वालों से कहो कि उन लोगों से दरगुजर करें जो ख़ुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक कौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो शख़्स नेक अमल करेगा तो उसका फायदा उसी के लिए है। और जिस शख़्स ने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा। फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। (14-15)

और हमने बनी इस्राईल को किताब और हुक्म और नुबुव्वत दी और उन्हें पाकीजा रिज़्क अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) बख़्शी। और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की जिद की वजह से। बेशक तेरा रब कियामत

के दिन उनके दर्मियान फ़ैसला कर देगा उन चीजों के बारे में जिनमें वे आपस में इख़्तेलाफ (मतभेद) करते थे। फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाज़ेह (स्पष्ट) तरीके पर कायम किया। पस तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और जालिम लोग एक दूसर के साथी हैं, और डरने वालों का साथी अल्लाह है। ये लोगों को लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यकीन करें। (16-20)

क्या वे लोग जिन्होंने बुरे कार्य किए हैं यह ख़्याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना यकसां (समान) हो जाए। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। और अल्लाह ने आसमानों और जमीन को हिक्मत (तत्वदर्शिता) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उन पर कोई जुल्म न होगा। (21-22)

क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया। पस ऐसे शख़्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (23)

और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की जिंदगी के सिवा कोई और जिंदगी नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ जमाने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है। और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं। वे महज गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप दादा को जिंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो। कहो कि अल्लाह ही तुम्हें जिंदा करता है फिर वह तुम्हें मारता है फिर वह कियामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिर अक्सर लोग नहीं जानते। (24-26)

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और जमीन में और जिस दिन कियामत कायम होगी उस दिन अहले बातिल (असत्यवादी) ख़सारे (घाटे) में पड़ जाएंगे। और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर गिरोह अपने नामए आमाल (कर्म-पत्र) की तरफ बुलाया जाएगा। आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे। (27-29)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने इंकार किया, क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं। पस तुमने तकब्बुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे।

और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक है और कियामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि कियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम इस पर यकीन करने वाले नहीं। (30-32)

और उन पर उनके आमाल की बुराइयां खुल जाएंगी और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाया। और दुनिया की जिंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा। पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज्र कुबूल किया जाएगा। (33-35)

पस सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है आसमानों का और रब है जमीन का, रब है तमाम आलम का। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और जमीन में। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (36-37)

सूरह-46. अल-अहकाफ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हा० मीम०। यह किताब अल्लाह जबरदस्त हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से उतारी गई है। हमने आसमानों और जमीन को और उनके दर्मियान की चीजों को नहीं पैदा किया मगर हक के साथ और मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत के लिए। और जो लोग मुंकिर हैं वे उससे बेरुख़ी करते हैं जिससे उन्हें डराया गया है। (1-3)

कहो कि तुमने ग़ौर भी किया उन चीजों पर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में क्या बनाया है। या उनका आसमान में कुछ साझा है। मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो। और उस शख़्स से ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो कियामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उन्हें उनके पुकारने की भी ख़बर नहीं। और जब लोग इकट्ठा किए जाएंगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुंकिर बन जाएंगे। (4-6)

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुंकिर लोग इस हक की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुंचता है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ये लोग कहते हैं कि उसने इसे अपनी तरफ से बना लिया है, कहो कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ से बनाया है तो तुम लोग मुझे जरा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है। वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। और वह बख़्शने वाला, रहमत वाला है। (7-8)

कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूं। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया

जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो सिर्फ उसी का इत्तिबाअ (अनुसरण) करता हूं जो मेरी तरफ 'वही' (प्रकाशना) के जरिए आता है और मैं तो सिर्फ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूं। कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह कुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है। पस वह ईमान लाया और तुमने तकब्बुर (घमंड) किया। बेशक अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। (9-10)

और इंकार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज होती तो वे इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूंकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है। (11)

और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत। और यह एक किताब है जो उसे सच्चा करती है, अरबी जबान में, ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने जुल्म किया। और वह ख़ुशख़बरी है नेक लोगों को लिए। बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे। (12-14)

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने मां-बाप के साथ भलाई करे। उसकी मां ने तकलीफ के साथ उसे पेट में रखा। और तकलीफ के साथ उसे जना। और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ। यहां तक कि जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुंचा और चालीस वर्ष को पहुंच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब, मुझे तौफीक दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर किया और मेरे मां-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिससे तू राजी हो। और मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे। मैंने तेरी तरफ रुजूअ किया और मैं फरमांबरदारों में से हूं। ये लोग हैं जिनके अच्छे आमाल को हम कुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुजर करेंगे, वे अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था। (15-16)

और जिसने अपने मां-बाप से कहा कि मैं बेजार हूं तुमसे। क्या तुम मुझे यह ख़ौफ दिलाते हो कि मैं कब्र से निकाला जाऊंगा, हालांकि मुझ से पहले बहुत सी कौमें गुजर चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फरयाद करते हैं कि अफ़सोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियां हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का कौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुजरे जिन्नों और इंसानों में से। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रहे। (17-18)

और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर जुल्म न होगा। और जिस दिन इंकार करने वाले आग

के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीजें दुनिया की जिंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें जिल्लत की सजा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक तकब्बुर (घमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी करते थे। (19-20)

और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में डरायाऔर डराने वाले उससे पहले भी गुजर चुके थे और उसके बाद भी आएकि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो। पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा रहा हूं जिसके साथ मुझे भेजा गया है। लेकिन मैं तुम्हें देखता हूं कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो। (21-23)

पस जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अजाब है। वह हर चीज को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी। पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहां कुछ नजर न आता था। मुजरिमों को हम इसी तरह सजा देते हैं। (24-25)

और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों में क़ुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आंख और दिल दिए। मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आंखें और न दिल। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियां भी तबाह कर दीं। और हमने बार-बार अपनी निशानियां बताईं ताकि वे बाज आएं। पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिनको उन्होंने ख़ुदा के तक़र्रुब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था। बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी। (26-28)

और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ ले आए, वे कुरआन सुनने लगे। पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी कौम की तरफ वापस गए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारी कौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक (प्रिष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद हैं। वह हक की तरफ और एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम, अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की दावत (आह्वान) क़ुबूल करो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अजाब से बचाएगा। और जो शख़्स अल्लाह के दाओी (आह्वानकर्ता) की

दावत पर लब्बैक नहीं कहेगा तो वह जमीन में हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार न होगा। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (29-32)

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों और जमीन को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर क़ुदरत रखता है कि वह मुर्दों को जिंदा कर दे, हां वह हर चीज पर क़ादिर है। और जिस दिन ये इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, क्या यह हकीक़त नहीं है। वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की क़सम। इर्शाद होगा फिर चखो अजाब उस इंकार के बदले जो तुम कर रहे थे। (33-34)

पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया। और उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। यह पहुंचा देना है। पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफ़रमानी करने वाले हैं। (35)

सूरह-47. मुहम्मद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (अकारत) कर दिया। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है, और वह हक है उनके रब की तरफ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुरुस्त कर दिया। यह इसलिए कि जिन लोगों ने इंकार किया उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की। और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक (सत्य) की पैरवी की जो उनके रब की तरफ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1-3)

पस जब मुंकिरों से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनकी गर्दनें मारो। यहां तक कि जब ख़ूब क़त्ल कर चुको तो उन्हें मजबूत बांध लो। फिर इसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवजा लेकर, यहां तक कि जंग अपने हथियार रख दे। यह है काम। और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आजमाए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज जाए (नष्ट) नहीं करेगा। वह उनकी रहनुमाई फरमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा। और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है। (4-6)

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा। और जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को जाया कर देगा। यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है। पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। क्या

ये लोग मुल्क मे चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले गुजर चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुंकिरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं। यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज है और मुंकिरों का कोई कारसाज (संरक्षक) नहीं। (7-11)

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने इंकार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है। और कितनी ही बस्तियां हैं जो कुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है। हमने उन्हें हलाक कर दिया। पस कोई उनका मददगार न हुआ। (12-13)

क्या वह जो अपने रब की तरफ से एक वाजेह (स्पष्ट) दलील पर है। वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए ख़ुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख़्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं। जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली न होगी और नहरें होंगी दूध की जिसका मजा नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लजीज होगीं और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ होगा। और उनके लिए वहां हर किस्म के फल होंगे। और उनके रब की तरफ से बख़्शिश (क्षमा) होगी। क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (14-15)

तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वे अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं। और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेजगारी (ईश-परायणता)अता करता है। (16-17)

ये लोग तो बस इसके मुंतजिर हैं कि कियामत उन पर अचानक आ जाए तो उसकी अलामतें जाहिर हो चुकी हैं। पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौका कहां रहेगा। पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफी मांगों अपने कुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को। (18-19)

और जो लोग ईमान लाए हैं वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। पस जब एक वाजेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी जिक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है वे तुम्हारी तरफ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो। पस ख़राबी है उनकी। हुक्म मानना है और भली बात कहना है। पस जब मामले का कतई फैसला

हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कुछ उम्मीद नहीं कि तुम जमीन में फसाद करो और आपस के रिश्तों को तोड़ दो। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया। (20-23)

क्या ये लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इससे कि हिदायत उन पर वाजेह हो गई, शैतान ने उन्हें फरेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि ख़ुदा की उतारी हुई चीज को नापसंद करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनकी राजदारी को जानता है। पस उस वक्त क्या होगा जबकि फरिश्ते उनकी रूहें कब्ज करते होंगे, उनके मुंह और उनकी पीठों पर मारते हुए यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज की पैरवी की जो अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रिजा को नापसंद किया। पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। (24-28)

जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने (द्वेषों) को कभी जाहिर न करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते। और तुम उनके अंदाजे कलाम से जरूर उन्हें पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (29-30)

और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबितकदम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफत की जबकि हिदायत उन पर वाजेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक्सान न पहुंचा सकेंगे। और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा। (31-32)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका। फिर वे मुंकिर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा। पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो। और तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह हरगिज तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा। (33-35)

दुनिया की जिंदगी तो महज एक खेल तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओ और तक्वा (ईशपरायणता) इख़्तियार करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। अगर वह तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आख़िर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और अल्लाह तुम्हारे कीने को जाहिर कर दे। हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, पस तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं। और जो शख़्स बुख़्ल करता। तो वह अपने ही से बुख़्ल करता

है। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (36-38)

सूरह-48. अल-फ़तह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक हमने तुम्हें खुली फतह दे दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तक्मील कर दे। और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए। और तुम्हें जबरदस्त मदद अता करे। (1-3)

वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे। और ताकि उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के नजदीक बड़ी कामयाबी है। और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे। बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का ग़जब हुआ और उन पर उसने लानत की। और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4-7)

बेशक हमने तुम्हें गवाही देने वाला और बशारत (शुभ-सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताजीम (सम्मान) करो। और तुम अल्लाह की तस्बीह करो सुबह व शाम। जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वे दरहक़ीक़त अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो शख़्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख़्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज्र अता फरमाएगा। (8-10)

जो देहाती पीछे रह गए वे अब तुमसे कहेंगे कि हमें हमारे अमवाल (धन-सम्पत्ति) और हमारे बाल बच्चों ने मशग़ूल रखा, पस आप हमारे लिए माफी की दुआ फरमाएं। यह अपनी जबानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो। अगर वह तुम्हें कोई नुक्सान या नफा पहुंचाना चाहे। बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो। बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ लौटकर न आएंगे। और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नजर आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए। और तुम

बर्बाद होने वाले लोग हो गए। और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुंकिरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अजाब दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (11-14)

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें। कहो कि तुम हरगिज हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फरमा चुका है। तो वे कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो। बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं। (15)

पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनक़रीब तुम ऐसे लोगों की तरफ बुलाए जाओगे जो बड़े जोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएंगे। पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगर्दानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगर्दानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अजाब देगा। न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है। और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख़्स रूगर्दानी करेगा उसे वह दर्दनाक अजाब देगा। (16-17)

अल्लाह ईमान वालों से राजी हो गया जबकि वे तुमसे दरख़्त के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। पस उसने उन पर सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई और उन्हें इनाम में एक क़रीबी फतह दे दी। और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोगे, पस यह उसने तुम्हें फौरी तौर पर दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए और ताकि अहले ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए। और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए। और एक फतह और भी है जिस पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए। अल्लाह ने उसका इहाता (आच्छादन) कर रखा है। और अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। (18-21)

और अगर ये मुंकिर लोग तुमसे लड़ते तो जरूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार। यह अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए। बाद इसके कि तुम्हें उन पर काबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है। (22-24)

वही लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुंचें। और अगर (मक्का में) बहुत से

मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइल्मी में पीस डालते, फिर उनके सबब तुम पर बेख़बरी में इल्जाम आता, ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे। और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुंकिर थे उन्हें हम दर्दनाक सजा देते। (25)

जब इंकार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलियत की हमिय्यत, फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से सकीनत (शांति) नाजिल फ़रमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तकवा (ईशपरायणता) की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज्यादा हक़दार और उसके अहल थे। और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (26)

बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया जो वाक़्या के अनुसार है। बेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे हराम में जरूर दाख़िल होगे, अम्न के साथ, बाल मूंडते हुए अपने सरों पर और कतरते हुए, तुम्हें कोई अंदेशा न होगा। पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फतह (विजय) दे दी। (27)

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ भेजा ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह काफी गवाह है। (28)

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुंकिरों पर सख़्त हैं और आपस में महरबान हैं तुम उन्हें रुकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फ़ज्ल और उसकी रिजामंदी की तलब में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है। और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मजबूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे मुंकिरों को जलाए। उनमें से जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किया अल्लाह ने उनसे माफी का और बड़े सवाब का वादा किया है। (29)

सूरह-49. अल-हुजुरात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाजें पैग़म्बर की आवाज से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल

के आगे अपनी आवाजें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तकवे (ईशपरायणता) के लिए जांच लिया है। उनके लिए माफी है और बड़ा सवाब है। जो लोग तुम्हें हुजरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। और अगर वे सब्र करते यहां तक कि तुम ख़ुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (2-5)

ऐ ईमान वालो, अगर कोई फ़ासिक (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास ख़बर लाए तो तुम अच्छी तरह तहकीक कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुक्सान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह का रसूल है। अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरग़ूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ़्र और फ़िस्क (अवज्ञा) और नाफ़रमानी से तुम्हें मुतनफ़्फ़िर (खिन्न) कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फ़ज्ल और इनाम से राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-8)

और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दर्मियान सुलह कराओ। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज्यादती करता है। यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए। फिर अगर वह लौट आए तो उनके दर्मियान अद्ल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (9-10)

ऐ ईमान वालो, न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे को बुरे लकब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है। और जो बाज न आएं तो वही लोग जालिम हैं। (11)

ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और टोह में न लगो। और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इसे तुम ख़ुद नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हें कौमों और ख़ानदानों में तक्सीम कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के नजदीक

तुम में सबसे ज्यादा इज्जत वाला वह है जो सबसे ज्यादा परहेजगार है। बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूं कहो कि हमने इस्लाम कुबूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। मोमिन तो बस वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (जद्‌दोजहद) किया, यही सच्चे लोग हैं। (14-15)

कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो। हालांकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम कुबूल किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी। अगर तुम सच्चे हो। बेशक अल्लाह आसमानों और जमीन की छुपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (16-18)

सूरह-50. काफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़०। क़सम है बाअज़्मत कुरआन की। बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुंकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्‌टी हो जाएंगे, यह दुबारा जिंदा होना बहुत बईद (दूर की बात) है। हमें मालूम है जितना जमीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफ़ूज है। बल्कि उन्होंने हक को झुठलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं। (1-5)

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे रौनक दी और उसमें कोई दरार नहीं। और जमीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किस्म की रौनक की चीज उगाई, समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फसलें। और खजूरों के लम्बे दरख़्त जिनमें तह-ब-तह ख़ोशे लगते हैं, बंदों की रोजी के लिए। और हमने उसके जरिए से मुर्दा जमीन को जिंदा किया। इसी तरह जमीन से निकलना होगा। (6-11)

उनसे पहले नूह की कौम और अर-रस वाले और समूद। और आद और फिरऔन और लूत के भाई और ऐका वाले और तुब्बअ की कौम ने भी झुठलाया। सबने पैग़म्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उन पर वाकेअ होकर रहा। क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज रहे। बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ से शुबह में हैं। (12-15)

और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम रगे गर्दन से भी ज्यादा उससे करीब हैं। जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाईं और बाईं तरफ बैठे हैं। कोई लफ्ज वह नहीं बोलता मगर उसके पास एक मुस्तइद (चुस्त) निगरां (सतर्क निरीक्षक) मौजूद है। (16-18)

और मौत की बेहोशी हक के साथ आ पहुंची। यह वही चीज है जिससे तू भागता था। और सूर फूंका जाएगा, यह डराने का दिन होगा। हर शख़्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला। तुम उससे ग़फलत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज है। और उसके साथ का फरिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाजिर है। जहन्नम में डाल दो नाशुक्र, मुख़ालिफ को। नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबह डालने वाला। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सख़्त अजाब में। उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब मैंने इसे सरकश नहीं बनाया बल्कि वह ख़ुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था। इर्शाद होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अजाब से डरा दिया था। मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं हूं। (19-29)

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए। जो शख़्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, दाख़िल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा। वहां उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मजीद (और भी) है। (30-35)

और हम उनसे पहले कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं, वे कुव्वत (शक्ति) में उनसे ज्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह। इसमें याददिहानी है उस शख़्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह होकर। (36-37)

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं हुई। पस जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो और अपने रब की तस्बीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। और रात में उसकी तस्बीह करो और सज्दों के पीछे। (38-40)

और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत करीब से पुकारेगा। जिस दिन लोग यकीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे वह निकलने का दिन होगा। बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन जमीन उन पर से खुल जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। (41-44)

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं हो। पस तुम क़ुरआन के जरिए उस शख़्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे। (45)

सूरह-51. अज़्ज़ारियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं फिर वे उठा लेती हैं बोझ। फिर वे चलने लगती हैं आहिस्ता। फिर अलग-अलग करती हैं मामला। बेशक तुमसे जो वादा किया जा रहा है वह सच है। और बेशक इंसाफ होना जरूर है। कसम है जालदार आसमान की। बेशक तुम एक इख़्तेलाफ (बिखराव, मत-भिन्नता) में पड़े हुए हो। उससे वही फिरता है जो फेरा गया। (1-9)

मारे गए अटकल से बातें करने वाले। जो ग़फलत में भूले हुए हैं। वे पूछते हैं कि कब है बदले का दिन। जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे। चखो मजा अपनी शरारत का, यह है वह चीज जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। बेशक डरने वाले लोग बाग़ों में और चशमों (स्रोतों) में होंगे। ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने वाले थे। वे रातों को कम सोते थे। और सुबह के वक्तों में वे माफी मांगते थे। और उनके माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (असहाय) का हिस्सा था। (10-19)

और जमीन में निशानियां हैं यकीन करने वालों के लिए। और ख़ुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं। और आसमान में तुम्हारी रोजी है और वह चीज भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। पस आसमान और जमीन के रब की कसम, वह यकीनी है जैसा कि तुम बोलते हो। (20-23)

क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज्जज मेहमानों की बात पहुंची। जब वे उसके पास आए। फिर उन्हें सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है। कुछ अजनबी लोग हैं। फिर वह अपने घर की तरफ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। फिर उसे उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उन्हें जीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की बशारत (शुभ सूचना) दी। फिर उसकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बांझ। उन्होंने कहा कि ऐसा ही फरमाया है तेरे रब ने। बेशक वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, जानने वाला है। (24-30)

इब्राहीम ने कहा कि ऐ फरिश्तो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम (कौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं। ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं। जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुजरने वाले हैं। फिर वहां जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया। पस वहां हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अजाब से डरते हैं। (31-37)

और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसे फिरऔन के पास एक खुली दलील के साथ भेजा तो वह अपनी कुव्वत के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है या मजनून है। पस हमने उसे और उसकी फौज को पकड़ा, फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह सजावारे मलामत (निन्दनीय) था। और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक बेनफा हवा भेज दी। वह जिस चीज पर से भी गुजरी उसे रेजा-रेजा करके छोड़ दिया। और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फायदा उठा लो। पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। और वे देख रहे थे। फिर वे न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। और नूह की कौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफरमान लोग थे। (38-46)

और हमने आसमान को अपनी कुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) करने वाले हैं। और जमीन को हमने बिछाया, पस क्या ही ख़ूब बिछाने वाले हैं। और हमने हर चीज को जोड़ा जोड़ा बनाया है ताकि तुम ध्यान करो। पस दौड़ो अल्लाह की तरफ, मैं उसकी तरफ से एक खुला डराने वाला हूं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूं। (47-51)

इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसे उन्होंने साहिर (जादूगर) या मजनून न कहा हो। क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करने चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं। पस तुम उनसे एराज (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इल्जाम नहीं। और समझाते रहो क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफा देता है। (52-55)

और मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे रिज्क नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं। बेशक अल्लाह ही रोजी देने वाला है, जोरआवर (सशक्त), जबरदस्त है। पस जिन लोगों ने जुल्म किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें। पस मुंकिरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56-60)

सूरह-52. अत-तूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है तूर की। और लिखी हुई किताब की, कुशादा वरक में। और आबाद घर की। और ऊंची छत की। और उबलते हुए समुद्र की। बेशक तुम्हारे रब का अजाब वाकेअ होकर रहेगा। उसे कोई टालने वाला नहीं। जिस दिन आसमान डगमगाएगा और पहाड़ चलने लगेंगे। पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ धकेले जाएंगे। यह है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें नजर नहीं आता। इसमें दाख़िल हो जाओ। फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो। तुम्हारे लिए यकसां (समान) है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (1-16)

बेशक मुत्तक़ी (ईश-परायण) लोग बाग़ों और नेमतों में होंगे। वे ख़ुशदिल होंगे उन चीजों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी, और उनके रब ने उन्हें दोजख़ के अजाब से बचा लिया। खाओ और पियो मजे के साथ अपने आमाल के बदले में। तकिया लगाए हुए सफ़-ब-सफ तख़्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे। (17-20)

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज कम नहीं करेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है। और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उन्हें बराबर देते रहेंगे। उनके दर्मियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लग़वियत (बेहूदगी) और गुनाह से पाक होगी। और उनकी ख़िदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे। गोया कि वे हिफ़ाजत से रखे हुए मोती हैं। वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। वे कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर वालों में डरते रहते थे। पस अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फरमाया और हमें लू के अजाब से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, बेशक वह नेक सुलूक वाला, महरबान है। (21-28)

पस तुम नसीहत करते रहो, अपने रब के फ़ज़्ल से तुम न काहिन (भविष्य वक्ता) हो और न मजनून। क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इस पर गर्दिशे जमाना (काल-चक्र) के मुंतज़िर हैं। कहो कि इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं। क्या उनकी अक्लें उन्हें यही सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं। क्या वे कहते हैं कि यह कुरआन को ख़ुद बना लाया है। बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते। पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएं, अगर वे सच्चे हैं। (29-34)

क्या वे किसी ख़ालिक (सृष्टा) के बग़ैर पैदा हो गए या वे ख़ुद ही ख़ालिक हैं। क्या जमीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वे यकीन नहीं रखते। क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़जाने हैं या वे दारोग़ा (संरक्षक) हैं। क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर

वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे। (35-39)

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे तावान (अधिभार) के बोझ से दबे जा रहे हैं। क्या उनके पास ग़ैब है कि वे लिख लेते हैं। क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इंकार करने वाले ख़ुद ही उस तदबीर में गिरफ्तार होंगे। क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है। अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से। (40-43)

और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह बादल है। पस उन्हें छोड़ो, यहां तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे। जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी। और उन जालिमों के लिए इसके सिवा भी अजाब है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (44-47)

और तुम सब्र के साथ अपने रब के फ़ैसले का इंतजार करो। बेशक तुम हमारी निगाह में हो। और अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक्त तुम उठते हो। और रात को भी उसकी तस्बीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक्त भी। (48-49)

सूरह-53. अन-नज्म

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सितारे की जबकि वह ग़ुरूब (अस्त) हो। तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है। और वह अपने जी से नहीं बोलता। यह एक 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है जो उस पर भेजी जाती है। उसे जबरदस्त कुव्वत वाले ने तालीम दी है, आकिल (प्रबुद्ध) व दाना (विवेकशील) ने। फिर वह नमूदार हुआ और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ, पस वह उतर आया। फिर दो कमानों के बराबर या इससे भी कम फ़ासला रह गया। फिर अल्लाह ने 'वही' (प्रकाशना) की अपने बंदों की तरफ जो 'वही' की। झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा। अब क्या तुम उस चीज पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। और उसने एक बार और भी उसे सिदरतुल मुंतहा के पास उतरते देखा है। उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की, जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह बहकी नहीं और न हद से बढ़ी। उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (1-18)

भला तुमने लात और उज्जा पर ग़ौर किया है। और तीसरे एक और मनात पर। क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और ख़ुदा के लिए बेटियां। यह तो बहुत बेढंगी तक्सीम हुई। ये महज नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं अल्लाह ने इनके हक में कोई दलील नहीं उतारी। वे महज गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और नफ़्स की ख़्वाहिश की। हालांकि उनके

पास उनके रब की जानिब से हिदायत आ चुकी है। क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे। पस अल्लाह के इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। (19-25)

और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाजत दे जिसे वह चाहे और पसंद करे। बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं। हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं। वे महज गुमान पर चल रहे हैं। और गुमान हक़ बात में जरा भी मुफ़ीद नहीं। पस तुम ऐसे शख़्स से एराज (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़े। और वह दुनिया की जिंदगी के सिवा और कुछ न चाहे। उनकी समझ बस यहीं तक पहुंची है। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है। और वह उसे भी ख़ूब जानता है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है। (26-30)

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं मगर कुछ आलूदगी (छोटी बुराई)। बेशक तुम्हारे रब की बख़्शिश की बड़ी समाई है। वह तुम्हें ख़ूब जानता है जबकि उसने तुम्हें जमीन से पैदा किया। और जब तुम अपनी मांओं के पेट में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में थे। तो तुम अपने को मुक़द्दस (पवित्र) न समझो। वह तक़वा (ईश-भय) वालों को ख़ूब जानता है। (31-32)

भला तुमने उस शख़्स को देखा जिसने एराज (उपेक्षा) किया। थोड़ा सा दिया और रुक गया। क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है। पस वह देख रहा है। क्या उसे ख़बर नहीं पहुंची उस बात की जो मूसा के सहीफ़ों (ग्रंथों) में है, और इब्राहीम के, जिसने अपना क़ौल पूरा कर दिया। कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया। और यह कि उसकी कमाई अनक़रीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा। और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुंचना है। (33-42)

और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है। और वही मारता है और जिलाता है। और उसी ने दोनों क़िस्म, नर और मादा को पैदा किया, एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए। और उसी के जिम्मे है दूसरी बार उठाना। और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया। और वही शिअरा (नाम के तारे) का रब है। (43-49)

और अल्लाह ही ने हलाक किया आदे अव्वल को और समूद को। फिर किसी को बाक़ी न छोड़ा। और क़ौमे नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत जालिम और सरकश थे। और उलटी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। पस उन्हें ढांक लिया जिस चीज ने ढांक लिया। पस तुम अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुठलाओगे। (50-55)

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह। क़रीब आने वाली क़रीब आ गई।

अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। क्या तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है। और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं। और तुम तकब्बुर (घमंड) करते हो। पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो। (56-62)

सूरह-54. अल-क़मर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत क़रीब आ गई और चांद फट गया। और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज (उपेक्षा) ही करेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है। और उन्हें वे ख़बरें पहुंच चुकी हैं जिसमें काफ़ी इबरत (सीख) है। निहायत दर्जे की हिक्मत (तत्वदर्शिता) मगर तंबीहात (चेतावनियां) उन्हें फ़ायदा नहीं देतीं। पस उनसे एराज करो, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज की तरफ़ पुकारेगा। आंखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। गोया कि वे बिखरी हुई टिड्डियां हैं, भागते हुए पुकारने वाले की तरफ़, मुंकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है। (1-8)

उनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तक्जीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और झिड़क दिया। पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब (दबाव-ग्रस्त) हूं, तू बदला ले। पस हमने आसमान के दरवाजे मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और जमीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए। पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुक़द्दर हो चुका था। और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, वह हमारी आंखों के सामने चलती रही। उस शख़्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाक़द्री की गई थी। और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (9-17)

आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक सख़्त हवा भेजी मुसलसल नहूसत के दिन में। वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (18-22)

समूद ने डर सुनाने को झुठलाया। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम ग़लती और जुनून में पड़ जाएंगे। क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला। हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए आजमाइश बनाकर, पस तुम उनका इंतिजार करो। और सब्र करो। और उन्हें आगाह कर दो

कि पानी उन में बांट दिया गया है, हर एक बारी पर हाजिर हो। फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रौंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (23-32)

लूत की कौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक्त। अपनी जानिब से फज्ल करके। हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक्र करे। और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। और वे उसके मेहमानों को उससे लेने लगे। पस हमने उनकी आंखें मिटा दीं। अब चखो मेरा अजाब और मेरा डराना। और सुबह सवेरे उन पर अज़ाब आ पड़ा जो ठहर चुका था। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (33-40)

और फिरऔन वालों के पास पहुंचे डराने वाले। उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) और कुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा। (41-42)

क्या तुम्हारे मुंकिर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफी लिख दी गई है। क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे। अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेरकर भागेगी। बल्कि कियामत उनके वादे का वक्त है और कियामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज है। बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक्ली में हैं। जिस दिन वे मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगे। चखो मजा आग का। (43-48)

हमने हर चीज को पैदा किया है अंदाजे से। और हमारा हुक्म बस यकबारगी आ जाएगा जैसे आंख का झपकना। और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है। और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे। बैठे सच्ची बैठक में, कुदरत वाले बादशाह के पास। (49-55)

सूरह-55. अर-रहमान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

रहमान ने, कुरआन की तालीम दी। उसने इंसान को पैदा किया। उसे बोलना सिखाया। सूरज और चांद के लिए एक हिसाब है। और सितारे और दरख़्त सज्दा करते हैं। और उसने

आसमान को ऊंचा किया और उसने तराजू रख दी। कि तुम तोलने में ज्यादती न करो। और इंसाफ के साथ सीधी तराजू तोलो और तोल में न घटाओ। (1-9)

और जमीन को उसने ख़ल्क (प्राणियों) के लिए रख दिया। उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर ग़िलाफ होता है। और भुस वाले अनाज भी हैं और ख़ुशबूदार फूल भी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वह मालिक है दोनों मश्रिक (पूर्व) का और दोनों मग़्रिब (पश्चिम) का। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले। दोनों के दर्मियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। और उसी के हैं जहाज समुद्र में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (10-25)

जो भी जमीन पर है वह फना होने वाला है। और तेरे रब की जात बाकी रहेगी, अज्मत वाली और इज्जत वाली। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसी से मांगते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। हर रोज उसका एक काम है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (26-30)

हम जल्द ही फ़ारिग होने वाले हैं तुम्हारी तरफ से, ऐ दो भारी क़ाफ़िलो। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि तुम आसमानों और जमीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुवां तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (31-36)

फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख़ हो जाएगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। पस उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसके गुनाह की बाबत पूछ न होगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। यह जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ बताते थे। वे फिरेंगे उसके दर्मियान और खौलते पानी के दर्मियान। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (37-45)

और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे उसके लिए दो बाग़ हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बहुत शाख़ों वाले। फिर तुम अपने रब की

www.Momeen.blogspot.com

किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बाग़ों में हर फल की दो किस्में। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे तकिया लगाए ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज (गाढ़े) रेशम के होंगे। और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी। जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुवा होगा न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे ऐसी होंगी जैसे कि याकूत (लालमणि) और मरजान (मूंगा)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (46-61)

और उनके सिवा दो बाग़ और हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों गहरे सब्ज स्याही मायल। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें ख़ूबसीरत (सुशील), ख़ूबसूरत औरतें होंगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। हूरें ख़ेमों में रहने वालियां। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तकिया लगाए सब्ज मस्नदों (हरित आसनों) पर और क़ीमती नफ़ीस बिछौने पर। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज्मत वाला। (62-78)

सूरह-56. अल-वाकिअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाकेअ (घटित) होने वाली वाकेअ हो जाएगी। उसके वाकेअ होने में कुछ झूठ नहीं। वह पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी। जबकि जमीन हिला डाली जाएगी। और पहाड़ टूट कर रेजा-रेजा हो जाएंगे। फिर वे परागंदा ग़ुबार (मलिन धुंध) बन जाएंगे। और तुम लोग तीन किस्म के हो जाओगे। (1-7)

फिर दाएं वाले, पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले। और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले। और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। वे मुक़र्रब लोग हैं। नेमत के बाग़ों में। उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी। और थोड़े पिछलों में से होंगे। जड़ाऊ तख़्तों पर। तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे। फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले। आबख़ोरे और कूजे लिए हुए और प्याला साफ शराब का। उससे न सर दर्द होगा और न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा। और

मेवे कि जो चाहें चुन लें। और परिंदों का गोश्त जो उन्हें मरग़ूब (पसंद) हो। और बड़ी आंखों वाली हूरें। जैसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ के अंदर। बदला उन कामों का जो वे करते थे। उसमें वे कोई लग्व (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे। मगर सिर्फ सलाम-सलाम का बोल। (8-26)

और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले। बेरी के दरख़्तों में जिनमें कांटा नहीं। और केले तह-ब-तह। और फैले हुए साये। और बहता हुआ पानी। और कसरत (बहुलता) से मेवे। जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी। और ऊंचे बिछौने। हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। फिर उन्हें कुंवारी रखा है। दिलरुबा और हमउम्र। दाहिने वालों के लिए। अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह। (27-40)

और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले। आग में और खौलते हुए पानी में। और स्याह धुवें के साये में। न ठंडा और न इज्जत का। ये लोग इससे पहले ख़ुशहाल थे। और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे। और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएंगे। और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि अगले और पिछले सब, जमा किए जाएंगे। एक मुक़र्रर दिन के वक्त पर। फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुठलाने वाले। जक्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे। फिर उससे अपना पेट भरोगे। फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। फिर प्यासे ऊंटों की तरह पियोगे। यह उनकी मेहमानी होगी इंसाफ के दिन। (41-56)

हमने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम तस्दीक (पुष्टि) क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज पर जो तुम टपकाते हो। क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले। हमने तुम्हारे दर्मियान मौत मुकद्दर की है और हम इससे आजिज नहीं कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं। और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक नहीं लेते। क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज पर जो तुम बोते हो। क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले। अगर हम चाहें तो उसे रेजा-रेजा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। हम तो तावान (दंड) में पड़ गए। बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए। क्या तुमने ग़ौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। क्या तुमने उसे बादल से उतारा है। या हम हैं उतारने वाले। अगर हम चाहें तो उसे सख़्त खारी बना दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। क्या तुमने ग़ौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो। क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख़्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। हमने उसे याददिहानी बनाया है। और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदे की चीज। पस तुम अपने अजीम (महान) रब के नाम की तस्बीह करो। (57-74)

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं सितारों के मवाकेअ (स्थितियों) की। और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी क़सम है। बेशक यह एक इज्जत वाला क़ुरआन है। एक महफ़ूज़

www.Momeen.blogspot.com

किताब में। इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं। उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ से। फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो। और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो। (75-82)

फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक में पहुंचती है। और तुम उस वक्त देख रहे होते हो। और हम तुमसे ज्यादा उस शख़्स से करीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते। फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वह मुकर्रबीन (निकटवर्तियों) में से हो तो राहत है और उम्दा रोजी है और नेमत का बाग़ है। और अगर वह असहाबुलयमीन (दाईं तरफ वाले) में से हो तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबुलयमीन में से है। और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो। तो गर्म पानी की ज़ियाफ़्त (सत्कार) है, जहन्नम में दाख़िल होना। बेशक यह क़तई हक है। पस तुम अपने अजीम रब के नाम की तस्बीह करो। (83-96)

सूरह-57. अल-हदीद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है। वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज पर कादिर है। वही अव्वल भी है और आख़िर भी और जाहिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी। और वह हर चीज का जानने वाला है। वही है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामले। वह रात को दिन में दाख़िल करता हे और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है। (1-6)

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन (साधिकार) बनाया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद (वचन) ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो। वही है जो अपने बंदे पर वाजेह आयतें उतारता है ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ ले आए और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, महरबान है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते हालांकि सब आसमान और जमीन

आख़िर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुम में से जो लोग फतह के बाद ख़र्च करें और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फतह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (7-10)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज दे, अच्छा कर्ज, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज्जत अज्र है। जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी। आज के दिन तुम्हें ख़ुशख़बरी है बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। जिस दिन मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फायदा उठा लें। कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर रोशनी तलाश करो। फिर उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाजा होगा। उसके अंदर की तरफ रहमत होगी। और उसके बाहर की तरफ अजाब होगा। वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ गया और धोखेबाज ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया। पस आज न तुमसे कोई फिदया (मुक्ति-मुआवजा) क़ुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारी रफीक (साथी) है। और वह बुरा ठिकाना है। (11-15)

क्या ईमान वालों के लिए वह वक्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं। और उस हक के आगे जो नाजिल हो चुका है। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई तो उनके दिल सख़्त हो गए। और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। जान लो कि अल्लाह जमीन को जिंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (16-17)

बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को कर्ज दिया, अच्छा कर्ज वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज्जत अज्र (प्रतिफल) है। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। वही लोग अपने रब के नजदीक सिद्दीक (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अज्र (प्रतिफल) और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोजख़ के लोग हैं। (18-19)

जान लो कि दुनिया की जिंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और जीनत (साज-सज्जा) और बाहमी (आपसी) फख़्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है। जैसे कि बारिश की उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती

है। फिर वह ख़ुश्क हो जाती है। फिर तू उसे जर्द देखता है, फिर वह रेजा-रेजा हो जाती है। और आख़िरत में सख़्त अजाब है और अल्लाह की तरफ से माफ़ी और रिजामंदी भी। और दुनिया की जिंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं। दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ और ऐसी जन्नत की तरफ जिसकी वुस्अत (व्यापकता) आसमान और जमीन की वुस्अत के बराबर है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है। वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। (20-21)

कोई मुसीबत न जमीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उन्हें पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया। और न उस चीज पर फ़ख़्र करो जो उसने तुम्हें दिया, और अल्लाह इतराने वाले फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता जो कि बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हैं। और जो शख़्स एराज (उपेक्षा) करेगा। तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है ख़ूबियों वाला है। (22-24)

हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराज़ू ताकि लोग इंसाफ पर क़ायम हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी क़ुव्वत (शक्ति) है और लोगों के लिए फायदे हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे, बेशक अल्लाह ताक़त वाला, जबरदस्त है। (25)

और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी औलाद में हमने पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफरमान हैं। फिर उन्हीं के नक्शेक़दम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक्शेक़दम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफ़क़त (करुणा) और रहमत (दया) रख दी। और रहबानियत (सन्यास) को उन्होंने ख़ुद ईजाद किया है। हमने उसे उन पर नहीं लिखा था। मगर उन्होंने अल्लाह की रिजामंदी के लिए उसे इख़्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रिआयत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। (26-27)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा। और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे। और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ताकि अहले किताब जान लें कि वे अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) में से किसी चीज पर इख़्तियार नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है अता फरमाता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (28-29)

सूरह-58. अल-मुजादलह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूरत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (ग़ुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर जो शख़्स न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शख़्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वार्ता) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वार्ता) करो तो गुनाह और ज्यादती और रसूल

की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मज्लिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

ऐ ईमान वालो, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीजा है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़जब हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोजख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें ख़ुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फैज से कुव्वत दी है। और

वह उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

सूरह-59. अल-हश्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीजें जो आसमानों और जमीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख़्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफत की। और जो शख़्स अल्लाह की मुख़ालिफत करता है तो अल्लाह सख़्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख़्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख़्त सजा देने वाला है। उन मुफ्लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फज्ल और रिजामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुकद्दम

(प्राथमिक) रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फाका हो। और जो शख़्स अपने जी के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफ़ीक (करुणामय) और महरबान है। (9-10)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक (पाखंड) में मुब्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफ़ाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख़्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख़्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें ख़ुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। दोजख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

अगर हम इस कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह ख़ुदा के ख़ौफ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं।

बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और जमीन में है उसकी तस्बीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

सूरह-60. अल-मुमतहिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज़्हार करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वाहित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो। और मैं जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शख़्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जबान से तुम्हें आजार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (बैर) और बेज़ारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख़्श दे, बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख़्स रूगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है,

और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (4-7)

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आएं तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने ख़र्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारूफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (12)

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़जब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह क़ब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

सूरह-61. अस-सफ्फ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है। और वह ग़ालिब

(प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्वदर्शी) है। ऐ ईमान वालो, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

सूरह-62. अल-जुमुअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो जमीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मियों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़ज्ल (अनुग्रह) है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज्ल वाला है। (1-4)

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को ख़ूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

ऐ ईमान वालो, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और ख़रीद व फरोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज्ल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क देने वाला है। (9-11)

सूरह-63. अल-मुनाफ़िक़ून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब मुनाफ़िक़ (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल

बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकब्बुर (घमंड) करते हुए बेरुख़ी करते हैं। उनके लिए यकसां (समान) है, तुम उनके लिए मग़्फ़िरत (माफ़ी) की दुआ करो या मग़्फ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के ख़जाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफिक़ीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज़्ज़त अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

सूरह-64. अत-तग़ाबुन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर क़ादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो

और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे रब की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्न (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ बीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दरगुजर करो और बख़्श दो तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख़्स दिल की तंगी से महफ़ूज़ रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह क़द्रदां है, बुर्दबार (उदार) है। ग़ायब और हाजिर को जानने वाला है, जबरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

सूरह-65. अत-तलाक

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्‌दत पर तलाक दो और इद्‌दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हदों से तजावुज करेगा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्‌दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारूफ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारूफ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिज्क देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अंदाजा ठहरा रखा है। (1-3)

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्‌दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्‌दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देगा। (4-5)

तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालियां हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देगा है। (6-7)

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी

(विमुखता) की, पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वालो जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोजी दी। (8-11)

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

सूरह-66. अत-तहरीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी बीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुकर्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़ाबले में कार्रवाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक (साथी) अल्लाह है और जिब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फरिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदख़ू (कठोर) और जबरदस्त फरिश्ते मुकर्रर हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फरमा, बेशक तू हर चीज पर क़ादिर है। (8)

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीवी की और लूत की बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (9-10)

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीवी की, जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरऔन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम कौम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्मत (सतीत्व) की हिफाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फरमांबरदारों में से थी। (11-12)

सूरह-67. अल-मुल्क

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर क़ादिर है। जिसने मौत और जिंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले, तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ वापस आ जाएगी। (1-4)

और हमने करीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे

पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोज़ख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इकरार करेंगे, पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर। (5-11)

जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) और बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। (12-14)

वही है जिसने जमीन को तुम्हारे लिए पस्त (वशीभूत) कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसके रिज़्क में से खाओ और उसी की तरफ है उठना। क्या तुम उससे बेख़ौफ हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें जमीन में धंसा दे, फिर वह लरजने लगे। क्या तुम उससे जो आसमान में है बेख़ौफ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसा हुआ मेरा इंकार। (15-18)

क्या वे परिंदों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं। रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज को देख रहा है। आख़िर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इंकार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। आख़िर कौन है जो तुम्हें रोजी दे अगर अल्लाह अपनी रोजी रोक ले, बल्कि वे सरशकी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं। (19-21)

क्या जो शख़्स औंधे मुंह चल रहा है वह ज्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है। कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो। कहो कि वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ इकट्ठा किए जाओगे। (22-24)

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जब वे उसे करीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज जिसे तुम मांगा करते थे। कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फरमाए तो मुंकिरों को दर्दनाक अजाब से कौन बचाएगा। कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। पस अनकरीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है। कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ पानी ले आए। (25-30)

सूरह-68. अल-क़लम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नून०। क़सम है क़लम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। तुम अपने रब के फ़ज़्ल से दीवाने नहीं हो। और बेशक तुम्हारे लिए अज्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला। और बेशक तुम एक आला अख़्लाक (उच्च चरित्र-आचरण) पर हो। पस अनकरीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, कि तुम में से किसे जुनून था। तुम्हारा रब ही ख़ूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (1-7)

पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएं। और तुम ऐसे शख़्स का कहना न मानो जो बहुत कसमें खाने वाला हो, बेवक़अत (हीन) हो, ताना देने वाला हो, चुग़ली लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुजर जाने वाला हो, हक मारने वाला हो, संगदिल हो, साथ ही बेनस्ब (अधम) हो। इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला है। जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं। अनकरीब हम उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे। (8-16)

हमने उन्हें आजमाइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग़ वालों को आजमाइश में डाला था। जबकि उन्होंने कसम खाई कि वे सुबह सवेरे जरूर उसका फल तोड़ लेंगे। और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। पस उस बाग़ पर तेरे रब की तरफ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे। फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फस्ल। पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है। फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे थे। कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग़ में न आने पाए। और वे अपने को न देने पर कादिर समझ कर चले। फिर जब बाग़ को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए। बल्कि हम महरूम (वंचित) हो गए। उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है। बेशक हम जालिम थे। फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्जाम देने लगे। उन्होंने कहा, अफसोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे। शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ रुजूअ होते हैं। इसी तरह आता है अजाब, और आख़िरत का अजाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (17-33)

बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग़ हैं। क्या हम फरमांबरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफरमानों के बराबर कर देंगे। तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फैसला करते हो। क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे

तुम पसंद करते हो। क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर क़समें हैं क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो। उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका जिम्मेदार है। क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे सच्चे हैं। (34-41)

जिस दिन हक़ीक़त से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे न कर सकेंगे। उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर जिल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे। पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता ला रहे हैं जहां से वे नहीं जानते। और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर मजबूत है। (42-45)

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं। या उनके पास ग़ैब है पस वे लिख रहे हैं। पस अपने रब के फ़ैसले तक सब्र करो और मछली वाले की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। अगर उसके रब की महरबानी उसके शामिलेहाल न होती तो वह मज्मूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता। फिर उसके रब ने उसे नवाजा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया। और ये मुंकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह जरूर दीवाना है। और वह आलम वालों के लिए सिर्फ़ एक नसीहत है। (46-52)

सूरह-69. अल-हाक्कह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

वह होने वाली। क्या है वह होनी वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज को झुठलाया। पस समूद, तो वे एक सख़्त हादसे से हलाक कर दिए गए। और आद, तो वे एक तेज व तुंद हवा से हलाक किए गए। उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहां वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नजर आता है। और फ़िरऔन और उससे पहले वालों और उल्टी हुई बस्तियों ने जुर्म किया। उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सख़्त पकड़ा। और जब पानी हद से गुजर गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया। ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (1-12)

पस जब सूर में यकबारगी फूंक मारी जाएगी। और जमीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। तो उस दिन वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज बिल्कुल बोदा होगा। और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे।

उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी। (13-18)

पस जिस शख़्स को उसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो। मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने वाला है। पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा। ऊंचे बाग़ में उसके फल झुके पड़ रहे होंगे। खाओ और पियो मजे के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुजरे दिनों में किए हैं। और जिस शख़्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता। और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है। काश वही मौत फ़ैसलाकुन होती। मेरा माल मेरे काम न आया। मेरा इक्तेदार (सत्ता-अधिकार) ख़त्म हो गया। इस शख़्स को पकड़ो, फिर इसे तौक़ पहनाओ। फिर इसे जहन्नम में दाख़िल कर दो। फिर एक जंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो। यह शख़्स ख़ुदाए अजीम पर ईमान न रखता था। और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। पस आज यहां इसका कोई हमदर्द नहीं। और जख़्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं। उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और न खाएगा। (19-37)

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूं उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो, और जिन्हें तुम नहीं देखते हो। बेशक यह एक बाइज्जत रसूल का कलाम है। और वह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और यह किसी काहिन (भविष्यवक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ग़ौर करते हो। ख़ुदावंद आलम की तरफ़ से उतारा हुआ है। और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ते। फिर हम उसकी रगे दिल काट देते। फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता। और बिलाशुबह यह याददिहानी है डरने वालों के लिए। और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं और वह मुंकिरों के लिए पछतावा है। और यह यक़ीनी हक़ है। पस तुम अपने अजीम रब के नाम की तस्बीह करो। (38-52)

सूरह-70. अल-मआरिज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

मांगने वाले ने अजाब मांगा वाक़ेअ (घटित) होने वाला, मुंकिरों के लिए कोई उसे हटाने वाला नहीं। अल्लाह की तरफ़ से जो सीढ़ियों का मालिक है। उसकी तरफ़ फ़रिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी मिक्दार पचास हजार साल है। पस तुम सब्र करो, भली तरह का सब्र। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे क़रीब देख रहे हैं। जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा। और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। वे उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अजाब से बचने के लिए अपने बेटों और अपनी बीवी और अपने भाई और अपने कुंबे

को जो उसे पनाह देने वाला था और तमाम अहले जमीन को फ़िदये (मुक्ति मुआवजा) में देकर अपने को बचा ले। (1-14)

हरगिज नहीं। वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो खाल उतार देगी। वह हर उस शख़्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज (उपेक्षा) किया। जमा किया और सेंत कर रखा। बेशक इंसान कमहिम्मत पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह घबरा उठता है। और जब उसे फारिग़ुलबाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुख़्ल (कंजूसी) करने लगता है। मगर वे नमाजी जो अपनी नमाज की पाबंदी करते हैं। और जिनके मालों में साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का मुअय्यन हक है। और जो इंसाफ के दिन पर यकीन रखते हैं। और जो अपने रब के अजाब से डरते हैं। बेशक उनके रब के अजाब से किसी को निडर न होना चाहिए। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करते हैं मगर अपनी बीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, फिर जो शख़्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज (उल्लंघन) करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की निभाते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर कायम रहते हैं। और जो अपनी नमाज की हिफ़ाज़त करते हैं। यही लोग जन्नतों में इज्जत के साथ होंगे। (15-25)

फिर इन मुंकिरों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ दौड़े चले आ रहे हैं, दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। क्या उनमें से हर शख़्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग़ में दाख़िल कर लिया जाएगा। हरगिज नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज से जिसे वे जानते हैं। (36-39)

पस नहीं मैं कसम खाता हूं मश्रिकों (पूर्वो) और मग़्रिबों (पश्चिमों) के रब की, हम इस पर कादिर हैं कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएं, और हम आजिज नहीं हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएं और खेल करें। यहां तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। जिस दिन कब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए। जैसे वे किसी निशाने की तरफ भाग रहे हों। उनकी निगाहें झुकी होंगी। उन पर जिल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था। (40-44)

सूरह-71. नूह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी कौम के लोगों को ख़बरदार कर दो इससे पहले कि उन पर एक दर्दनाक अजाब आ जाए। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूं कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दरगुजर

करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक्त तक बाकी रखेगा। बेशक जब अल्लाह का मुकर्रर किया हुआ वक्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश कि तुम उसे जानते। (1-4)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी कौम को शब व रोज पुकारा। मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इजाफ़ा किया। और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और जिद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें बरमला (खुलकर) पुकारा। फिर मैंने उन्हें खुली तब्लीग़ की और उन्हें चुपके से समझाया। मैंने कहा कि अपने रब से माफी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक्की देगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए अज्मत (महानता) की उम्मीद नहीं रखते। हालांकि उसने तुम्हें तरह-तरह से बनाया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए। और उनमें चांद को नूर और सूरज को चराग़ बनाया। और अल्लाह ने तुम्हें जमीन से ख़ास एहतिमाम से उगाया। फिर वह तुम्हें जमीन में वापस ले जाएगा। और फिर उससे तुम्हें बाहर ले जाएगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जमीन को हमवार (समतल) बनाया ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (5-20)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इजाफ़ा किया। और उन्होंने बड़ी तदबीरें कीं। और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) को हरगिज न छोड़ना। और तुम हरगिज न छोड़ना वद को और सुवाअ को और यग़ूस को और यऊक और नम्र को। और उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया। और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इजाफ़ा कर। अपने गुनाहों के सबब से वे ग़र्क किए गए। फिर वे आग में दाख़िल कर दिए गए। पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया। (21-25)

और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, तू इन मुंकिरों में से कोई जमीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा बदकार और सख़्त मुंकिर ही होगा। ऐ मेरे रब, मेरी मग़्फिरत (माफ़ी) फ़रमा। और मेरे मां बाप की मग़्फिरत फ़रमा। और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो तू उसकी मग़्फिरत फ़रमा। और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ फ़रमा दे और जालिमों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज में इजाफ़ा न कर। (26-28)

सूरह-72. अल-जिन्न

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने कुरआन

सुना तो उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब कुरआन सुना है जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे। और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है। उसने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद। और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफे हक बातें कहता था। और हमने गुमान किया था कि इंसान और जिन्न ख़ुदा की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे। और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नात में से कुछ की पनाह लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का ग़ुरूर (अभिमान) और बढ़ा दिया। और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा। (1-7)

और हमने आसमान का जायजा लिया तो हमने पाया कि वह सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ है। और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे सो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। और हम नहीं जानते कि यह जमीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है। और यह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के। हम मुख़्तलिफ तरीकों पर हैं। और यह कि हमने समझ लिया कि हम जमीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते। और न भाग कर उसे हरा सकते हैं। और यह कि हमने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज्यादती का। और यह कि हम में कुछ फरमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं और हम में कुछ बेराह हैं, पस जिसने फरमांबरदारी की तो उन्होंने भलाई का रास्ता ढूंढ लिया। और जो लोग बेराह हैं तो वे दोजख़ के ईंधन होंगे। (8-15)

और मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि ये लोग अगर रास्ते पर कायम हो जाते तो हम उन्हें ख़ूब सैराब (तृप्त) करते। ताकि इसमें उन्हें आजमाएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से एराज (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख़्त अजाब में मुब्तिला करेगा। और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए। कहो कि मैं सिर्फ अपने रब को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुक्सान का इख़्तियार रखता हूं और न किसी भलाई का। कहो कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं। पस अल्लाह ही की तरफ से पहुंचा देना और उसके पैग़ामों की अदायगी है और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (16-23)

यहां तक कि जब वे देखेंगे उस चीज को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान

लेंगे कि किसके मददगार कमजोर हैं और कौन तादाद में कम है। कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह करीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुकर्रर कर रखी है। ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को मुतलअ (प्रकट) नहीं करता। सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफिज लगा देता है। ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता (आच्छादन) किए हुए है और उसने हर चीज को गिन रखा है। (24-28)

सूरह-73. अल-मुज़्ज़म्मिल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात में कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) कर मगर थोड़ा हिस्सा। आधी रात या उससे कुछ कम कर दो। या उससे कुछ बढ़ा दो, और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ो। हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (1-5)

बेशक रात का उठना सख़्त रौंदता है और बात ठीक निकलती है। बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर। वह मश्रिक (पूर्व) और मग़्रिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज बना लो। और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो। और भली तरह उनसे अलग हो जाओ और झुठलाने वाले ख़ुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ढील दे दो। हमारे पास बेड़ियां हैं और दोजख़ है। और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अजाब है। जिस दिन जमीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोदे (ढेर) हो जाएंगे। (6-14)

हमने तुम्हारी तरफ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फिरऔन की तरफ एक रसूल भेजा। फिर फिरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हमने उसे पकड़ा सख़्त पकड़ना। पस अगर तुमने इंकार किया तो तुम उस दिन के अजाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा। यह एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ राह इख़्तियार कर ले। (15-19)

बेशक तुम्हारा रब जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब या आधी रात या एक तिहाई रात कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) करते हो, और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अंदाजा ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर महरबानी फरमाई, अब कुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फज़्ल की तलाश में जमीन में सफर करेंगे। और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे,

पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज क़ायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह को कर्ज दो अच्छा कर्ज। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे, वह बेहतर है और सवाब में ज्यादा, और अल्लाह से माफी मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (20)

सूरह-74. अल-मुद्दस्सिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ कपड़े में लिपटने वाले, उठ और लोगों को डरा। और अपने रब की बड़ाई बयान कर। और अपने कपड़े को पाक रख। और गंदगी को छोड़ दे। और ऐसा न करो कि एहसान करो और बहुत बदला चाहो और अपने रब के लिए सब्र करो। (1-7)

फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वह बड़ा सख़्त दिन होगा। मुंकिरों पर आसान न होगा। छोड़ दो मुझे और उस शख़्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला। और उसे बहुत सा माल दिया और पास रहने वाले बेटे। और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया। फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज्यादा दूं। हरगिज नहीं, वह हमारी आयतों का मुख़ालिफ (विरोधी) है। अनक़रीब मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊंगा। (8-17)

उसने सोचा और बात बनाई। पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई। फिर वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, फिर उसने देखा। फिर उसने त्योरी चढ़ाई और मुंह बनाया। फिर पीठ फेरी और तकब्बुर (घमंड) किया। फिर बोला यह तो महज एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। यह तो बस आदमी का कलाम है। (18-25)

मैं उसे अनक़रीब दोजख़ में दाख़िल करूंगा। और तुम क्या जानो कि क्या है दोजख़। न बाकी रहने देगी और न छोड़ेगी। खाल झुलसा देने वाली। उस पर 19 फरिश्ते हैं। और हमने दोजख़ के कारकुन सिर्फ फ़रिश्ते बनाए हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ मुंकिरों को जांचने के लिए ताकि यकीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएं और अहले किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मर्ज है और मुंकिर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे रब के लश्कर को सिर्फ वही जानता है, और यह तो सिर्फ समझाना है लोगों के वास्ते। (26-31)

हरगिज नहीं, कसम है चांद की। और रात की जबकि वह जाने लगे। और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, वह दोजख़ बड़ी चीजों में से है, इंसान के लिए डरावा, उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ बढ़े या पीछे की तरफ हटे। हर शख़्स अपने आमाल के बदले में रहन

(गिरवी) है, दाएं वालों के सिवा, वे बाग़ों में होंगे, पूछते होंगे, मुजरिमों से, तुम्हें क्या चीज दोजख़ में ले गई। वे कहेंगे, हम नमाज पढ़ने वालों में से न थे। और हम ग़रीबों को खाना नहीं खिलाते थे। और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। और हम इंसाफ के दिन को झुठलाते थे। यहां तक कि वह यक़ीनी बात हम पर आ गई तो उन्हें शफ़ाअत (सिफारिश) करने वालों की शफ़ाअत कुछ फ़ायदा न देगी। (32-48)

फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगर्दानी (अवहेलना) करते हैं। गोया कि वे वहशी गधे हैं जो शेर से भागे जा रहे हैं। बल्कि उनमें से हर शख़्स यह चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जाएं। हरगिज नहीं, बल्कि ये लोग आख़िरत (परलोक) से नहीं डरते। हरगिज नहीं, यह तो एक नसीहत है। पस जिसका जी चाहे, इससे नसीहत हासिल करे। और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है जिससे डरना चाहिए और वही है बख़्शने के लायक। (49-56)

सूरह-75. अल-क़ियामह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की। और नहीं, मैं क़सम खाता हूं मलामत करने वाले नफ्स की। क्या इंसान ख़्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे। क्यों नहीं, हम इस पर कादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। बल्कि इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने। वह पूछता है कि कियामत का दिन कब आएगा। पस जब आंखें ख़ीरह (चौंधिया जाना) हो जाएंगी। और चांद बेनूर हो जाएगा। और सूरज और चांद इकट्ठा कर दिए जाएंगे। उस दिन इंसान कहेगा कि कहां भागूं। हरगिज नहीं, कहीं पनाह नहीं। उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है। उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। बल्कि इंसान ख़ुद अपने आपको जानता है, चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (1-15)

तुम उसके पढ़ने पर अपनी जबान न चलाओ ताकि तुम उसे जल्दी सीख लो। हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना। पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो। फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना। (16-19)

हरगिज नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए। और तुम छोड़ते हो जो देर में आए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा। हरगिज नहीं, जब जान हलक तक पहुंच जाएगी। और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला। और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक्त है। और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी। वह दिन होगा तेरे रब की तरफ जाने का। (20-30)

तो उसने न सच माना और न नमाज पढ़ी। बल्कि झुठलाया और मुंह मोड़ा। फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ चला गया। अफसोस है तुझ पर अफसोस है। फिर अफसोस है तुझ पर अफसोस है। क्या इंसान ख़्याल करता है कि वह बस यूं ही छोड़ दिया जाएगा। क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था। फिर वह अलका (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर आजा (शरीरांग) दुरुस्त किए। फिर उसकी दो किस्में कर दीं, मर्द और औरत। क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दों को जिंदा कर दे। (31-40)

सूरह-76. अद-दहर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कभी इंसान पर जमाने में एक वक्त गुज़रा है कि वह कोई काबिले ज़िक्र चीज न था। हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे। फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इंकार करने वाला। (1-3)

हमने मुंकिरों के लिए जंजीरें और तौक और भड़कती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफूर की आमेजिश होगी। उस चशमे (स्रोत) से अल्लाह के बंदे पियेंगे। वे उसकी शाख़ें निकालेंगे। वे लोग वाजिबात (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी। और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और कैदी को। हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते और न शुक्रगुजारी। हम अपने रब की तरफ से एक सख़्त और तल्ख़ (कटु) दिन का अंदेशा रखते हैं। पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लिया। और उन्हें ताजगी और ख़ुशी अता फरमाई और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया। टेक लगाए होंगे उसमें तख़्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से। जन्नत के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे। और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे। शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा। (4-16)

और वहां उन्हें एक और जाम पियाला जाएगा जिसमें सौंठ की आमेज़िश होगी। यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है। और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं। और तुम जहां देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सब्ज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब (पेय) पिलाएगा। बेशक यह

तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मकबूल (माननीय) हुई। (17-22)

हमने तुम पर कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुक्र की बात न मानो। और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो। और रात को भी उसे सज्दा करो। और उसकी तस्बीह करो रात के लंबे हिस्से में। ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को। हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़बंद मजबूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएंगे। यह एक नसीहत है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब की तरफ रास्ता इख़्तियार कर ले। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और जालिमों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (23-31)

सूरह-77. अल-मुरसलात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। फिर वे तूफ़ानी रफ्तार से चलती हैं। और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। फिर मामले को जुदा करती हैं। फिर याददिहानी डालती हैं। उज़्र के तौर पर या डरावे के तौर पर। जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह जरूर वाकेअ (घटित) होने वाला है। (1-7)

पस जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ रेजा-रेजा कर दिए जाएंगे। और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक्त पर जमा किए जाएंगे। किस दिन के लिए वे टाले गए हैं। फैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फैसले का दिन क्या है। तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया। फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (8-19)

क्या हमने तुम्हें एक हकीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया। फिर उसे एक महफ़ूज जगह रखा, एक मुकर्रर मुद्दत तक। फिर हमने एक अंदाजा ठहराया, हम कैसा अच्छा अंदाजा ठहराने वाले हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। क्या हमने जमीन को समेटने वाला नहीं बनाया, जिंदों के लिए और मुर्दों के लिए। और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया। उस रोज ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। (20-28)

चलो उस चीज की तरफ जिसे तुम झुठलाते थे। चलो तीन शाख़ों वाले साये की तरफ। जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है। वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल,

जर्द ऊंटों की मानिंद, उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाजत होगी कि वे उज़्र पेश करें। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। यह फैसले का दिन है। हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया। पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (29-40)

बेशक डरने वाले साये में और चश्मों (स्रोतों) में होंगे, और फलों में जो वे चाहें। मजे के साथ खाओ और पियो। उस अमल के बदले में जो तुम करते थे। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। खाओ ओर बरत लो थोड़े दिन, बेशक तुम गुनाहगार हो। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। अब इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। (41-50)

सूरह-78. अन-नबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें वे लोग मुख़्तलिफ हैं। हरगिज़ नहीं, अनकरीब वे जान लेंगे। हरगिज़ नहीं, अनकरीब वे जान लेंगे। क्या हमने ज़मीन को फर्श नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेख़ें। और तुम्हें हमने बनाया जोड़े जोड़े, और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। और हमने रात को पर्दा बनाया, और हमने दिन को मआश (जीविका) का वक्त बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हमने उसमें एक चकमता हुआ चराग़ रख दिया। और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, ताकि हम उसके ज़रिए से उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी और घने बाग़। बेशक फैसले का दिन एक मुक़र्रर वक्त है। (1-17)

जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फौज दर फौज आओगे। और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत की तरह हो जाएंगे। बेशक जहन्नम घात में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, मगर गर्म पानी और पीप, बदला उनके अमल के मुवाफिक। वे हिसाब का अंदेशा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों का बिल्कुल झुठला दिया। और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है। पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाऐंगे। (18-30)

बेशक डरने वालों के लिए कामयाबी है। बाग़ और अंगूर। और नौख़ेज़ हमसिन लड़कियां। और भरे हुए जाम। वहां वे लग़्व (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात न सुनेंगे। बदला तेरे रब की तरफ से होगा, उनके अमल के हिसाब से रहमान की तरफ से जो आसमानों

और ज़मीन और उनके दर्मियान की चीज़ों का रब है, कोई क़ुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे। जिस दिन रूह और फरिश्ते सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई न बोलेगा मगर जिसे रहमान इजाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा। यह दिन बरहक है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ ठिकाना बना ले। हमने तुम्हें करीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुंकिर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता। (31-40)

सूरह-79. अन-नाज़िआत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। और कसम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं की। और कसम है तैरने वाले बादलों की। फिर सबक़त (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों की। फिर मामले की तदबीर करने वालों की। जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी। उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी। कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे। उनकी आंखें झुक रही होंगी। वे कहते हैं क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे। क्या जब हम बोसीदा हड्डियां हो जाऐंगे। उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी। वह तो बस एक डांट होगी, फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे। (1-14)

क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसके रब ने उसे तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में पुकारा। फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। फिर उससे कहो क्या तुझे इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए। और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊं फिर तू डरे। पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फिर उसने झुठलाया और न माना। फिर वह पलटा कोशिश करते हुए। फिर उसने जमा किया, फिर उसने पुकारा। पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं। पस अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख़्स के लिए जो डरे। (15-26)

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया। उसकी छत को बुलन्द किया फिर उसे दुरुस्त बनाया। और उसकी रात को तारीक (अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। और ज़मीन को इसके बाद फैलाया। उससे उसका पानी और चारा निकाला। और पहाड़ों को कायम कर दिया, सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए। (27-33)

फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा। जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा। और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी। पस जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी, तो दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ्स को ख़्वाहिश से रोका, तो जन्नत उसका ठिकाना

होगा। वे कियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब खड़ी होगी। तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से। यह मामला तेरे रब के हवाले है। तुम तो बस डराने वाले हो उस शख़्स को जो डरे। जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे मगर एक शाम या उसकी सुबह। (34-46)

सूरह-80. अबस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

उसने त्यौरी चढ़ाई और बेरुख़ी बरती इस बात पर कि अंधा उसके पास आया। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए। जो शख़्स बेपरवाही बरतता है, तुम उसकी फ़िक्र में पड़ते हो। हालांकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं अगर वह न सुधरे। और जो शख़्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और वह डरता है, तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे याददिहानी हासिल करे। वह ऐसे सहीफ़ों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, बुलन्द मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं मुअज्ज़ज़, नेक कातिबों के हाथों में। (1-16)

बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्र है। उसे किस चीज़ से पैदा किया है, एक बूंद से। उसे पैदा किया। फिर उसके लिए अंदाज़ा ठहराया। फिर उसके लिए राह आसान कर दी। फिर उसे मौत दी, फिर उसे क़ब्र में ले गया। फिर जब वह चाहेगा उसे दुबारा ज़िंदा कर देगा। हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। हमने पानी बरसाया अच्छी तरह, फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा। फिर उगाए उसमें ग़ल्ले और अंगूर और तरकारियां और ज़ैतून और खजूर और घने बाग़ और फल और सब्ज़ा, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर (17-32)

पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा। जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, और अपनी मां से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। उनमें से हर शख़्स को उस दिन ऐसा फ़िक्र लगा होगा जो उसे किसी और तरफ मुतवज्जह न होने देगा। कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, हंसते हुए, ख़ुशी करते हुए। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, उन पर स्याही छाई हुई होगी। यही लोग मुंकिर हैं, ढीठ हैं। (33-42)

सूरह-81. अत-तकवीर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जाएगा। और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब पहाड़

चलाए जाएंगे। और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां आवारा फिरेंगी। और जब वहशी जानवर इकट्ठा हो जाएंगे। और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे। और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठा किए जाएंगे। और जब ज़िंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस कुसूर में मारी गई। और जब आमालनामे (कर्म-पत्र) खोले जाएंगे। और जब आसमान खुल जाएगा। और दोज़ख़ भड़काई जाएगी। और जब जन्नत करीब लाई जाएगी। हर शख़्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। (1-14)

पस नहीं, मैं कसम खाता हूं पीछे हटने वाले, चलने वाले और छुप जाने वाले सितारों की। और रात की जब वह जाने लगे। और सुबह की जब वह आने लगे कि यह एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है। कुव्वत वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलन्द मर्तबा है। उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं। और उसने उसे खुले उफ़ुक़ (क्षितिज) में देखा है। और वह ग़ैब की बातों का हरीस (हिर्स रखने वाला) नहीं। और वह शैतान मरदूद का कौल नहीं। फिर तुम किधर जा रहे हो। यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है, उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह है कि अल्लाह रब्बुल आलमीन चाहे। (15-29)

सूरह-82. अल-इनफ़ितार

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और जब सितारे बिखर जाएंगे। और जब समुद्र बह पड़ेंगे। और जब क़ब्रें खोल दी जाएंगी। हर शख़्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। ऐ इंसान तुझे किस चीज़ ने अपने रब्बे करीम की तरफ से धोखे में डाल रखा है। जिसने तुझे पैदा किया। फिर तेरे आज़ा (शरीरांग) को दुरुस्त किया, फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया। जिस सूरत में चाहा तुम्हें तर्तीब दे दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम इंसाफ के दिन को झुठलाते हो। हालांकि तुम पर निगहबान मुकर्रर हैं। मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। बेशक नेक लोग ऐश में होंगे। और बेशक गुनाहगार दोज़ख़ में। इंसाफ के दिन वे उसमें डाले जाएंगे। वे उससे जुदा होने वाले नहीं। और तुम्हें क्या ख़बर कि इंसाफ का दिन क्या है। फिर तुम्हें क्या ख़बर इंसाफ का दिन क्या है। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख़्तियार में होगा। (1-19)

सूरह-83. अल-मुतफ्फिफीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की। जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। और

जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए जिस दिन तमाम लोग ख़ुदावंदे आलम के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म-पत्र) सिज्जीन में होगा। और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। वह एक लिखा हुआ दफ़्तर है। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। जो इंसाफ के दिन को झुठलाते हैं। और उसे वही शख़्स झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियां है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ंग चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएंगे। फिर वे दोज़ख में दाख़िल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे। (1-17)

हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लिय्यीन में होगा। और तुम क्या जानो इल्लिय्यीन क्या है। लिखा हुआ दफ़्तर है, मुक़र्रब फरिश्तों की निगरानी में। बेशक नेक लोग आराम में होंगे। तख़्तों पा बैठे देखते होंगे। उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। उन्हें शराबे ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी हिर्स करने वालों को हिर्स करना चाहिए। और उस शराब मे तस्नीम की आमेज़िश होगी। एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुक़र्रब लोग पियेंगे। बेशक जो लोग मुजरिम थे वे ईमान वालों पर हंसते थे। और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे। और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं। हालांकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए। पस आज ईमान वाले मुंकिरों पर हंसते होंगे, तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। वाकई मुंकिरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (18-36)

सूरह-84. अल-इनशिक़ाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक है। और जब ज़मीन फैला दी जाएगी। और वह अपने अंदर की चीज़ों को उगल देगी और ख़ाली हो जाएगी। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक है। ऐ इंसान तू कशां-कशां (सश्रम) अपने रब की तरफ जा रहा है। फिर उससे मिलने वाला है। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा। उससे आसान हिसाब लिया जाएगा। और वह अपने लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा। और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और जहन्नम में दाख़िल होगा। वह अपने लोगों में बेग़म रहता था। उसने ख़्याल किया था कि उसे लौटना नहीं है। क्यों नहीं। उसका रब उसे

देख रहा था। पस नहीं, मैं कसम खाता हूं शफ़क़ (सांध्य-लालिमा) की। और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट लेती है। और चांद की जब वह पूरा हो जाए। कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है। तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते। और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वे ख़ुदा की तरफ नहीं झुकते। बल्कि मुंकिरीन झुठला रहें हैं। और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं। पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो। लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज्र (प्रतिफल) है। (1-25)

सूरह-85. अल-बुरूज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है बुर्जों वाले आसमान की। और वादा किए हुए दिन की। और देखने वाले की और देखी हुई की। हलाक हुए खन्दक वाले, जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी। जबकि वे उस पर बैठे हुए थे। और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे थे उसे देख रहे थे। और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ वाला है। उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। वही आग़ाज़ करता है और वही लौटाएगा। और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने वाला है, अर्शबरीं (सिंहासन) का मालिक, कर डालने वाला जो चाहे। क्या तुम्हें लश्करों की ख़बर पहुंची है, फिरऔन और समूद की। बल्कि ये मुंकिर झुठलाने पर लगे हुए हैं। और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है। बल्कि वह एक बाअज़्मत (गौरवशाली) क़ुरआन है, लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ। (1-22)

सूरह-86. अत-तारिक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है आसमान की और रात को नुमूदार (प्रकट) होने वाले की। और तुम क्या जानो कि वह रात को नुमूदार होने वाला क्या है, चमकता हुआ तारा। कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो। तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। जो निकलता है पीठ और सीने के दर्मियान से। बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर कादिर है। जिस दिन छुपी बातें परखी

जाएंगी। उस वक्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार। कसम है आसमान चक्कर मारने वाले की। और फूट निकलने वाली ज़मीन की। बेशक यह दोटूक बात है और वह हंसी की बात नहीं। वे तदबीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं। और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूं। पस मुंकिरों को ढील दे, उन्हें ढील दे थोड़े दिनों। (1-17)

सूरह-87. अल-आला

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है। जिसने बनाया फिर ठीक किया। और जिसने ठहराया, फिर राह बताई। और जिसने चारा निकाला। फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया। हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है। और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह। पस नसीहत करो अगर नसीहत फ़ायदा पहुंचाए। वह शख़्स नसीहत क़ुबूल करेगा जो डरता है। और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा वह जो बदबख़्त होगा। वह पड़ेगा बड़ी आग में। फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा। कामयाब हुआ जिसने अपने को पाक किया। और अपने रब का नाम लिया। फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुकद्दम रखते हो। और आख़िरत बेहतर है और पाएदार है। यही अगले सहीफ़ों (ग्रंथों) में भी है, मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों में। (1-19)

सूरह-88. अल-ग़ाशियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुंची है। कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, मेहनत करने वाले थके हुए। वे दहकती आग में पड़ेंगे। खौलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी पिलाए जाएंगे। उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपनी कमाई पर ख़ुश होंगे। ऊंचे बाग़ में। उसमें कोई लग़्व (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चशमे होंगे। उसमें तख़्त होंगे ऊंचे बिछे हुए। और आबख़ोरे सामने चुने हुए। और बराबर बिछे हुए गद्दे। और क़ालीन हर तरफ पड़े हुए। तो क्या वे ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। और आसमान को कि वह किस तरह बुलन्द किया गया। और पहाड़ों को कि वह किस तरह खड़ा किया गया। और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई। पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी करने वाले हो। तुम उन पर दारोग़ा नहीं। मगर जिसने रूगर्दानी (अवहेलना) की और इंकार किया, तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा। हमारी ही तरफ उनकी वापसी है। फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना। (1-26)

सूरह-89. अल-फ़ज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम है फ़ज्र (उषाकाल) की। और दस रातों की। और जुफ़्त (सम) और ताक़ (विषम) की। और रात की जब वह चलने लगे। क्यों, इसमें अक्लमंद के लिए काफ़ी क़सम है। तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया, सुतूनों (स्तंभों) वाले इरम के साथ। जिनके बराबर कोई कौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई। और समूद के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं। और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ, जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की। फिर उनमें बहुत फसाद फैलाया। तो तुम्हारे रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। बेशक तुम्हारा रब घात में है। पस इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आज़माता है और उसे इज़्ज़त और नेमत देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। और जब वह उसे आज़माता है और उसका रिज़्क उस पर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और तुम मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को समेटकर खा जाते हो। और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो। हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। और तुम्हारा रब आएगा और फ़रिश्ते आएंगे कतार (पंक्ति) दर कतार। और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी, उस दिन इंसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौका कहां। वह कहेगा, काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता। पस उस दिन न तो ख़ुदा के बराबर कोई अज़ाब देगा, और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा। ऐ नफ़्से मुतमइन (संतुष्ट आत्मा) चल अपने रब की तरफ़। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी। फिर शामिल हो मेरे बंदों में और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। (1-30)

सूरह-90. अल-बलद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं कसम खाता हूं इस शहर (मक्का) की। और तुम इसमें मुक़ीम (रह रहे) हो। और क़सम है बाप की और उसकी औलाद की। हमने इंसान को मशक़्क़त (सश्रम स्थिति) में पैदा किया है। क्या वह ख़्याल करता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं। कहता है कि मैंने बहुत सा माल ख़र्च कर दिया। क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा। क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। और एक ज़बान और दो होंट। और हमने उसे दोनों रास्ते बता दिए। फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। गर्दन को छुड़ाना। या भूख के ज़माने में खिलाना, कराबतदार यतीम को, या ख़ाकनशीं (धूल-धूसरित) मोहताज को। फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सब्र की और हमदर्दी की नसीहत की। यही लोग नसीब वाले हैं। और जो हमारी आयतों के मुंकिर हुए वे बदबख़्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं। उन पर आग छाई हुई होगी। (1-20)

सूरह-91. अश-शम्स

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। और चांद की जबकि वह सूरज के पीछे आए। और दिन की जबकि वह उसे रोशन कर दे। और रात की जब वह उसे छुपा ले। और आसमान की और जैसा कि उसे बनाया। और ज़मीन की और जैसा कि उसे फैलाया। और जान की जैसा कि उसे ठीक किया। फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की। कामयाब हुआ जिसने उसे पाक (शुद्ध) किया और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया। समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुठलाया। जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा बदबख़्त। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से ख़बरदार। तो उन्होंने उसे झुठलाया। फिर ऊंटनी को मार डाला। फिर उनके रब ने उन पर हलाकत नाज़िल की। फिर सबको बराबर कर दिया। वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा। (1-15)

सूरह-92. अल-लइल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है रात की जबकि वह छा जाए। और दिन की जबकि वह रोशन हो और उसकी जो उसने पैदा किए नर और मादा। कि तुम्हारी कोशिशें अलग-अलग हैं। पस जिसने दिया और वह डरा और उसने भलाई को सच माना। तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और जिसने बुख़्ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, और भलाई को झुठलाया, तो हम उसे सख़्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और उसका माल उसके काम न आएगा जब वह गढ़े में गिरेगा। बेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना। और बेशक हमारे इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया। पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से। उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त है। जिसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को। जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो। मगर सिर्फ अपने ख़ुदाए बरतर की ख़ुशनूदी के लिए। और अनकरीब वह ख़ुश हो जाएगा। (1-21)

सूरह-93. अज़्-ज़ुहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की। और रात की जब वह छा जाए। तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा। और न वह तुमसे बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ। और यकीनन आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है। और अनकरीब अल्लाह तुझे देगा। फिर तू राज़ी हो जाएगा। क्या

अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया। और तुम्हें मुतलाशी पाया तो राह दिखाई। और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया। पस तुम यतीम पर सख़्ती न करो। और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को। और तुम अपने रब की नेमत बयान करो। (1-11)

सूरह-94. अल-इनशिराह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया। और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। बेशक मुश्किल के साथ आसानी है। फिर जब तुम फारिग़ हो जाओ तो मेहनत करो। और अपने रब की तरफ तवज्जोह रखो। (1-8)

सूरह-95. अत-तीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है तीन की और ज़ैतून की। और तूरे सीना की। और इस अम्न वाले शहर की। हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त (संरचना) पर पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया। लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाला अज्र (प्रतिफल) है। तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुठलाते हो। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं। (1-8)

सूरह-96. अल-अलक

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को अलक (ख़ून के लोथड़े) से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने इल्म सिखाया कलम से। इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह जानता न था। हरगिज़ नहीं, इंसान सरकशी करता है। इस बिना पर कि वह अपने को आत्मनिर्भर देखता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ लौटना है। क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो मना करता है, एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर वह हिदायत पर हो। या डर की बात सिखाता हो। तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर उसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है। हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे खींचेंगे। उस पेशानी को जो झूठी गुनाहगार है। अब वह बुला ले अपने हामियों को। हम भी दोज़ख़ के फरिश्तों को बुलाएंगे। हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सज्दा कर और करीब हो जा। (1-19)

सूरह-97. अल-क़द्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने इसे उतारा है शबे क़द्र (गौरवपूर्ण रात) में। और तुम क्या जानो कि शबे क़द्र क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रूह उसमें अपने रब की इजाज़त से उतरते हैं। हर हुक्म लेकर। वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने तक। (1-5)

सूरह-98. अल-बय्यिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अहले किताब (पूर्ववर्ती-ग्रंथ धारक) और मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इंकार किया वे बाज़ आने वाले नहीं जब तक उनके पास वाज़ेह दलील न आ जाए। अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो पाक सहीफ़े (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए। जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। और जो लोग अहले किताब थे वे वाज़ेह दलील आ जाने के बाद ही मुख़्तलिफ़ हो गए। हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें। उसके लिए दीन को ख़ालिस कर दें, यकसू (एकाग्रचित्त) होकर और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है। बेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन ख़लाइक़ (निकृष्ट प्राणी) हैं। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन ख़लाइक़ (सर्वोत्तम प्राणी) हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शख़्स के लिए है जो अपने रब से डरे। (1-8)

सूरह-99. अज़्-ज़िलज़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन शिद्दत से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ। उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी। क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा। उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएं। पस जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर बदी की होगी वह उसे देख लेगा। (1-8)

सूरह-100. अल-आदियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं। फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले। फिर सुबह के वक्त छापा मारने वाले। फिर उसमें गुबार उड़ाने वाले। फिर उस वक्त फौज में घुस जाने वाले। बेशक इंसान अपने रब का नाशुक्र है। और वह खुद इस पर गवाह है। और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है। क्या वह उस वक्त को नहीं जानता जब वह क़ब्रों से निकाला जाएगा। और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है। बेशक उस दिन उनका रब उनसे ख़ूब बाख़बर होगा। (1-11)

सूरह-101. अल-क़ारिअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा वह दिलपसंद आराम में होगा। और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा तो उसका ठिकाना गढ़ा है। और तुम क्या जानो कि वह क्या है, भड़कती हुई आग। (1-11)

सूरह-102. अत-तकासुर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

बोहतात (विपुलता) की हिर्स ने तुम्हें ग़फ़लत में रखा। यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुंचे। हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यकीन के साथ जानते, कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। फिर तुम उसे यकीन की आंख से देखोगे। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा जाएगा। (1-8)

सूरह-103. अल-अस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है ज़माने की। बेशक इंसान घाटे में है। मगर जो लोग कि ईमान लाए और नेक अमल किया और एक दूसरे को हक की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की। (1-3)

सूरह-104. अल-हु-म-ज़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तबाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की। जिसने माल को समेटा और गिन-गिन कर रखा। वह ख़्याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। हरगिज़ नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में। और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है। अल्लाह की भड़काई हुई आग जो दिलों तक पहुंचेगी। वह उन पर बंद कर दी जाएगी, ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में। (1-9)

सूरह-105. अल-फ़ील

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उसकी तदबीर को अकारत नहीं कर दिया। और उन पर चिड़ियां भेजीं झुंड की झुंड। जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकती थीं। फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया। (1-5)

सूरह-106. क़ुरैश

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

इस वास्ते कि क़ुरैश मानूस (अभ्यस्त) हुए, जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस। तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ़ से उन्हें अम्न दिया। (1-4)

सूरह-107. अल-माऊन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो इंसाफ के दिन को झुठलाता है। वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। और मिस्कीन का खाना देने पर नहीं उभरता। पस तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। वे जो दिखलावा करते हैं। और मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते। (1-7)

सूरह-108. अल-कौसर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने तुम्हें कौसर दे दिया। पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (1-3)

सूरह-109. अल-काफ़िरून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि ऐ मुंकिरो, मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और मैं उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की है। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन। (1-6)

सूरह-110. अन-नस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब अल्लाह की मदद आ जाए और फतह। और तुम देखो कि लोग ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो रहे हैं फ़ौज दर फ़ौज। तो अपने रब की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ और उससे बख़्शिश (क्षमा) मांगो, बेशक वह माफ करने वाला है। (1-3)

सूरह-111. अल-लहब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूट जाएं और वह बर्बाद हो जाए। न उसका माल उसके काम आया और न वह जो उसने कमाया। वह अनकरीब भड़कती आग में पड़ेगा। और उसकी बीवी भी जो ईंधन लिए फिरती है सर पर। उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई। (1-5)

सूरह-112. अल-इख़्लास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और कोई उसके बराबर का नहीं। (1-4)

सूरह-113. अल-फ़लक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं सुबह के रब की। हर चीज के शर (बुराइ) से जो उसने पैदा की। और तारीकी (अंधकार) के शर से जबकि वह छा जाए। और गिरहों (गांठों) में फूंक मारने वालों के शर से और हासिद (ईर्ष्यालु) के शर से जबकि वह हसद करे। (1-5)

सूरह-114. अन-नास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो, मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद (पूज्य) की। उसके शर (बुराइ) से जो वसवसा डाले और छुप जाए। जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जिन्न में से और इंसान में से। (1-6)